TEXT PROBLEM WITHIN THE BOOK ONLY

UNIVERSAL LIBRARY

OU_182761

UNIVERSAL LIBRARY

OUP—1700—8-11-77—7,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 787.5 A86S Accession No. H195

Author आठले, शङ्करराव शिवराम

Title सितार चन्द्रोदय . 1835.

This book should be returned on or before the date last marked below.

॥ श्रीराम ॥

॥ श्रीलक्ष्मीनारायणाय नमः ॥

सितारचन्द्रोदय.

यह पुस्तक

पण्डित शङ्करराव शिवराम आठले

श्रीलक्ष्मीनारायणमन्दिर–उरई निवासीने

संगीतशास्त्रके व सितारवाद्यके सीखनेवाले प्रेमी-

विद्यार्थियों व गुणग्राहकसज्जनोंके हितार्थ

निर्माण की.

हरिप्रसाद भगीरथजीका

प्राचीन पुस्तकालय.

" मुम्बईवैभव " छापखाना.

मुम्बई.

शके १८३५] [संवत् १९७०.

मुद्रकः—रा. चिन्तामण सखाराम देवळे, मुंबईवैभव प्रेस.
सदाशिव गल्ली, घर नं. १ गिरगाम—मुंबई.

प्रकाशकः—श्री. व्रजवल्लभ हरिप्रसादजी, पुस्तकालय
कालबादेवी रोड़—रामवाड़ी, घर नं. ३३२ मुम्बई.

सब हक़ प्रकाशकने अपने आधीन रख दिये हैं.

सितारचन्द्रोदयस्थ विषयोंकी अनुक्रमणिका.

विषय.	पृष्ठ.
प्रथमावश्यकीय विज्ञापना	१
मंगलाचरण	३
अर्पणपत्रिका	४
प्रस्तावना	५
भारतवर्षके प्रसिद्ध बाजोंके नाम ...	७–८
गवइया व गायनके गुण दोष. ...	८
इस पुस्तकमें आधार लिया तिन पुस्तकोंके नाम	११

भाग १ ला.

प्रथमांक.

विषय.	पृष्ठ.
संगीतशास्त्रका संक्षिप्त वृत्तांत ...	१३
संगीत-शास्त्रपर पुराने जो २ ग्रंथ बने उनके नाम	१४
देसी व पाश्चिमात्य गायनका भेद ...	१७–१८
हारमोनियमकी न्यूनता (नक्शासह)	१९

द्वितीयांक.

विषय.	पृष्ठ.
स्वरविचार	२२
स्वरसप्तक	२३
षड्ज सप्तक.	,,
मध्यम सप्तक	,,
तार सप्तक	२४
साढ़ेतीन सप्तक	,,
चार सप्तक	,,
स्वरोंके भेद	,,
अविकारी स्वर	,,
विकारी स्वर	,,
शुद्ध स्वर	२५
कोमल व तीव्र स्वर	,,
बारा स्वर	,,
सोलह स्वर	,,
स्वरोंके वर्ण	२६
स्थायी	,,
आरोही	,,
अवरोही	,,
संचारी	,,
उदाहरण आरोह व अवरोह स्वरोंका	२६
स्वरोंके अलंकार	,,
स्थायी अलंकार	२७
आरोही अलंकार	,,
अवरोही अलंकार	,,
संचारी अलंकार	,,
दूसरे अलंकार	,,
कुछ अलंकार जो प्रचलित हैं उनका वर्णन	,,
तान विचार	२९
उनचास, कूटतान	३०
तानोंके नाम.	,,
गमक, मींढ, खटका, घसीट, लाग, डाट इत्यादिका भेद	,,
गमक और भेदसह उनकी रीति	३१
तान और भेदसह रीति	,,
मींढ और भेदसह उनकी रीति ...	,,
घसीट और भेदसह उनकी रीति ...	३२
खटका और भेदसह उनकी रीति ...	३३
डाट	३७
आलाप	,,
आलापके भेद व स्थान ...	,,
आलापका आरंभ	,,
आलापके सात प्रकार	,,
ग्रामविचार	,,
ग्रामभेद	३८
षड्ज ग्राम	,,
मध्यम ग्राम	,,
गांधार ग्राम	,,
ग्रामोंकी रचनाका चक्र	३९
तीनों ग्राम सितारपर निकालना. ...	,,
मूर्च्छना	,,
षड्ज ग्रामकी मूर्च्छनाका चक्र ...	४०
मध्यम ग्रामकी मूर्च्छनाका चक्र ...	४१
गांधार ग्रामकी मूर्च्छनाका चक्र ...	,,

विषय. पृष्ठ.
श्रुति (और उनके नामभेद) ... ४२
जातिपरत्वसे श्रुतियोंके नाम और ...
रस (चक्र) ४३
स्वरोंकी श्रुतियां, संख्यासह नाम स्वभाव ,,
सप्तस्वर तीनों ग्रामकी श्रुतियोंका कोष्टक ४४
भारतीय श्रुति व पाश्चिमात्य श्रुतियोंकी
तुलना ४५
विकृत स्वर ... ... ,,
स्वरोंके अन्य पारिभाषिक शब्द और
उनका अर्थ ४६
उनका खुलासा (चक्र) ... ... ,,
उदात्त, अनुदात्त, स्वरित, कल, काकली स्वर ,,
प्रधानस्वर ४६
ग्रह, न्यास, अंशस्वर व सूर ... ४७
वादी संवादी अनुवादी ४८
विवादी ... ... ,,
सप्तस्वरोंके परस्पर संबंधका स्पष्टीकरण
(चक्र) ... ... ,,
सप्त स्वरोंके शृंगारस्वरूपादिका चक्र ४९
,, आयुआदिक चक्र ... ५०

तृतीयांक.

रागविचार ५१
रागोंकी जाति ... ... ,,
षाडव (राग) ... ... ,,
ओडव (राग) ... ... ,,
संपूर्ण (राग) ... ... ,,
शुद्ध (व महाशुद्ध) राग ५२
शुद्ध सालंग व सालंग राग ... ,,
संकीर्ण (लघुसंकीर्ण और महासंकीर्ण) ,,
सुरसा (लघु व गुरु) ... ... ,,
स्वरसा (लघु व गुरु) ५३
सारसा (लघु व गुरु) ... ... ,,
रागोंके ऋतु ... ... ,,
राग रागिनी और उपराग उपरागिनी
इनकी संख्या ... ... ,,
कईमतोंसे (राग आदिका) निर्मित
कोष्टक १ ... ५४
गुचए राग मतसे ,, २ ... ५५
विषय.
चमनए बेनजीरके मतसे राग आदि ३
रागस्तान कोष्टक ४ ...
बंसीरागमाला ,, ५ ...
सकल शास्त्रनिरूपण ,, ६ ...
हनुमान (मतसे) ,, ७ ...
नारायण ,, ८ ...
सामेश्वर ,, ९ ...
सोमेश्वर ,, १० ...
शार्ङ्गदेव ,, ११ ...
रागार्णव ,, १२ ...
इन्द्रप्रस्थ ,, १३ ...
कल्लीनाथ ,, १४ ...
संगीतादित्य ,, १५ ...
गायन सार ,, १६ ...
गायनदर्पण ,, १७ ...
उत्तर हिन्दुस्तानके रागोंके नाम ...
दक्षिण हिन्दुस्तानके रागोंके नाम ...
रात्रिके प्रथम प्रहरमें गाने योग्य राग
,, दूसरे ,,... ...
,, तीसरे ,, ...
,, चौथे ,, ...
दिनके पहिले प्रहरमें गाने योग्य राग...
,, दूसरे ,, ,, ...
,, तीसरे ,, ,, ...
,, चौथे ,, ,, ...
राग रागिनियोंके शुद्ध कोमल तीव्रादि
और खास स्वर लगनेवालोंका कोष्टक
राग रागिनियोंके दिनरातके प्रहरानुसार
रागोंकी जातें व वर्ज्य कोमल तीव्रादि
स्वरोंका कोष्टक. ... ...
राग गानेके गुण. ... ...
प्रयोजनानुसार रागोंके नाम. ...

चतुर्थांक.

तालविचार. ... ...
मुख्य सात तालोंके नाम. ...
मुख्य १०८ तालोंके नाम. ...
तालोंके नियम व नाम ... ...

विषय.	पृष्ठ.
मात्रा व उसके अंतरांकोंका कोष्टक ...	८६
३२ ताल, जो प्रचलित हैं, उनकी रीत भेद नाम	८७
एकताला, केहरवा, मरेठी ठेका, केद ...	,,
मुखताल, रूपक या दोताला, पशतो, कव्वाली	८८
दादरा, धीमातिताला, तीव्रा, तेरीतया तपइया, झूमरा	८९ ,,
धमाल या लघुशिखर, झप, सुलफाकता सुल्फ, चाचर जेत वा रूपचंदी ...	९०
अदा, ख्यालका ठेका, पंजाबी ठेका, टप्पेका ठेका, ध्रुपद चौताल या मजीबहट या चंदताल, आडाचवताला–द्रुत संगीत	९१
सवारीया चितलखन, खम्सा, कोकला, फरोदस्त, ब्रह्मताल	९२
चिकताल, लक्ष्मीताल	९३
अन्यरीत्या तालोंका वर्ताव ...	९४

भाग दूसरा.

प्रथमांक.

सितार	९५
नाम, गुण, उपयोग, तारोंके भेद व नाम	,,
खूंटियोंके भेद सह नाम, अटी, घोडी,	९६
तारदान, पड़दे और जवारी ...	,,
मिजराब और उसके नकशे ...	९७
मिजराबके बनानेकी रीति नकशेसह ...	,,
संपूर्ण सितारके नाम भेद व अवयवोंसह नकशा	९८
पचीस २५ पडदोंका नकशा अचल ठाटका	९९

ठाटके नकशे.

ठाट यमन नंबर १	१००
ठाट भैरवी नं. २	१०१
ठाट काफी नं. ३	१०२
ठाट पीलू नं. ४	१०३
ठाट खम्माच या देस नं. ५ ...	१०४
ठाट कालिंगडा नं. ६	१०५
ठाट हिंडोल नं. ७	१०६
ठाट जौनपुरी नं. ८	१०७
ठाट एजन नं. ९	१०८
ठाट नं. १०	१०९
ठाट नं. ११	११०
ठाट नं. १२	१११
ठाट नं. १३	११२
आवश्यकीय सूचना	११३
सितारकी स्वरसप्तकें	११४
नकशा सितारके तीन स्वर सप्तकोंका ...	११५
सितार मिलानेकी रीति १	११६
नकशा खूंटियोंमें तार बांधनेका ...	११७
सितार मिलानेकी रीति २... ...	११८
नकशा मिलानेका	११९
सितारका आरोह और अवरोह ...	१२०
सितार किस प्रकार पकडे	,,
सितारकी बैठकें व आसन	,,
सितारका उपयोग और गतविचार ...	१२१
सितारके बोल व कुछ नियम ...	,,

द्वितीयांक.

सितारका वाद्य व नोट, ...	१२२
स्वरमाला एक स्वरका प्रकार पाठ १ ला	,,
स्वरमाला दो स्वरोंका प्रकार पाठ १ ला	१२४
स्वरमाला तीन स्वरोंका प्रकार पाठ १ ला	१२५
स्वरमाला तीन स्वरोंका प्रकार पाठ २ रा	१२६
स्वरमाला चार स्वरोंका प्रकार पाठ १ ला	१२७
स्वरमाला चार स्वरोंका प्रकार पाठ २ रा	१२८
स्वरमाला चार स्वरोंका प्रकार पाठ ३ रा	१२९
स्वरमाला चार स्वरोंका प्रकार पाठ ४ था	१३०
स्वरमाला चार स्वरोंका प्रकार पाठ ५ वा	१३१
स्वरमाला पांच स्वरोंका प्रकार पाठ १ ला	१३२
स्वरमाला पांच स्वरोंका प्रकार पाठ २ रा	,,
स्वरमाला पांच स्वरोंका प्रकार पाठ ३ रा	१३३
स्वरमाला पांच स्वरोंका प्रकार पाठ ४ था	१३४
स्वरमाला पांच स्वरोंका प्रकार पाठ ५ वा	,,
स्वरमाला पांच स्वरोंका प्रकार पाठ ६ वा	१३५
स्वरमाला पांच स्वरोंका प्रकार पाठ ७ वा	१३६
सूचना व कुछ नियम	,,

विषय.	पृष्ठ.
स्वरवटिका पहिली	१३७
,, दूसरी	१३८
,, तीसरी	१३९
,, चौथी	,,
,, पांचवी	१४०
,, छठवीं	१४१
सूचना. १, २, ३.	,,
पाठ पहिला.	
छः राग और तीस रागिनीकी गतें	
१ राग भैरव (स्वरूपादि वर्णन) ...	१४२
भैरव गत १ ली ताल तिताला ...	१४३
,, गत २ री.	१४४
,, गत ३ री.	१४५
,, गत ४ थी. ताल तीव्रा ...	,,
,, गत ५ वीं ताल झप	१४६
रागिणी भैरवी १ (स्वरूपादि वर्णन) ...	१४७
भैरवी गत १ ली. इसका वर्णन ...	१४८
,, गत २ री.	१४९
,, गत ३ री. ताल धमार ...	१५०
,, गत ४ थी. ताल रूपक ...	१५१
,, गत ५ वीं ताल ब्रह्म	१५२
रागिनी वैराटी २ (स्वरूपादि बर्णन) ...	१५३
,, गत १ ली ताल सूल्फाख्ता ...	१५४
,, गत २ री ताल खम्सा ...	,,
रागिनी मधुमाधवी ३ (स्वरूपादि व०)	१५५
,, गत १ ली	,,
रागिनी सिंधवी ४ (स्वरूपादि वर्णन)	१५६
,, गत १ ली ताल झूमरा ...	१५७
रागिनी बंगाली ५ (स्वरूपादि वर्णन)	,,
,, गत १ ली	१५८
पाठ दूसरा.	
२ राग मालकंस (स्वरूपादि वर्णन) ...	१५९
,, गत १ ली	१६०
,, गत २ री	,,
,, गत ३ री	१६१
,, गत ४ थी	१६२
,, गत ५ वीं ताल चौताला ...	,,
रागिनी तोडी १ (स्वरूपादि वर्णन) ...	१६३
,, गत १ ली	१६४
,, गत २ री	,,
,, गत ३ री	१६५
,, गत ४ थी ताल ब्रह्म	१६६
रागिनी गौरी या गोडी २ (स्व० वर्णन)	१६६
,, गत १ ली	१६७
रागिनी गुणकली ३ (स्वरूपादि वर्णन)	१६८
,, गत १ ली	१६९
रागिणी खंबावती ४ (स्वरूपादि वर्णन)	,,
,, गत १ ली	१७०
,, गत २ री	१७१
,, गत ३ री. ताल सूलफाख्ता ,, ...	,,
रागिनी ककुभ ५ (स्वरूपादि व०) ...	,,
,, गत १ ली. ताल झप	१७२
पाठ तीसरा.	
३ राग हिंडोल (स्व० व०) ...	१७३
,, गत १ ली	१७४
,, गत २ री	१७५
,, गत ३ री	१७६
,, गत ४ थी. ताल सवारी ...	१७७
रागिनी रामकली १ (स्वरूपादि वर्णन)	,,
,, गत १ ली	१७८
,, गत २ री	१७९
रागिनी देशाख्य २ (स्वरूपादि वर्णन) ...	१८०
,, गत १ ली	१८१
रागिनी ललिता ३ (स्वरूपादि वर्णन)	,,
,, गत १ ली	१८२
,, गत २ री	१८३
रागिनी बिलावल ४ (स्व० व०) ...	,,
,, गत १ ली	१८४
रागिनी पटमंजरी ५ (स्व० व०) ...	१८५
,, गत १ ली	,,
पाठ ४ चौथा.	
४ राग दीपक (स्वरूपादि वर्णन) ...	१८६
,, गत १ ली	१८७

विषय.	पृष्ठ.
रागिणी नट १ (स्वरूपादि वर्णन) ...	१८८
,, गत १ ली. ताल चौताला ...	१८९
रागिनी केदारी २ (स्वरूपादि वर्णन)	१९०
,, गत १ ली	,,
,, गत २ री	१९१
,, गत ३ री	१९२
रागिनी कान्हडी ३ (स्वरूपादि व०)...	१९३
,, गत १ ली	१९४
,, गत २ री	,,
रागिनी देशी ४ (स्वरूपादि वर्णन)...	१९५
,, गत १ ली. ताल तिताला ...	१९६
रागिनी कामोदी ५ (स्व० व०) ...	१९७
,, गत १ ली. ताल कोकिला ...	,,
पाठ ५ पांचवां	
५ श्रीराग (स्वरूपादि वर्णन) ...	१९८
,, गत १ ली	१९९
,, गत २ री. ताल कोकिला ...	२००
रागिनी वसंती १ (स्वरूपादि व०) ...	२०१
,, गत १ ली	२०२
,, गत २ री	२०३
रागिनी आसावरी २ (स्व० व०) ...	,,
,, गत १ ली	२०४
रागिनी मालवी ३ (स्व० व०) ...	२०५
,, गत १ ली. ताल आडा चौताला	२०६
रागिनी धनाश्री ४ (स्व० व०) ...	२०७
,, गत १ ली.	२०८
,, गत २ री ताल आडा चौताला	,,
रागिनी मालश्री ५ (स्व० व०) ...	२०९
,, गत १ ली	,,
पाठ छठवां.	
६ राग मेघ (स्व० व०)... ...	२१०
,, गत १ ली	२११
,, गत २ री. ताल ब्रह्म ...	२१२
रागिनी टंकल १ (स्वरूपादि वर्णन)...	२१३
,, गत १ ली. ताल चौताला ...	,,
रागिनी मल्हारी २ (स्वरूपादि वर्णन)	२१४
,, गत १ ली	२१५
रागिनी मल्हारी गत २ री	२१५
रागिनी गुर्जरी ३ (स्वरूपादि वर्णन)...	२१६
,, गत १ ली	२१७
,, गत २ री	,,
रागिनी भूपाली ४ (स्वरूपादि वर्णन)...	२१७
,, गत १ ली	२१८
,, गत २ री	२१९
,, गत ३ री. ताल एक ताला ...	२२०
रागिनी देशकारी ५ (स्वरूपादि वर्णन)	२२०
,, गत १ ली. ताल तीव्रा ...	२२१
पाठ सातवां	
अन्य ८१ रागोंका संक्षिप्त हाल.	
राग पंचम १, देवगंधार २, करनाट ३.	२२२
जौनपुरी तोडी ४, लाचारी तोडी ५.	,,
पलाशिका ६, सारंग ७, गौड सारंग ८.	,,
वृन्दावनी सारंग ९, ...	,,
सामत सारंग १०, नूर सारंग ११. ...	२२३
देवगिरी सारंग १२, मेघ सारंग १३.	,,
लंकदहन सारंग १४, सोरठ १५.	,,
गौड मल्हार १६, मियानी मल्हार १७.	,,
काफी १८, तिलंग १९, जंगला २०.	,,
मांढ २१, ...	,,
पीलू २२, हिजाज २३, मधुर २४.	२२४
देशीजिला २५, जैतश्री २६, बरवा २७.	,,
मारवा २८, रायसा २९, सिंदूरा ३०.	,,
सुरपर्दा ३१, धानी ३२, दीपकी ३३.	,,
पूर्वी ३४, रैनकी पूर्वी ३५, ललितगौरी ३६.	२२५
त्रिवेणी ३७, शुक्लबिलावल ३८.	,,
देवगिरी बिलावल ३९, नटबिलावल ४०.	,,
छायानट ४१, हमीरनट ४२, केदारनट ४३.	,,
झिंझोटी ४४.	,,
कल्याण ४५, यमन कल्याण ४६.	२२६
हमीरकल्याण ४७, पूर्वीकल्याण ४८.	,,
भूपाली कल्याण ४९.	,,
बाघेश्वरी (बागेश्री, बागेसरी) ५०.	,,
अड़ाना ५१, शहाना ५२, ब्रह्मावर्त ५३.	,,
भूप ५४, दर्बारी कानड़ा ५५.	,,
अड़ाना कानड़ा ५६.	,,

विषय.	पृष्ठ.
नायकी कानड़ा ५७.	२२७
काफी कानड़ा ५८, शहनाकानड़ा ५९.	,,
सूहा कानड़ा ६०, रायसा कानड़ा ६१.	,,
बहार कानड़ा ६२, कौशिक कानड़ा ६३.	,,
गारा कानड़ा ६४, सुघराई कानड़ा ६५.	,,
सिंदूरा कानड़ा ६६, चांदनी केदार ६७.	,,
जलधर केदार ६८, कालिंगड़ा ६९.	,,
परज कालिंगड़ा ७०, जोगी कालिंगड़ा ७१.	,,
शंकरा ७२, शंकरानंद ७३, ...	२२८
जयजयवंती ७४, बहार हिंडोल ७५.	,,
परज ७६, विहंग ७७, सोहनी ७८.	,,
बिहाग ७९, षट् ८०, विभास ८१.	,,

पाठ आठवां.

एकही गत पांच रागों व पांच तालोंमें

गत १ ली राग विभासमें. ताल झप ...	२२९
,, दूसरे (सारंग) रागमें ...	२३०
,, तीसरे (मालकंस) रागमें. ...	२३१
,, चौथे (हिण्डोल) रागमें, ताल सवारी	,,
,, पांचवीं (भूपाली) रागिनीमें ताल एक ताला	,,
गत २ री हंसध्वनी रागमें. ताल धमार	,,
,, दूसरे (पूर्वी) रागमें. ताल आडा चौताला ...	२३२
,, तीसरी (भैरवी) रागिनीमें. ताल रूपक	२३३
,, चौथे (भैरव) रागमें. ताल तीव्रा	,,
,, पांचवीं (तोडी) रागिनीमें. ताल ब्रह्म	,,

तीसरी व चौथी गत तीन रागों व तीन तालोंमें.

गत ३ री यमन रागमें ताल तिताला ...	२३३
,, दूसरे (भैरव) रागमें. ताल झप	२३५
,, तीसरे (मयूरध्वनी) राग में ताल सूलफाख्ता ...	,,
गत ४ थी भूपरागमें. ताल चौताला ...	२३६
,, दूसरे (विभास) रागमें. ताल तिताला.	२३८

विषय.	पृष्ठ.
गत ४ थी तीसरे (पूर्वी) रागमें ताल एकताला	२३९

पाठ नवाँ.

कठिन २ राग सुन्दर गमकदार प्रसिद्ध गतें.

गत १ ली राग यमन कल्याण ...	२४१
गत २ री राग यमन कल्याण ...	२४२
गत ३ री राग हमीर	२४४
गत ४ थी राग हमीर	२४५
गत ५ वीं राग छायानट	२४६
गत ६ वीं राग छायानट	२४७
गत ७ वीं राग देश	,,
गत ८ वीं राग देश	२४९
गत ९ वीं राग झिंझोटी	२५०
गत १० वीं राग सिंदूरा	३५१
गत ११ वीं राग पीलू	२५२
गत १२ वीं पीलू	२५३
गत १३ वीं राग बिहाग	२५४
गत १४ वीं राग बिहाग	२५५
गत १५ वीं राग बागेश्री (बागेसरी) ...	२५६
गत १६ वीं बागेश्री (बाघेश्वरी) ...	२५७
गत १७ वीं राग सोहनी	२५८
गत १८ वीं राग परज	२५९
गत १९वीं राग कालिंगड़ा	२६०
गतोंका बढ़ाना (उदाहरणार्थ गत)	२६०-२६१

तृतीयांक

पाठ पहिला.

छः राग और तीस रागिनियोंकी पुरानी गानेकी ३६ चार्जे.... ...	२६३

पाठ २ रा.

साहित्यविचार.

नायक. (नामभेद और लक्षण) ...	२६९
नायिका. (नामभेदादिलक्षण) ...	२७०
अन्य अष्टनायिका	२७२
नायिकालंकार वर्णन.	,,
भाववर्णन.	२७३
नवरस वर्णन शृंगार वर्णन... ...	,,
नवरस (दृष्टान्त भेदसह) वर्णन, प्रार्थना	,,

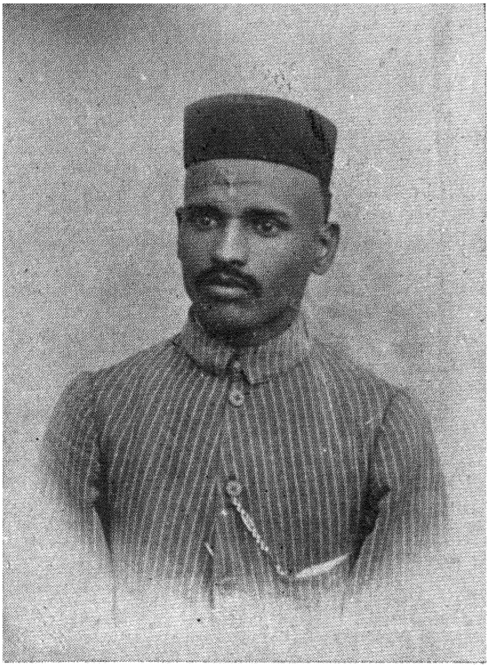

पण्डित शंकरराव शिवराम आठले.

वैद्य ब्रदर्स प्रेस.

श्रीराम.

प्रथमावश्यकीय विज्ञापना.

हे गायन—वादनाभिलाषी महाशय गण ! मेरी निम्नलिखित सविनय प्रार्थनापर एक वार तो अवश्य लक्ष्य करें. पुस्तक बड़ी देखकर आतुरतायुक्त हो घबड़ाकर यह कह देना कि यह जटिल व वाहियात है ऐसा विद्वानों, व सज्जनोंका मत नहीं है. पुस्तक आदिसे अन्ततक पहिली बार पढ़ें व फिर जब दुबारा पढ़ना आदिसे प्रारंभ करें तब उसके मतलबको समझते जावें. अंततक पढ़नेपर फिर तीसरी बार पहिलेसे पुस्तक अंततक पढ़कर उसके तात्पर्यको ग्रहण करें व उसमेंके गुण दोष जानकर उसी पुस्तकके लिखे हुए लेख या नियमानुसार बर्ताव करें अर्थात् जो उसमें कहा हो उसकी आजमाइश या अनुभव करें. यदि उससे कुछ मतलब पूर्णतया सिद्ध हो जाय तो पुस्तककी अच्छाईमें शंकाही नहीं और यदि स्वकार्य न सिद्ध हुआ तो पुस्तकपर दोषारोपण करनाभी हर्ज नहीं. परन्तु अनुभव लिये विना पुस्तकका तिरस्कार करनाही दोष है. अस्तु. प्रथम, सितार सीखनेके पहिले विद्यार्थी पुस्तकके नियम खूब ध्यानमें रखकर बर्तें, अर्थात् सितार कैसे लेना व बजानेकी बैठक कैसी रखना इत्यादिपर लक्ष्य रखे फिर सितार बजाना प्रारंभ करे. सितारपर अच्छी तरह हाथ जमनेतक व स्वरज्ञान पूर्ण होनेतक गतें बजानेका कभी प्रयत्न न करे. क्रम क्रमसेही सब काम सीखे. प्रथम सितारका पकड़ना व मिलाना व ठाट वगैरे बनालेना इत्यादि सीखलेनेपर सावकाशीसे भलीभांति केवल सप्तस्वर निकालना सीखे. जिन्हें 'सितार अच्छी रीतिसे बजाना आवे' ऐसी रुचि हो उन्हें चाहिये कि स्वरज्ञान पूर्ण होनेतक जितनीही अधिक मिहनत करें वह अच्छी. जल्दी २ लप्प लप्प भोजन करनेवालेमें व सावकाश भोजन कर-

नेवालेमें जो अन्तर है वही अन्तर जल्दी करनेवाले व सावकाशीसे सीखनेवालेमें है. भोजनको जल्दी २ निगलजानेसे अन्न पचन नहीं होता व प्रकृति कैसी बिगड़ जाती है व सावकाशके भोजनमें तबियत यथास्थित कैसी रहती है यह अनुभव शायद सभीको होगा. उसी प्रकार बालक जन्मते ही जो दौड़ने लगे तो यह बात उसे कहांतक सहाय व सुफल हो सकती है ? इसका विचार पाठकोंकोही करना चाहिये. जिस प्रकार बालक चित्त लेटी हुई दशामें पेटके बल लौटना चाहता है व कुछ दिनमें लौटकर सरकने लगता है व कुछ महीनोंके बाद बैठने लगकर खड़े होजानेका प्रयत्न करता है और कुछ दिनमें यह बात सिद्ध होनेपर जैसे आप लोग उसे उंगली पकड़कर चलाना सिखलाते हैं. तब वह स्वयंही धीरे धीरे चलने लग कर कुछ दिनोंके बाद खूब दौड़ने लगता है. इत्यादि अनेक बातें अपने सामने नित्यही दृष्टान्त व नसीहतके वास्ते मौजूद भी रहनेपर हम सब उनकी तरफसे दुर्लक्ष्य करते हैं; इस कारण अपने कई कार्य नुकसान होकर पूर्ण सिद्ध नहीं होते व पीछे पछताना पड़ता है. अतएव, ऊपर कहेहुए दो विषयोंका प्रत्येकने विचार करके सीखनेके काममें बिलकुलही धांदलबाजी व शीघ्रता न करनी. यदि ऐसा किया तो ज्यों दो महीनेका बालक एक दम दौड़नेका आरंभ करनेसे मुँहके बल गिर पड़कर हाथ पैर व शिरमें भयंकर दुखापत कर-लेगा, उसी प्रमाणसेही सितार बजाना सीखनेवालेकोभी होना संभव है. इससे सब बातें क्रम क्रमसेही सीखनी चाहिये जिससे सीढ़ी बसीढ़ी चढ़कर जानेके मानिंद आप सर्व सितार-केही मानों किसी महलके सतखंडेपर पहुँच जायँगे. विशेष क्या. इति शुभम्.

आपका पुस्तककर्ता—

पं. शंकरराव शिवराम आठले,

श्रीलक्ष्मीनारायणका मंदिर, उरई.

श्रीराम.

मंगलाचरणम् ।

॥ ॐ नमः श्रीकृष्णगुरवे वासुदेवाय धीमहि ॥
॥ यो नो धीर्मेरयेत्सो सरामोऽवतुवत्सदा ॥ (१)

श्री १०८ श्री सच्चिदानंद परब्रह्म परमात्मा सर्वव्यापी जगदाधार सर्वान्तर्यामी श्रीमल्लक्ष्मीनारायण कनकादित्य कुलस्वामी श्रीसीतारामचन्द्र भवानीशंकर प्रमुख पंचायतन देवता श्रीमत् परमहंस परिव्राजक सद्गुरु स्वामी **वासुदेवानंद** स्वरस्वती महाराज और माता, पिता व सर्व ब्राह्मणादि गुरुजन साधु सज्जन महात्माओंके चरणकमल कृपादृष्टि व आशीर्वादसे ऐसा सुयोग्य सुअवसर निर्विघ्न प्राप्त हुआ कि आज यह **सितारचन्द्रोदय** पुस्तक सितारके प्रेमी जनोंके करकमलमें हस्तामलकवत् प्राप्त होतेही मनोभिलषित कार्य सुफल होकर, मेरा उत्साह अधिक बढ़ेगा.

हे ईश्वर ! जो तू सितार सीखनेवालों और सितार बजानेवालोंके उत्साह, प्रेम और इच्छाको नित्य प्रति दिन दूना रात चौगुना बढ़ाता जावे तो मैं आशा करता हूं कि तेरी कृपाही से यह तेरी प्रेरित पुस्तक अवश्यही अजरामर बनी रहेगी.

हे प्रभो ! मैं केवल कारण मात्र हो, लेखनी ले, लेखक बन, तेरीही प्रेरणानुसार लिखता गया हूं. अब इसकी पत रखना पतिके ही अर्थात् तेरेही अधीन है. मैंभी तेरा, यह पुस्तक भी तेरी और पतभी तेरी और यह सर्व संसारभी तेराही है. इससे हे सर्वपति भगवन् ! तव चरणारविंदोंमें मेरा साष्टांग नमस्कार स्वीकार हो और मेरे सर्व दोष क्षमा हों. इत्यलम्.

पं. शंकरराव शिवराम आठले.

अर्पण-पत्रिका.

सुप्रसिद्ध पुस्तकप्रकाशक व परोपकारी स्व० श्रीयुत पं. हरिप्रसाद भगीरथजी की दूकानके मालिक--पं. सेठ व्रजवल्लभ हरिप्रसादजीके पास मैंने यह पुस्तक देखने व पसंद करानेके अर्थ भेजी थी. उक्त पंडितजीने इसे देखकर पसंद की व इसको छपाकर प्रसिद्ध करनेका वायदा पत्रद्वारा मुझे कर दिया. अतएव, इसका सब प्रकारका स्वत्व उक्त पंडितजीके कर-कमलमें सादर समर्पण कर दिया है.

उक्त सर्वगुणसम्पन्न पंडितजीने जिस प्रकार अनेक विधि सन्मानादिसे हमारी निर्माण की हुई पुस्तकको छपाकर हमारा उत्साह बढ़ाया है, उसी प्रकार उनके धन धान्य पुत्र संपदा और सुखकी वृद्धि हो यही ईश्वरसे हमारी प्रार्थना है.

शेषमें सज्जन पाठकवृन्द महाशयोंसे प्रार्थना है कि जो कहीं इस पुस्तकमें त्रुटि रह गई हो तो अपनी उदारतासे क्षमा कर हंसके समान गुणग्राही होंगे. यदि विद्यार्थियोंको इससे कुछ लाभ होगा तो मैं अपना परिश्रम सफल जानूंगा.

पुस्तककर्ता-पं. शंकरराव शिवराम आठले.

प्रस्तावना.

सुखिनि सुखनिधानं दुःखितानां विनोदः
सद्यहृदयहारी मन्मथस्याग्रदूतः ।
अतिचतुरसुगम्यो वल्लभः कामिनीनां
जयति जयति नादः पञ्चमश्चोपवेदः ॥ १ ॥
वीणावादनतत्त्वज्ञः श्रुतिजातिविशारदः ।
तालज्ञश्चाप्रयासेन मोक्षमार्गं प्रयच्छति ॥ २ ॥

शं (सुख) कर देनेवाली ऐसी यह एक संगीतही सुंदर व मनोमोहक कला है. इसमें जो एक अप्रतिम व मनोवेधक ऐसी नैसर्गिक शक्ति है, वह कितनी आल्हादजनक है इसकी कल्पना अनुभव विना नहीं होसकती. जिसको संसारकी किसी वस्तुका भी ज्ञान नहीं ऐसा जो केवल अज्ञानी बालक वहभी यदि रोरहा हो तो गान सुनकर हर्षित होता है. उसीप्रकार तृण मांस वायुभक्षक पशुभी गानलुब्ध होकर कभी कभी प्राणोंसे भी हाथ धो बैठते हैं. इतनाही नहीं, परन्तु सर्पसे दुष्ट व विषारी प्राणीभी मधुरध्वनि सुनकर तटस्थ हो जाते हैं. यथाः—

दोलायां शायितो बालो रुदन्नास्ते यदा क्वचित् ।
तदा गीतामृतं पीत्वा हर्षोत्कर्षं प्रपद्यते ॥
मृगः सोऽपि तृणाहारो विचरन्नटवीं सदा ।
लुब्धकादपि संगीतं श्रुत्वा प्राणान्प्रयच्छति ॥
क्रुद्धो विषं वमन्सर्पः फणामान्दोलयन्मुहुः ।
गानं जाङ्गलिकाच्छ्रुत्वा हर्षोत्कर्षं प्रपद्यते ॥ सं. पारिजात.

" Music hath Charms to soothe the savage breast,
" To soften rocks or bend a knotted oak,
" I have read the things inanimate have moved,
" And as with living souls, have been informed,
" By magic numbers and peruasive sound. "—

Congreve.

कहातक कहाजाय. ये तो जंगमादिकही हैं, परन्तु पत्थरभी पिघल जाता है, सूखा वृक्ष हरा हो जाता है, कोल्हू बिन बैल चलने लगता है, दीप प्रज्वलित हो जाते हैं, मेघ वर्षने लगता है, हिंडोला झूलने लगता है, इत्यादि स्थावरादिकभी लुब्ध हो जाते हैं. इस संगीतके गुणोंकी प्रशंसा जितनी की जाय उतनी ही थोड़ी है. यह नाद ब्रह्म ही है. इसका जाननेवाला केवल एक निर्गुण ब्रह्म या वही सगुण ब्रह्मा विष्णु महेशरूपधृक् प्रभु ही है और संपूर्णतया वही जानता है. यहांतक कि सरस्वतीजीने स्वशक्तिसे इस नादब्रह्म सिंधुके पार होना चाहा, परन्तु जबतक इन्हें अपने पार हो जानेका अभिमान था तब तक गोते ही लगाती रहीं, पर जब स्वपराक्रमसे निराश हुईं तब उसी करुणासिंधु भगवान् ही की शरण गही. तब भगवान्ने अपने युगलचरणकमलरूप दो तोंबेवाली वीणारूप नौका देकर पार कराया. फिर उसी प्रभुने शब्दब्रह्मसिंधुके पार कर देनेके लिये इन्ही सरस्वतीजीको मल्लाह बनाया. इस आदिशक्ति जगन्माताकी कृपा विना भवपार होना असंभव है. शब्दब्रह्मसिंधुके गुण वर्णन करनेको तो क्या कहाजाय परन्तु पार करा देनेवाले मल्लाहहींके गुणोंका जानना अशक्य है. अतएव, यथाशक्ति जैसे आकाशमें मच्छर उड़कर व समुद्रके तटस्थ मनुष्य जलमें तैरकर स्वचित्तको यथारुचि आनंद प्राप्त कर लेते हैं उसी प्रकार यह मेरा संगीतकी प्रशंसा करना है. अस्तु.

गायन यह जैसा मनोरंजक वैसा परमोपयोगी भी है. शरीर–सौख्यार्थ गायनसे आत्माको सदा संतुष्ट रखना चाहिये ऐसा **जोन्स** व **मिल्टन** आदिका कहना है. ज्ञानतंतु क्षुब्ध होनेसे प्राप्त होनेवाली यातना व तज्जन्य रोग निवारणार्थ वर्तमान समयमें यूरोप खंडमें कई डाक्टर लोग गायनका उपयोग करने लगे हैं.

दूसरे ईश्वरकी आराधना करनेके लिये गायन यह एक उत्तम साधन है व अपने भारतवासी जन इसी साधनका अत्यानंद सत्य प्रेमयुक्त उपयोग करके ईश्वरकी भक्ति करते आये हैं. भगवान्ने नारदकोभी यही उत्तर दिया था कि:—

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च ।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ॥ १ ॥

अर्थात्—"भगवान् कहते हैं कि, हे नारद! वैकुण्ठमें और योगियोंके हृदयमें हम (चिरस्थायी रूपसे) वास नहीं करते, किन्तु जहां हमारे भक्तजन गायन (गुण–गान) करते हैं वहांही हमारा निवास है" ॥ १ ॥

'जिसका मन गायनके योगसे द्रवीभूत नहीं होता उससे अधिक क्रूर जगतमें दूसरा और कोई नहीं है' ऐसा जो कहा है वह कुछ असत्य नहीं है. ऐसे मनुष्यकी मनुष्यकोटिमें बिलकुल नीचे दर्जेमें गणना करनी चाहिये. यथा:–"**साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः**" अस्तु.

ऐसे इस संगीत शास्त्रका संक्षिप्त वृत्तांत क्या है ऐसी मुझे जाननेकी इच्छा उत्पन्न हुई इससे मैंने संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, इंग्रजी व महाराष्ट्र इत्यादि भाषाओंके कई ग्रंथ मँगवाये व उन सबोंका थोड़े ही में सार (तत्त्व) निकालकर एक अलग भिन्न प्रकारसे लेख तैयार किया. इस मेरे परिश्रमका लाभ मेरेसमान जो दूसरे जिज्ञासु हों उनके लियेभी प्राप्त कर देना इसी हेतुसे वह सब विषय इस पुस्तकरूपसे प्रसिद्ध किया है.

गायनकलामें प्रवीण **नबीबख्श** सारंगिया जो जिला **जालौनमें** प्रसिद्ध गवैया हैं उन्हें यह पुस्तक दिखलाई तब उन्होनें कहा कि 'इसमें का सब विषय बहुतही ठीक व यथायोग्य है, व इससे विद्यार्थियोंको तथा गवैयोंको परमोपयोग होगा.' इसके अनंतर इसमें अधिक सुधारणा की गई है. इस अवधिमें प्रस्तुत की हुई हस्तलिखित प्रति कई लोगोंके दृष्टिगोचर हुई है.

अपना संगीत कई प्रकारसे पाश्चिमात्य लोगोंकी संगीतकी अपेक्षा श्रेष्ठ व विशेष खूबीदार है. परन्तु, उसमें एक बड़ी भारी कमी है, वह; रागलेखन अथवा जिसे इंग्रेजीमें नोटेशन कहते हैं. यूरोपियन लोगोंका गायन सादा होनेसे उसका लेखन सहजमें हो सकता है व उसपरसे कोई भी वह राग हूबहू लेखनानुसार गाया जा सकता है. यह प्रकार अपने यहां भी केवल सितारपरसे सरिगम और गतोंका है अर्थात् इसका लेखन हो सकता है. अपने देशमें जो नामी गवैया हो गये हैं व जो हालमें हैं उनका गाना यदि हूबहू लिखकर रक्खा जा सकता तो बहुत ही अच्छा होता. परन्तु रागलेखनपद्धतिके अभावके कारण कैसाही उत्तम गवैया हो उसकी मृत्युके अनंतर, अपने व उसके गायनजन्य आनंदका कायमका वियोग होही जाता है. सादे गानेका तो लेखन हो भी सकता है, पर तान, पल्टा, आलाप, गमक, खटका, पुकार इत्यादिके योगसे जो सुंदर काम किया जाता है उसका संपूर्ण लेखन बहुत जटिल व कठिन होगा. मेरे जानमें यदि किसी एक उत्तम गवैयेकी दो तीन चीजोंका लेखन करतेही बने तो उसीकी एक पुस्तक होजायगी. कई विद्वानों व गुणी जनोंने राग-लेखन करनेका प्रयत्न किया, परन्तु अमीतक कोई फलीभूत नहीं हुआ. अस्तु, कुछ हर्ज नहीं. प्रयत्न तो करतेही रहना चाहिये. कभी न कभी अवश्य ही श्रम सुफल होगा ऐसा परोपकारी, गुणी, विद्वानोंको धीरज व संतोष रखना चाहिये.

मैंने सर्व पुस्तकोंका सार संग्रहकर अन्य सज्जन गुणग्राहक व इस विद्याके सीखनेकी इच्छा रखनेवालोंकी सेवाके वास्ते ही लिखकर पुस्तकरूपसे प्रसिद्ध किया है. और, इसका मुख्य कारण भी यही है कि, मेरी बाल्यावस्थासे ही इस कलाके सीखनेकी बड़ी रुचि थी, परन्तु किसी इच्छाका पूरा करना ईश्वराधीन है. इस भारत वर्षमें गाने बजानेके योग्य बीना, बीन, सितार, कछवा, सारंगी, सूरशृंगार, रबाब, दिलरुबा, सरोद, ताऊस, स्वरमंडल, जलतरंग,

तंबूरा, मृदंग, तबला, सनई, अलगुजा, वेणु, बांसरी, पावा, मुखवीणा, शंख, मोरचंग, सुर या-श्रुति, नागसूर, पुंगी, कना, तुतारी, सींग, सुरसोटा, तुंतुना, टिपरी, ढोलक, खंजरी, झांझ, मंजीरा, करताल, ताल, तास, धायरा, चिकारा, एकतारा, किन्नरी, किंगरी, चौड़क, चौघड़ा, नगारा, नौबत, संबळ, भेरी, चिपळी, डमरू, डफ, कुडकुडे, तिमरी, ताशा, मरफा, ढोल, घटवाद्य, इत्यादि प्रसिद्ध वाद्य हैं. परन्तु इन सबोंमेंसे मेरी रुचि सितारपर विशेष रही. और यह सितार वाद्य दर अस्लमें है भी ऐसा कि इसे श्रीमान् धनी, निर्धनी; राव, रंक; अमीर, गरीब; ऊंच, नीच; राजा, फकीर; ब्राह्मण, शूद्र; पुरुष स्त्री; जैंटिलमैन, लेडी इत्यादि सब बजा सकते हैं. सबको उपयोगी व आनंददायक है. बहुमूल्य व अल्पमूल्य भी है. कमकीमत बालानशीन. तिसपर अधिकता यह कि इसको बजाते हुए किसी वस्तुकी आवश्यकता नहीं रहती, जैसे और सब बाजोंमें रहती है. किसीमें गानेकी; किसीमें गानेवालेकी, किसीमें तालकी, किसीमें सुरकी, किसीमें सुननेवालेकी, किसीमें सुनानेवालेकी गरज पड़ती है. इसमें यह नहीं पड़ती. अगर गाना नहीं आता या तालके वास्ते तबला मंजीरा न हो तो कुछ हर्ज नहीं सिर्फ सितारकी गतें जो तालसुरोंमें बांधी गई हैं उन्हीको बजाकर आनंद प्राप्त कर सकते हैं. और गायन जो वह विना किसी भारी गुणीके पास दस बारा वर्ष सीखे आ नहीं सकता. और मुख्य इसका सिखानेवाला भी ऐसा होना चाहिये जो उसके सब अवयवोंको और उसके गुणागुणोंको भले प्रकार जानता हो व निर्दोष रीतिसे गायन करनेवाला हो. ऐसा शिक्षक मिलना अति कठिन है. वैसे तो घर घर गवैये बहुतसे हैं. रोना, गाना, चिल्लाना किसे नहीं आता, भैंस भी सुरसे रेंकती है. मेरी समझमें पूर्ण गवैया होना तो कठिनही है. यह बात एक ईश्वर ही की पूर्ण कृपासे प्राप्त हो सकती है. योगी, राजा, गवैया, इत्यादि ये एकही श्रेणीके, विष्णु, शिवादि अंश होते हैं. गवैया भी वही हो सकता है जिसमें निम्नलिखित गुण हों. यथाः—

गुण.

सुस्वरं सुरसं चैव सुरागं मधुराक्षरम् ।
सालङ्कारं प्रमाणं च षड्विधं गीतलक्षणम् ॥
स्वरेण पदसंयुक्तं छन्दसा च सुसंयुतम् ।
सुपात्रं च सुतालं च सुगीतं तेन गण्यते ॥ इत्यादि.

और उसमें यह दोषभी न होने चाहिये. यथाः—दोष.

कम्पितं भीतमुद्घृष्टमव्यक्तमनुनासिकम् ।
काकस्वरं शिरस्थं च तथा स्थानविवर्जितम् ॥

विस्वरं विरसं चैव विश्लिष्टं विषमाहते ।
व्याकुलं तालहीनं च गातुर्दोषाश्चतुर्दश ॥ इत्यादि.

ऐसा गवैया हर एकको घर २ कहां मिल सकता है; और अपने मनको आनंद गायन वादनही द्वारा प्राप्त करलेनाभी हो, तो ऐसी अभिलाषा पूर्ण करनेवाला एक सितार वाद्य ही है, जिसमें ये कोई झगडे या झंझट नहीं हैं. इस सितारद्वारा एकान्तमें केवल अकेला एक ही पुरुष वही आनंद ले सकता है जो कि समाजमें बहुतसे लोगोंके साथमें मिल सकता हो. ऐसा यह अमूल्य सितार वाद्य है. और, मेरी समझमें नब्बे फी सदी इसी बाजेको सीखना लोग पसंद करते हैं. क्योंकि, थोडी कीमतमें मोल लिया, यदि सीख गये तो वाह वाह, कुछ कहना ही नहीं. न सीखे तो कुछ नहीं. दो ढाई ही रुपयेका जुआं खेला. पचास २, सौ २, दो २ सौ रुपये तो बचेंगे. और, लावेंभी कहांसे? "न लड़का दिया कहे न घर सोना होय." अथवा 'चाह तो अमृतकी पर छांछ भी मिले नहीं.' अस्तु.

ऐसे सर्व गुणयुक्त सितारकी बड़ाई थोड़ी ही है.

किसी बातका इश्क हो, उस बातके पूरा हो जाने तक वह मनुष्यको पागल बनादेता है. मैंने जिस समयसे इसे सीखना चाहा था तबसे सीख चुकनेतक बड़े बड़े संकट प्राप्त हुए. पहिले कोई सिखानेवाला ही न मिला. गरीबको हरतरहसे आफत. रुपया नहीं तो कुछ नहीं. अस्तु, मैने सब संकटोंको सिरपर झेलकर लुढकते पुढ़कते इस सितारको सात आठ वर्षमें सीखपाया. परन्तु, उन संकटोंकी चोट मेरे हृदयमें लगी रही. बस, यही कारण पुस्तकके लिखनेका मूल हुआ.

अमीर लोग तो द्रव्य देकर सिखलानेवालोंको नौकर रखकर उनसे सितार सीख सकते हैं व निर्धनी जो शूद्रादि उनसे हीन हैं वे सेवा करके उनसे सितार सीख सकते हैं. पर, वे जो उच्चजातिके हैं व अच्छे घरानेके या खान्दानी हैं और यदि द्रव्यहीन हैं, व प्रतिष्ठित भी हैं तो उनको सितार सीखनेमें निराश ही होना पड़ता है. और सितार सिखलानेवाले भी इस प्रकारके बहुतसे हैं कि १० या बारह या जो कुछ ठहर जावे, मासिक वेतन बांधकर जागीरकी तरह लगालेते हैं; परन्तु बतलानेको तो कुछभी नहीं. डर यही है कि जो कुछ मुझे आता है सब सीख न जावे, नहीं तो मुझे कोई न पूंछेगा. या एकाधी गत साल भरमें सिखादी तो खैर है. आप अपने अफीमके नशेमें चूर हैं और इस बातका भी डर मनमें रखते हैं कि जल्द सीखलेनेपर मुझे 'गच्छताम्' की आज्ञा देदेवे, तो फिर कहां यह आनंद धरा है. या कोई कोई ऐसेभी हैं कि फोकटमें भी बतावेंगे पर बशर्ते कि सीखनेवाला उनके

घरका हिंडोला बने. तिसपरभी, लापरवाही व ऐंठके साथ. ऐसे अनेकों संकटोंके कारण कई सभ्य सज्जन विद्वान् जैंटिलमैन इत्यादि सितार सीखनेकी इच्छा कर करके निराश हो बैठे व हो बैठते हैं.

इन सब संकटोंके दूर करनेके वास्ते कई विद्वानोंने व गुणी जनोंने अपने आप पुस्तक द्वारा सितार सीखनेके लिये अपने २ ढंगसे कई पुस्तकें बनाईं. सितार सीखनेकी पुस्तकें तो बहुतसी छपी हैं और अत्युत्तमभी हैं. परन्तु, उनपरसे नवीन सितार सीखनेवाला विद्यार्थी कुछ नहीं सीख सकता है. कारण वे पुस्तकें उसके लिये ऐसी हैं, यथा पहिले दर्जेके विद्यार्थी बालकको बी. ए. का कोर्स हो. सितार सीखनेवाला जब प्रथम किसी उस्तादसे सितार बजाना सीख चुकता है तब उसके ध्यानमें उन पुस्तकोंका लेख आता है. इन सब संकटोंको दूर करनेके हेतुसे व किसी प्रकार लोक व देशसेवा करनेकी इच्छासे यह पुस्तक मैंने लिखी.

प्रत्येक कला संपादन करनेके दो मार्ग होते हैं. एक तो उस विषयका शास्त्रीय ज्ञान व दूसरा उसका व्यावहारिक ज्ञान अथवा प्रत्यक्ष अनुभव. इनको क्रमानुसार विद्या व कला कहते हैं. इसी प्रकार संगीतके भी दो मार्ग होते हैं. राग, ताल, स्वर, नायिका, रस व समय इत्यादिकोंके नियमानुसार कोईसी एक चीज तयार करना यह संगीत–विद्या है और उसीके मुताबिक गाना, बजाना व नृत्य करना यह संगीत कला है. यथाः–**'गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीतमुच्यते'** अर्थात् गाना, बजाना व नाचना इन सबोंको संगीत कहते हैं. कारण कि गायनके योगसे राग, वाद्यके योगसे ताल व नृत्यके योगसे भाव इत्यादिका स्वरूप प्रकट होता है. प्रस्तुत पुस्तकमें इनमेंसे फक्त गीत यानी गाना अर्थात् रागविचार व उनके स्वरोंद्वारा सितार परसे बजानेकी गतोंका प्रकार लिखा है.

मैं स्वतः कुछ संगीत–शास्त्रवेत्ता अथवा बड़ा गवैया नहीं हूं व ऐसा प्रसिद्ध करने व कहलानेकी मेरी तिलप्राय योग्यता या इच्छा भी नहीं है, तिससे यह पुस्तक इस उद्देशसे बिलकुल प्रसिद्ध न करके, यह केवल एक संगीत–शास्त्रके व सितार वाद्यके विद्यार्थीने अनेक ग्रंथों परसे बड़े परिश्रमसे प्राप्त किया हुआ विषय व सितार सीखनेकी सुगम युक्ति, वर्षोंका काम महीनोंमें व संकटोंमें प्राप्त होनेवाले कामकी सरलतामें प्राप्त होनेकी युक्तियोंका संग्रह पुस्तक रूपसे, उसीके समान अन्य दूसरे विद्यार्थियोंके वास्तेही प्रसिद्ध किया है.

मुझे जहांतक इस विषयका हाल मिला वह सब यथामति मिलाकर प्रसिद्ध किया है. पर, उसका अव्यवस्थित होना संभव है, व उसमें अशुद्धियांभी होंगी, उसी प्रकार कितनेही विषयोंमें मतभेद भी हो सकेगा. परन्तु उन सबोंकी बाबत, क्षमा करके जिनको जो भाग उपयुक्त जानपड़े वह उन्होंने लेना ऐसी मेरी सविनय प्रार्थना है.

इस पुस्तकमें १ **एशियाटिकरिसार्चिस्** (सर विलियम जोन्स कृत). २ **हिन्दूम्यूझिक** (रा. रा. सहस्त्रबुद्धे). ३**बंसीरागमाला** (कविलोकनाथकृत). ४ **संगीतादित्य** (प्रो. आदित्यरामजी).५ **संगीतानुभव** (प्रो. मौलाबख्श). ६ **नादलहरी** (रा. रा. गणपतराव बर्वे) ७ **रागस्तान.** ८ **च्यमनएबेनजीर.** ९**गुंचएराग.** १०**गायन—दर्पण** (रा.रा. नरहरराम मुंशी) ११ **सकलशास्त्र—निरूपण** (कवि दलपतराम.) १२ **रस—प्रबोध.** (रा. रा. माकोंडे) १३ **रागविलास** (माळवे.) १४ **स्वरतालसमूह.** १५ **नारदीयशिक्षा** १६ **तंतुवाद्य.** १७ **वीणाप्रकाश.** इत्यादि पुस्तकोंका आधार लिया है. अत एव, उनके कर्ताओंको कोटिशः धन्यवाद देता हूं व अपने धार्ष्ट्यकी क्षमा चाहता हूं. जिस प्रकार राजाओंके बांधे हुए नदीके पुलोंपरसे चींटी नदीके पार होकर स्वइच्छापूर्वक आनंद प्राप्त करती है उसी प्रकार यहांपर मेरीभी दशाको सर्व ग्रंथकार लोग जानकर व इसे अंगीकार कर क्षमा प्रदान करें.

जिसप्रकार चन्द्रमाके उजेलेसे रात्रिमें सूझने लगता है अथवा चन्द्रोदय रसायनसे वातादि दोष दूर होते हैं व शरीर सशक्त होता है उसी प्रकार इस पुस्तकसेही सितारकी सब कठिनाइयां व विद्यार्थियोंके सीखनेमें बाधा डालनेवाले संकट रूप दोष दूर हो कर सितार सीखलेना रूप शक्ति प्राप्त होगी अत एव, इस पुस्तकका नाम " **सितार—चन्द्रोदय** " **रक्खा** है. इसके दो भाग किये हैं.

जिस प्रकार वर्णमाला, बाराखड़ी आदिका बोध बालकोंको हो जाने पर फिर अन्य देवनागरी भाषा मात्रकी पुस्तकोंका पढ़ डालना सुलभ हो जाता है, उसी प्रकार केवल इसी एक पुस्तकही से परिश्रम सह लिखे अनुसार अभ्यास करनेसे विद्यार्थी व सितारके आनंद इच्छुक जन मनोभिलषित आनंद प्राप्त कर लेवेंगे.

हे गायन वादनाभिलाषी जनो ! इस पुस्तकमें जो २ जैसे २ गुण हैं, मुझे उनकी प्रशंसा करना ' मानों अपने मुह मियां मिट्ठू ' बनना है और वह अति निरर्थक है. आपके हस्तकमलमें जो यह पुस्तक शोभित हो रही है तो आप स्वयं अनुभव कर परिश्रम पूर्वक सफलता प्राप्त करके यशध्वज फहरावेंगे तब मुझे स्वयं मेरा भाग आपही आप मिल जावेगा.

इसी पुस्तकपरसे विशेष बुद्धिमानीसे हार्मोनियम, जलतरंग आदिकभी सीख सकेंगे.

सितारकी पुस्तकें बहुत छपी हैं परन्तु ऐसी अपूर्व, गुणद व उपयोगी पुस्तक एकभी नहीं छपी. अनुभव आप विश्वास करादेगा.

हे सितारके प्रेमी जनो ! आप इस पुस्तकका यथा योग्य उपयोग करके मेरा परिश्रम सफल करेंगे यही आशा है व यही प्रार्थना है कि अवश्य मेरे परिश्रमका भाग प्रदान करें. शुभं भवतु.

बहुत क्या लिखूं, इत्यलम्.

उरई.
ता. १३ मई सन् १९१२ई.

आपका—पुस्तककर्ता.
पं. शंकरराव शिवराम आठले.

ॐ श्रीराम.

श्रीगणेशाय नमः ।

सितार-चन्द्रोदय.

भाग पहिला.

प्रथमांक.

संगीत-शास्त्रका संक्षिप्त वृत्तांत.

प्राचीन कालमें इस भरतखंडके ऋषियोंको संगीत-शास्त्रका भली भाति ज्ञान था, यह बात उस समयके ग्रंथोंसे जो हालमें उपलब्ध हुए हैं विदित होती है. वेदोच्चार भी गायनके नियमानुसार करनेमें आता था. सामवेद यह गायनमय है. उसमें संगीतका हाल दिया हुआ है. उसको गांधर्व वेद अथवा नाद वेद कहते हैं. यह ब्रह्मदेवसे सरस्वतीको-स्वरस्वतीसे नारदको व नारदसे भरतको प्राप्त हुआ फिर भरतने इसका सर्वत्र प्रसार किया. पूर्व समयमें गानेके तीन प्रकार थे. * १ आर्चिक, २ गाथिक, ३ सामिक. आर्चिक यह एक स्वर लेकर गानेका प्रकार. गाथिक दो स्वरोंसे. और सामिक तीन स्वरोंको लेकर गानेका प्रकार है. फिर स्वरान्तर अर्थात् चार स्वरोंसे गानेकी तदनंतर सामगान अर्थात् [सा-री-ग-ध-नी] इन पांच स्वरोंसे गानेकी पद्धति निकली, फिर अन्तमें सप्त स्वरोंकी योजना करनेमें आई और † उदात्त, अनुदात्त और स्वरित इन तीन प्रकारके स्वरोंमें सब स्वरोंका समावेश करनेमें आया. ‡ निषाद व गांधार ये दोनो उदात्त स्वर, ऋषभ व धैवत ये दोनो अनुदात्त और षड्ज, मध्यम व पंचम ये तीनों स्वरित स्वर हैं ऐसा **पाणिनिने शिक्षामें** कहा है. प्रथम षड्ज फिर पंचम व तदनंतर [दूसरे षड्ज स्वरकी योजना करके] बाकीके पांच स्वर उपस्थित किये गये. सामवेदमें इस गांधर्व वेदके चार प्रकार कहे हैं. १ गेयगान २ अरण्यगान ३ ऊहगान ४ उह्यगान. गांधर्व वेद पर पहिले **शैलाली, भृषस्व, ईश्वर, पवन, कालीनाथ** व **नारद** इन ऋषियोंने ग्रंथ बनाये. इनमेसे पहिले दो

---

* आर्चिकं गाथिकं चैव सामिकं च स्वरांतरम् । कृतांते स्वरशास्त्राणां प्रयोक्तव्यं विशेषतः ॥
एकान्तरः स्वरो ह्यक्षु गाथासु द्व्यन्तरः स्वरः । सामसु त्र्यन्तरं विद्यादेतावत्स्वरतोन्तरम् ॥

† उच्चैरुदात्तः, नीचैरनुदात्तः, समाहारः स्वरितः ।

‡ उदात्ते निषादगान्धारावनुदात्ते ऋषभधैवतो । स्वरितप्रभवा ह्येते षड्जमध्यमपञ्चमाः ॥

ऋषियोंके ग्रंथोंपर **शंकुक**, **भट्ट लोल्लट**, **भट्ट नायक**, **अभिनवगुप्ताचार्य** व **आनंद-वर्धनाचार्य** इन्होंने भाष्य लिखे. इनके अतिरिक्त **मतंग**, **कोहल**, **दंतील**. **सोमेश्वर**, **कीर्तिधर** इन्होंने इस विषयपर स्वतंत्र ग्रंथ लिखे.

इसी प्रकार **सारजदेव** व **सारंगदेव** इन्होंनेभी कुछ ग्रंथ लिखे. इसके अनंतर **स्वरराग–सुधारस**, **श्रुतिरंजनी**, **नारदीयरत्नाकर**, **सोमनाथाध्याय**, **स्वरमेलकलानिधि**, **संकलितरत्नाकर** व **रागमंजूषा** ये ग्रंथ बने.

काश्मिरके **सारंगदेवने** ईसवी सन्के चौथे शतकमें **संगीत–रत्नाकर** नामक ग्रंथ लिखा. उसमें उसने शिव, गौरी, ब्रह्मा, माधव, नंदिकेश्वर, दंतिल, कोहल, रावण, हनुमान् , याज्ञवल्क्य, गणेश, नारद, तुंबुर, हाहा, हूहू, षण्मुख, बृहस्पति, अर्जुन व बाणासुरकी कन्या उषा इत्यादि बड़े २ संगीत–शास्त्रवेत्ताओंका उल्लेख किया है. **संगीत–रत्नाकरके** पश्चात् **रागविबोध**[1] नामक एक उत्कृष्ट ग्रंथ तैयार हुआ. इसका कर्ता **सोम** था. **सोम** यह एक विद्वान् कवि व उत्तम गवैया था. इसके अनंतर सातवें व आठवें शतकमें संगीतपर कई एक भाष्य हुए.

अर्जुन–भरत, अनुयसंगीतविलास, अष्टोत्तरशततालक्षण, आनंदजीवन, कल्पतरु, गीतालंकार, भरतशास्त्रसंगीत, भरतलक्षण, भरतनाट्यशास्त्र, भरतभाष्य, भरतशास्त्र, तालप्रस्थ, तालदशप्राणदीपिका, तालाभिनयलक्षण, तालप्रस्तार, तालंलक्षण, तालदीपिका, ध्रौपदटीका, नारदीयशिक्षा, नृत्यरत्नावली, नृत्याध्याय, नर्तननिर्णय, नाददीपिका, पंचमसारसंहिता, मतंगभरत, मुक्तावलिप्रकाशिका, मुरलीप्रकाश, मेलाधिकारलक्षण, वीणावाद्यलक्षण, वीरपराक्रम, श्रुतिभास्कर, षट्रागचंद्रोदय, रुद्रडमरू, रागप्रस्तार, संगीतसमयसार, संगीतरत्नाकर, सारसंहिता, रागलक्षण, संगीतसर्वार्थसारसंग्रह, संगीतरत्नाकर सिंहभूपालकृत, संगीतरत्नाकर कुंभकर्णकृत, स्वरमंजरी, रागनिरूपण, संगीतकल्पतरु, स्वरमेलकलानिधि, संगीतचिंतामणि, संगीतरत्नमाला, संकीर्णरागाध्याय, संगीतदीपिका संगीतसुधाकर हरिपालकृत, संगीतरत्नाकर गंगारामकृत, सं. रत्नाकर हंसभूपालकृत, रागमाला, संगीतमकरंद, संगीतसेतु, रागरत्नमाला, सं. मुक्तावली देवेन्द्रकृत, संगीतसुधा, सं. सारावली, रागध्यानादिकथनाध्याय, संगीतसारामृत, सं. पाठ, सं. रत्नावली, रागमंजरी, सं. सुधाकर सिंहभूपालकृत, सं. पुष्पांजली, सं. दामोदर, सं० शिरोमणि, सं. नारायण, रागविचार, रागकौतूहलनृत्य, सं. राघव, सं. विनोद, सं. मीमांसा, रागनिरूपण, पारिजात, सं. उपनिषद्, सं. राज, रागादिस्वरनिर्णय, सरागचंद्रोदय, सं० रत्नाकर वनरक, संगीतामृत, सं. सुरामृत, रागविबोध, सं. मुक्तावली देवान्नाचार्यकृत, सं. रत्नाकर शारंगदेवकृत, सं. वृत्त-

---

१ " **कर्नल प्लेअरको** पसारीकी दूकानके रद्दी कागजोंमें **रागविबोध** ग्रंथ मिला " **सर. उ. जोन्स.**

त्नाकर, सं. सुन्दर, रागरत्नाकर, रागचंद्रोदय, सं. सारोद्धार, रागतत्त्वबोध, सं. नारायण, ;. रत्नाकर शा. कृत, हृदयप्रकाश, रागरत्नाकार, सं. दर्पण हरिवल्लभकृत, सं. रत्नाकर मल्लीनाथकृत, रागविवेक, सं. दर्पण दामोदरकृत, इत्यादि ग्रंथ संस्कृत भाषामें प्रसिद्ध हुए.

फिर दो शतकके अनंतर अर्थात् ग्यारहवें शतकके आरंभमें ईरानमें मुसल्मान लोगोंने पंडितोंकी मदत लेकर संगीत शास्त्रके बहुतसे ग्रंथोंका फार्सी भाषामें भाषान्तर किया. **अजमशाहके** समयमें **मिरजाखनने रागार्णव, रागदर्पण** व **सभाविनोद** इन ग्रंथोंपरसे फार्सीमें **तोहफे तुल हिन्द** नामक एक ग्रंथ तय्यार किया.

बैजूबेगबावराने संगीत–दर्पण ग्रंथपरसे **ओकदे–गोषा** नामक ग्रंथ लिखा. उसी प्रकार शिराज मुल्कका तत्त्ववेत्ता **महमूद बेनेम शहूद बेनेने दौरतोलताज** ग्रंथ लिखा. **बेने महम्मदने** भी निजामुद्दीन **अल्लीशेर** बादशाहकी आज्ञासे फार्सीमें संगीतपर एक ग्रंथ लिखा. इसके अतिरिक्त संस्कृत ग्रंथों परसे **शमूशुल् आश्वात्** व तालीफे **आलखान** ये दोनो ग्रंथ फार्सीमें प्रसिद्ध हुए. इस प्रकार संगीत शास्त्रका भरत खंडमेंसे ईरानमें प्रसार हुआ. तत्पश्चात् यह कला ईरानसे अरबस्तानमें और वहांसे यूरोपखंडमें * पहिले प्रसिद्ध हुई. ई. स. १४५० में इंग्लेंडमें व सन् १७०० में फ्रान्समें प्रथमही संगीत प्रारंभ हुआ. उस समय **डॉ. नेथानियल जाईल्स, टॉमस टॉमकिन्स, हेन्रीपर्सेल** व **पेलहॅम हंफ्रे** आदि यह प्रथम गवैया थे. इंग्लेंडमेंके पहिले **जेम्स** राजाके समयमें **ऑक्सफर्ड युनिव्हरसिटीमें** पहिलेही पहिल गायन विद्या प्रसिद्ध करनेमें आई. फिर इंग्लेंडमें लोगोंको गानेकी इतनी चाट लगी कि उन्होंने जो अशक्त व वृद्ध गवैया थे उनके पोषणार्थ सन् १८३८ में एक फंड जमा किया था.

अपने यहां इस भरतखंड अर्थात् हिन्दुस्तानमें सोलहवें शतक तक इस कलामें कुछ विशेष उत्तेजन नहीं हुआ. परन्तु **अकबर** बादशाहके समयसे ही इसे अच्छा उत्तेजन मिलने लगा. अकबरके पास अनेक गवैया थे. उनमेंसे तानसेन, सुरतसेन, रामदास, गोपालनायक, मदनराय, लालादेवी, चांदखान, सुरजखान्, तानतरंगखान, बैजूबेग बावरा, मिर्जोआकेल व जुल्फिकार फिरंगी इत्यादि बड़े नामी थे.

---

* " The Hindu Scale of Music and regular system of notation had been worked out before the age of " Panini." (350 B. C.) and the seven notes were distinguished by their initlal–letters. This passed to Arabia through the Persians ! and was thence introduced into Europe at the begining of the eleventh century ". -Dr. Hunter's "Indian Empire" "Theory of Indian Music" by Mr. S.E. Gopacharlu

भाग पहिला प्रथमांक.

आगे बौद्ध गवैयोंने उसी प्रकार फिर मुसल्मानोंने इस कलाको उत्तेजन देनेको अच्छे प्रयत्न किये. इन्होंने हिन्दू लोगोंके ध्रुपद * पर से ख्याल व टप्पा यह दो प्रकार निकाले. भरत खंडमें आकर इन्होंने यहांकी विद्या व कलाओंका शोध करना प्रारंभ किया. उसमें संगीत कला देख कर इनको अति आनंद हुआ और इस विद्याका ये अभ्यास करने लगे. परन्तु कुरानमें गायनका निषेध किया हुआ है ऐसी इनके धर्मगुरुओंके तक्रार करनेपर इन्होंने उसका अभ्यास करना छोड़ दिया. परन्तु, इनको इस कलाकी विशेष चाट लग जानेसे इन्होंने गायन सुननेके लिये नायकिनियोंको आश्रय दिया व उनसे जो प्रजा होती उन्हें भी संगीतका अभ्यास करना भाग पड़ने लगा. परन्तु, इससे उन लोगोंका इनके दरबारमें बहुत ही वजन पड़ने लगा व उसका वे श्रेय भोगने लगे. और जो लोग संगीतका अभ्यास किया करते वे **कलावंत** कहे जाते. ये लोग बहुत करके कुलीन होते हैं, परन्तु इन्हें नायकिनियोंको सिखाना भाग पड़ने लगा. व कभी २ तो इन्हें जबरदस्तीसे बहिष्कृत कर मुसल्मान करना पड़ता था. इस कारण भद्र लोगोंने इस कलाका अभ्यास करनाही छोड़ दिया. इसका परिणाम ऐसा हुआ कि यह कला सर्व प्रकारसे नीच जातिके आधीन होगई. फिर तो आगे यह कला सीखना नीचता व हीनताका काम है ऐसा लोग समझने लगे.

ऐसे समयमें लोगोंके मनकी यह भूलकी समझ दूर करके इस कलाका उत्कर्ष करनेके अर्थ किसने किस प्रकार प्रयत्न किये इस विषयमें कवि **रामेश्वर** अपने **गायनसागर** में इस प्रकार लिखते हैं:—

" आगे कितने ही वर्षके अनंतर नृपचक्रचूडामणि श्रीमंत महाराजाधिराज **शिवाजी** छत्रपती ये स्वपराक्रमसे साताराकी गद्दीपर आरुढ हुए. इन्होंने इस कलाका आर्यलोगोंने क्यों निषेध किया इस बातका शोध करके प्राचीन ग्रंथोंका शोधन कराया. तब उन्हें यह बात विदित हुई कि संगीत यह गांधर्व वेद है, उसे उपवेदकी संज्ञा होकर उसके आचार्य **भरत** मुनि थे. व यह कला सीखनेके लिये किसी प्रकारका दोष नहीं है. इस प्रकार विश्वास होनेपर महाराजाने आर्य लोगोंमें इस कलाका पुनरुज्जीवन करनेके लिये गायन—शालाएं स्थापित कीं व अपनी प्रजाको संगीतकला सिखानेकी तजवीज की व लोगोंने भी इसमें

---

* " Drupad is the highest form our Music; its Voice is deep, its airs are grave, its singing is Solemn and time Slow and complex. it is not only difficult to sing but difficult to appreciate. "

—**Hindi Music.**

कुछ निषेध नहीं समझा और फिर अभ्यास करने लगे." तदुपरांत अंग्रेज लोगोंके हिन्दुस्तानमें आनेपर उन्हें ऐसा जान पड़ा कि संगीत शास्त्रका आद्य स्थान अर्थात् जन्मस्थान भरतखंड ही है, और इसी कारण उनमेंसे कुछ शोधक लोगोंने बहुत परिश्रमसे इस शास्त्रके मूलतत्त्वकी खोज करके उसे उन्होंने अपने यूरोपियन लोगोंके जाननेके लिये प्रसिद्ध किया.

सन् १७९८ में डॉक्टर **गिल्ख्रिस्टने कलकत्तामें** प्रसिद्ध हुए **" ओरिएंटल लिंग्वस्ट ऐंड इंडियन ग्रामर "** में लिखा है कि–" प्राचीन कालमें हिन्दू लोगोंको गाना, बजाना व नाचना इनका अच्छा बोध था. फिर मुसलमान लोगोंने हिंदू संगीत शास्त्रका रक्षण करके उसके नियमोंका अवलंबन किया. वे अपने गवैयोंको कलावंत, कवाली, डहारी या ढाढ़ी कहते हैं. उनके गवैये (ईरानी लोगोंके) रेख्ता, गजल, मर्सिया, ख्याल, टप्पा, कोल, तराना, व (हिन्दू लोगोंके) ध्रुपद, गीत, पद, भजन व करका इत्यादि गाते हैं." प्रसिद्ध विद्वान् **सर विलियम जोन्सने** हिन्दुस्तानमें आनेपर इस शास्त्रका बहुत ही लक्ष्य पूर्वक मनन करके सन् १७८४ में इसपर अपने **एशियाटिक् रिसर्चिसमें** एक उत्तम निबंध प्रसिद्ध किया. उसकी दूसरी आवृत्ति १७९९ में लंडनमें प्रकाश करनेमें आई. यह पुस्तक अंग्रेज लोगोंको इतनी प्रिय लगी कि १८०७ तक उसकी पांच आवृत्तियां प्रकाशित होगई. उसने यहांके प्रसिद्ध हिन्दू व मुसलमान गवैयोंसे भेट लेकर २ उनके गायन व उनके वाद्य सुने; व उनकी यूरोपियन गायनसे व वाद्योंसे प्रत्यक्ष तुलना कर देखी. उस समय उसके साथ अंग्रेज व जर्मनी गवैया थे. उसके गवैये यहांके राग व वाद्यादिकोंकी रचना देख सुन कर अति प्रसन्न हुए. पाश्चिमात्य स्वरोंकी रचनासे अपने स्वरों * की व श्रुति इत्यादिकी बहुत समता है.

इसी प्रकार कितनेही विषयोंमें अपना संगीत श्रेष्ठ व खूबीदार है यह जब **जोन्स** साहेबको भलीभांति ज्ञात होगया तब उन्हें इस प्राचीन शास्त्रकी मार्मिकताका अत्यानंद व आश्चर्य हुआ.

अपने संगीत शास्त्र व पाश्चिमात्य लोगोंके संगीत शास्त्रमें क्या भेद है इसका हाल शायद संगीत शास्त्रके इतिहासोंमें भी न हो अतएव लिखना ठीक समझ, आगे थोड़ेहीमें लिखा जाता है.

---

* यंत्रके आधारसे यूरोपिअन लोगोंने ऐसा साबित किया है कि एक सेकंडमें हवाके परमाणुमें २६४ कंप (Vibrations) होनेसे षडज् उत्पन्न होता है. आर्य लोगोंने ६५५३६ क्षणमें मंद्र षड्ज उत्पन्न होता है ऐसा प्रमाण दिया है. ऐसा सब स्वरोंका प्रमाण दिया है ८१९०२ क्षण–१ सेकंड.

एक तो पाश्चिमात्य गायनका मुख्य मुद्दा स्वरैक्य (Harwony) है. और अपने गायनका मुख्य मुद्दा स्वरानुक्रममाधुर्य (Melody) है. * स्वरैक्य अर्थात् एक समयमे अनेक स्वर लेकर स्वरसंमेलन करना. युरोपियन लोगोंका बैंड सुननेसे यह स्वरैक्य त्वरित ध्यानमें आजाता है. हमारे गायनमें अनुक्रमसे स्वर लेकर माधुर्यकी ओर लक्ष्य देनेमें आता है. तोभी उसमें स्वरैक्यही होता है. कारण, किसी तंतुवाद्यके एक तार पर आघात करते ही प्रथम एक ध्वनि निकलती है पर वह तार उस आघातके कारण कंपित होकर उसी स्वरका धीरे २ उच्चार होते हुए अंतमें वह स्वर बंद हो जाता है. इसी प्रकार अनेक स्वरोंपर क्रमानुसार आघात करनेपर प्रत्येक स्वरकी पीछली ध्वनिका संमेलन होकर अति मधुर ध्वनि उत्पन्न होती है. यही स्वरैक्य है.

इसी प्रकार कर्णेंद्रियकी रचना भी ऐसी है कि कोई भी स्वर प्रथम कर्णगोचर होतेही एकदम बंद न होते हुए धीरे २ बंद होता जाता है. इस तरह एकके पीछे एक स्वर कानमें पडते हुए उनका स्वरैक्य होता है. † यह स्वरैक्य, अनेक स्वर एकदम उच्चार करनेसे, जो स्वरैक्य होता है उससे, अतिमधुर व आनंददायक होता है.

दूसरे, पाश्चिमात्य संगीतमें राग यह वस्तु नाम मात्रको भी नहीं है. * उसी प्रकार रागोंके शृंगार स्वरूप || नायिका, ऋतु व समय इत्यादि विषयोंका भी उसमें अभाव है. ऋतु-

---

* " The dominont factor in the Hinbu System is melody and that in the European System is hormony. Hramony arises from the agreable concord of simultaneous notes, where as melody is produced by the combination of successive notes in to a relation of hormony. "

—Hindu Music.

†. " The mechanism of the human ear is such that the first note which one hears lingers for some time in the ear, and blends readily with successive notes into a harmonious relation, so as to creat pleasure. "

--H. Music.

* In the European music there is no such thing as a system of Râg where as a Hindu, who has an elemantary knowledge of music, will at once recognize the Rag, which the artist a sings, and single misplaced notes jars on his ear. "

—H. Music.

|| रागोंके शृंगार स्वरूपोंके चित्र कोई मार्मिक कारीगर तैयार करे ऐसी **सर वि. जोन्सने** शिफारस की है. वे कहते हैं:- "ये राग कवि **शेक्सपीअरने** अपने शब्दोंसे व प्रसिद्ध चित्रकार **आल्बानने** अपनी कलमसे भली भांति शृंगारित कर प्रसिद्ध किये थे. **रागमाला**में दिये हुए रागोंके चित्रोंमेंसे उत्तम २ चित्र **जोंक्सन, शेक्सपिअर** व **आल्बन**के संग्रहमें थे ऐसा कहते हैं.

परत्वसे अहर्निशि सृष्टिमें तथा मनुष्यकी मनोवृत्तिमेंभी फेरफार होता है. प्रत्येक ऋतुमें मनकी वृत्ति कैसी होती है, कौन २ मनोविकार उत्पन्न होते हैं व कौनसे नष्ट होते हैं, कौनसी वस्तुपर प्रीति और कौनसी वस्तुपर ग्लानि होती है, सृष्टिके वैचित्र्य व सौन्दर्यका मनपर परिणाम होकर कैसे २ विचार बदला करते हैं, व किस ऋतुमें कौनसे स्वर अच्छे उच्चार किये जाते हैं. ‡ इन सर्व विषयोंका विचार करके रागोंकी रचना की जानेके कारण देशी गायन अधिक मधुर व खूबीदार हुआ है.उसी प्रकार मनको प्रसन्न(मस्त)कर देनेवाले रागोंके अलंकार ‡ व उनके दर्शा देनेवाले तान आलापादिकोंका भी पाश्चिमात्य गायनमें अभावही है. और इसी कारण भैरव, मालकंस, हिंडोल, श्री, मेघ, वसंत, भैरवी, ललित, परज, कानड़ा, कालिंगड़ा, आसावरी, विभास, टोड़ी आदि अनेक सुन्दर रागादिकोंकी मधुरता व खूबी यूरोपियन लोगोंकी समझमें आना अशक्य है.

यदि सूक्ष्म विचार कियाजाय तो यूरोपियन लोगोंके **हार्मोनियम** आदिक वाद्य हिन्दू राग गानेके योग्य नहीं हैं यह बात ध्यानमें अवश्य आजायगी * कारण उक्त वाद्यमें स्वरोंकी रचना अचल ठाटकी होती है. यथाः—

नकशा.

हारमोनियम वाद्यकी पहिली सप्तक का नं. १

	रे	ग		मा	ध	नी	रे
सा	रे	गा	म	पा	धा	नी	सा

‡ " वातावरणमें ऋतुपरत्वसे (हवाका घन अथवा पतला होना यह) फेरफार हुआ करता है इस कारणसे स्वरमें भी फरक होता है. जैसे हेमन्त ऋतुमे ग्रीष्म ऋतुमें स्वर अधिक वेगसे कंपित अथवा आंदोलित होते हैं. **हनुमानने** ऋतुपरत्वसे रागोंकी योजना की है यह बड़ी योग्यताका काम **है**.—

सर. वि. जोन्स.

‡ वर्णोमेंके सप्तस्वरोंके भिन्न प्रकारका जो संयोग है उसे अलंकार कहते हैं. अलंकार रागोंका शृंगार कहलाता है.

अलंकार अर्थात् Permutation of Varnas (वर्ण.)

* "In the Piano and the several keyed English-instruments the natural scale is dreadfully abused and distorted by the method of what is colled " equal temperament." They divide the scale into 12 equal semi-tones; it is this that accustoms the ear to false notes; and many singers of note try to sing without the Piano. This limited scope of Inglish instruments disqualifies them to perform many of the beautiful airs of Hindu Music. "

-H. Music,

नं. २.

इस एक सप्तकमें २२ श्रुतियां होती हैं.

सा	रे	गा	मा	पा	धा	नी	सा	रे
४	३	२	४	४	३	२	४	४

इसी प्रकार **पियानो**कीभी पट्टी होती है.

उदाहरणार्थः—हार्मोनियमपर एक राग गाना है और गानेका यह नियम हैं कि गायनका षड्ज स्वरसे आरंभ करना चाहिये, कारण वह मूलस्वर [Keynote] हैं. परन्तु, किसी ग्रामके किसी स्वरको भी षड्ज मानकर वहांसे गानेका आरंभ करनेका अधिकार है. यह गानेवालेकी खुशी व आवाजपर अवलंबित है. इस नियमके अनुसार ऐसा समझना चाहिये कि हार्मोनियमके पहिले सप्तकके मध्यम स्वरसे गानेका आरंभ किया. अर्थात् यह मध्यम स्वर षड्ज हुआ. षड्ज स्वरमें जो चार श्रुतियां होती हैं वे इस मध्यम स्वरमें हैं. जो आगे दूसरा स्वर ऋषभ है उसमें तीन श्रुतियां होती हैं, परन्तु इस नये सप्तकके ऋषभ स्वरमें (अर्थात् मूल सप्तकके मध्यमके अगाड़ीवाला स्वर जो पंचम है उसमें) चार श्रुतियां है, इस लिये यहांसे अशुद्ध स्वर निकलने लगेंगे. यह बात हिन्दुस्तानी वाद्योंमें नहीं होती. कारण, उसके स्वरोंकी रचना सरकाकर चाहे जो शुद्ध स्वर बना सकते हैं, तिससे एक तो गानेवालेकी खुशीकी ओर लक्ष्य न देकर वाद्यमेंके सुरके अनुसार गाना या अशुद्ध स्वर लेकर अशुद्ध गाना. इससे कोईभी राग रागिनी ठीक नहीं होती. देशी संगीतमें जैसे कोमल, कोमलतर, श्रृंगारिक, शुद्ध, तीव्र, तीव्रतर व तीव्रतम * ऐसे प्रत्येक स्वरके सूक्ष्म भाग किये हैं वैसे यूरोपियन संगीतमे नहीं हैं यह कहना कुछ अयोग्य नहीं है. कारण, प्रत्येक सप्तकमें वे १२ से अधिक स्वर नहीं लेते. ऐसा होनेसे ही अपना संगीतशास्त्र पूर्णत्वको प्राप्त हुआ है यह यूरोपियनलोगोंको विदित है. यह पहिलेसे लगी हुई अभिरुचिके परिणाम हैं. अस्तु.

---

* " In the Hindu system there are half notes, quarter notes, and minute and delicate shades, as in a painting by a master artist. The Vocalist of the instrumentalist under the Hindu system often glides over a whole or half gamut, back ward and forward on one unbroken easy flow. "—

H. Music.

संगीत शास्त्रमें गायनके दो प्रकार कहे हुए हैं, **मार्गी** व **देशी**. *ध्रुपद प्रारंभ होनेके पहिलेकी प्राचीन कालके ऋषियोंकी, गानेकी जो पद्धति है वह **मार्गी** कहलाती है. यह हालमें बहुत करके नष्ट होगई है. इसके अनंतर भिन्न २ देशके लोगोंकी रीतियां, स्वभाव व चाहके अनुसार जो गानेकी पद्धति निकली वह **देशी**. यही वर्तमान समयमें प्रचलित है. इन्हें निबद्ध व अनिबद्ध भी कहते हैं ‡ इसके अतिरिक्त दक्षिण हिन्दुस्तानमें कर्नाटकी व उत्तर हिन्दुस्तानमें हिन्दुस्तानी यह दो पद्धतियां प्रसिद्ध हैं. कर्नाटकीमें पल्लवी, कीर्तन, पद, तान-वर्ण, चौकवर्ण, जवाली, गीत व रागमालिका इत्यादि प्रकार हैं. वैसेही हिन्दुस्तानीमें ध्रुपद, तिल्लाना, सुरावर्तन, ख्याल, टप्पा ठुमरी, गजल, होली, रेख्ता, दादरा, कजली, सावन, चतुरंग, लावनी इत्यादि गानेके प्रकार हैं. इति.

इति प्रथमांक समाप्त.

---

* यो मार्गितो विरिञ्च्याद्यैः प्रयुक्तो भरतादिभिः । देवस्य पुरतः शंभोर्नियतोऽभ्युदयप्रदः ॥
देशे देशे जनानां च यत् स्याद्धृदयरञ्जकम् । गानं च वादनं नृत्यं तद्देशीत्यभिधीयते ॥
(संगीतरत्नाकर)

‡ निबद्धश्चानिबद्धश्च मार्गोऽयं द्विविधो मतः । आलापादिनिबद्धो यः स च मार्गः प्रकीर्तितः ॥
आलापादिविहीनस्तु सच देशी प्रकीर्तितः ॥ (मतंग)

ॐ श्रीराम.

भाग पहिला.

द्वितीयांक.

स्वर-विचार.

स्वर अर्थात् शब्द, ध्वनि अथवा नाद. ये शब्द दो प्रकारके हैं ध्वन्यात्मक और वर्णात्मक. सितार, मृदंग, इत्यादि वाद्योंसे उत्पन्न होनेवाले व जिनका कुछ अर्थ नहीं निकलता वे ध्वन्यात्मक शब्द कहाते हैं. तथा संस्कृत, प्राकृत इत्यादि भाषा रूपी जो शब्द हैं, जिनका कुछ अर्थ उत्पन्न होता है वे वर्णात्मक शब्द कहाते हैं.

ये स्वर साधारण रीतिसे तीन प्रकारके होते हैं. ऱ्हस्व, दीर्घ और प्लुत. गायन–विषयमें ध्वन्यात्मक स्वर मुख्य सात हैं.

स्वर सातोंके नामः--षड्ज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद. इनके संक्षिप्त रूप इस प्रकार हैं.

:—सा-रे-ग-म-प-ध-नी.

---

१ स्वतो रञ्जयति श्रोतृचित्तं स स्वर उच्यते ॥

२ आत्मा विवक्षमाणोऽयं मनः प्रेरयते मनः ।
देहस्थं वह्निमाहन्ति स प्रेरयति मारुतम् ॥
ब्रह्मग्रन्थिस्थितः सोऽथ क्रमादूर्ध्वपथे चरन् ।
नाभिहृत्कण्ठमूर्द्धास्येष्वाविर्भावयते ध्वनिम् ॥

३ नकारं प्राणनामानं दकारमनलं विदुः ।
जातः प्राणाग्निसंयोगात्तेन नादोऽभिधीयते ॥

४ कुक्कुट जो शब्द करता है उसमें अनुक्रमसे १, २ व ३ मात्राओंका अंतर होता है.
चाषस्त्वेकां वदेन्मामात्रां द्विमात्रं वायसो वदेत् ।
शिखी रौति त्रिमात्रं तु नकुलस्त्वर्धमात्रकम् ॥

५ षड्जश्च ऋषभश्चैव गान्धारो मध्यमस्तथा ।
पञ्चमो धैवतश्चैव निषादः सप्तमः स्वरः ॥
षड्जः प्रीणाति वै देवानृषीन्प्रीणाति चर्षभः ।
पितॄन्प्रीणाति गान्धारो गन्धर्वान्मध्यमः स्वरः ॥
देवान् पितॄनृषींश्चैव स्वरः प्रीणाति पञ्चमः ।
यक्षान्निषादः प्रीणाति भूतग्रामं च धैवतः ॥

इन स्वरोंकी ध्वनि सीढ़ी २ से अर्थात् एकके पीछे एक या दर्जे बदर्जे चढ़ती जाती है. मुखमें सात सीढ़ियां कल्पना करके प्रत्येक सीढ़ीपर एक एक, इस प्रकार सातों स्वर एकदमसे उच्चारण करते हुए पहिली सीढ़ी पर षड्ज होता है, दूसरीपर ऋषभ, तीसरी पर गांधार, चौथीपर मध्यम, पांचवींपर पंचम, छठीपर धैवत, सातवींपर निषाद और आगे जैसे २ स्वर ऊंचे चढ़ाते जाव तो यही सात स्वर वारंवार चढ़ती आवाजमें होंगे. इन सात स्वरोंके समूहको सप्तक कहते हैं.

सप्तक तीन प्रकारके होते हैं:—षड्ज, मध्यम और तार (अथवा टीप). इन्हें अनुक्रमसे मंद्र, मध्य और तार; अथवा अनुदात्त, स्वरित और उदात्त भी कहते हैं. *

मन्द्र[1] सप्तक साधारण स्वरका होता है.

मध्य[2] सप्तक मन्द्रस्वरसे दुगना ऊंची ध्वनिका होता है.

तार[3] सप्तक मध्यमे दुगना ऊंचा होता है.

१ षड्ज (अथवा खर्ज) सप्तक यह नीचे स्वरका सप्तक है. एक अत्यन्त नीचा अर्थात् जिस स्वरको मुहसे अति धीरे यानी हलकेसे उच्चारण करे. ऐसा स्वर लेकर और उसेही "षड्ज" समझकर दूसरा अर्थात् "ऋषभ" उस पहिलेसे कुछ अधिक ऊंचा अर्थात् जोरसे कहे. इसी प्रकार "ऋषभ" से "गांधार" ऊंचा उच्चारण करे. इसी प्रकार "निषाद"तक आरोह करनेसे अर्थात् स्वर चढ़ाते हुए बोलनेसे जो सप्तक होता है उसे खर्ज सप्तक कहते हैं.

यथा:—**सा—रे—ग—म—प—ध—नी.**

२ मध्य (अथवा मध्यम) सप्तक—यह बहुत ऊंचा भी नहीं और बहुत नीचाभी नहीं. ऐसे मध्यम स्वरोंका सप्तक है. खरज सप्तकमेंके निषाद स्वरसे ऊंचा स्वर लेकर उसे षड्ज माने व वहासे पूर्ववत् दूसरे निषादपर्यन्त स्वरोंका आरोह करनेसे जो सप्तक होवे उसे मध्यम सप्तक कहते हैं.

---

* व्यवहारे त्वसौ त्रेधा हृदि मन्द्रोऽभिधीयते ।
कण्ठे मध्यो मूर्ध्नि तारो द्विगुणश्चोत्तरोत्तरः ॥

१ स्वर: Notes, मंद्र. २ मध्य: Bass notes. ३ तार Acute notes.

३ तारसप्तक—मध्यम सप्तकमेंके निषाद स्वरसे ऊंचा स्वर लेकर उसे षड्ज माने व वहांसे पूर्ववत् तीसरे निषाद पर्यन्त स्वरोंका आरोह करनेसे जो सप्तक हो उसे तार अथवा टीपसप्तक कहते हैं.

तीनसे भी अधिक सप्तकोंका खुलासा इस प्रकारसे है?—

साढ़े तीन सप्तके—खरज सप्तकके षड्ज स्वरसे पंचमतक अवरोह करनेसे, अर्थात् षड्ज स्वरसे (सा-नी-ध-प इस प्रकार) पंचमतक पीछे यानी उल्टे उतरते हुए स्वर लेनेसे आधा सप्तक होता है, वह सप्तक और पहिले तीन, मिलाकर साढ़े तीन सप्तक होते हैं.

चार सप्तक—तार सप्तकके निषाद स्वरसे आगे पंचमतक आरोह करनेसे आधा सप्तक होता है. वह और पहिले साढ़े तीन, मिलाकर चार सप्तक * होते हैं.

स्वरमंडल व पियानो इत्यादि वाद्योंमें पांचसे साततक सप्तक लेते बनते हैं. परन्तु वे गानेमें बहुधा अढ़ाई सप्तकसे अधिक सप्तक नहीं लेते बनते.

सितार और **बीन** इसी अनुसार बने हैं. अर्थात् इनमें ढाई सप्तक होते हैं.

*** ४ सप्तकें.**

प ध नी	आधी सप्तक.
सा रे ग म प ध नी सा	षड्ज सप्तक.
रे ग म प ध नी सा	मध्यम सप्तक.
रे ग म प ध नी सा	तार सप्तक.
रे ग म प	अर्ध सप्तक.

सितारमें षड्ज सप्तक पूरा, मध्यम सप्तक पूरा और तार सप्तक आधयानीम तक होता है.

स्वरोंके भेद.

स्वरोंके दो भेद हैं. **अविकारी** और **विकारी**. इन्हें क्रमसे स्थायी व अस्थायी भी कहते हैं.

१ **अविकारी स्वर.**—जिस स्वरका कोमल तीव्रादि रूपांतर नहीं होता उसे कहते हैं. अविकारी स्वर केवल दोही हैं.

२ **विकारी**—जिस स्वरका कोमल तीव्रादि रूपान्तर होता है उसे कहते हैं. ये स्वर पांच हैं.—ऋषभ, गंधार, मध्यम, धैवत और निषाद. विकारी स्वरमें जो फेरफार होता है

वह साधारणतया दो प्रकारका है. कोमल[1] और तीव्र[2]. केवल मध्यमका शुद्ध और तीव्र ऐसा रूपान्तर प्रचलित है.

शुद्ध स्वर–जो अधिक ऊंचा और नीचा न हो अर्थात् स्वाभाविकही निकलनेवाला स्वर.

तीव्र स्वर–जो शुद्ध स्वरसे ऊंचा हो.

कोमल स्वर–जो शुद्ध स्वरसे नीचा हो.

इस प्रकार दो अविकारी और दस विकारी स्वर मिलकर सब बारा स्वर होते हैं. यथाः––

१	षड्ज	....	....	....	
२	ऋषभ	....	....	....	कोमल–तीव्र.
२	गांधार	....	....	....	कोमल–तीव्र.
२	मध्यम	....	...	....	शुद्ध–तीव्र.
१	पंचम	....	...	....	
२	धैवत	....	....	...	कोमल–तीव्र.
२	निषाद	....	....	....	कोमल–तीव्र.
१२					

इन बारा स्वरोंमें रे–ग–ध–नी इनमेंसे प्रत्येकका एक एक शुद्ध स्वर मिलाया जाय तो सब सोला स्वर होते हैं. यथाः—

१	षड्ज	....	....	...	....	...	....
३	ऋषभ	....	....	....	....	....	कोमल—शुद्ध—तीव्र.
३	गांधार	....	....	....	....	....	कोमल—शुद्ध—तीव्र.
२	मध्यम	....	...	...	....	....	शुद्ध—तीव्र.
१	पंचम	....	....	....	....	....	....
३	धैवत	....	....	....	....	....	कोमल—शुद्ध—तीव्र.
३	निषाद	....	....	....	....	....	कोमल—शुद्ध—तीव्र.
१६							

उत्तरीय हिन्दुस्तानमें बारा व दक्षिणी हिंदुस्तानमें सोला स्वर लेनेका प्रघात है.

---

१ Flat. २ Sharp.

स्वरोंके वर्ण.[1]

ये वर्ण चार प्रकारके हैं. स्थायी, आरोही, अवरोही व संचारी.

१ **स्थायी**—एकही स्वरका एकसा (अर्थात् ठीक वैसाही जैसा हो) उच्चारण करना इसे स्थायी कहते हैं. यथाः–सा–सा–सा.

२ आरोही—पहिले स्वरसे दूसरा स्वर ऊंचा व दूसरेसे तीसरा ऊंचा इस प्रकार स्वर चढ़ाते हुए ले जानेसे आरोही होता है. इसीको आरोह कहते हैं. यथाः–सा–रे–ग–म–प–ध–नी.

३ अवरोही—एक स्वरसे दूसरा स्वर नीचा व दूसरेसे तीसरा स्वर नीचा इस प्रकार स्वर उतराते जानेसे अवरोही होता है और इसे अवरोह कहते हैं. यथाः—नी–ध–प–म–ग–रे सा.

४ संचारी—ऊपर कहे हुए इन तीन वर्णोंके मिश्र स्वरोंको संचारी कहते हैं. यथाः—सा–सा–सा–नी–म–म–नी–म–प–नी–रे–रे–प–प–नी–ध, इत्यादि.

अथ उदाहरण आरोह और अवरोहकाः—

स्थायी.

सा — सा

नी नी

आरोह ध ध अवरोह

प प

म म

ग ग

रे रे

सा सा

आरोह और अवरोह इन्हें अनुक्रमसे चढ़ती और उतरती भी कहते हैं.

स्वरोंके अलंकार.[3]

वर्णोंमें के सप्त[2] स्वरोंका भिन्न २ रीतिसे जो संयोग उसे अलंकार कहते हैं. अलंकार रागोंका श्रृंगार है. अलंकारके बहुतसे भेद हैं. जिसमें स्थायीके सात, आरोहीके बारा, अवरोहीके बारा, संचारीके पचीस व दूसरे और बारा मिलकर कुल ६८ प्रकार मुख्य हैं. वे—

---

१ स्वरोंके वर्ण–Manipulations of notes.

२ "सप्तक" देखो.

३ अलंकार–Permutations of Varnas. (वर्ण.)

१ स्थायी अलंकार (७) भद्र, नंद, जित, सोम, ग्रीव, भाल और प्रकाश.

२ आरोही अलंकार (१२)—विस्तीर्ण, निष्कर्ष, बिंदु, अभ्युच्छ्रय, हसित, प्रेंखित, आक्षिप्त, संधिप्रच्छादन, उद्गति, उद्वाहति, त्रिवर्ण व पृथग्वेणी.

३ अवरोही अलंकार (१२)—आरोही अलंकारोंके जो नाम हैं वेही अवरोही अलंकारोंके हैं.

४ संचारी अलंकार (२५)—मंद्रादि, मंद्रमध्य, मंद्रान्त, प्रस्तार, प्रसार, व्यावृत, चस्खलित, परिवर्त, आक्षेप, बिन्दु, उद्वाहित, ऊर्मि, सम, निष्कूजित, श्येन, क्रम, उद्घाटित, रंजित, सन्निवृत्त, प्रवृत्तक, वेणु, ललितस्वर, हुंकार, आल्हादमान और अवलोकित.

५ दूसरे अलंकार (१२) इन्द्रनील, महावज्र, निर्दोष, सीर, कोकिल, आवर्त, सदानंद, चक्राकार, यव, शंख, पद्माकर और वारिद.

कुछ अलंकार जो कि प्रचलित हैं वे नीचे दिये हैं. *

१ आरोह—सासा—रे रे—गग—मम—पप—धध—नीनी—सासा.
अवरोह—सासा—नीनी—धध—पप—मम—गग—रे रे—सासा

(निष्कर्ष.)

२ आरोह—सारे—रेग—गम—मप—पध—धनी—नीसा.
अ०— सानी—नीध—धप—पम—मग—गरे—रेसा.

(प्रेंखित .)

३ आरोह—सारेग—रेगम—गमप—मपध—पधनी—धनीसा.
अ०— सानीध—नीधप—धपम—पमग—मगरे—गरेसा.

(संधि—प्रच्छादन).

४ आरोह—साग—रेम—गप—मध—पनी—धसा.
अ०— साध—नीप—धम—पग—मरे—गसा.

(अभ्युच्छ्रय.)

५ आरोह—सारेसा—रेगरे—गमग—मपम—पधप—धनीधा—नीसानी—सारेसा.
अ०— सानीसा—नीधनी—धपध—पमप—मगम—गरेग—रेसारे—सानीसा.

(भद्रा.)

६ आ०—सासासा—रेरे रे—गगग—ममम—पपप—धधध—नीनीनी—सासासा.
अ०— सासासा—नीनीनी—धधध—पपप—ममम—गगग—रेरे रे—सासासा.

(गात्रवर्णा.)

---

* जिनके नाम मालुम हैं वे नाम कोष्टक (   ) में लिखे है.

७ आ०—सारेगम—रेगमप—गमपध—मपधनी—पधनीसा.
अ०— सानिधप—नीधपम—धपमग—पमगरे—मगरेसा.

(सदानंद.)

८ आ०—सागमरे—रेमपग—गपधम—मधनीप—पनीसाध—धसारेनी—नीरेगसा—सागमरे.
अ०— साधपनी--नीपमध—धमगप—पगरेम—मरेसाग—गसानीरे—रेनिधसा.

(परिवर्त.)

९ आ०—सासासारे—रेरेरेग—गगगम—मममप—पपपध—धधधनी—नीनीनिसा—सासासारे
अ०— रेरेरेसा—सासासानी—नीनीनीध—धधधप—पपपम—मममग—गगगरे—रेरेरेसा·

(त्रिन्दुत्रिवनी.)

१० आ०—सारेसारेग—रेगरेगम—गमगमप—मपमपध—पधपधनी—धनीधनीसा.
अ०—सानीसानिध—नीधनीधप—धपधपम-पमपमग—मगमगरे—गरेगरेसा.

(पंचावली.)

११ आ०—सारेगमप—रेगमपध—गमपधनी—मपधनीसा.
अ०—सानीधपम—नीधपमग—धपमगरे—पमगरेसा.

(पंचानन.)

१२ आ०—सारेसारेगम—रेगरेगमप—गमगमपध—मपमपधनी—पधपधनीसा.
अ०—सानीसानीधप—नीधनीधपम—धपधपमग—पमपमगरे—मगमगरेसा.

(निर्दोष.)

१३ आ०--सारेगमपध--रेगमपधनी--गमपधनीसा.
अ०-- सानीधपमग -नीधपमगरे--धपमगरेसा.

(षडानन.)

१४ आ०—सारेग सारेग सारे सारेगम, रेगम रेगम रेग रेगमप, गमप गमप गम गमपध, मपध मपध मप मपधनी, पधनी पधनी पध पधनीसा.
अ०—सानीध सानीध सानीसानीधप, नीधप नीधप नीधनीधपम, धपम धपम धपधपमग, पमग पमग पमपमगरे, मगरे मगरे मगमगरेसा.

१५ आ०—सारेसारेनी सारेग, रेगरेग सारेगम—गमगमरेगमप—मपमप गमपध, पधपधमदधनी, धनीधनी पधनीसा.
अ०—सानीसानीरे सानीध, नीधनीधसानीधप, पधधप नीधपम, पमपमधपमग, मगमगपमगरे, गरेगरे म गरेसा.

१६ आ०—सारेसारेसाग, रेगरेगरेम, गमगमगप, मपमपमध पधपधपनी, धनीधनीधसा.
अ०—सानीसानीसाध, नीधनीधनीप, धपधपधम पमपमपग, मगमगमरे, गरेगरेगसा

१७ आ०—सासासासा—रेरेरेरे—गगगग-मममम-पपपप—धधधध—नीनीनीनी—सासासासा.
अ०—सासासासा—नीनीनीनी—धधधध—पपपप—मममम, गगगग, रेरेरेरे, सासासासा.

१८ आ०—सारेग सारेग सारे सारे गमपधनीसा.
अ०—सानीध सानीध सानीसानी धपमगरेसा.

१९ आ०—सासासा रेरे सारेग रेरेरे गगरेगम गगग मम गमप ममम पप मपध पपपधध पधनी धधधनीनी धनीसा.
अ०—सानीध नीनी धधध नीधप धध पपप धपमपप ममम पमग ममगगग मगरे मगरे रेरे गगरे गरेसा रेरे सासासा.

२० आ०—सासा सारे साग साम साप साध सानी सासा.
अ०—सासा नीसा धसा पसा मसा गसा रेसा सासा.

२१ आ०—सारे गमपधनी सा.
अ०—सानीध पमगरे सा.

२२ सारेसा, सारेगरेसा, सारेगमगरेसा, सारेगमपमगरेसा, सारेगमपधपमगरेसा, सारे-गमपधनी धापमगरेसा (जव)

२३ पधनीसा पधनीसा पधनीसा, मगरे मगरे मगरे, गरेसा गरेसा गरेसा, सागम सागम सागम.

२४ सानीसा, सानीधनीसा सानीधप धनीसा सानी धपम पधनीसा, सानीधपमग मपधनीसा, सानीधपमगरे गमपधनीसा सानी धपमगरेसा रेगमपधनीसा, सानी धपमग रेसा.

२५ सासासा नीनी सानीध नीनीनी धध नीधप धधध पप धपम पपप मम पमग ममम गग मगरे गगग रेरे गरेसा.

ये अलंकार गमक, तान, आलाप, लाग, डाट इत्यादिकोंके रूपसे भिन्न २ रागोंके स्वरूप दिखलाते हैं.

गमक—किसी स्वरको कंपित करके उसका उच्चार करना इसे गमक कहते हैं यथा:—साआआआ, रेएएए, गअअअ मअअअ इत्यादि.

इस प्रकार सप्त स्वरोंको कंपित करना. प्रत्येक स्वरमें इतने वार कंप देना ऐसा एक नियम नहीं है. प्रत्येक रागोंके स्वरूपानुसार भिन्नभिन्न प्रकारसे कंप दिया जाता है.

गमकके स्फुरित, कंपित, लीन, स्तिमित, आंदोलित, आहत व त्रिकभिन्न ऐसे सात प्रकार कहे हैं. परन्तु, हालमें गमक, तान, मीढ, घसीट, खटका व पुकार इत्यादि नाम प्रचलित हैं*

तान—सप्त स्वर अथवा उनमेंसे विशिष्ट स्वरोंका आरोह करना इसे तान कहते हैं. मुख्य तानसंख्या ४९ है. उन्हें **कूट तान** अथवा **कोट तान** कहते हैं. सप्त स्वरोंमेंके प्रत्येक स्वरको षड्ज समझ कर उसीसे आरोह करते हुए ७ सात प्रकार उत्पन्न होते हैं व इन प्रत्येकके और सात सात मिलकर सब कुल ४९ प्रकार होते हैं. तान सात तरहकी होती है. एक स्वरकी तान, दो स्वरोंकी तान, तीन स्वरोंकी तान इस प्रकार तानके स्वरोंकी संख्या परसे इनके सात भेद होते हैं. जिनके नाम ये हैं:—

नाम.	**स्वर संख्या.**
संपूर्ण	७
षाडव	६
ओडव	५
सुरतर	४
सामिक	३
गाथिक	२
आर्चिक	१

आंदोलित स्वरसे आरोह करना इसे मीढ और उसी प्रकार अवरोह करना इसे **घसीट** कहते हैं. दो स्वरोंकी जो गमक है उसे **खटका** कहते हैं. एकही स्वरकी ऊंची ध्वनि करना इसे **पुकार** कहते हैं. गाते हुए एकदम एक स्वर छोड़कर दूसरा स्वर लेना इसे **लाग** कहते हैं. उसी प्रकार किसी स्वरको बीचहीमें मुख्य रखना इसे **डाट** कहते हैं.

सितारके वाद्यमें गमक, तान, मीढ, घसीट, खटका और डाट ये ६ प्रकारकी गमकें लगतीं हैं. जिन २ के जैसे २ चिह्न यहांपर लिखेंगे उसी प्रकार अर्थात् जिस गतके बजानेमें गतमें जहां कहीं जिस २ गमकके जैसे २ चिह्न आवें उस गतकी गमक लिखी हुई रीतिके अनुसार गत यथास्थित बजेगी.

सितार बजानेके पहिले इन गमकोंको यथास्थित समझकर बजानेका पूरा अभ्यास करे तब गमकदार गतें बजावे.

---

* " सकलशास्त्रनिरूपण.

१ आरोहावरोहक्रमयुक्तः स्वरसमुदायो मूर्च्छनेत्युच्यते. तानस्तु आरोहणं भवतीति भेदः । **मतंग.**

गमक.

गमक.–कोईसा भी स्वर कंपित करना, इसे गमक कहते हैं. गमक दो प्रकारसे बजाई जाती है.

१.—तार पड़दे पर दबा कर, मिजराबवाली उंगलीसे उस पर प्रहार करतेही शीघ्र उसे हिलाना यह एक प्रकार. यह गमक गतमें इस ^ चिह्नसे दर्शाई है.

२.–तार पड़देपर दबाकर, मिजराबसे प्रहार करके तदनंतर उसे कंपित करना यह दूसरा प्रकार. यह ^ इस चिह्नसे दी हुई है.

जो अंक इन चिह्नोंके नीचे लिखा हो, उतनीही बार तारको कंपित करना चाहिये. यथा:— ^ ^ इत्यादि.

तान.

तान—तार पर एकवार मिजराबसे प्रहार करके, चाहे जिन स्वरोंकी ध्वनि, फिर मिजराबके प्रहार करनेके सिवाय उत्पन्न करना; अथवा एकवार मिजराबका प्रहार करके फिर बाएं हाथकी मध्यमांगुलीके प्रहारसे चाहे जिन स्वरोंकी ध्वनि निकालना; इसे **तान** कहते हैं.

तान दो प्रकारकी है:—१ सादी और २ गमककी.

१.—जिस पड़देपरसे **तान** करनी हो, उस पड़देपर बाएं हाथकी तर्जनी अर्थात् अंगूठेके पासवाली उंगलीसे तार दाबकर उसपर मिजराबसे एकही प्रहार करके, चाहे जिन पड़दों परसे वह उंगली फिराकर अथवा फिराते हुए उसी हाथकी मध्यमांगुली अर्थात् बीचकी उंगलीसे तारपर आघात करके अर्थात् मारकर या छू करके, उन उन पड़दोंकी ध्वनि उत्पन्न करना; यह सादी तान है. इसका ऐसा ⌄ चिह्न है,

२.–जिस पड़देसे तान करनी हो, उस पड़देपर बाएं हाथकी तर्जनीसे तार दाबकर उसपर मिजराबका प्रहार एकही वार करके, चाहे जिन पड़दोंपर गमक लेते हुए अर्थात् हिलाते हुए उन उन पड़दोंकी ध्वनि निकालना, इसे **गमकतान** कहते हैं. इसका चिह्न ⌄ ऐसा है.

जिन जिन पड़दोंपर तान निकालनी हो उन उन पड़दोंके अंक इन चिह्नोंपर इस प्रकार दिये हैं. उदाहरण:— १३-१४ १३-१४ १३-१४

मींढ.

मींढ—नीचे स्वरसे ध्वनिमें खंडन होते हुए चाहे जिस ऊंचे स्वरकी तरफ जाना इसे **मींढ** कहते है. मींढ चार प्रकारकी होती है. पाहिले प्रकारको ^ ऐसा, दूसरेको ^ ऐसा, तीसरेको ^^ ऐसा और चौथेको ^^ ऐसा चिह्न दिया है.

१.—चिह्नके नीचे लिखे हुए अंकोंमेंसे पहिले अंकके पड़देपर तार दाबकर, मिजराबका प्रहार तारपर करते हुएही तार बाएं हाथकी ओर खींचकर, उससे चिह्नके नीचेके दूसरे अंकके पड़देके स्वरकी ध्वनि उत्पन्न करना, यह पहिले प्रकारकी मींढ़.

उदाहरणार्थः—६-८ ६-८ ६-८

२.—चिह्नके नीचेके पहिले अंकके पड़देपर तार दाबकर तारपर नखीका प्रहार करनेके अनंतर, वह बाएं हाथकी ओर खींचकर, उससे दूसरे अंकके पड़देकी स्वरकी ध्वनि उत्पन्न करना यह दूसरे प्रकारकी मींढ़. उदाहरण.—६-८ ६-८ ६-८

३.—चिह्नके नीचेसे पहिले अंकके पड़देपर बाएं हाथकी तर्जनीसे तार दाब कर, उसपर नखीका प्रहार करते हुएही; वह उंगली तारपरसे तेजीसे सरकाकर, (तोंबेकी ओरको) दूसरे अंकके पड़देपर लेजाना, और उससे अखंड ध्वनि उत्पन्न करना, यह तीसरे प्रकारकी मींढ़ उदा०:—

६-११

४.—चिह्नके नीचेके पहिले अंकके पड़देपर बाएं हाथकी तर्जनीसे तार दाबकर, उसपर नखींका प्रहार करनेके अनंतर, वह उंगली तार परसे सपाटेके साथ सरकाकर (तोंबेकी तरफको) चिह्नके नीचेके दूसरे अंकके पड़देपर लेजाना, और उससे अखंड ध्वनि उत्पन्न करना, यह चौथे प्रकारकी मींढ़ है. उदा०:— ६--११

घसीट.

घसीटः—इच्छित ऊंचे स्वरसे ध्वनिमें खंड न पड़नेदेकर इच्छित नीचे स्वरकी ओर जाना; इसे **घसीट** कहते हैं. **घसीट** दो प्रकारकी होती है. पहिलेका ◡ ऐसा और दूसरेका ◡ ऐसा चिह्न है.

१—इस चिह्नपर लिखे हुए अंकोंमेंसे पहिले अंकके पड़देपर तार दाबकर, नखीका प्रहार किये विनाही उसको दूसरे अंकके पड़देके स्वरतक खींचकर, तदनंतर उसपर नखीका प्रहार करके, ध्वनिसहित फिर लौटाकर उसे अपने स्थानपर लाना यह पहिले प्रकारकी घसीट.

उदाहरणः–८-१२. ६-८

२.—इस चिह्नके पहिले अंकके पड़देपर बाएं हाथकी तर्जनीसे तार दाबकर, उसपर नखीका प्रहार करनेके साथ, तार परसे वह उंगली सरकाकर दूसरे अंकके पड़देपर ले जाना यह दूसरे प्रकारकी घसीट. उदाहरण–१९-८ ११-६

खटका.

खटका.—कोईसाभी स्वर बजाते हुए, उसके आगेके अथवा पीछेके स्वरको झटका देकर, उससे मिश्र स्वर उत्पन्न करना, इसे **खटका** या **जमजमा** कहते हैं. इसके बारह प्रकार हैं.– खटकाके लिये × ऐसा चिह्न निर्मित कर इस चिह्नके ऊपर खटकेका नंबर दिखलानेके अर्थ उस २ प्रकारका अंक दिया है. यथा– दूसरे प्रकारको $\overset{२}{\times}$, और तीसरेको $\overset{३}{\times}$.

१.—चिह्नके नीचे लिखे हुए अंकमेंसे पहिले अंकके पड़देपर बांए हाथकी तर्जनीसे तार दबाकर, उसपर नखीका प्रहार करनेके अनंतर, चिह्नके नीचेके दूसरे अंकके पड़देके तारपर मध्यमांगुलीसे आघात करके, वह उंगली उसी पड़देपर ठहराना. यह पहिला प्रकार.

उदाहरण—

१	१	१
×	×	×
८–१०,	१२–१५	६–७

२.—चिह्नके नीचे लिखे हुए अंकमेंसे पहिले अंकके पड़देपर बांए हाथकी तर्जनीसे तार दाब उसपर नखीका प्रहार करनेके अनंतर दूसरे अंकके पड़देपर, मध्यमांगुलीसे तारपर आघात करके, वह उंगली तार परसे दाबकर बाएं हाथकी तरफसे तिर्छी ले जाकर ध्वनि उत्पन्न करना. यह दूसरा प्रकार.

उदाहरण—

२
×
६–७.

३.—चिह्नके नीचे लिखे हुए अंकमेंसे पहिले अंकके पड़देपर बांए हाथकी तर्जनीसे तार दाबकर, उसपर नखी प्रहार करनेके बाद, दूसरे अंकके पड़देके स्थान, तारपर मध्यमांगुलीसे आघात करके, वह उंगली तारपरसे दाबकर, बांए हाथकी तरफसे तिरछी निसढती लेकर, फिर तर्जनी उंगली उस (दूसरे अंकके) पड़दे पर सरकाना. यह तीसरा प्रकार.

उदाहरण—

३
×
६–७

४.—चिह्नके नीचेके पहिले अंकके पड़देपर बांए हाथकी तर्जनी उंगलीसे तार दाबकर उसपर नखीका प्रहार करनेके बाद, चिह्नके नीचेके दूसरे अंकके पड़देकी

जगह, तारपर मध्यमांगुलीसे आघात करके, वह उंगली तारपर दाबकर बांए हाथकी ओरसे, तिर्छी घिसटी हुई लेकर, अर्थात् हटाकर, फिर तर्जनी उंगली उस दूसरे अंकके पड़देपर सरकानेके बाद, फिर मध्यमांगुलीसे तीसरे अंकके पड़देके स्थानमें, तारपर आघात करके वह उंगली उसी पड़देपर स्थित रखना. यह चौथा प्रकार.

उदाहरण—

४
×
६-७-८

५.—चिह्नके नीचेके पहिले अंकके पड़देपर बांए हाथकी तर्जनीसे तार दाबकर, उसपर नखीका प्रहार करनेके बाद, दूसरे अंकके पड़देके स्थानमें तारपर मध्यमागुलीसे आघात करके, वह उंगली तारपरसे दाबकर, बांए हाथकी तरफसे तिर्छी झुकती हुई ले जाकर फिर तर्जनी उंगली उस दूसरे अंकके पड़देपर सरकानेके बाद, फिर मध्यमांगुलीसे तीसरे अंकके पड़देके स्थानमें, तारपर आघात करके, वह उंगली तारपरसे दाबकर, बांए हाथकी तरफसे तिर्छी निसटती ले जाना. यह पांचवां प्रकार.

उदाहरण—

५
×
६—७—८.

६.—चिह्नके नीचेके पहले अंकके पड़देपर बाए हाथकी तर्जनीसे तार दाबकर उसपर नखीका प्रहार करनेके बाद, दूसरे अंकके पड़देपर तारपर मध्यमागुलीसे आघात करके, वह उंगली तारपरसे दाबकर, बांए हाथकी तरफ़से तिरछी निसटती लेजाकर, फिर तर्जनी उंगली उस दूसरे अंकके पड़देपर सरकानेके बाद, फिर मध्यमांगुलीसे तीसरे अंकके पड़देपर, तारपर आघात करके वह उंगली तारपरसे दाबकर, बांए हाथकी तरफसे तिर्छी निसटती लेकर, तर्जनी उंगली तारपर दाबे हुए अर्थात् रक्खे हुए ही, पहिले अंकके पड़देपर वापिस सरका लाना. यह छठा प्रकार.

उदाहरण—

६
×
६—७—८

७.—चिह्नके नीचेके पहिले अंकके पड़देपर बांए हाथकी तर्जनीसे तार दाबकर उसपर नखीका प्रहार करनेके पश्चात्, दूसरे अंकके पड़देके तारपर मध्यमांगुलीसे आघात करके, वह उंगली तारपरसे दाबकर, बांए हाथकी तरफसे तिर्छी निसटती लेजाकर, फिर तर्जनी

उंगली उस दूसरे अंकके पड़देपर सरकानेके बाद, फिर मध्यमांगुलीसे तीसरे अंकके पड़देके स्थानमें तारपर आघात यानी छू करके, वह उंगली तारपरसे दाबकर बांए हाथकी तरफसे तिरछी निसटती लेजाकर, तर्जनी उंगली तारपर स्थित (रक्खे) हुए ही, पहिले अंकके पड़देपर वापस सरकाकर, फिर मध्यमांगुलीसे दूसरे अंकके पड़देपर आघात करके, वह उंगली उसी पड़देपर रखना. यह सातवां प्रकार.

उदाहरण—

७
×
६—७—८.

८.—चिह्नके नीचेके पहिले अंकके पड़देपर बाए हाथकी तर्जनीसे तार दाबकर, उसपर नखीका प्रहार करनेके बाद, दूसरे अंकके पड़दे तारपर मध्यमांगुलीसे आघात करके वह उंगली तारपरसे दाबकर बांए हाथकी तरफसे तिर्छी निसटती हुई लेजाकर फिर तर्जनी उंगली उस दूसरे अंकके पड़देपर सरकानेके बाद, फिर मध्यमांगुलीसे तीसरे अंकके पड़दे तारपर आघात करके, वह उंगली तारपरसे दाबकर, बांए हाथकी तरफसे तिर्छी निसटती लेजाकर, तर्जनी उंगली तारपर रक्खे हुए ही, पहिले अंकके पड़देपर वापिस सरकाकर फिर मध्यमांगुलीसे, उसके अगले अर्थात् दूसरे अंकके पड़देपर आघात करके, वह उंगली उसी पड़दे तारपर दाब करके, बांए हाथकी ओरसे तिर्छी निसटती हुई लेना. यह आठवां प्रकार.

उदाहरण—

८
×
६—७—८.

९.—चिह्नके नीचेके पहिले अंकके पड़देपर बांए हाथकी मध्यमांगुलीसे तार दाबकर उसी प्रकार वह तार उसी हाथकी तर्जनीसे, उसके पिछले अर्थात् दूसरे अंकके पड़देपर दाबना, और उसपर नखीका प्रहार करनेके बाद बांए हाथकी मध्यमांगुली तार परसे दाबकर, उसी हाथकी तरफ तिर्छी निसटती हुई लेजाकर ध्वनि उत्पन्न करना. यह नवां प्रकार.

उदाहरणार्थ—

९
×
७—६.

१०.—चिह्नके नीचेके पहिले अंकके पड़देपर बांए हाथकी मध्यमांगुलीसे तार दाब कर, उसी प्रकार वह तार उसी हाथकी तर्जनीसे, चिह्नके नीचेके दूसरे अंकके पड़दे-पर तार दाबना, और उसपर नखीका प्रहार करनेके बाद बांए हाथकी मध्यमांगुलीसे तार-

परसे दाब कर उसी हाथकी तरफ तिरछी निसटती हुई ले जाकर, फिर तर्जनी उंगली तीसरे अंकके पड़देपर पीछे सरकाना. यह दसवां प्रकार.

उदाहरण—

१०
×
७—६—५

११.—चिह्नके नीचेके पहिले अंकके पड़देपर बांए हाथकी मध्यमांगुलीसे तार दाबकर उसी प्रकार वह तार उसी हाथकी तर्जनीसे उसके पिछले यानी दूसरे अंकके पड़देपर दाबना, और इसपर नखीका प्रहार करनेके बाद, बांए हाथकी मध्यमांगुली तार परसे दाबकर उसी हाथकी ओर तिर्छी निसटती हुई ले जाकर, फिर तर्जनी उंगली तीसरे अंकके पड़देपर सरका कर, दूसरे अंकके पड़देपर मध्यमांगुलीसे आघात करके वह उंगली फिर उसी पड़देपर उसी प्रकार रखना. यह ग्यारहवां प्रकार.

उदाहरण—

११
×
७—६—५

१२.—चिह्नके नीचेके पहिले अंकके पड़देपर बांए हाथकी मध्यमांगुलीसे तार दाब कर, उसी प्रकार वह तार उसी हाथकी तर्जनीसे उसके पिछले यानी दूसरे अंकके पड़देपर दाबना, और उसपर नखीका प्रहार करनेके बाद, बांए हाथकी मध्यमांगुली तारपरसे दाबकर, उसी हाथकी ओर तिर्छी निसटती ले जाकर, फिर तर्जनी उंगली तीसरे अंकके पड़देपर सरकाकर, दूसरे अंकके पड़देपर मध्यमांगुलीसे आघात करनेपर, वह उंगली तारपरसे दाब कर, बांए हाथकी ओर तिर्छी निसटती हुई ले जाकर, ध्वनि उत्पन्न करनी चाहिये. यह बारहवां प्रकार.

उदाहरण—

१२
×
७—६—५.

डाट ।

सितारके षड्ज स्वरपर उंगली रखकर तारपर आघात करना व फौरन वह उंगली तारपरसे न उठाकर उसी प्रकार गांधार स्वरपर लाना यह ऋषभ स्वरका डाट हुआ ।

आलाप—किसी रागमेंके प्रधान स्वरका उस रागके नियमानुसार विस्तार करके फिर उसे उसी रागके अनेक शुद्ध स्वरोंमें मिलाकर उस रागका निखालस स्वरूप दिखलाना इसे **आलाप** कहते हैं. **आलाप**के चार भाग हैं और प्रत्येक भागको **मुकाम** अथवा **स्थान** कहते हैं.

प्रथम प्रधान स्वर लेकर फिर पहिले षड्ज स्वर पर आना यह आलापका पहिला स्थान. षड्ज स्वरसे प्रधान स्वरपर आना यह दूसरा स्थान, इसे रूपक कहते हैं. फिर पहिले षड्ज स्वरपर आकर तार सप्तकके अर्थात् टीपके षड्ज स्वरपर आना यह तीसरा स्थान, इसे **चिकस्वर** कहते हैं. इसके अनंतर फिर षड्ज स्वरपर आना और वहांसे दूसरे व तीसरे सप्तकके स्वरोंपर आकर नियमित स्वरोंका आरोहावरोह करके उस रागकी छाया दिखलाना यह चौथा स्थान, इसे **विश्रामक** कहते हैं.

आलापका आरंभ—प्रथम मध्यसप्तकके षड्ज व पंचम ये स्थायी स्वर लेकर फिर तारसप्तकके षड्जको लेना और वहांसे फिर पंचमपर व पंचमसे मूल षड्ज स्वरपर आना पस, आलापका प्रारंभ होगा.

किसी रागके कायम किये हुए स्वरोंमें आलाप लेना व दूसरे स्वर लेकर उस रागका स्वरूप बदलना, या त्वरित अथवा मंद आलाप लेना इत्यादिकों परसे आलापके रूपालीट, वरतिलंग, रूपसंजी, स्थायिभंजी, समालीट, रागालीट और राकाकलीट ऐसे सात प्रकार होते हैं.

ग्राम[१]-विचार.

सप्त स्वरोंके समूहको ग्राम कहते हैं.

---

१ Gamut or Scale.

ग्राम तीन होते हैं. **षड्ज ग्राम, मध्य** ग्राम और, **गंधारग्राम.** इन्हें अनुक्रमसे **आदि मध्य** और **अवसान** अथवा **नंद्यावर्त, जीमूत** और **सुभद्र भी** कहते हैं. तान—मूर्च्छना-ओंका मुख्य आधार ग्राम है.

१. **षड्ज ग्राम**—अर्थात् षड्ज स्वरसे निषादपर्यन्त आरोह करते हुए जो सप्तक उत्पन्न हो. वह इस प्रकार—जिस स्वरसे और उससे नीचे स्वरका उच्चारण न करते बने ऐसे अति नीच स्वरका प्रथम उच्चारण करना और उसे षड्ज मानकर वहांसे आरोहका प्रारंभ करते पंचम स्वर तक आना. फिर इस पंचम स्वरको षड्ज मानकर (अर्थात् यह पंचम स्वर जितना ऊंचा हो उतना ही ऊंचा षड्ज लेकर) वहांसे आरोहका आरंभ करके निषाद तक आना अर्थात् एक सप्तक होगा. यह सप्तक मूलके दूसरे सप्तकके मध्यम स्वरपर पूर्ण होगा. यह जो पहिले सप्तकके पंचम स्वरसे दूसरे सप्तकके मध्यम स्वर तक एक सप्तक हुआ इसे **षड्ज ग्राम** कहते हैं.

२. **मध्यम ग्राम**—मध्यम स्वरको षड्ज मानकर वहांसे निषाद तक आरोह करते हुए जो सप्तक उत्पन्न हो. अर्थात् जिस मध्यम स्वरपर षड्ज ग्राम संपूर्ण हुआ उस मध्यम स्वरको षड्ज मानकर वहांसे आरोहका आरंभ करके निषादतक जानेसे एक सप्तक होगा. यह दूसरा सप्तक मूलके तीसरे सप्तकके गांधार स्वरपर समाप्त होगा. इस दूसरे सप्तकको **मध्यम ग्राम** कहते हैं.

३. **गांधार ग्राम**—गांधार स्वरको षड्ज मानकर वहांसे निषादतक आरोह करते हुए जो सप्तक उत्पन्न हो. अर्थात् जिस गांधार स्वरपर मध्यम ग्राम समाप्त हुआ उस गांधार स्वरको षड्ज मानकर वहांसे आरोहका प्रारंभ करके निषादतक एक सप्तक संपूर्ण करना. यह तीसरा सप्तक मूलके चौथे सप्तकके ऋषभ स्वरपर समाप्त होगा. इस तीसरे सप्तकको **गांधार ग्राम** कहते हैं. इस ग्राममें गाना बहुत ही कठिन होता है, कारण इसके स्वर बहुत ऊंचे होते हैं.

---

१ षड्ज—मध्यम—गान्धारास्त्रयो ग्रामाः प्रकीर्तिताः ।
भूर्लोकाज्जायते षड्जो भुवर्लोकाच्च मध्यमः ॥
स्वर्गान्नान्यत्र गान्धारो नारदस्य मतं यथा ॥

इन ग्रामोंकी रचना अच्छी तरह समझमें आजावे इस कारण नीचे चित्र दिया है.

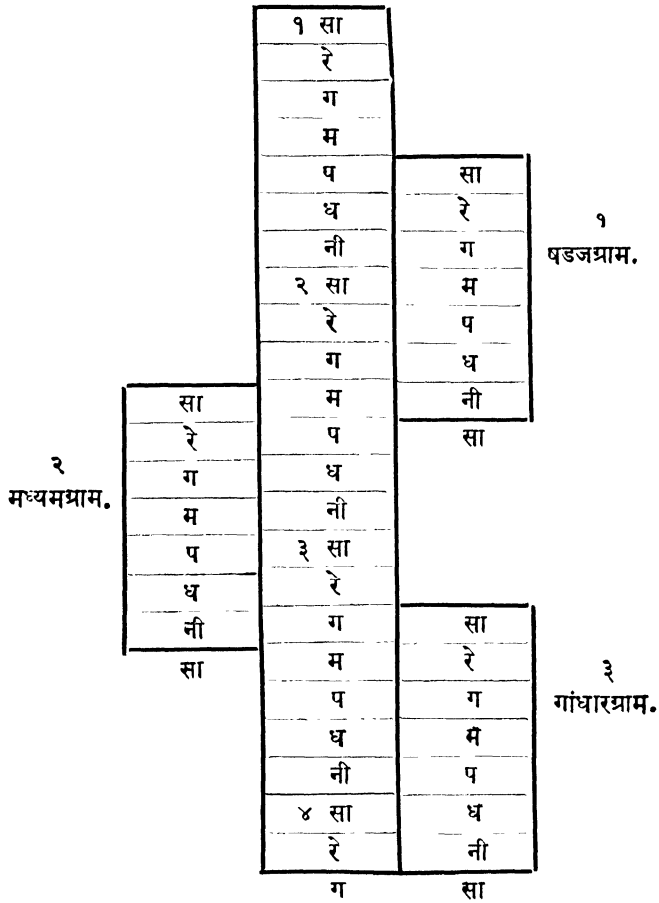

कोई कोई षड्ज, मध्यम और तार इन तीन सप्तकोंको ही तीन ग्राम कहते हैं.

तीनों ग्राम सितारपर निकालना.

षड्ज ग्राम—सितारके षड्जके पर्देपर तार मध्यमको दबाकर बुलानेसे जो स्वर पैदा हो उसे षड्ज मानकर निषादतक आरोह करे तो **षड्ज ग्राम** उत्पन्न होगा और षड्ज-से टपितक इसका सप्तक है.

मध्यम ग्राम—सितारके मध्यमके पर्देपर षड्जके तारको दबानेसे जो स्वर उत्पन्न हो उसे षड्ज मानकर निषादतक आरोह करनेसे जो सप्तक उत्पन्न हो उसे मध्यम ग्राम कहते हैं. मध्यमसे मध्यम तक इसका सप्तक है.

गांधार ग्राम—सितारके पर्दे टीपके निषादपर तार पंचमको दबाकर बुलानेसे जो स्वर उत्पन्न हो उसे षड्ज मानकर निषादतक आरोह करनेसे जो सप्तक उत्पन्न हो उसे गांधार ग्राम कहते हैं. निषादसे निषादतक इसका सप्तक है.

इस प्रकार तीन ग्राम अथवा सप्तक नियमित हैं तिसपरभी चाहे जिस सप्तकके चाहे जिस स्वरको चाहे जहां चाहे जिस वाद्यमें सप्त स्वर तीन ग्रामोंमेसे चाहे जिस स्वरको षड्ज मानकर वहांसे गानेका आरंभ करनेसे कुछ हर्ज नहीं. यह बात गानेवालेके कंठ या स्वर ऊंचा चढ़ानेकी शक्तिपर अथवा मर्जीपर अवलंबित है. अर्थात् तीन ग्रामोंके सप्तकोंके चाहे जिस स्वरको षड्ज मान सकते हैं.

मूर्च्छना[1].

सप्त स्वरोंका क्रमानुसार आरोह अवरोह करना इसे अथवा स्वर—समुदायको मूर्च्छना कहते हैं. यह एक मूर्च्छना हुई. इस प्रकार प्रत्येक ग्रामके प्रत्येक स्वरपर एक एक मूर्च्छना ऐसे तीनो ग्रामोंमें सब इकईस मूर्च्छना होती हैं.

निम्नलिखित कोष्ठकोंसे समझना.

षड्ज ग्राम.

नं.	मूर्छनाके नाम.	स्वर	मूर्च्छनाओंका स्वर–विस्तार.		मूर्च्छनाओंके देवता.	मूर्च्छनाओंके स्वभाव.
			आरोह.	अवरोह.		
१	उत्तरमंद्रा.	सा	सा. रे. ग. म. प. ध. नी.	नी. ध. प. म. ग. रे सा.	यक्ष.	शून्यता करे.
२	रंजनी.	रे	नी. सा. रे. ग. म. प. ध.	ध. प. म. ग. रे. सा. नी.	राक्षसी.	लज्जा करे.
३	उत्तरायता.	ग	ध. नी. सा. रे. ग. म. प.	प. म. ग. रे. सा. नी. ध.	नारद.	ध्यान लगाना.
४	शुद्धषड्जा.	म	प. ध. नी. सा. रे. ग. म.	म. ग. रे. सा. नी. ध. प.	ब्रह्मा.	शुद्ध रहना.
५	मत्सरीकृता.	प	म. प. ध. नी. सा. रे. ग.	ग. रे. सा. नी. ध. प. म.	नाग.	कठोरता.
६	अश्वक्रांता.	ध	ग. म. प. ध. नी. सा. रे.	रे. सा. नी. ध. प. म. ग.	अश्विनी कु.	क्षमा करना.
७	अभिरुद्गता.	नी	रे. ग. म. प. ध. नी. सा.	सा. नी. ध. प. म. ग. रे.	वरुण.	निर्मलता.

---

१ क्रमात्स्वराणां सप्तानामारोहश्चावरोहणं मूर्च्छनेत्युच्यते।
ग्रामस्था एताः सप्त सप्त च ग्रामत्रयेऽपि प्रत्येकं सप्त सप्त च मूर्छनाः॥

मध्यम ग्राम.

नं	नाम. मूर्छना.	स्वर	मूर्छनाओंका स्वर विस्तार.		मूर्च्छनाके देवता.	मूर्च्छनाका स्वभाव.
			आरोह	अवरोह.		
१	सौवीरी.	म	म. प. ध. नी. सा. रे. ग.	ग. रे. सा. नी. ध. प. म	ब्रह्मा.	धारण करना.
२	हरिणाश्वा.	प	ग. म. प. ध. नी. सा. रे.	रे. सा. नी. ध. प. म. ग.	इन्द्र.	अच्छा लेना.
३	कलोपनता.	ध	रे. ग. म. प. ध. नी. सा	सा. नी. ध. प. म. ग. रे.	वायु.	क्रुश करना.
४	शुद्धमध्या.	नी	सा. रे. ग. म. प. ध. नी.	नी. ध. प म. ग. रे. सा	गंधर्व.	वर्जना.
५	मार्गी.	सा	नी. सा. रे. ग. म. प. ध.	ध. प म. ग. रे. सा. नी.	सिद्ध.	कामक्रोध त्यागना.
६	पौरवी.	रे	ध. नी. सा. रे. ग. म. प	प. म. ग. रे. सा. नी. ध.	ब्रह्मा.	अमृततुल्य रहना.
७	हृष्यका.	ग	प. ध. नी. सा. रे. ग. म	म. ग. रे. सा. नी. ध. प.	भानु.	मन वश करना.

गांधार ग्राम.

नं.	नाम. मूर्च्छना.	स्वर	मूर्च्छनोंका स्वर-विस्तार.		देवता.	स्वभाव.
			आरोह.	अवरोह.		
१	नंदा.	ग.	ग.म.प.ध.नी.सा.रे.	रे.सा.नी.ध.प.म.ग.		शीतलता.
२	विशाला.	म.	रे.ग.म.प.ध.नी.सा.	सा.नी.ध.प.म.ग.रे.		अच्छापन.
३	सुमुखी.	प.	सा.रे.ग.म.प.ध.नी.	नी.ध.प.म.ग.रे.सा.		फैलाना.
४	विचित्रा.	ध.	नी.सा.रे.ग म.प.ध.	ध प.म ग.रे.सा.नी.		खुश रहना.
५	रोहिणी.	नी.	ध.नी.सा.रे.ग.म.प.	प.म.ग.रे.सा.नी.ध.		गर्जना.
६	सुखा.	सा.	प.ध.नी.सा.रे.ग.म.	म.ग.रे.सा.नी.ध.प.		प्रफुल्लितता.
७	आलापी.	रे.	म.प.ध नी.सा.रे.ग.	ग.रे.सा नी.ध.प.म.		मस्त रहना.

श्रुति.[1]

सप्त स्वरोंके प्रत्येक स्वरका जो काल नियमित किया है उसके सूक्ष्म विभाग करके उस प्रत्येक विभागकी **श्रुति** यह संज्ञा दी गई है. पीछे जो कोमल तीव्रादि स्वरोंके प्रकार कहे हैं वे मिश्र श्रुति ही हैं. सितारके किन्ही दो पडदोंके बीचमें और कई पडदे बांधकर उस प्रत्येक पडदेपर उंगली रखकर तारपर आघात करते हुए जो ध्वनि निकले वह प्रत्येक ध्वनि श्रुति कहलाती है. उदाहरणार्थ इस प्रकार षड्ज और ऋषभ इन दो पडदोंके बीचमें कुछ पड़दे और बांधे, और उनमेंसे किसी पडदेपर उंगली रखकर तारपर आघात करे तो उससे जो ध्वनि निकले वह श्रुति हुई. अथवा एक सितार लेकर उसपर ५।६ तार बांधे. वे तार अनुक्रमसे एककी अपेक्षा दूसरे ऊंचे स्वरपर इस रीतिसे लगावे या मिलावे या बांधे कि पहिले तारपर षड्ज व आखिरी तारपर ऋषभ उत्पन्न होकर बाकीके बीचेके तारोंपर इन दो स्वरोंके बीचवाले स्वर उत्पन्न हों. इनमेंके पहिले व अंतके तारपर आघात करनेसे ध्वनिका जो टणत्कार या रणन उत्पन्न होगा और जो कुछ देरतक सुनाई देकर धीरे धीरे बंद होगा उसे **अनुरणनात्मक** नाद या **स्वर** कहते हैं. उसी प्रकार बीचवाले तारोंपर आघात करनेसे जो रणन उत्पन्न हो व जो तत्क्षण ही बंद हो जाय उसे **रणनात्मक** नाद या **श्रुति** कहते हैं. ऊपर कहेहुए षड्ज व ऋषभ इन दो तारोंमें ३।४ तारोंके बजाय यदि बहुतसे तार बांधे जांय तो उनमेंके अंतिम तारकी ध्वनि **अनुरणनात्मक**-सुनाई देगी. व बीचके तारोंमेंके २।३ तारोंकी ध्वनि **रणनात्मक** सुनाई देगी. परन्तु शेष तारोंकी ध्वनि अति सूक्ष्म होनेसे स्पष्ट सुनाई न देगी. परन्तु इस प्रकार श्रुतियोंकी संख्या अनियमिततासे बहुत अधिक होकर वे स्वरभी स्पष्ट सुनाई न देंगे इस कारण और " कर्णेन्द्रियसे ग्राह्य जो ध्वनि, वही श्रुति[1] " ऐसा होनेसेही " रणनात्मक ध्वनि श्रुति व अनुरणात्मक ध्वनि वह स्वर " ऐसा संगीत–शास्त्रकारोंने नियमित करके श्रुतियोंकी संख्या २२ नियमित की है. इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार:– एक वीणा लेकर उसपर २२ तार लगावे. उसमें पहिला तार अतिनीच स्वरपर लगाकर दूसरा उससे कुछ अधिक ऊंचे स्वरपर और तीसरा उससे भी अधिक ऊंचा इसी प्रकारसे २२ तारोंको लगाना. परन्तु इस क्रमसे हों कि, किन्ही दो तारोंके बीचमें तीसरी ध्वनि साधारणरीत्या स्पष्ट न हो व ये दोनो स्वर स्पष्ट व भिन्न सुनाई देवें. इनमेंके चौथे तारपर षड्ज स्पष्ट सुनाई पड़ेगा, सातवें

---

१ प्रथमं श्रवणाच्छब्दः श्रूयते ह्रस्वमात्रकः । सा श्रुतिः संपरिज्ञेया स्वरावयवलक्षणा.

1 Instervals or Particles of Sound.

१ श्रवणेन्द्रियग्राह्यत्वाद्ध्वनिरेव श्रुतिर्भवेत् ।

पर ऋषभ, नवेंपर गाधार, तेरहवेंपर मध्यम, सतरहवेंपर पंचम, बीसवेंपर धैवत और बाईसवेंपर निषाद स्पष्ट सुनाई देगा. इस प्रकार प्रत्येक स्वरकी क्रमानुसार ४,३,२,४,४,३,२ श्रुतियां होती हैं अर्थात् षड्जके आरंभसे निषादके अंततक एक रेखा मानकर उसके बराबर बाईस विभाग करके, उसके प्रत्येक विभागको श्रुति कहते हैं और परस्पर स्वरोंमें जो अंतर है वह इन श्रुतियोंपरसे दिखलाया है.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
			४ सा			३ रे		२ ग				४ म				४ प			३ ध		२ नी

इन प्रत्येक श्रुतिके श्रवण करनेसे अंतःकरणपर तीव्रता, कोमलता, उद्दीपन, आनंद, कारुण्य इत्यादि अनेक परिणाम होते हैं. उसपरसे उनकी जाति नियमित कर उसका नौ रसोंमें अंतर्भाव किया है.

जातिपरत्वसे श्रुतियोंके नाम और रस.

	श्रुतियोंकी जाति.	संख्या	नाम.	रस.
१	दीप्ता.	४	तीव्रा, रौद्री, वज्रिका, उग्रा.	वीर, अद्भुत, रौद्र.
२	आयता.	५	कुमुद्वती, क्रोधा, प्रसारिणी, संदीपनी, रोहिणी.	हास्य.
३	करुणा.	३	दयावती, आलापिनी, मदंती.	करुणा, बीभत्स, भयानक.
४	मृदु.	४	मंदा, रतिका, प्रीति, क्षिति.	शृंगार.
५	मध्या.	६	छंदोवती, रंजनी, मार्जनी, रक्ता, रम्या, क्षोभिणी	हास्य, शृंगार.

स्वरोंकी श्रुतियां, संख्यासह नाम और स्वभाव.

स्वर नाम.	श्रुति सख्या	श्रुतिनाम.	श्रुतिभाव.
षड्ज.	४	तीव्रा, कुमुद्वती, मंद्रा, छंदोवती.	चपल, प्रफुल्लित करे, स्वरूप करे, विस्तारकरे.
ऋषभ,	३	दयावती, रंजनी, रतिका.	प्रेम करे, मोहित करे, शून्यभाव लज्जारहित करे
गांधार.	२	रौद्री, क्रोधा.	शून्यता अर्थात् ध्यान करना, त्याग करना.
मध्यम.	४	वज्रिका, प्रस्तरिणी, प्रीति, मार्जनी.	कठिनता, परकार्य सिद्ध करे, प्रेम करे, प्रकाश करे.
पंचम.	४	क्षिति, रक्ता, संदीपनी, आलापिनी.	गंभीरता, खाली व रुकना, जोड़ना, पसारना
धैवत.	३	मदंती, रोहिणी, रम्या.	मुद्रा अर्थात् ध्यान करना, ऊंचा करे, प्रेम करे.
निषाद.	२	उग्रा. क्षोभिणी.	भय करना, क्षोभ अहंकार रुकाई करे.

* सप्त स्वर तीन ग्राम इनकी श्रुतियोंका कोष्टक.

श्रुतिनंबर.	श्रुतियोंके नाम.	स्वर.	मंद्र सप्तक अर्थात् षड्ज ग्रामकी श्रुति. नाम. ×	मध्यम सप्तक यानी मध्यम ग्रामकी श्रुति. नाम. ×	तार सप्तक अर्थात् गांधार ग्रामकी श्रुति. नाम. ×
१	तीव्रा		मन्द्रा	नादान्ता	ईश्वरी
२	कुमुद्वती		अतिमन्द्रा	निष्कला	कौमारी
३	मंदा		घोरा	गूढा	सवराली
४	छन्दोवती	सा	घोरतरा	सकला	भोगवर्यी
५	दयावती		मण्डना	मधुरा	मनोरमा
६	रंजनी		सौम्या	गली	सुप्तिनग्धा
७	रतिका	रे	सुमना	एकाक्षरा	दिव्यांगा
८	रौद्री		पुष्करा	भृंगजा	सुललिता
९	क्रोधा	ग	शंखिनी	रसगीति	विद्रुमा
१०	वज्रिका		नीला	सुरंजिका	महार्का
११	प्रसारिणी		उत्पला	पूर्णा	शंखिनी
१२	प्रीति		अनुनासिका	अलंकारिणी	राका
१३	मार्जनी	म	घोषवती	वाशिका	लजा
१४	क्षिति		नीलनादा	वैणिका	काली
१५	रक्ता		आवर्त्ता	त्रिस्थाना	सूक्ष्मा
१६	संदीपनी		रणदा	सुस्वरा	अतिसूक्ष्मा
१७	आलापिनी	प	गंभीरा	सौम्या	पुष्टा
१८	मदन्ती		दीर्घतरा	भाषांगी	सुपुष्टिका
१९	रोहिणी	ध	जादिनी	वार्तिका	विष्पटा
२०	रम्या		मन्द्रजा	संपूर्णा	कराली
२१	उग्रा		सुप्रसन्ना	प्रसन्ना	विस्फुटा
२२	क्षोभिणी	नी	निनदा	सर्वव्यापिनिका	भेदिनी

* ये नाम नारदने दिये हैं.

* इन तीन सप्तकोंमेंके ६६ श्रुतियोंके भिन्न २ नाम **पार्श्वदेवने** अपने **संगीत-समयसारमें** दिये हैं

भारतीय श्रुति व पाश्चिमात्य श्रुतियोंकी तुलना.

अपने स्वर व उनके संक्षिप्त नाम.			पाश्चिमात्य स्वर व उनके संक्षिप्त नाम.		पाश्चिमात्य श्रुति.	आर्य–श्रुति.	
१	षड्ज.	सा	Do	C	५· ३	४	Do
२	ऋषभ.	रे	Re	D	१·१६	३	Re
३	गांधार.	ग	Mi	E	२· ३	२	Mi
४	मध्यम.	म	Fa	F	३· ९	४	Fa
५	पंचम.	प	Sol	G	३·१२	४	Soi
६	धैवत.	ध	La	A	३·१२	३	La
७	निषाद.	नी	Si	B	१· ५	२	Li

विकृतस्वर[१].

ऊपर जो श्रुतिरूपसे स्वरोंके विभाग कहे हैं वे अति सूक्ष्म होनेसे एक स्वरकी श्रुतिका दूसरे स्वरके साथ मिश्रण होकर उससे जो मिश्र स्वर उत्पन्न होते हैं उन्हें विकृत स्वर कहते हैं.

साधारण रीत्या २२ श्रुतियोंमेंके सप्त स्वर ये शुद्ध स्वर व उनके सिवाय बाकीकी मिश्र श्रुति ये विकृत स्वर ऐसा कहनेमें कुछ हर्ज न होगा.

शुद्ध स्वर यदि पिछली श्रुतिपर जाय तो उसका स्वरूप कोमल होगा, उसी प्रकार अगले स्वरपर जानेसे तीव्र होगा. जैसे, सातवीं (रतिका) श्रुतिपर ऋषभ स्पष्ट होता है तो वह ऋषभ यदि पीछे अर्थात् रंजनीपर जावे तो वह कोमल ऋषभ होगा व दयावतीपर अतिकोमल होगा. उसी प्रकार नवीं (क्रोधा) श्रुतिपर गांधार स्पष्ट होता है. वह दशवीं (वज्रिका) श्रुतिपर तीव्र, ग्यारहवीं (प्रसारणी) श्रुतिपर तीव्रतर व बारहवीं (प्रीति) श्रुतिपर तीव्रतम गांधार होगा[२].

१ Modified notes.　　२ विकारी व अविकारी स्वर देखो.

स्वरोंके अन्य पारिभाषिक शब्द व उनका अर्थः—

शुद्ध, कोमल, व तीव्र स्वरोंका हाल पीछे देही चुक हैं.

अतिकोमल स्वर—कोमल स्वरसे जो मधुर व नीच स्वर हो उसे अतिकोमल कहते हैं.

शृंगारिका स्वर—अति कोमल स्वरसे मधुर स्वर.

तीव्रतर—तीव्र स्वरसे ऊंचा स्वर.

तीव्रतम—तीव्र स्वरसे ऊंचा स्वर.

इनका खुलासा इस प्रकारसेः—

शृंगारिक.	शुद्ध स्वरसे तीन दर्जा उतरा हो.
अति कोमल.	दो दर्जा उतरा हो.
कोमल.	एक दर्जा उतरा हो.
शुद्ध.	वह स्वर जो असली जगह रहे.
तीव्र.	शुद्ध स्वरसे एक दर्जा चढ़ा रहे.
तीव्रतर,	जो दो दर्जा चढ़ा रहे.
तीव्रतम.	जो तीन दर्जा चढ़ा रहे.

उदात्त—ऊंचा स्वर (नी-ग.)

अनुदात्त—नीचा स्वर (रे-ध.)

स्वरित—मध्यम स्वर (सा-म-प.)

कल—मधुर व अस्फुट स्वर.

काकली—कल स्वरसे मधुर स्वर.

प्रधान स्वर—किसी रागमें जो स्वर वारंवार लगाया जावे व जिसपर उस रागकी छाया दिखलानेका आधार होता है उस स्वरको **प्रधान स्वर** कहते हैं.

ग्रह—किसी रागका जिस स्वरसे आरंभ होता है उस स्वरको ग्रह कहते हैं. इसे पकड़ भी कहते हैं.

न्यास—किसी रागकी जिस स्वरपर समाप्ति होती है अर्थात् जिस स्वरपर रुक जानेसे उस रागकी समाप्ति हो उस स्वरको **न्यास** कहते हैं और **अटक** भी कहते हैं.

अंशस्वर—किसी रागमें जो मधुर स्वर वारंवार लगाया जावे अथवा जिस एक विशिष्ट स्वरपर रुकना पडता है उस स्वरको **अंशस्वर** कहते हैं. यह **न्यास** नहीं है कारण इस स्वरपर रागकी समाप्ति नहीं होती है.

सूर—प्रथम स्वर जो षड्ज है उसे **सूर** कहते हैं. यह स्वर प्रत्येक रागका मूल पाया है. सप्त स्वरोंमेंके किसीही स्वरको सूर कह सकते हैं अर्थात् सप्त स्वरोंमेंसे कोई सा भी स्वर **सूर** हो सकता है अर्थात् किसी स्वरको सूर (षड्ज) मानकर वहांसे आरोह या जानेका प्रारंभ करनेका अधिकार है[1].

अनेक प्रकारके राग रचते बने व उनका आपसमे एक दूसरेसे भिन्नत्व मालूम हो इस लिये सप्तस्वरोंमें चार भेद किये गये हैं. उन्हें. वादी, संवादी, अनुवादी और विवादी स्वर कहते हैं. इन्हे क्रमसे राजा, प्रधान, सेवक व शत्रु ऐसा भी कहते हैं.

१ **वादी**—यह मुख्य स्वर होता है और रागरागिणीका खास स्वर होकर सबसे अधिक लगता है. इससे राग प्रकाशित होता है इसपर रागोंके स्वरूप दिखलानेका आधार होता है.

२ **संवादी**—जिन दो स्वरोंमें १२ या ८ श्रुतियोंका अंतर हो या जो समश्रुतिक हों वे परस्पर **संवादी** स्वर होते हैं. जैसे षड्ज व पंचम इनमें १२ श्रुतियोंका अंतर होकर दोनो समश्रुतिक (४।४ श्रुतिके) स्वर हैं इससे पंचम यह षड्जका **संवादी** स्वर है. यह स्वर वादीका मददगार होता है और उससे कम लगता है और वादीके साथही लगकर रागरागिणीकी शकल पैदा करता है. रागकी छाया दिखलानेवाले सहायकारी स्वरोंमें यह मुख्य स्वर होता है.

---

1 Key note. " A singet may start with any key note and the succeeding notes will be affected accordingly. "

H. Music.

२ सप्तक व ग्राम देखो.

३ **अनुवादी**—संवादी व विवादी स्वरोंके सिवाय जो स्वर हों वे **अनुवादी** होते हैं, अथवा जिन दो स्वरोंमें एक श्रुतिका अंतर न हो वे **अनुवादी** होते हैं. यथाः—षड्जके ऋषभ व गांधार इत्यादि **अनुवादी** स्वर होते हैं. यह स्वर रागमें साधारण सहायकारी स्वर है. राग परिपूर्ण होनेको संवादी व अनुवादी स्वरोंकी बडी आवश्यकता होती है. जो संवादीकी मदद करे और उसके पीछे लगाया जावे उसे **अनुवादी** कहते हैं. इससे राग रागिणी दरश जाती है.

४ **विवादी**—जिन दो स्वरोंकी श्रुतिसंख्यामें एकका अंतर हो वे स्वर. यथाः—ऋषभकी तीन श्रुति व गांधारकी दो श्रुति होनेके कारण ऋषभस्वरका विवादी स्वर गांधार है. इसे वर्ज्य स्वर भी कहते हैं. किसी २ रागमें कई स्वर वर्ज्य होते हैं अर्थात् वे उस रागमें नहीं लगते और यदि लगें तो वे उस राग आदिके मूल स्वरूपको बिलकुल बदल देते हैं इससे उस स्वरको शत्रु कहते हैं. जैसे मालकंस रागमें ऋषभ व पंचम स्वर वर्ज्य हैं. पस, वे उस रागमें न लगेंगे और यदि लगें तो मालकंसका असली स्वरूप बदल जायगा. अगर **विवादी** स्वर किसी रागमें लगाना हो तो जो वह शुद्ध **विवादी** हो तो तीव्र या कोमल करके थोडासा लगाते हैं इसे **बड़ार** भी कहते हैं.

सप्त स्वरोंके परस्पर संबंधका स्पष्टीकरणः—

नं.	नाम.	वादी.	संवादी.	अनुवादी.	विवादी.
१	षड्ज	सा.	प.—म.	रे. ग. ध. नी.	०
२	ऋषभ.	रे.	ध.	स म. प. नी.	ग.
३	गांधार.	ग.	नी.	स. म. प. ध.	रे.
४	मध्यम.	म.	सा.	रे. ग. प. ध. नी.	०
५	पंचम.	प.	सा.	रे. ग. म. ध. नी.	०
६	धैवत.	ध.	रे.	स. ग. म. नी.	नी.
७	निषाद.	नी.	ग.	स. रे. म. प.	ध.

सप्त स्वरोंके शृंगारस्वरूपादिका कोष्टक.

नं.	स्वरनाम.	स्थान(द्वीप)	वंश.	जाति.	वर्ण.	देवता.	गोत्र.	ऋषि.	छंद.	उत्पत्ति.	पुत्र. [राग.]	वार.	शस्त्र.
१	षड्ज	जंबु	देव	ब्राह्मण	रक्त	अग्नि	अग्निवेश्य	अग्नि	अनुष्टुप्	नाभि	भैरव	रवि	फरसा
२	ऋषभ	शाक	ऋषि	क्षत्रिय	पीत	ब्रह्मा	काश्यप	ब्रह्मा	गायत्री	हृदय	करनाट	सोम	खांडा
३	गांधार	कुश	देव	वैश्य	सुवर्ण	शशी	गौतम	मृगांक	त्रिष्टुप्	वक्षस्थल	हिंडोल	मंगल	धनुष बाण
४	मध्यम	क्रौंच	देव	ब्राह्मण	श्वेत	विष्णु	आंगिरस	लक्ष्मीपति	बृहती	कंठ	वसंत	बुध	मुद्गर
५	पंचम	शाल्मली	पितृ	ब्राह्मण	श्याम	नारद	भार्गव	नारद	पंक्ति	मुख	मल्हार	गुरु	कटार
६	धैवत	श्वेत	ऋषि	क्षत्रिय	पीत	तुंबर	कौशिक	तुंबर	उष्णिक्	तालु	श्री	शुक्र	मुसल
७	निषाद	पुष्कर	असुर	वैश्य	विचित्र	तुंबर	वशिष्ठ	धनद	जगती	नासिका	श्री	शनि	शूल

सप्त स्वरोंके शृंगार स्वरूप आयु आदिका कोष्ठक.

नं.	नाम स्वर.	चलाचल स्वर.	स्वरोंका आकाश व ग्रह.	स्वभाव.	आवाजवाले जानवर.*	ऋतु	सवारी.	पोशाक.	अवस्था, उम्र. ‡
१	षड्ज	अचल	१. चंद्र	सर्द तर	मोर	हमेशा	बैल	श्वेत	८० अस्सी
२	ऋषभ	चल	२. बुध	सर्द खुश्क	गाय, बैल, चातक पक्षी	वसंत	घोड़ा	सुर्ख	७० सत्तर
३	गांधार	चल	३. शुक्र	सर्द तर	मैंढा, बकरी	ग्रीष्म	रथ	सुर्ख	६० साठ
४	मध्यम	चल	४ रवि	गरम खुश्क	क्रौंच, कलिंगपक्षी	वर्षा	हाथी	श्वेत	४० चालिस
५	पंचम	अचल	५. मंगल	गर्म खुश्क	कोयल	शरद्	पालकी	पीली	३० तीस
६	धैवत	चल	६. गुरु	मोअद्दिल	घोड़ा, मेंढक	हेमंत	शेर	सुर्ख	२० बीस
७	निषाद	चल	७. शनि	सर्द खुश्क	हाथी	शिशिर	भैंसा	स्याह	१० दस

* षडजं वदेन्मयूरो हि ऋषभं चातको वदेत् । अजा वदति गान्धारं क्रौञ्चो वदति मध्यमम् ॥ १ ॥
पुष्पसाधारणे काले कोकिलः पञ्चमं वदेत् । दर्दुरो धैवतं चैव निषादं च वदेद्गजः ॥ २ ॥

‡ अशीतिः सप्ततिः षष्टिश्चत्वारिंशच्च त्रिंशतिः । विंशतिर्दश वर्षाणि षडजादीनां वय; क्रमात् ॥

भाग पहिला.

तृतीयांक.

राग-विचार[1].

योऽयं ध्वनिविशेषस्तु स्वरवर्णविभूषितः ।
रञ्जको जनचित्तानां स रागः कथितो बुधैः ॥

श्रवण करके मनको द्रव उत्पन्न करनेवाली जो सप्त स्वरोंकी विशिष्ट रचना व जिसकी ध्वनि श्रवणगोचर होतेही मनरूपी नेत्रोंके सामने जो चित्ताकर्षक आभास हो अथवा जो मनोरंजक छाया पड़े उसे, या सुननेवालोंके अंतःकरणमें शृंगार, वीर, करुणा आदि रस उत्पन्न करनेवाली जो स्वरोंकी रचना है उसे **राग** कहते हैं.

प्रत्येक रागमें सप्त स्वर आने चाहिये ऐसा कुछ नियम नहीं है. कितनेही रागोंमें एक अथवा अधिक स्वर वर्ज्य होते हैं, परन्तु आदिस्वर जो षड्ज वह किसी रागमें वर्ज्य नहीं हो सकता. बाकीके सर्व स्वर वर्ज्य हो सकते हैं. इस वर्ज्यावर्ज्य स्वरोंके कारण ही रागोंकी **षाडव**, **ओडव** और **संपूर्ण** ऐसी तीन जातियां हुई हैं.

षाडव—जिस रागमें सप्त स्वरोंमेंसे एक स्वर वर्ज्य हो उसे **षाडव** जातिका राग कहते हैं. इस जातिके रागमें सप्त स्वरोंमेंसे सिर्फ ६ स्वर आते हैं. जैसे, राग **मारवा.** इस रागमें पंचम स्वर वर्ज्य है.

ओडव—जिस रागमें सप्त स्वरोंमेंसे दो स्वर वर्ज्य हों उसे **ओडव** राग कहते हैं. ये पांच स्वरोंके राग होते हैं. जैसे, राग **सारंग.** इसमें गांधार व धैवत ये दो स्वर वर्ज्य हैं.

संपूर्ण—इस जातिके राग सात स्वरोंके होते हैं अर्थात् इसमें कोई स्वर वर्ज्य नहीं होता. जैसे, राग **भैरव.**

---

१ सामवेदात्स्वरा जाताः स्वरेभ्यो ग्रामसंभवः ।
ग्रामेभ्यो जातयो जाता जातेभ्यो रागसंभवः ॥ १ ॥
सप्तस्वरास्त्रयो ग्रामा मूर्च्छनाश्चैकविंशतिः ।
द्वाविंशतिश्च श्रुतय एतेभ्यो रागसंभवः ॥ २ ॥

रागोंके स्वरूपोंपरसे उनकी मुख्य तीन जातियां हुई हैं; १ शुद्ध, २ सालंग (अर्थात् छाया–लग). और ३ संकीर्ण.

१ **शुद्ध**— यह दो प्रकारका है. महाशुद्ध व शुद्ध.

(१) **महाशुद्ध**—जिस रागका स्वरूप दूसरे रागसे न मिले और जिसमें विकृत स्वर न आवें व जिसमें दूसरे रागकी छाया तनिक भी न आवे वह राग महाशुद्ध कहाता है. जैसे, राग सारंग व राग कानड़ा.

(२) **शुद्ध**—इसका स्वरूप महाशुद्ध रागकी तरह होता है; परन्तु इसमें विकृत स्वर आते हैं. जैसे, शुद्ध टोड़ी व शुद्ध गुर्जरी.

२ **सालंग**—यह दो प्रकारका है. शुद्ध सालंग व सालंग.

(१) **शुद्ध सालंग**—शुद्ध रागमें जब विकृत स्वर आते हैं तब उसे **शुद्ध सालंग** कहते हैं. जैसे, टोड़ी व गुर्जरी.

(२) **सालंग**—जिस रागमें दूसरे रागकी छाया आती है उसे **सालंग** अथवा **सच्चा सालंग** कहते हैं. जैसे, श्रीराग. इसमें गौरी रागिणीकी छाया आती है.

(३) **संकीर्ण**—इसके भी दो प्रकार हैं. लघुसंकीर्ण व महासंकीर्ण.

(१) **लघुसंकीर्ण**—जिस रागकी उत्पत्ति दो शुद्ध रागोंसे होती है व जिसके स्वर विस्तृत होते हैं वह लघुसंकीर्ण कहाता है. जैसे राग भैरव. यह टोड़ी व कानड़ा इनसे उत्पन्न होता है.

(२) **महासंकीर्ण**—इसके और तीन भेद हैं. सुरसा, स्वरसा, और सारसा.

१ **सुरसा**—यह दो प्रकारका है. लघुसुरसा व गुरुसुरसा.

(१) **लघुसुरसा**—यह शुद्ध व सालंग रागोंसे उत्पन्न होता है. जैसे, अडाना. यह राग सोरठ और कानड़ासे उत्पन्न हुआ है.

(२) **गुरुसुरसा**—यह शुद्ध व संकीर्ण इनसे उत्पन्न होता है. जैसे भैरवी. यह रागिणी टोड़ी व रामकलीसे उत्पन्न हुई है.

२ **स्वरसा**—इसके भी दो प्रकार हैं. लघुस्वरसा, और गुरुस्वरसा.

(१) **लघुस्वरसा**—यह दो सालंग रागोंसे व क्वचित् दो संकीर्ण व एक शुद्ध रागोंसे उत्पन्न होता है. जैसे राग विणहरा. यह श्रीराग व धनाश्रीसे उत्पन्न होता है.

(२) **गुरुस्वरसा**—यह सालंग व संकीर्ण रागोंसे उत्पन्न होता हैं. जैसे रागकल्याण. यह धनाश्री व जेतश्रीसे उत्पन्न होता है.

(३) **सारसा**—इसके दो प्रकार होते हैं. लघु सारसा व गुरुसारसा.

(१) **लघुसारसा**—यह दो संकीर्ण रागोंसे व क्वचित् दो संकीर्ण व एक शुद्ध रागोंसे उत्पन्न होता है. जैसे राग पंचम. यह हिंडोल व वसंत इनसे हुआ है.

(२) **गुरुसारसा**—यह शुद्ध, सालंग व संकीर्ण इन तीन जातियोंके रागोंसे उत्पन्न होता है. जैसे राग हिंडोल. यह लीलावती, ललित व भैरव इन तीन रागोंसे हुआ है.

मुख्य राग छः हैं. उसी प्रकार वर्षके ऋतुभी छः होते हैं. किस ऋतुमें कौनसा राग गाना उचित है उसका कोष्ठक—

राग.	हिंडोल	दीपक	मेघ	भैरव	श्री	मालकंस
ऋतु.	वसंत	ग्रीष्म	वर्षा	शरद	हेमंत	शिशिर

प्रत्येक रागकी पांच रागिणी, आठ उपराग व आठ उपरागिणी ऐसे गर्भभेद हैं. रागोंको पुरुष, रागिनियोंको उनकी स्त्रियां, उपरागोंको उनके पुत्र व उपरागिणियोंको उनकी स्नुषा ऐसी आलंकारिक उपमा दी गई है. इस प्रकार छः राग, तीस रागिणी, ४८ उपराग व ४८ उपरागिणी सब मिलकर १३२ मुख्य राग होते हैं. इनके अतिरिक्त और भी अनेक राग रागिणी हैं. राग रागिणियोंके नाम व उनके गर्भभेद इनके विषयमें बहुत कुछ मतभेद मालूम पड़ता है, अतएव जिन २ ग्रंथोंका जो मतभेद मिला है वह कोष्ठकरूपसे दिया है. प्रत्येक कोष्ठकपर ग्रंथकारका अथवा ग्रंथका नाम दिया है.

कई मतोंसे निर्मित कोष्ठक.

भैरव			मालकंस			हिंडोल.			दीपक.			श्री.			मेघ.		
रागिणी	उपराग.	उपरागिणी.	रागिणी.	उपराग.	उपरागिणी.	रागिणी.	उपराग.	उपरागिणी.	रागिणी.	उपराग	उपरागिणी.	रागिणी.	उपराग.	उपरागिणी.	रागिणी.	उपराग.	उपरागिणी.
भैरवी	हर्ष	बिला-वली	ककुभ	मारू	धनाश्री	पटमं-जरी	मंगल	पार्वती	कमोदी	कलिंग	जयजय-वंती	मालश्री	सिंधु	सरस्वती	देश-कारी	गजधर	मांढ
वैराटी	तिलक	सूहा	खंबा-वती	मेवाड़	जेतश्री	बिला-वली	शोभा	पूर्वी	देशी	कुंतल	मंगल गूजरी	धनाश्री	मालव	विजया	भूपाली	गंधार	कन्नडनट
मधु मा-धवी	पूरिया	कुंभारी	गुण-कली	प्रबल	कामोदी	ललिता	विभास	चैती	कानडी	कमल	मनोहरा	मालवी	गौड	कुंभी	गुर्जरी	जालंधर	कदंबनट
सिंधवी	माधव	फलगू-जरी	गौरी	बडहंस	गंधारी	देशा-ख्य	विनोद	सरस्वती	केदारी	कुसुम	अहीरी	असा-वरी	कुंभ	सिरो	मल्हारी	सारंग	गौरी
बंगाली	सोहु	सोरठी	टोडी	भ्रमर	सुघराई	राम-कली	गौरा	देवगिरी तरुणी	नट	चंपक	यमन	वसंता	गुणसा-गर	सोहनी	टंकल	नटनारा-यण	बिहारी
	बलनेह	अनद-ही		चंद्रक	दुर्गा		प्रधान			राम	हमीर		गंभीर	क्षेम		शहाना	परज
	मधु	पटमं-जरी		खोकर	भीमप-लासी		चंद्र-बिंब	केरवी		लहल	मालगू-जरी		शंकर	सहस्र-शीर्षा		कल्याण	नटमंजरी
	पंचम	भीरी		नंद	मालश्री		आनंद	लीला-वती		हिमाल	भोपाली.		विहागडा	ध्यानजी		शंकरा-भरण	शुद्धनट

गुंच-ए-राग २.

राग		
भैरव.	रागिणीं	भैरवी, बेरारी, मधमादा, सिंधवी, बंगाली.
	उपराग	हरख, माधव, विभास, पंचम, देवसाख, ललित, बिलावल, बंगाल.
	उपरागिणी	सोरठ, कुभारी, फलगूजरी, पटमंजरी, सूहा, अनदाही, मीरी, बिलावली.
मालकंस.	रागिणी	टोडी, गोडी, गुनकली, खंबावती, ककुभ.
	उपराग	गंधार, मालव गौरा, कामोदा, बडहंस, शहाना, मकर, सुध, सिकट.
	उपरागिणीं	जैतश्री, दुर्गा, सुघराई, गंधारी, भीमपलासी, कामोदी, धनांश्री, मालश्री.
श्री.	रागिणी	धनाश्री, आसावरी, मारू, वसंत, मालश्री.
	उपराग	श्रीखन, गोलाहल, सावंत, संकरा, खट, बडहंस, देसकर, रागेसर.
	उपरागिणीं	विजया, ध्यानजी, सुरव, कुंभ, खेम, शिशिरवसा, सरसती, सोहनी.
मेघ.	रागिणी	भूपाली, गूजरी, देशकार, टंक, मल्हार.
	उपराग	कलापर, शहाना, बागेश्री, पूरिया, सतत, शंकराभरन, कानडा, तिलंग.
	उपरागिणी	कन्नडनट, कावदी, बहादरी, परज, नटमंजरी, कदमनाट, मांढ, सुधनाट.
हिंडोल.	रागिणी	रामकली, ललित, पट—मंजरी, बिलावली, देशाख.
	उपराग	वसंत, मालवा, मारू, बकहार, लंकदहन, कुशल, धून, नागधून.
	उपरागिणी	गरवी, लीलावती, चैती, पूर्वी, पार्वती, तरन, देवागिरी, सरसती.
दीपक.	रागिणी	नट, कामोदा, कानडा, देसी, केदारा.
	उपराग	नटनारायण, बिहागडा, मंगलापटक, अडाना, रहस—मंगल, मकरंद, कुसुम, टंक.
	उपरागिणी	मंगल गूजरी, जयजयवंती, मालगूजरी, मनोहरा, यमन, हमीर, अहीर, भूपाली.

चमन्-ए-बेनजीर ३.

राग.		
भैरव.	रागिणी	........सिंधवी, बंगाल, आसावरी, बेरारी, मधमादा, भैरवी.
	उपराग	........हरख, ललित, पूरिया, माधव, सूहा, बलीना, मधु, पंचम.
मालकंस.	रा.	........खंबावती, ककुभ, गुनकली, टोडी, गौरी, आवीरन.
	उ.	........मारू, मेवाड़, बड़हंस, प्रबल, चंद्रक, नंद, भौंर, खोकर.
हिंडोल.	रा.	........बिलावल, पटमंजरी, देशाख, रामकली, पूनकली, अफनंद.
	उ.	........चन्द्र—बिंब, मंगल, आनंद, विनोद, प्रधान, विभास, गौरा, शोभा.
दीपक.	रा.	........केदारा, कानड़ा, यमन, कामोद, नट, देशी.
	उ.	........कुंतल, कमल, चंपक, कुसुम, राम, हिलाल, कलिंग, हिमाल.
श्री.	रा.	वसंत, असावरी, मालवी, मारवी, धनाश्री, मालश्री.
	उ.	सिंधु, मालव, गोंड, गुनागर, कुंभ, गंभीर, सकरा, बिहागरा.
मेघः	रा.	भूपाली, मल्हार, गूजरी, टंक, देशकार, नट.
	उ.	जालंधर, नारायननट, शंकराभरन, कल्यान, गजधर, गंधार, सारंग, सुभाना.

रागस्तान ४.

राग.		
भरव.	रा.	........भैरवी, बेरारी, मधमाधा, बंगाल, सिंधवी.
	उ.	........हरख, तिलंग, पूरिया, माधव, सूहा, बलीना, मधु, पंचम.
	उ. रा.	........सूहा, बिलावल, सोरठी, कुंभारी, अनदाही, गुजरी, पटमंजरी, भैरवी.
मालकंस.	रा.	........टोडी, गौडी, गुनकली, खंबावती, कोकब.
	उ.	........मारू, मेवाड़, बड़हंस, प्रबल. चंद्रक, नंद, भ्रमर, खोखर.
	उ. रा.	........धनाश्री, मालश्री, जेतश्री, सुघराई, गंधारी, कामोदी, भीमपलासी, दुर्गा.
हिंडोल.	रागि.	........रामकली, देशाख, ललित, बिलावल, पटमंजरी.
	उप.	........मंगल, शोभा, आनंद, चंद्रबिंब, विभास, गौरा, प्रधान, विनोद.
	उ. रा.	........लीलावती, केरवी, चैती, पूरवी, पारवती, तरून, देवगिरी, सरसती.
दीपक.	रा.	........नट, केदार, कानडा, कामोद, देश.
	उ.	........कुंतल, कोमल, कलिंग, चंपक, कुसुम, राम, लहर, हिमाल.
	उ. रा.	........मंगलगूजरी, मालगूजरी, भोपाली, मनोहरा, अहेर, यमन, हमीर, झिंझोटी.
श्री.	रा.	........धनाश्री, मालश्री, असावरी, मारू, वसंत.
	उ.	........सिंधु, मालव, गौड़, गुनसागर, कुंभ, गंभीर, संकरा, बिहागड़ा.
	उ.	........विजया, ध्यांजी, कुंभ, सोहनी, सुख, खेम, सरसती, मल्हार.
मेघ.	रा.	........टंक, मल्हार, भोपाली, गुर्जरी, देवसाख.
	उ.	........जालंधर, सारंग, नट, शंकराभरन, कल्यान, गजधर, गंधार, सहाना.
	उ.	........कन्नड़नट, गौरी, कदमनाट, बहारी, परज, नटमंजरी, मांझ, शुद्धनाट.

बंसीरागमाला ५.

राग भैरव.	रागिणी	भैरवी, रामकरी, मालश्री, धनाश्री, सिंधुरा, असावरी.
	उपराग	धौल, श्याम, शुद्ध, मालकंस, अजैपाल, कन्हरनट, ऋषभ.
	उ. रागिणी	रेवा, रंभेली, सूही, सूहो, भटियाल, अष्टी, सोहनी.
मेघ.	रागि.	कानड़ा, केदार, पूर्वी, बिलावली, मधुमावली, कोड़ा.
	उ. रा.	छायानट, शुद्ध नट, गौड़, हमीरनट, सावंत, अड़ाना, गौरा.
	उ. रागि.	जोगिया, पूरिया, यमन, देशिया, राजविजै, जयतश्री, नटमल्हारिया.
श्री.	रा.	सुभगा, गंधारी, गौरी, कुमारी, बिलावली, विरागी,
	उ. रा.	जैतकल्याण, षट्, श्यामराम, बागेश्वर, हेमकल्याण, खेमकल्याण, पंचम.
	उ. रागि.	घोकली, मांझगौड, सरंग, सरसती, परत, जैजंतया, संकोची.
वसंत.	रा.	ललित, विभास, पटमंजरी, पंचमी, गूजरी, टोड़ी.
	उ. रा.	दीपक, देसाख, बिहाग, सहान, सारंग, अहीरनट, कल्याणनट.
	उ. रागि.	सोरठ, देवकली, बंगाली, त्रिवेणी, गुनकरी, खंबावती, सारंग.
करनाट.	रा.	गारा, भूपाली, नटी, कल्याण, कमोद, रामकली.
	उ. रा.	मारू, बहुनागर, टंक, सागर, लंकदहन, गौरामालव, परवार.
	उ.रागि.	ककुभ, अहेरी, शाम, समर्फली, अलैहया, वृंदावनी, ललितपंचमी.
हिंडोल.	रा.	दीपिका, देसकारी, बरारी, मालवी, पहाडी, मन्हटी.
	उ. रा.	शंकराभरन, सुमतविलास, तिलककमोद, नटकेदार, कमोदनट, संक्रमण, बड़हंस.
	उ. रागि.	चैती, सुघराई, काफी, लीलावती, हरसिंगार, नायकी, भीमपलासी.

सकलशास्त्र–निरूपण ६.

राग.		
भैरव.	रागिणी	........भैरवी, बैराडी, मधुमाधवी, सिंधवी, बंगाली.
	उ. रा.	........हर्ष, तिलक, पूरिया, माधव, सोहू, बलनेह, मधु, पंचम.
	उ. रा.	........विरावली, सोहा, कनिहारी, भलगूजरी, पंजरी, सोरठी, अंदाही, भैरवी.
श्री.	रा.	........वसंत, असावरी, मालश्री, धनाश्री, मालवी.
	उ.	........सिंधु, मालव, गौड, कुंभ, गुणसागर, गंभीर, संकर, बिहागडा.
	उ. रा.	........मारवी, विजया, कुंभी, सिरो, सोहनी, क्षेम, सहस्त्रशीर्षा, ध्यानजी.
मालकोश.	रा.	........टोडी, गौरी, गुणकली, खंबावती, ककुभ.
	उ. रा.	........मारू, मेवाडा, प्रबल, बडहंस, भ्रमर, चंद्रक, खोकर, नंद.
	उ. रा.	........धनाश्री, जेतश्री, कमोदी, गंधारी, शुद्धराज्ञी, दुर्गा, भीमपलासी, मालश्री.
दीपक.	रा.	........नट, केदार, कर्नाट, देशी, कांबोदी.
	उ.	........कालिंग, कुंतल, कमल, कुसुम, चंपक, राम, विहेल, हिमाल.
	उ. रा.	........जयजयवंती, मंगलगूजरी, मनोहना, अहीरी, यमन, हमीर, मालगूजरी, भोपाली.
मेघ मल्हार.	रा.	........टंकल, मल्हार, गुर्जरी, भूपाली, देशकारी.
	उ.	........गजधर, गंधार, जालंधर, सारंग, नटनारायण, कल्याण, नंदनारायण, संकराभरण.
	उ. रा.	........मांझ, करनारी, कर्नाटी, गौरी, बिहारी, परज, नटमंजरी, शुद्धनाट.
हिंडोल.	रा.	........रामकली, देशाख्य, ललित, बिलावल, पटमंजरी.
	उ.	........मंगल, शोभा, विभास, विनोद, गौरा, प्रधान, चंद्रबिंब, आनंद.
	उ. रा.	........पार्वती, पूर्वी, चैती, सरस्वती, देवागिरी, तरुण, केरवी, लीलावती.

हनुमान ७.

राग.	रागिणी.				
भैरव.	मध्यमा	भैरवी	बंगाली	वराटिका	सैंधवी
कौशिक.	टोडी	स्तंभावती	गौरी	गुणक्रिया	ककुभा
हिंडोल.	बेलावली	रामग्री	देशाख्य	पटमंजरी	ललिता
दीपक.	केदारी	कानडी	देशी	कांबोदी	नाटिका
श्री.	वसंती	मालवी	मालश्री	धनाश्री	असावरी
मेघ.	मल्हारी	देशकारी	भूपाली	गुर्जरी	टंकल

नारायण ८. (इनके मतसे प्रथम १६००० राग थे.)

भैरव.	वैराडी	मधुमाध्वी	भैरवी	सिंधवी	बंगाली
मेघमल्हार.	टंकल.	भूपाली	देशाकरी	मल्हारी	गुर्जरी
श्री.	मालवाश्री	धनाश्री	आसावरी	वसंती	मालवी
मालकोश.	टोडी	गौडी	गुणकली	खम्मावती	ककुभ
हिंडोल.	रामकली	देशाख्य	ललित	बिलावली	पटमंजरी
दीपक.	देशी	केदारी	नट	कर्नाटी	कांबोदी

सामेश्वर ९.

भैरव.	भैरवी	वैराडी	मधुमाध्वी	सिंधवी	बंगाली
श्री.	मालश्री	मालवी	धनाश्री	वसंत	असावरी
हिंडोल.	रामकली	देशाख्य	ललित	बिलावल	पटमंजरी
मालबोध	टोडी	गौडी	गुणकाली	स्तंभावती	ककुभ
मेघमल्हार	टंकल	मल्हार	गुर्जरी	भूपाली	देशकारी
दीपक.	देशी	कमोद	नट	केदार	कानरा

इनके मतसे कुल ९६० राग होकर उनमें २३ मुख्य हैं.

सोमेश्वर. १०.

राग	रागिणी.					
श्री	मालवी	त्रिवेणी	गौरी	केदारी	मधुमाधवी	पहाडीका
वसंत	देशी	देवगिरी	बेराटी	तोडीका	ललिता	हिंडोल
भैरव	भैरवी	गुर्जरी	रेवा	गुणकरी	बंगाली	बहुल
पंचम	विभास	भूपाली	करनाटी	बडहंसिका	मालश्री	पटमंजरी
मेघ.	मल्हारी	सोरठी	सावेरी	कौशिका	गांधारी	हरश्रृंगार
नटनारायण	काम्बोदी	कल्याण	आभेरी	नाटिका	सारंग	पटहंबीर

शार्ङ्गदेव ११.

भैरव	मधुमाध	भैरवी	बंगाली	बरारी	सैंधवी
मालकोश	तोडी	खंबावती	गौडी	गुणकली	ककुभ
हिंडोल	बेलावली	रामकली	पटमंजरी	देशाख्य	ललित
दीपक	नटमल्हारी	कानडा	केदारा	देशी	पहाडी
श्री	वसंत	मालवी	मालश्री	धनाश्री	असावरी
मेघ	मल्हारी	देशकारी	भूपाली	बहुरी	गुर्जरी

रागार्णव १२.

भैरव	बंगाली	गुणकरी	मध्यमा	वसंतिका	धनाश्री
पंचम	ललिता	गुर्जरी	देशी	वराटी	रामाक्रया
नाट	गांधारी	सालग	केदार	करनाट	नटनारायणी
मल्हार	मेघा	मल्हारी	मालकौशिक	पटमंजरी	असावरी
गौडमालव	हिंडोल	त्रिवणा	गौरी	धारी	बलहंसिका
देशाख्य	भूपाली	कुडाई	कांबोदी	वाटिका	बेलावली

इन्द्रप्रस्थ १३.

राग	रागिणी				
भैरव	भैरवी	रामकली	टोडी	गुर्जरी	बंगाली
कौशिक	खंबावती	वाघेश्वरी	ककुभ	परज	शोभनी
हिंडोल	वसंती	पंचमी	बेलावती	विचारी	ललित
दीपक	धनाश्री	मुलतानी	नटी	जयतश्री	भीमपलासी
श्री	मालवी	त्रिवेनी	गैरी	कर्पूरी	बिटका
मेघ	सोरठी	सारंग	बहुर	बड़हंसी	मधुमाधवी

कल्लीनाथ १४.

श्री	मालवी	त्रिवेणी	गौरी	केदारी	मधुमाधवी	पहाड़ी
वसंत	देशी	देवगिरी	बेराटी	तोडी	ललिता	हिंडोली
भैरव	भैरवी	गुर्जरी	रेवा	गुणकली	बंगाली	बहुली
पंचम	विभास	भूपाली	करनाटकी	बड़हंसिका	मालश्री	पटमंजरी
मेघ	मल्हारी	सोरठी	सौवीरी	कौशिकी	गांधारी	हरश्रृंगारा
बृहन्नट	कामोदी	कल्याण	आभेरी	नाटिका	सारंग	नटहमीर

संगीतादित्य १५.

भैरव	भैरवी	गुर्जरी	रामकली	टोडिका	बेराटी
मालकंस	वाघेश्वरी	ककुभा	सोहनी	खंबावती	गुनकली
हिंडोल	वसंती	पंचमी	ललिता	बिलावली	देशाक्षी
दीपक	धनाश्री	नाटिका	जेतश्री	पलाशिका	कामोदी
श्री	गौरी	मालवी	त्रिवेणी	पूर्वी	टंकिका
मेघ	मल्हारी	सोरठी	सारंगा	बड़हंसिका	मधुमाध

गायनसार १६.

राग.	रागिणी.				
भैरव	भैरवी	वैरारी	माधवी	सिंधवी	बंगाली
मालकंस	टोडी	गोडी	गुनकली	खंभाती	ककुभ
हिंडोल	रामकली	देशाख	ललित	बिलावल	पटमंजरी
दीपक	देशी	कामोदी	नट	केदार	कानरा
श्री	मालसरी	मारू	धन्यासरी	बसंत	असावरी
मेघ	टंक	मल्हार	गुर्जरी	भूपाली	देशकाल

गायन–दर्पण १७.

राग.	रागिणी.				
भैरव	भैरवी	बेरारी	मधमाध	सिंधवी	बंगाली
मालकंस	टोडी	गोडी	गुणकली	खंबावती	कोकबा
हिंडोल	रामकली	देशाख	ललत	बिलावल	पटमंजरी
दीपक	देशी	कामोद	नट	केदारा	कहानडा
श्री	मारवा	मालवी	धनासरी	बसंत	असावरी
मेघ	तंक	मल्हार	गुजरी	देशकार	देशकार

आगे अब जो रागोंकी नामावलि दी है उसके दो भाग किये हैं. एक उत्तर हिन्दुस्तानके राग और दूसरा दक्षिणी हिंदुस्तानके राग. उत्तर हिंदुस्तानके रागोंमें ऊपरके दिये हुए सब कोष्ठकोंमेंसे कई समाविष्ट होते हैं.

उत्तर–हिन्दुस्तानके राग:

यमन कल्याण
हमीर कल्याण
पूरिया कल्याण
चंची कल्याण
जयत कल्याण
मोहन कल्याण
शाम कल्याण
शुद्ध कल्याण
मियांकी मल्हार
धूरिया मल्हार
पावस मल्हार
सोरठ मल्हार
गौड मल्हार
रामदासी मल्हार
मेघ मल्हार
सारंग
लंकादहन सारंग
पूर्वी सारंग
गौड सारंग
वृंदावनी सारंग
जयत श्री
मियांकी श्री
ललिता श्री
कला श्री
जय श्री
पूर्वी धनाश्री
धनाश्री
श्रीराग
मालव श्री
टोडी
छायाटोडी
मार्ग टोडी

लच्छमी टोडी
लाचारी टोडी
देशी टोडी
विलासखानीटोडी
मियांकीटोडी
भैरवीटोडी
बिभारी टोडी
वराटिका
शुद्ध वराटी
टोडी वराटी
राग वराटी
पुन्नाग वराटी
प्रताप वराटी
शोक वराटी
कल्याण वराटी
गौड
केदार गौड
करनाट गौड
सारंग गौड
नारायण गौड
मालव गौड
नट नारायण
नाट
सालंग नाट
छायानाट
कामोद नाट
अभीरी नाट
कल्याण नाट
केदार नाट
वैराटी नाट
किन्नर नाट
हेम नाट

खेम नाट
कानडी
कानडा
नायकी कानडा
गारा कानडा
हुसेनी कानडा
बागेसरी कानडा
मियानी कानडा
कानडा बहार
वसंत बहार
बागेश्रीबहार
भैरव बहार
केदारी
जलधर केदार
मलोवा केदार
बिलावल
यमनी बिलावल
शुक्ल बिलावल
ककुभ बिलावल
अलय्या बिलावल
भैरवी
आनंद भैरवी
सिंध भैरवी
सैंधव नीलांबरी
रक्तहंस
गौरी
मल्लारी
पंचम
वसंत
देशाख्य
देशकारी
मुखारी

भूप
भूपाली
प्रसभ
कोल्लहास
भैरव
वसंत भैरव
मध्यमादी
बंगाली
नारायणी विभास
मेघनाद
घंटाराग
खंबावती
अभीरी
कल्याण
रामकरी
मालव गुणकरी
ककुभ
शंकराभरण
बलहंस
बेलावली
कांबोदी
गोपीकांबोदी
ललित
बहुला
गुर्जरी
कौमारी
रेवा
देशी
हिंडोल
मार्ग हिंडोल
ढक्क
असावरी

सावेरी
मोहन सावेरी
सालंग
पहाड़ी
बिहाग
पूर्वी
सामत
मंगल कोषक
नादनाम क्रिया
कुडरी
गौड
देवागिरी
देवगांधारी
त्रिवणी
कुंरग
सौदामिनी
वैजयंती
हसं
कोकिल
सुरायल
अर्जुन

डोरावत
कंकण
रत्नावली
कल्पतरु
सोरठी
टक
मारू
बहुरी
कुमुद
चक्रधर
सिंहरव
मंजुघोषा
शिववल्लभा
मनोहरा
शंकरानंद
मानवी
राजधानी
शर्वरी
हिंजेज़
गारा
झिंझोटी

तिलंग
बरुवा
जंगला
काफी
पीलू
संक्रा
कौशिक
आडाणा
शाहाणा
सूहा
सुगराई
लुभ
सौराष्ट्र
खट
जीवनपुरी
जिलप
गांधार
रामसाक
लछासाक
भावसाक
चंद्रकौंस

परज़
मुल्तान
लितगौरी
मारवा
भीमपलासी
आरभी
कलमंजरी
सोहनी
गुनकली
बिहागड़ा
कालिंगड़ा
सिंदुबीर
धवलाश्री
रामगंधार
मालकंस
हेमखेम
दरबारी कानड़ा
रायसा कानड़ा

दक्षिण हिंदुस्तानके राग.

अडाणा
अमृत—तरंगिणी
अमृत—पंचम
अमृत—वर्षिणी
अमृत—वाहिनी
असावेरी
आदिपंचम
आधाळी

आनंदभैरवी
आभीरु
आभेरी
आरभी
आर्द्रदेशिक
आहिरी
आहिरीनाट
इंदुगीर्वाणी

इन्दुघंटारव
इंदुधन्यासी
इंदुधवळी
इन्दुभोगी
ईंदुमती
इन्दुशीतळ
इंदुसारंगनाट
ईशगिरी

ईशगौळा
ईशमनोहरी
कनकगिरी
कनक भवानी
कनक ज्योष्मती
कनक निर्मद
कनक गीर्वाणी
कनक नानामणी

कनक सिंहावर
कनक कुसुमावळी
कनक रसाळी
कनक श्रीकटी
कनक भूषावळी
कनक दीपर
कनक वसंत
कनकांबरी
कनकांगी
कन्नड सौराष्ट्र
कन्नड बंगाला
कन्नड साळवी
कन्नड गौळा
कन्नड पंचम
कन्नडा
कन्नड दरबार
कन्नड दीपरं
कन्नड बेलावली
कन्नड भोगी
कन्नड कुरंजी
कन्नड मारून
कर्नाटक सुरटी
कर्नाटक आंढाळी
कर्नाटक देवगांधारी
कर्नाटक तरंगिणी
कलहारू
कल्लोळ सोवरी
कल्लोळ बंगाला
कलहंस
कलवसंत
कलाभरण
कलगडा
कल्होळ

कल्याण वसंत
कमला तरंगिणी
कमला मनोहरी
कमलाभरण
करहर प्रिया
करुणाकरी
कळास्वरूपी
कलानिधी
कलावती
कल्याण—कोसरी
कमल नारायणी
कामवर्धिनी
काफी
काफी नारायणी
कांबोदी
कालकंठी
कालिंदी
कामरूपिणी
कामोद्गराग
काननप्रिया
कांतामणी
कालनिर्णीक
किरणी
किरणावली
कीर्तिप्रिया
कीरवाणी
कीर्तिविजय
कुंतल
कुंतल—कांनोदी
कुंतल—वराळी
कुंतल—भोगी
कुंतल—स्वरावली
कुमुदप्रिया

कुमुदाभरण
कुरंजी
कुलभूषणी
कुलपवित्र
कुवलयानंदी
कुसुमांगी
कुसुमप्रिया
कुसुमकल्होळ
कुसुमचंद्रिका
कुसुमभ्रमरी
कुसुमावली
कुसुमवल्ली
कुंतलधन्यासी
कुंतलदीपरं
कुतलरंजनी
कुंतल राग
कुंतल श्रीकंठी
कुंतल कुसुमावली
कुसुम ज्योष्मती
केतक प्रिय
केदार
केदार गौळा
कैकशी
कोकिलप्रिय
कोकिलारवम्
कोकिलदीपरं
कोकिलप्रताप
कोकिलध्वनी
कोकिलभाषिणी
कोकिलगंधर्व
कोमली
कोलाहल
कोसल

कौस्तुभमणी
कौमारी
कंकणालंकारी
खड्गप्रिया
खिळावळी
गगनभूषिणी
गगनमोहिनी
गगनरंजनी
गमकप्रिया
गमनप्रिया
गरुडध्वनी
गवांवादिनी
गांगेयभूषणी
गानवारिधी
गानमूर्ति
गायकप्रिय
गीताप्रिय
गीतमूर्ति
गीर्वाणी
गीतनटणी
गुजरी
गुंडप्रिय
गुरुप्रिय
गुहप्रिय
गोत्रारी
गोपति
गोपिकाबसंती
गोरीगांधारी
गौरी बंगाला
गौरी
गौरी मनोहरी
गौरी निषाद
गौळा

गौळपंतु
गौळचंद्रिका
गौळमालवी
गंगातरंगिणी
गंभीरिणी
गंधर्वकन्नडा
गंधर्व
घननायकी
घोषिणी
घंटारव
चक्रवाक
चतुरंगिणी
चलनाट
चामुंडी
चारुकेशी
चिंतामणि
चिन्मयी
चिदानंदी
चूर्णिकाविनोदिनी
चंद्रकिरणी
चंद्रिका गौळ
चंद्रज्योती
छत्रधरी
छायागौरी
छायातरंगिणी
छायानारायणी
छाया सिंध
छाया माळवी
छाया सैंधवी
जगन्मोहिनी
जटाधरी
जनरांजिनी
जयतश्री

जयसोवरी
जयनारायणी
जयाभरणी
जलजवासिनी
जलाणवी
जङ्गला
जीवरंजिनी
जीवंतिनी
जुलापु
जोतिस्वरूपी
जोष्मती
जंगलाभैरवी
झिंजांटी
झिंकारध्वनी
झंकारभ्रमरी
झंकारी
टककाराग
तनुकीर्ति
तपस्वी
तपोल्हासि
तानरूपी
तानरंजनी
त्रिमूर्ती
त्र्यंबकप्रिय
तीव्रवाहिनी
तोडी
दरबाद
द्रुज्यावंती
दिनकरकांती
दिव्यमणी
दिव्यपंचम
दिव्य गांधारी
दिव्यतरंगिणी
दीपर

दुंदुभिप्रिय
देश्यनारायणी
देश्यसुरटी
देश्यआढळी
देश्यरेगुप्ती
देश्यगौळा
देश्यमुखारी
देश्यब्यागडा
देश्यमारूव
देश्यनाटकुरंजी
देश्यगानवर्धी
देशावळी
देशाक्षी
देशीकगौरी
देशीकबंगाळा
देशीकरुद्री
देवमुखारी
देवकृत्य
देवरंजनी
देवमनोहरी
देवगाधारी
देवगिरी
देवमाळवी
देवकुसुमावली
देवगीर्वाणी
देवाभणी
देवामृतवाहिनी
द्वैतानंदी
द्वैतपरिपूर्णी
दोषरहितस्वरूपी
द्वैतपंचम
धनपालिनी
धन्यासी

धर्मवती
धर्माणी
धवलहंसी
धवलांगी
धवलांबरी
धवलसरसीरुहं
धातुप्रिय
धातुमनोहरी
धातुवर्धिनी
धाराकारी
धारकुंतली
धीरशंकराभरण
धीरस्वरूमी
धीरसोवरी
धुर्वांगी
धंनुक
धैर्यमुखी
धौम्यराग
नगभरणी
नगानंदिनी
नघप्रकाशिनी
नटनदीपर
नटनवेनावली
नटनप्रिय
नटनारायणी
नटभैरवी
नटाभरण
नभोमणी
नयनभाषिणी
नयनरंजिनी
नवरत्नभूषिणी
नवरसगांधारी
नवरसचांद्रिका

नवरसआंदाळी
नवरसबंगाळा
नवरसकुंतळी
नवनीत
नवरोजु
नवरसकन्नडा
नवरसकलानिधी
नवनीतपंचम
नवरसचंद्रिका
नलिनकांती
नलिनसुखी
नलिनहंसी
नलिनभ्रमरी
नलिन–कुसुमावली
नाग वराळी
नागसामंत
नागचूडामणी
नागतरंगिणी
नागगांधारी
नागदीपर
नागदीपक
नागरी
नागभूपाळी
नागपंचम
नागस्वरावली
नागध्वनी
नागभूषणी
नागभाषिणी
नागहिंडोल
नागगंधर्व
नागनीलांबरी
नागदीपर्र
नागघटाण

नागभोगी
नागवेलावली
नाटराग
नाटकप्रिय
नाटकुंरजी
नादनामक्रिय
नादमूर्ती
नादविनोदिनी
नादस्वरूपी
नादप्रिय
नादभ्रमरी
नायकी
नरायणी
नारायणगौळ
नारायणीदेशाक्षी
नारासरसीरुहं
नागगीर्वाणी
नागप्रभावली
नागवाहिनी
नगकुंतली
नागगिरी
नागमणी
नादब्रह्म
नासिकभूषणी
निगमसंचारी
निटिलप्रकाशी
निरंजनी
निर्मलांगी
निर्मद
निशादराग
नीतिकुंतली
नीतिमती
नीलवेणी

नीलाबरी
नूतनचंद्रिका
नेमप्रिय
पद्मराग
पद्ममुखी
पद्मभावनी
परिमळानंदी
पाडीराग
पावनी
पीतांबरी
पुन्नागवराळी
पुन्नारी
पूर्णपंचम
पूर्णगांधारी
पूर्णललित
पूर्णषड्ज
पूर्णकलानिधी
पूर्णनिषाद
पूर्वकल्याणी
पूर्वगौळा
पूर्वासिंधू
पेनाद्विती
प्रतापवसंत
प्रतापचिंतामणी
प्रतापनाट
प्रतापकोकिल
प्रतापहंस
प्रणवकारी
प्रभावळी
प्रभातरंगिणी
पंचमराग
फरजु
फलमंजरी
फलदायिकी

बकुलाभरण
बलहंस
बालघोषिणी
बागड़ा
ब्याहाग
बिंदुमालिनी
बिलहरी
बोळीराग
वृंदावनकन्नडा
वृंदावनसारंग
बंगाळा
भगवत्प्रिया
भवानी
भ्रमरनारायणी
भ्रमरपुत्री
भ्रमरहंसी
भ्रमरकोकिल
भानुमूर्ती
भानुकृत्य
भानुप्रताप
भानुदीपक
भानुगौळा
भानुदीपर
भानुमंजरी
भाषिणी
भिकरघोषिणी
भिन्नपंचम
भिन्नगांधारी
भिन्ननिषाद
भुजंगचिंतामणी
भुवनमोहिनी
भूपाळ
भूपावळी

भैरवी
भोगवराळी
भोगधन्यासी
भोगसावेरी
भोगरसाळी
भोगवसंत
भोगी
भोगीश्वरी
मणीरंगु
मनसिजप्रिय
मनलहरी
मधुकरी
मत्तकोकिल
मार्गदेशी
मार्गहिंडोल
माधवी
माजी
मानवती
मानाभरणी
मायामालवगौळ
माररंजिनी
मारूवचांद्रिका
मारूवकन्नडा
मारूव
माहुरी
माळवी
मालवश्री
माधवमनोहरी
मारनारायणी
माधुर्यराग
मित्रकिरणी
मित्ररंजनी
मुक्तांबरी

मुखारी
मेखरंजनी
मेचकन्नडा
मेचबंगाला
मेचनीलांबरी
मेचबोळी
मेचकांगी
मैत्राभावनी
मोहन
मोहनमल्हार
मंगळभूषिणी
मंजरी
मंजुळ
मंगळकटी
मंदहासिनी
यदुकुलकांबोदी
यमुनाकल्याणी
यागप्रिय
रामकुसुमावली
रामगिरी
रीकारी
रीतिगौळा
रिषभांगी
रूपावती
रेखावती
रेगुप्ती
रौम्यकार
रम्यपंचम
लतांगी
ललिततोडी
ललितकोसल
ललित गंधर्व
ललित गौरी

ललित दीपरं
ललित मनोहर
ललित श्रीकटी
लीलारंजनी
लोकदीपरं
वज्रकांती
वसंत
वसंतभूपाळ
वसंतभैरवी
वसंतप्रिय
वाग्धीश्वरी
विजयभीरु
विजयसरस्वती
विजयसामंत
विजयदीपक
विजयाभरणी
विलंबिणी
वीराविक्रम
वेगवाहिनी
वेळावळी
वेदघोषप्रिय
शरबिंदुमुखारि
शातस्वरूपी
शामनीलांबरी
शामल
शाहना
शृंगारिणी
श्रीमणी
श्रीराम
श्रीरंजनी
शुद्धसामंत
शुद्धमंजरी
शुद्धमल्हारी

शुद्धकन्नडा
श्वेतांबरी
शोकवराळी
शंकरी
शीद्धधर्मागिणी
षण्मुखप्रिय
सज्जनःनंदी
सत्यवती
सत्यभूषिणी
सरस्वती
सरसांगी
सर्वांगी
सामराग
सामंतजंगला
सारंग
सारंगमारुव
सावेरी
सावळी
सिंधुगौरी
सिंधुभैरवी
सिंधुकन्नडा
सिंधुनाट
सिंधुमारव
सिंहारव
सीमंत
सुखप्रिय
सुखकरी
सुदाकांबोदी
सुभाषिणी
सेनाग्रणी
सेनामनोहरी
सैंधवी
सोमगिरी

सोमकल्या	हरिकाबोदी	हंसगिरी	हंसभोगी
सोममंजरी	हिंडोल	हंसकोकिल	हंसवेळावळी
सौदर्यी	हिंडोलदर्बार	हंसगीर्वाणी	हंसनीलांबरी
		हंसदीपर	
हरिप्रिय	हिंडोलसारंग	हंसध्वनी	हंसनाद
हनुमंततोडी	हुसेनी	हंसभूपाळ	हंसानंदी

जिस प्रकार दिवस रात्रिके २४ घंटे या ८ प्रहर होते हैं; उसी प्रकार सब राग रागिणी आठ भागोंमें की गई हैं अर्थात् कौन राग किस प्रहरमें गाना योग्य है उसका कोष्ठक.

रात्रिके प्रथम प्रहर अर्थात् ६ बजेसे नौ बजेतक.

१	दीपक	९	पूर्वी कल्याण	१७	छाया नट
२	बैराटी	१०	श्याम कल्याण	१८	केदार नट
३	भूपाली	११	श्याम	१९	हमीर नट
४	कल्याण	१२	हमीर	२०	जैंजैवंती
५	यमन	१३	भोपाली	२१	जिला
६	यमन कल्याण	१४	नट	२२	हुजाज
७	भूपाली कल्याण	१५	खमाच	२३	शहाना
८	हमीर कल्याण	१६	छाया	२४	अधाना

रात्रिके दूसरेप्रहर अर्थात् ९ बजेसे १२ बजेतक.

१	केदारा,	१३	बागेश्वरीकान्हड़ा	२५	सिंधुरा कान्हड़ा.
२	चांदनी केदार	१४	दबारीकान्हड़ा.	२६	हुसेनी कान्हड़ा.
३	जलधर केदार.	१५	अड़ाना कान्हड़ा.	२७	भूप.
४	कामोद.	१६	नायकी कान्हड़ा.	२८	ब्रह्मावर्त.
५	तिलक कामोद.	१७	काफी कान्हड़ा.	२९	पटमंजरी.
६	अड़ाना.	१८	शहाना कान्हड़ा.	३०	बिहाग.
७	मल्हार.	१९	सूहा कान्हड़ा.	३१	बिहागड़ा.
८	मियांकी मल्हार.	२०	बहार कान्हड़ा.	३२	शंकरा.
९	सूरमल्हार.	२१	रायसा कान्हड़ा.	३३	संकराभरन.
१०	मेघ.	२२	कौशिक कान्हड़ा.	३४	सिंदुरिया.
११	गौडमल्हार.	२३	गारा कान्हड़ा.	३५	सोरठी.
१२	कान्हड़ा.	२३	सुघराई कान्हड़ा.	३६	देस.

रात्रिके तीसरे प्रहर अर्थात् १२ बजेसे तीन बजे तक.

१	खंभावती	६	शंकरानंद	११	जोगी कालिंगडा
२	बैसोरी	७	बिहंग	१२	परज कालिंगडा
३	कुकुब	८	जयजयवंती	१३	हिंडोल
४	देशकार	९	परज	१४	बहार हिंडोल
५	टंक या टनक	१०	कालिंगड़ा	१५	मालकंस

रात्रिका चौथा प्रहर अर्थात् ३ बजेसे ६ बजे तक.

१	ललित	५	विभास	९	देवगंधार
२	सोहनी	६	भैरव	१०	बहारी
३	जेलफ	७	मटियार		
४	षट	८	धौलश्री		

दिनका पहिला प्रहर अर्थात् ६ बजे सबेरेसे ९ बजे तक.

१	भैरव	९	लाचारी टोड़ी	१७	बिलावल
२	सिंध भैरवी	१०	असावरी	१८	देवसाख
३	मधु माधवी	११	देशकार	१९	गंधार
४	रामकली	१२	पंचम	२०	जीवनपुरी
५	भाकरा	१३	कर्नाट	२१	सुरपदा
६	गुणकली	१४	बंगाली	२२	अल्हैया
७	टोड़ी	१५	बिलावली	२३	अल्हैया बिलावल
८	जौनपुरी टोड़ी	१६	गंधारी	२४	सूहा या सुहू

दिनका दूसरा प्रहर अर्थात् ९ बजेसे १२ बजेतक.

१	वसंत.	८	गौड सारंग	१५	देसी
२	सिंधवी	९	वृंदावनी सारंग	१६	मालवा
३	बंगाली	१०	नूर सारंग	१७	गुजरी
४	खंभावती	११	सामंत सारंग	१८	मालश्री
५	नट	१२	देवगिरी सारंग	१९	भीमपलासी
६	कामोदी	१३	मेघ सारंग	२०	देशाख्य
७	सारंग	१४	लंकदहन सारंग	२१	मालवश्री

दिनका तीसरा प्रहर अर्थात् १२ बजेसे ३ बजेतक.

१	श्री	११	बिरवा	२१	जैतश्री
२	धनाश्री	१२	बेसवाड़ा	२२	मधुर
३	पलाशिका	१३	सावंत	२३	देशी जिल्हा
४	काफी	१४	हेम	२४	सुघरई
५	तिलंग	१५	हिजाज	२५	तिरवन
६	जंगला	१६	बैरारी	२६	देवगिरी
७	माद	१७	सिंधवी	२७	गौंड
८	पीलू	१८	बिहारी	२८	सिंदूरा
९	धानी	१९	मारू	२९	पंचम
१०	जोगिया	२०	बड़हंस	३०	मुलतानी

दिनका चौथा प्रहर अर्थात् ३ बजेसे ६ बजे शामतक.

१	मेघ	९	श्याम	१७	बरवा
२	पूर्वी	१०	गौरी	१८	मारवा
३	नट नारायण	११	ललित गौरी	१९	बिलावल
४	झिंझोटी	१२	त्रिवेणी	२०	शुक्लबिलावल
५	पहाड़ी झिंझोटी	१३	पूर्वी	२१	देवगिरी बिलावल
६	गारा	१४	रैनकी पूर्वी	२२	नट बिलावल
७	परदीपिका	१५	रायसा	२३	दीपिकी
८	पूरिया	१६	मुल्तानी	२४	माली गोरा

राग रागिणीके शुद्ध, कोमल, तीव्रादि और खास स्वरोंका कोष्ठक.

सा. प. तो सदैव शुद्ध होते हैं, म. शुद्धको कोमल भी कहते हैं, इससे यह ऐसेही समझें.

नाम राग रागिणी आदिके.	जिस प्रकारके स्वर लगें							रागके रूपके खास स्वर अर्थात् सर्गम्
	शृंगारिक	अति कोमल	कोमल	शुद्ध	तीव्र	तीव्र तर.	तीव्र तम	
भैरव राग.	रे-ध	...	...	सा. म.	ग. नी. प.	...	...	धः नी. सा. ग. म.
भैरवी रागिणी.	रेमधनी	म.	...	सा. म.	प.	...	...	म.प.ध.नी.सा.रे.ग
सिंधवी.	...	...	नी. ग. म.	सा. ध.	प. ध. रे.	...	...	ध. नी. म. रे. सा. ग.
बेरारी	रे-ध	...	...	सा.प.गनी	ग. नी. म.	...	...	सा.नी.ग.रे.म .प.ध.
मधुमाधवी	...	ग.नी.	...	सा.म.प.	रे. ध.	...	...	म.प.ध.नी सा.रे.ग.
बैंगाल, बंगाली	रे.ध.	...	...	सा.म.प.	ग. नी.	...	...	सा.रे.म.प.ध.ग.नी.
पूरिया	रे.ध.	...	...	स. प.	ग. म. नी.	...	...	नी. सा. ग. रे. प.म.
सूहा सुहु	ग-	...	म. नी.	स. प.	रे. म. ध.	नी.	...	सा.ग.म.प.नी.
पंचम	रे.	...	ध.	स. म. प.	म. नी.	ग.	...	सा.नी.रे.ध.म.प.ग.
बिलावली	...	...	...	स. प.	रे ग ध नी	...	...	ग.म.ध.नी.सा.रे.
सूहा	...	...	ग.म.नी.	स.ध.प.रे.	म.	...	...	सा.ग.म.प.नी.
सोरठी	...	...	नी.	सा.म.प.	रे ग ध	...	...	नी.सा.रे.म.प.ध.
मालकंस राग	...	...	रे ग प धनी	सा. म.	...	...	...	सा.ग.म.ध.नी.
गौरी	रे.ध.	...	म. प.	सा.	ग नी	...	...	सा.ग.म.ध.नी.
टोडी	रे.ग.ध.	...	...	सा. प.	म नी	...	...	सा.ध.नी.रे.ग.म.प.
गुणकली	...	...	...	स म प	सबशेष	...	...	सा.रे.नी.प.म.
कुबाएती	...	नी	...	स.	म रे ग ध	...	...	ध.म.ग.रे.सा.नी.
कोकब	...	...	म नी	स. प.	रे ग ध नी	नी.	...	ध.नी.सा.ग.रे.प.म.
गांधार	...	...	ग ध	स म प	रे नी	...	...	म.प.नी.ध.ग.रे.सा.
मारू	...	...	रे	स.	ग म ध नी.	नी.	...	ध.म.नी.सा.रे.ग.
बड़ हंस	...	...	...	स म प ग	रे ध नी.	...	...	प.नी .सा.रे.ग.म.

नाम राग.	शृंगारिक	अति कोमल	कोमल	शुद्ध	तीव्र	तीव्र तर	तीव्र तम	खास स्वर.
धनाश्री	रे	...	...	सा प	ग म ध नी	...	...	नी सा ग म प ध रे
मालश्री	...	...	रे म	सा	ग म नी	...	...	प म ग रे सा नी
जेतश्री	...	...	रे	सा प	ग म ध नी	...	...	सा रे प म ध ग नी
सुगरेई	...	...	ग नी	सा प म	रे ध	...	...	सा नी ग म प ध रे
भीमपलासी	ग. नी.	...	म	सा प	रे ध	...	...	नी सा ग म प रे ध
कामोदी	...	...	...	सा म प	रे ग ध नी	...	...	रे प ध म ग सा नी
गंधारी	रेगमधरी	...	...	सा प	...	...	...	म प सा नी रे ध
हिंडोल राग	रे	...	म	सा	ग ध नी म	...	...	सा ग म ध नी
बिलावल	...	...	...	सा म प	रे ग ध नी	...	...	ध प म ग रे सा नी
रामकली	रे	...	ध	सा म ग	नी	...	...	सा ध रे ग म नी
ललित	रे	...	ध	सा म	ग नी	...	...	सा नी रे ग म ध
देवशाख	...	...	...	सा म प ग	ध नी	...	...	सा ध ग प रे
पटमंजरी	...	...	...	साम परेगधनी	रे ग नी	...	...	म प ग रे नी सा
गोरा	रे	...	...	सा प	ग म ध नी	ग	...	ध ग म रे सा प
बिभास	रे ध	...	नी	सा प	ग म नी	...	...	सा नी रे ग म ध
पूर्वी	...	...	रे म ध	सा प	ग म नी	...	...	ग रे प म सा नी
तिरवन	रे	...	...	सा प	ग म ध नी	...	...	रे सा ध ग ध नी
देवगिरी	...	...	...	सा म प	रे ग ध नी	...	...	नी सा ग म रे प ध
दीपक राग	...	...	रेग नी	सा प ध	म	...	...	सा रे ग म प ध नी
कान्हड़ा	...	...	ग म नी	सा प	रे ध	...	...	नी सा रे ग म प
देशी	...	...	ग म पधनी	सा	रे नी	...	...	रे ग सा नी म प
कामोद	...	...	म	सा प	रे ग ध नी	...	...	सा रे प ध ग म नी
केदारा	...	...	म	सा प	रे ग म ध नी	...	...	सा रे नी सा म ग प
नट	...	...	म	सा प	रे ग ध नी	...	...	सा ग म प ध रे नी
भाकरा	रे ध	...	म	सा प	ग नी	...	...	रे ग प म सा ध
अड़ाना	ग नी	...	...	सा प म	रे ध	...	...	सा प नी म ध ग रे
जैजैवंती	...	...	नी	सरेगमपध	नी	...	...	रे ध प म ग
भोपाली	...	...	नी	स रे ग प ध	रे ग ध नी	...	...	प ग रे सा ध
यमन	...	...	...	सा प	रे ग म ध नी	...	...	ग रे सा नी प म

नाम राग	शृंगा-रिक	अति कोमल	कोमल	शुद्ध	तीव्र	तीव्र तर	तीव्र तम	खास स्वर.
हमीर	...	...	स	सा प म	रे ग म ध नी	...	...	सा प म ग ध नी रे
श्रीराग }	रे. ध.	...	...	सा प	ग म नी	...	...	सा रे प ध ग
श्रीराग }	रे. ध.	...	...	सा प	ग म नी	...	...	सा रे प नी
बसंत	...	...	रे	सा प	ग म ध नी	...	...	प म ध ग सा रे नी
मालश्री	...	...	रे	सा प	ग म ध नी	...	...	प म ग रे नी सा
असावरी	रेगधनी	...	...	स म प	...	...	...	सा म प ध नी
असावरी	रेध	...	ग नि	सा म प	...	...	...	सा रे म प नी ध ग
मारवा	रे	...	म नी	सा प	ग म ध नी	...	...	सा नी ध म रे प ग
धनाश्री	...	...	ग नी	सा प	रे म ध नी	...	...	सा नी म ग प ध रे
सिंदुरा	...	गनी	...	सा प	रे ध	...	...	प ग रे सा म ध नी
गौड	...	...	म	सा प	रे गम ध नी	...	...	ग रे सा नी म प
बिहागड़ा	...	...	म	सा प	रे ग ध नी	...	...	नी सा म ग रे ध प
सोहनी	...	...	रे म नि	सा	ग म ध	...	...	ग म ध नी सा
मेघराग	ग नि	...	...	सा म प	रे ध	...	...	म ध सा प ग रे नी
भोपाली	...	...	...	सा प	रे ग ध नी	...	...	सा प ग रे ध
मलार	...	...	प नी	सा म	रे ग ध	...	...	ध सा प म ग रे
गुजरी	...	...	रे ग ध	सा म प	म नी	...	...	प म ध रे सा नी
तनक	...	...	रे	सा प म	ग नी	ध	...	ग म प सा नी रे
देसकार	...	...	रेगधनीम	सा म प	म	...	...	सा ध रे ग प
सारंग	...	...	गमनी	सा प	रे ध	...	...	प म रे सा नी
नट नारायण	...	...	म	सा प	रे ग ध नी	...	...	म प ग रे सा
शंकराभरण	...	...	...	सा प	रे ग म ध नी	...	...	सा नी ध प म ग रे
कल्याण	...	...	म	सा प	रे ग ध नी	म	...	सा नी ध प म ग रे
गांधार	...	...	गमधनी	सा प	रे	...	...	सा रे म ध नी ग
साहना	...	...	गनी	सा म प	रे ध	...	...	म प ध ग रे सा
बिहारी	...	...	मनीध	सा प	रे ग ध नी	...	...	रे प म ग सा नी
परज़	रे ध	...	म	सा प	ग नी	...	...	सा नी ग प ध म रे
कालिंगड़ा	रे ध.	...	म	सा प	ग नी	...	...	रे म ग सा नी
देवगंधार	...	...	म	सा प	रे ग ध नी	...	...	सा ध प ग रे

नाम राग	शृंगा-रिक	अति कोमल	कोमल	शुद्ध	तीव्र	तीव्र तर	तीव्र तम	खास स्वर.
सिंध भैरवी	ग नी	...	...	सा म प	रे ध	..	...	ध म प सा रे नी
बाहरी	ग नी	...	म :	सा प	रे ध	...	...	म प ध ग नी सा
जोतपुरी	ग नी	...	म	सा रे प	ध	...	...	सा रे ग नी प
जोगिया	ग ध नी	...	म	सा प	रे	...	...	सा रे म प ध ग
सुरपर्दा	...	...	म	सा प	रे ग ध नी	...	...	म ग रे सा प ध
अलैया	...	...	म	सा प	रे ग ध नी	...	...	रे ग प ध नी सा म
सकलबिलावल	...	...	म	सा प	रे ग ध नी	...	...	सा ग रे म प ध
गौड़सारंग	...	...	म	सा प	रे ग ध नी	...	...	ग रे सा नी म प ध
मालीगोरा	रे ध	...	...	सा म प	ग नी	...	...	सा प ध म ग रे
सुरमलार	ग नी	...	म	सा प	रे ध	...	...	नी सा रे ग
मियांकी मलार	ग नी	...	म	सा प	रे ध	...	...	नी सा रे म ध प
मुलतानी	रे ग ध	...	म	सा प	नी	...	...	नी सा ग म प रे ध
बेसवाड़ा	...	...	म	सा प	रे ग ध नी	...	...	सा रे म ग नी प
झिंझोटी	...	...	म	सा प	रे ग ध नी	...	...	प ध सा रे म ग नी
धानी	ग नी	...	...	सा म प	रे ध	...	...	नी रे ग सा प
बीरवा	...	ग	ध	सा म प	रे नी	...	...	म ग रे सा नी
पीलू	ग नी	...	म	सा रे प	ध	...	...	ग रे सा नी प
जंगला	ग नी	...	म	सा ध प	रे	...	...	रे सा नी ध प म ग
पहाड़ी झिंझोटी	...	...	म	सा प	रे ग ध नी	...	...	सा रे म प ध
गारा	...	...	...	सा म प	रे ध नी	...	...	ग रे सा नी प
श्याम	...	...	म	सा प	रे ग म ध नी	...	...	सा नी रे ग ध म प
समाच	रे नी	...	म	सा रे प	ग ध	...	...	ध प म ग सा नी
देस	...	...	म	सा प	रे ग ध नी	...	...	रे ग सा नी म प ध
जिला	ग नी	...	म	सा प	रे ध	...	...	रे सा नी ग
छाया	...	...	म	सा प	रे ग ध नी	...	...	ग रे सा ध प
हुजाज़	...	...	...	सा म प	रे ग ध नी	...	...	सा नी ध रे ग म
बिहाग	रे ध	...	म	सा प	रे ग म ध नी	...	...	नी ग म प सा ध
संकरा	...	...	...	सा प	रे ग म ध नी	...	...	सा नी ध प म ग रे
तिलक कामोद	...	...	म	सा प	रे ग ध नी	...	...	सा रे प म ग रे नी ध

नाम राग.	शृंगारिक	अति कोमल	कोमल	शुद्ध	तीव्र	तीव्र तर	तीव्र तम	खास स्वर.
काफी	गनी	...	म	सा प	रे ध	...	...	नी सा रे ग म प ध
बागेश्वरी	...	...	ग नी	सा म प	रे ध	...	...	सा नी प रे म गा
सिंदुरिया	गनी	...	म	सा प	रे ध	...	...	प म ग सा नी ध रे
बेसोरी	...	...	म	सा प	रे ग ध नी	...	...	सा रे म प ध
धोलश्री	गधनी	...	...	समपरे	...	...	...	नी सा रे ध म प ग
जेलफ	रेध	...	म	सा प	ग नी	...	...	ध प ग म नी सा रे
षट	रेगधनी	...	म	सा प	...	...	...	सा म ग प ध नी
भटियार	रेगध	...	...	सा प	नी म	...	...	नी रे ग म ध प सा
सावंत	...	...	ग म नी	सा प	रे ध	...	...	सा ध नी प म
परदीपका	...	...	म	सा प	रे ग ध नी	...	...	प नी सा रे म ग ध
हेम	...	...	म	सा प रे ग ध नी	...	...	...	सा रे प ग म ध नी

राग रागिनियोंकी जाति और उनमें जो स्वर वर्ज्य हैं और कोमल तीव्र स्वरोंका कोष्ठक आगे दिया है. जहां जिस रागके जो बाकी स्वर हों जो कि कोष्ठकमें न लिखे हों और जिस रागके आगे बिलकुल स्वर ही न लिखे हों उस रागके सब स्वर शुद्ध समझना चाहिये. जहां एक ही स्वर कोमल तीव्र दोनो घरोमें दिया हो वहां उस रागमें वह स्वर दोनों तरह लिया जाता है ऐसा समझना चाहिये. आगे कोष्ठकके ऊपर जो प्रहर दिये हैं वह भी गानेका ठीक समय है.

दिनका पहिला प्रहर. प्रातः ६ से ९ तक.

	रागोंके नाम.	जाति.	वर्ज्य स्वर.	कोमल स्वर.	तीव्र स्वर.
१	भैरव	संपूर्ण	....	री-ध	....
२	भैरवी	संपूर्ण	....	सर्व स्वर	....
३	मधुमाधवी	ओडव	ग. ध.	नी	....
४	टोडी	संपूर्ण	....	रे ग ध नी	म
५	जौनपुरी टोडी	संपूर्ण	....	सर्व स्वर	....
६	लाचारी टोडी	संपूर्ण	....	सर्व स्वर	....
७	गुणकली	ओडव	ग नी	रे ध	....
८	रामकली	संपूर्ण	....	रे ध	....
९	असावरी	संपूर्ण	....	ग ध नी	नी
१०	देशकार	षाडव	नी	...	....
११	पंचम	षाडव	रे	...	....
१२	देवगंधार	संपूर्ण	....	रे ध	....
१३	करनाट	संपूर्ण	....	....	....
१४	ककुभ	संपूर्ण	....	नी	...

दिनका दूसरा प्रहर ९ बजेसे १२ बजे तक.

१	देशाख्य	संपूर्ण	...	ग नी	....
२	देशी	संपूर्ण	...	...	....

दिनका तीसरा प्रहर १२ बजेसे ३ बजेतक.

	रागोंके नाम.	जाति.	वर्ज्य स्वर.	कोमल स्वर.	तीव्र स्वर.
१	वसंत	संपूर्ण	....	रे	म
२	सिंधवी	संपूर्ण	....	ग-नी	....
३	बंगाली	ओडव	रे-ध	....	....
४	खंबावती	संपूर्ण	....	नी	नी
५	नट	षाडव	नी	....	....
६	कामोदी	ओडव	ग-नी	....	म
७	धनाश्री	संपूर्ण	....	ग-नी	....
८	मालश्री	षाडव	रे	....	....
९	गुर्जरी	संपूर्ण	....	रे-ध	....
१०	पलाशिक	संपूर्ण	....	ग-ध	....
११	काफी	संपूर्ण	....	ग-नी	....
१२	तिलंग	संपूर्ण	....	....	....
१३	जंगला	संपूर्ण	....	....	....
१४	मांढ	संपूर्ण	....	....	....
१५	पीलू	संपूर्ण	....	सर्वस्वर	सर्वस्वर
१६	हिजाज	संपूर्ण	....	ग-नी	ग-नी
१७	मधुर	संपूर्ण	....	....	....
१८	देशी जिला	संपूर्ण	....	....	....
१९	सारंग	ओडव	ग-नी	....	....
२०	गौड़ सारंग	षाडव	नी	म	म
२१	वृन्दावनी सारंग	ओडव	ग-ध	नी	....
२२	नूर सारंग	षाडव	ध	ग-नी	....
२३	सामत सारंग	ओडव	ग-ध	....	....
२४	देवगिरी सारंग	संपूर्ण	....	नी	नी
२५	मेघ सारंग	षाडव	ध	ग-नी	नी
२६	लंकदहन सारंग	षाडव	ध	ग-नी	नी

दिनका चौथा प्रहर अर्थात् ३ बजेसे ६ बजे शामतक.

	रागोंके नाम.	जाति.	वर्ज्यस्वर.	कोमल स्वर.	तीव्र स्वर.
१	गौरी	संपूर्ण	...	रे-ध	...
२	ललित गौरी	षाडव	प	...	...
३	श्री	संपूर्ण	...	रे-ध	म
४	जेत श्री	संपूर्ण	...	रे-ध	म
५	त्रिवेणी	षाडव	म	...	...
६	पुर्वी	संपूर्ण	...	रे-ध	म
७	रैनकी पूर्वी	षाडव	प	रे-धँ	...
८	रायसा	संपूर्ण	...	ग-नी	...
९	सिंदूरा	संपूर्ण	...	ग-नी	...
१०	मारू	संपूर्ण	...	रे-ध	म
११	बरवा	संपूर्ण	...	ग-नी	ग-नी
१२	धानी	संपूर्ण	...	ग-नी	...
१३	सुरपरदा	संपूर्ण	...	...	...
१४	मारवा	षाडव	प	रे	म
१५	बिलावल	संपूर्ण	...	नी	नी
१६	शुक्ल बिलावल	संपूर्ण	...	ग-नी	...
१७	देवगिरी बिलावल	संपूर्ण	...	म	म
१८	नट बिलावल	षाडव	नी	...	...
१९	दीपकी	संपूर्ण	...	ग-नी	म

रात्रिका पहिला प्रहर अर्थात् ६ बजे शामसे ९ बजे राततक.

	रागोंके नाम.	जाति.	वर्ज्यस्वर.	कोमल स्वर.	तीव्र स्वर.
१	दीप	संपूर्ण	...	रे-ग-नी	म
२	बैराटी	संपूर्ण	...	नी	...
३	भूपाली कल्याण	ओडव	म-नी	...	...
४	कल्याण	संपूर्ण	...	मं	म
५	यमन कल्याण	संपूर्ण	...	...	म
६	भूपाली	ओडव	म-नी	...	...
७	हमीर कल्याण	षाडव	नी	मं	म
८	पूर्वी कल्याण	संपूर्ण	...	...	...
९	छाया नट	षाडव	नी	...	...
१०	केदार नट	संपूर्ण	...	म	म
११	हमीर नट	संपूर्ण	...	म	म
१२	झिंझोटी	संपूर्ण	...	नी	नी

रात्रिका दूसरा प्रहर अर्थात् ९ बजे रातसे बारा बज राततक.

	नाम राग.	जाति.	वर्ज्य स्वर.	कोमल स्वर.	तीव्र स्वर.
१	बागेश्वरी	संपूर्ण	....	ग नी	....
२	सोरठी	संपूर्ण	....	नी	नी
३	शहाना	संपूर्ण	....	ग. नी	....
४	अड़ाना	संपूर्ण	....	ग. नी	....
५	ब्रह्मावर्त	संपूर्ण	....	रे. नी	नी
६	भूप	ओडव	मनी	....	....
७	कानड़ा	संपूर्ण	....	ग. नी	....
८	दरबारी कानड़ा	संपूर्ण	....	ग. नी	....
९	अड़ाना कानड़ा	संपूर्ण	....	ग. नी	....
१०	नायकी कानड़ा	षाडव	ध	...	....
११	काफी कानड़ा	संपूर्ण	....	ग. नी	....
१२	शहाना कानड़ा	संपूर्ण	....	....	...
१३	सूहा कानड़ा	संपूर्ण	....	....	....
१४	बहार कानड़ा	संपूर्ण	....	....	....
१५	रायसा कानड़ा	संपूर्ण	...	ग	ग
१६	कौशिक कानड़ा	संपूर्ण	....	ग. नी	....
१७	गारा कानड़ा	संपूर्ण	....	....	....
१८	सुघराई कानड़ा	संपूर्ण	....	ग नी	ग-नी
१९	सिंधुरा कानड़ा	संपूर्ण	....	....	....
२०	पटमंजरी	संपूर्ण	....	ग. नी	....
२१	केदार	संपूर्ण	....	रे-ध-म	म
२२	चांदनी केदार	संपूर्ण	....	रे-ध	म
२३	जलधरकेदार	संपूर्ण	....	रे-ध	म

रात्रिका तीसरा प्रहर अर्थात् १२ बजे रातसे ३ बजे राततक.

	नाम राग.	जाति.	वर्ज्य स्वर.	कोमल स्वर.	तीव्र स्वर.
१	मेघ	संपूर्ण	....	ग	....
२	मल्हार	संपूर्ण	....	....	....
३	गौड मल्हार	षाडव	नी	....	....
४	मियांकी मल्हार	संपूर्ण	....	ग-नी	नी
५	टंक	संपूर्ण	....	रे-ध	म
६	शंकरा	संपूर्ण	....	म	म
७	शंकरानंद	संपूर्ण	....	....	....
८	बिहंग	संपूर्ण	....	....	....
९	बिहाग	संपूर्ण	....	....	....
१०	जयजयवंती	संपूर्ण	....	ग-नी	ग-नी
११	परज	संपूर्ण	....	रे-ध-म	म
१२	कालिंगडा	संपूर्ण	....	रे-ध	....
१३	जोगी कालिंगडा	संपूर्ण	....	रे-ध	....
१४	परज कालिंगडा	संपूर्ण	....	रे-ध-म	म
१५	हिंडोल	ओडव	रे-प	....	म
१६	बहार हिंडोल	संपूर्ण	....	....	....
१७	मालकंस	ओडव	रे-प	सर्व स्वर	....

रात्रिका चौथा प्रहर अर्थात् ३ बजे रातसे ६ बजे सबेरेतक.

१	ललित	संपूर्ण	....	रे-ध	....
२	सोहनी	षाडव	प	रे-ध	म
३	षट	संपूर्ण	....	रे-ध	....
४	विभास	ओडव	म-नी	....	....

छहों रागोंके गुणोका कोष्ठक.

भैरव राग सच्चे सुर लगाकर गानेसे कोल्हू विना बैलके चले.	मालकंसके गानेसे पत्थर पिघल जाता है, जो सच्चे सुर लगे हों.	हिंडोलके सच्चे सुर लगें तो झूला अपने आप चलने लगता है.	दीपक राग गानेसे दीपक जलने लगते हैं.	श्री रागसे सूखा वृक्ष हरा हो जाता है.	मेघ रागसे पानी बरसने लगे.

राग रागिणियोंके नाम किस प्रयोजनसे रक्खे गये हैं, इसका खुलासा हाल नहीं मिला है, तोभी कई एक रागोंके नाम देशोंके व लोगोंके नामपरसे रक्खेगये हैं, ऐसा जान पड़ता है. पर, वे राग उस देशमें अथवा उन लोगोंमें प्रथम उत्पन्न हुए अथवा वहां उनका विशेष प्रसार हुआ यह निश्चयपूर्वक नहीं कहते बनता. ऐसे कुछ रागोंके नाम निम्नलिखित हैं. यथाः—

सिंधवी	=	सिंधप्रांतपरसे.
बंगाली	=	बंगाल.
मारू	=	मारवाड़.
भूपाली	=	भूपाल.
तिलंग	=	तैलंग.
ललित	=	ललितपूर.
सोरठ	=	सौराष्ट्र.
गंधार	=	कंधार
कानड़ा	=	कर्नाटक.
जौनपुरी	=	जौनपूर.
मालव	=	मालवा.
पूर्बी	=	पूर्वकी तरफका प्रांत.
खमाच	=	यह ढाका शहरका दूसरा नाम है.
श्याम	=	श्याम देश.
मुल्तानी	=	मुल्तान.
वृंदावनी	=	वृंदावन.
गौड	=	गौडदेश.
अहीरी	=	अहीर लोग.
गुर्जरी	=	गुर्जर लोग.
नट	=	नट लोग.

भाग पहिला.

चतुर्थांक.

ताल–विचार.

ज्यों हाथीको अंकुश त्यों गायनको ताल है.

गायन अथवा वाद्यमें जैसे ऊंच नीच स्वर होते हैं, उसी प्रकार दीर्घ ऱ्हस्व भी होते हैं. वे दीर्घ ऱ्हस्व स्वर गाने या बजानेमें जो नियमित काल योजित करते हैं, उसे **ताल** कहते हैं.

जिस प्रकार तरह तरहसे स्वरोंकी रचना करके भिन्न भिन्न राग बनाये गये हैं, उसी प्रकार भिन्न भिन्न रीतिसे मात्राओंकी रचना करके भिन्न भिन्न ताल बांधे हैं.

वे मुख्य ताल सात हैं:—१ धृताल जिसे आड़ा चवताला, २ मठताल जिसे (शूल फाक्ताल), ३ रूपकताल (रूपक या दो ताल), ४ झंपाताल जिसे (झप), ५ त्रिपुटताल जिसे अद्धा या तिताला या त्रिवट, ६ अड़ताल जिसे, (ध्रुपद या चौताला), ७ एका जिसे एकताला कहते हैं.

इन प्रत्येक तालोंके पांच पांच भेद होकर, पैंतीस ताल हुए और उन पैंतीसके आगे अनेक भेद होकर बहुतसे ताल हुए हैं.

मुख्य १०८ तालोंके नाम इस प्रकारसे हैं:—

१	ऋषि	१०	विष्णु	१९	श्रीरंग	२८	राज
२	रुद्र	११	पिपीलिका	२०	लघुचर्चरी	२९	त्र्यस्रवर्ण
३	वसु	१२	गोपुच्छ	२१	चर्चरी	३०	मिश्रवर्ण
४	अष्टविनायक	१३	निःशंक	२२	गजलील	३१	सिंहविक्रीडित
५	डारवट	१४	दर्पण	२३	हंस	३२	जय
६	योग	१५	सिंहविक्रम	२४	हंसलील	३३	वनमाली
७	मत	१६	रति	२५	त्रिभित्र	३४	हंसनाद
८	हनूमान्	१७	सिंह	२६	चूड़ामणि	३५	सिंहनाद
९	रंग	१८	कंदर्प	२७	रंगप्रदीप	३६	कुडुक्क

३७	शरभलील	५५	राजनारायण	७३	निःसारक	९१	लघुशेखर
३८	त्रिभंगी	५६	लक्ष्मी	७४	आदि	९२	मलय
३९	राजविद्याधर	५७	श्रीनंदन	७५	रास	९३	तुरंगतिलक
४०	विजयानंद	५८	अंतरक्रीडा	७६	एक	९४	सन्निपात
४१	क्रीडा	५९	चंड	७७	जयंत	९५	त्रिपुट
४२	कीर्ति	६०	स्कंद	७८	शेखर	९६	रूपक
४३	विजय	६१	गौरी	७९	कुंतल	९७	झंपा
४४	बिंदुमाली	६२	राजमार्तंड	८०	कमल	९८	तिवड़ा
४५	दीपक	६३	मुकुंद	८१	नंदन	९९	सवारी
४६	पूर्ण कंकाल	६४	चंद्रकला	८२	चंद्रशेखर	१००	धमार
४७	खंड कंकाल	६५	चंचुपुट	८३	काम	१०१	ब्रह्म
४८	वसंत	६६	चाचपुट	८४	जयमंगल	१०२	झुम्रा
४९	प्रतापशेखर	६७	षट्पित	८५	तिलक	१०३	धुमाली
५०	गजशाच	५८	संपकेषात	८६	ललित	१०४	दीपचंदी
५१	चतुर्मुख	६९	उद्घाटित	८७	हंसन	१०५	धीमातिताला
५२	मदन	७०	ध्रुव(चौताल)	८८	कंदुक	१०६	पंजाबी ठेका
५३	पार्वतीलोचन	७१	मठ (शूलफाक्ता	८९	विराम	१०७	खेमटा
५४	लीला	७२	प्रतिमठ	९०	गार्ग्य	१०८	आड़ाचौताल

प्रत्येक ताल तीन प्रकारके समयमें बजाया जासके इस कारण कालनियम तीन बांधे गये हैं. जिसके नामः-१ **विलंबपद, २ मध्य, ३ द्रुत.**

१-विलंबपद-बजाते समय साधारण मात्रासे दुगने, तिगने या चौगने विलम्बकी मात्रा बांधकर बजाया जाता है.

२-मध्य-बजाते समय साधारण मात्रा अर्थात् जो मात्राका काल बँधा है उसी अनुसार चलना या बजना.

३-द्रुत-बजानेमें साधारण मात्राके आधे या चौथाई या अष्टमांश कालकी मात्रा बाधकर बजाते हैं.

तालमें सम और खाली ये दो मुख्य हैं, उसमें सम तो गायन वादनका रूप ही है. जहां गाने और बजानेका अवसान एक जगह मिले उसे सम कहते हैं. यह सम अपनी नियमित जगहपर अवश्य रहनी चाहिये. इसे कबीरकी छब भी कहते हैं.

ताली बजाते बजाते फिर जहां दाहिने हाथको उल्टा फेंक दिया जाता है उसे खाली कहते हैं.

मात्रा गिनते हुए जहा २ ताली बजे या ठोंका हो उसे जर्ब कहते हैं.

हाथकी नाड़ीका ठोंका बैठनेमें जितना समय लगता है या मुंहसे एक दो तीनके उच्चारणमें जितना समय लगता है उतने समयको साधारण मात्रा ऐसी संज्ञा देकर, ताल बांधनेके अर्थ वैसी सोलह मात्रा निश्चित की गयी हैं. उनके नाम और संज्ञार्थ.

अंकोंका कोष्ठक.

नं.	मात्राओंके नाम.	मात्राओंकी गिनती.	मात्रा.	संज्ञार्थ चिह्न.
१	विराम.	१.	एक मात्रा.	१
२	द्रुत.	१.२.	दो मात्रा.	२
३	द्रुतविराम.	१.२.३.	तीन मात्रा	३
४	लघु.	१.२.३.४.	चार मात्रा.	४
५	लघुविराम.	१.२.३.४.५.	पांच मात्रा.	५
६	लघुद्रुत.	१.२.३.४.५.६.	छह मात्रा.	६
७	लघुद्रुत विराम	१.२.३.४.५.६.७.	सात मात्रा.	७
८	गुरु.	१.२.३.४.५.६.७.८.	आठ मात्रा.	८
९	गुरुविराम.	१.२.३.४.५.६.७.८.९.	नौ मात्रा.	९
१०	गुरुद्रुत.	१.२.३.४.५.६.७.८.९.१०.	दस मात्रा.	१०
११	गुरुद्रुतविराम.	१.२.३.४.५.६.७.८.९.१०.११.	ग्यारह मात्रा.	११
१२	प्लुत.	१.२.३.४.५.६.७.८.९.१०.११.१२.	बारह मात्रा.	१२
१३	प्लुतविराम.	१.२.३.४.५.६.७.८.९.१०.११.१२.१३.	तेरह मात्रा	१३
१४	प्लुतद्रुत.	१.२.३.४.५.६.७.८.९.१०.११.१२.१३.१४.	चौदह मात्रा.	१४
१५	प्लुतद्रुतविराम.	१.२.३.४.५.६.७.८.९.१०.११.१२.१३.१४.१५.	पंद्रह मात्रा.	१५
१६	काकपद.	१.२.३.४.५.६.७.८.९.१०.११.१२.१३.१४.१५.१६	सोलह मात्रा.	१६

अंकमालाके प्रत्येक अंक गिननेमें जितना समय लगता है, उतना हरएक साधारण मात्रामें समय लगता है ऐसी कल्पना करके, ताल बांधते हुए बराबर अर्थात् एकसे विलंबसे मात्रा गिनना चाहिये. वह इस प्रकारः—

१ **विरामः**—मुखसे एक कहते हुए ठोंका अर्थात् ताल बजावे.

२ द्रुत.–मुखसे एक ऐसा कहते हुए ठोंका बजाकर, फौरन् दो ऐसा कहना चाहिये.

३ **द्रुतविराम.**—मुखसे एक ऐसा कहते हुए ठोंका बजाकर फौरन् दो, तीन ऐसा कहना चाहिये.

४ लघु.—मुखसे एक ऐसा कहते हुए ठोंका बजाकर फौरन् दो, तीन, चार ऐसा कहना चाहिये.

इसी प्रकार आगे हरएक मात्रामें एक एक अंक बढ़ाते हुए सोलहो मात्रा गिननी चाहिये.

हालमें बत्तीस ताल प्रचलित हैं जिनका संक्षिप्त हाल नीचे दिया जाता है.

एकताल पांच प्रकारका है. दोतालाके चार प्रकार. तितालाके चौदह प्रकार. चौतालाके तीन प्रकार. पांच तालाके दो प्रकार. छह ताला एक प्रकारका. दस ताल एक. अठारह ताल एक और तेरह ताल भी एक. सात आठ ताला वगैरेका कुछ हाल नहीं मिल पाया है अतएव नहीं लिखा गया.

मृदंग या पखाजके बोल दिये हैं. समका चिन्ह=ऐसा और खालीका० है.

१ **एक ताला**—इसमें मात्रा ४ व कला ९६, ठेकेके बोल ४, जर्ब एक, सम बीचमें अर्थात् लघुकी दूसरी मात्रापर. यथाः—

लघु	१	२	३	४	;	१	२	३	४
	१	सम				१	सम		
	धा	धिन	तिका	किट	;	धुम	तिका	गद	गिन

२ **केहरवा**—मात्रा २, कला ८, ठेकेके बोल २, जर्ब १, द्रुत १, सम द्रुतके बीचमे है. यथाः—

१	२	;	१	२	
१	स		१	स.	
थि	ग	ना	,	ति	ग धिट.

३ **मरेठी ठेका**—मात्रा २, कला ८, ठेकेके बोल २, जर्ब १, द्रुत १, सम द्रुतकी पहिली मात्रापर. यथाः—

द्रुत. १ २ ; १ २

१ स १

धा त्रिक ; किट तिका

४ केद—मात्रा ७, कला २८, ठेकेके बोल ७, जर्ब एक, लघुद्रुत विराम १, सम पहिली मात्रापर यथाः—

ल. द्रु. विराम. १ २ ३ ४ ५ ६ ७

१ स

धा किट धुम किट तिका गद गिन

५ मुख ताल—मात्रा ५, कला २०, ठेकेके बोल ५, जर्ब १, लघुविराम १, सम पहिलीपर. यथाः—

लघुविराम. १ २ ३ ४ ५ ; १ २ ३ ४ ५

१ स १ स

धा गै किन् ना किन् ; ता कइ गिन् ना गिन

६ रूपक दोताला—मात्रा ८, कला ३२, ठेकेके बोल ८, जर्ब २, लघु २, सम दूसरे लघुकी पहिली मात्रापर. यथाः—

लघु २. १ २ ३ ४; १ २ ३ ४

१ २

धि न्ना गदि गिन धा धिनि निक तिक.

७ पशतो—मात्रा ५, कला २०, ठेकेके बोल ५, जर्ब २, द्रुतविराम १, द्रुत १, सम द्रुतकी पहिलीपर. यथाः—

द्रुतविराम. द्रुत

१ २ ३ ; १ २

१ २

धिं न्ना ना ; गिनि निक

८ कव्वाली—मात्रा ६, कला २४, बोल ६, जर्ब २, द्रुतविराम २, सम द्रुतविरामकी दूसरी मात्रापर. यथाः—

१ २ ३; १ २ ३

१ स. १ स

धा धाग त्रिक ता धाग थिन्

९ **दादरा**—मात्रा ६, कला २४, बोल ६, जर्ब २, द्रुतविराम २, सम दूसरे द्रुत विरामकी पहिलीपर. यथाः—

१ २ ३ः १ २ ३

१ २

धा धिन धा धा किट तिक

१० **धीमा तिताला**—मात्रा १६, कला ६४, ठेकेके बोल १६, जर्ब ३, खाली १, लघु दो, गुरु एक, सम दूसरे लघुकी पहिलीपर और खाली गुरुकी पांचवींपर. यथाः—

१ २ ३ ४, १ २ ३ ४, १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८

१ २ स ३ खा.

गिड नग गद गिन धा धिद गइ तिर गि न्ना तिर किट तु न्ना ता किट.

११ **तीव्रा**—मात्रा ८, कला ३२, बोल ८, जर्ब तीन, खाली १, द्रुत २, लघु १, सम लघुकी पहिलीपर, खाली लघुकी तीसरीपर. यथाः—

१ २, १ २, १ २ ३ ४

१ २ ३ स खा.

धिधि किट धुम तिक धा किट क त्ता.

१२ **तेरतिया**—मात्रा ५, कला २०, बोल ५, जर्ब ३, विराम २, द्रुत विराम १, सम दूसरे विरामपर, खाली द्रुत विरामकी दूसरीपर. यथाः—

१ १ १ २ ३

१ २ ३

स. खा.

धिन धा धिद किट ता.

१३ **तपइया**—मात्रा ६, कला २४, बोल ६, जर्ब ३, खाली १, द्रुत ३, सम दूसरे द्रुतकी पहिलीपर, खाली तीसरे द्रुतकी दूसरी पर. यथाः—

१ २ १ २ १ २

१ २ ३ खा.

ता त्रिक धा गइ घिट ता.

१४ **झूमरा**—मात्रा १६, कला ६४, बोल १६, जर्ब ३, खाली १, लघु २, गुरु १, सम दूसरे लघुकी पहलीपर, खाली गुरुकी पांचवींपर. यथाः—

१ २ ३ ४ १ २ ३ ४ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८

१ २ स. ३ खा.

धिं न्ना धिं न्ना धा किट त्रिक तिका धुमकिट गिन निक क त्ता तुं न्ना

१५ धमालताल या लघुशिखर—मात्रा ८, कला ३२, बोल ८, जर्ब ३, खाली १, द्रुत विराम २, द्रुत १, सम पहिले द्रुत विरामपर, खाली द्रुतकी दूसरीपर. यथाः—

१ २ ३ १ २ ३ १ २
१ स. २ ३ खा.
धा धिद धिद धा कडआन धा ता.

के धिद धिद धा गई दिन दिन ता.

१६ झपताल—मात्रा १०, कला ४०, बोल १०, जर्ब ३, खाली १, द्रुत विराम १, द्रुत १, लघु विराम १, सम द्रुतकी पहिलीपर, खाली लघु विरामकी चौथीपर. यथाः—

१ २ ३ १ २ १ २ ३ ४ ५
१ २ स ३ खा.
तिका गद गिन धां किट धुमकिट तिक तत ता.

१७ सूल फाक्ता—मात्रा १०, कला ४०, बोल १०, जर्ब ३, लघु १, द्रुत १, लघु १, सम पहले लघुकी पहिलीपर. यथाः—

१ २ ३ ४ १ २ १ २ ३ ४
१ स. २ ३
धा त्रिक धुमकिट धा तिक धा तिका गद गिन.

१८ सुल्फ—मात्रा १५, कला ६०, बोल १५, जर्ब ३, खाली १, लघुविराम १, द्रुत विराम १, लघु द्रुत विराम १, सम द्रुत विरामकी पहिलीपर, खाली लघु द्रुत विरामकी चौथीपर. यथाः—

१ २ ३ ४ ५ १ २ ३ १ २ ३ ४ ५ ६ ७
१ २ स. ३ खा.
गकिट तिकधिं न्ना धा गिं न्ना धा किट तिक धिं ना गई तिट.

१९ चाचर इसे जेत व रूपचंदी कहते हैं—मात्रा १०, कला ४०, बोल १०, जर्ब ३, खाली १, द्रुत विराम १, द्रुत लघु विराम १, सम द्रुतकी पहिलीपर, खाली लघु विरामकी तीसरीपर. यथाः—

१ २ ३ १ २ १ २ ३ ४ ५
१ २ स. ३ खा.
कड् आन तिक धा तिक धुम किट तिका किट तिक.

२० अदा—मात्रा १२, कला ४८, बोल १२, जर्ब ३, खाली १, द्रुत विराम २, लघुद्रुत १, सम दूसरे द्रुत विरामकी पहिलीपर, खाली लघुद्रुतकी चौथीपर यथाः—

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ ४ ५ ६
१ २ स ३ खा.
धिम किट गिन धा तिका किट धुम त्रिक तिका क्रत कत ता.

२१ ख्यालका ठेका.—मात्रा १२, कला ४८, बोल १२, जर्ब ३, खाली १, लघु १, द्रुत १, लघुद्रुत १, सम द्रुतकी दूसरीपर, खाली लघुद्रुतकी पांचवींपर. यथाः—

१ २ ३ ४ १ २ १ २ ३ ४ ५ ६
१ २ स. ३ खा.
तिका किट तिक किट धिद् धा त्रिक धुम किट तिका तत ता.

२२ पंजाबी ठेका.—मात्रा १२, कला ४८, बोल १२, जर्ब ३, खाली १, द्रुत विराम २, लघुद्रुत १, सम दूसरे द्रुतविरामकी पहिलीपर, खाली लघुद्रुतकी चौथीपर. यथाः—

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ ४ ५ ६
१ २ स. ३ खा.
तिका गद् गिन धा किट तिका धुम किट तिक ता ता किट.

२३ टप्पेका ठेका—मात्रा १२, कला ४८, बोल १, द्रुत विराम २, लघुद्रुत १, सम दूसरे द्रुत विरामकी दूसरीपर, खाली लघुद्रुतकी चौथीपर. यथाः—

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ ४ ५ ६
१ २ सम ३ खा.
धिम किट तिक क्रत धुम किट गिं न्ना गिन थिंन ता कड़.

२४ ध्रुपद, चौताला, मजीबहट व चंदताल.—मात्रा १२, कला ४८, बोल १२, जर्ब ४, लघु १, द्रुत २, लघु १, सम आखिरी लघुकी पहिलीपर यथाः—

१ २ ३ ४ १ २ १ २ १ २ ३ ४
१ २ ३ स ४
धुम किट तिका किट किट तिका गद् गिन धा त्रिक क्रत तिका.

किट तक थुं धा किट तक गद् गिन धा धा तुं धा.

२५ आड़ा चवताला, द्रुतसंगीत—मात्रा १४, कला ५६, बोल १४, जर्ब चार, द्रुत १, लघु तीन, सम दूसरे लघुकी पहिलीपर. यथाः—

१ २ १ २ ३ ४ १ २ ३ ४ १ २ ३ ४
१ २ ३स ४
किण किट घ्ला निध गद् गिन धा घ्रिग गिनि निक दिग दिग ते ते.

२६ **सवांरी, चितलखन**—मात्रा २८, कला ११२, बोल २८, जर्ब ४, लघु विराम १, लघुद्रुत विराम १, गुरु २, सम लघु विरामकी पहिलीपर. यथाः—

१ २ ३ ४ ५ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ १ २ ३ ४
१ स. २ ३
धा किट तिक धुम किट धा धिनि निक धिनि निक कड़ान तिक धा घ्ला निधि धु धु

५ ६ ७ ८ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
४
किट तिक गिड नग धा तिक किट तिका किट तिका गद् गिन.

२७ **खम्सा**—मात्रा १८, कला ७२, बोल १८, जर्ब ५, लघु २, लघुविराम १, विराम १, लघु १, सम आखिरी लघुकी पहिलीपर यथाः—

१ २ ३ ४ १ २ ३ ४ १ २ ३ ४ ५ १ १ २ ३ ४
१ २ ३ ४ ५
ता किट तिका किट धा किट तिक गिनि निक धिधि तिक किट धिनि निक धा तिका किट धुम.

२८ **कोकला**—मात्रा १४, कला ५६, बोल १४, जर्ब ५, लघु १, द्रुत १, लघु १, द्रुत २, सम पहिले लघुकी पहिलीपर. यथाः—

१ २ ३ ४ १ २ १ २ ३ ४ १ २ १ २
१ २ ३ ४ ५
धा ती गिन धित धी किट धधि किट तिका किट धा ता धा किट.

२९ **फरोदस्त**—मात्रा १९, कला ७६, बोल १९, जर्ब ६, द्रुत विराम ३, द्रुत २, लघुद्रुत १, सम पहिले द्रुत विरामकी पहलीपर, खाली लघुद्रुतकी तीसरीपर यथाः—

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ १ २
१ स. २ ३ ४ ५ ६
धा किट तिक धुम किट तिक धुम किट तिक धिधि किट धिनि निक धिनि निक

३ ४ ५ ६
खा.
किट तिका गदि गिन
०

३० **ब्रह्मताल**—मात्रा ३०, कला १२०, बोल ३०, जर्ब १०, लघु १, द्रुत

१, लघु १, द्रुत २, लघु १, द्रुत १, द्रुतविराम २. लघु १, सम आखिरी लघुकी पहिली पर. यथाः—

१ २ ३ ४ १ २ १ २ ३ ४ १ २ १ २ १ २
१ २ ३ ४ ५ ६
धिधि किट धिनि निक धा ता धा किट धिम किट धुम किट ता किट ती किट

३ ४ १ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ ४
७ ८ ९ १० स
तिका किट तिका किट धुधु किट किट तिका गद गिन धा त्रिक धुम किट.

१३ **चिकताल**—मात्रा ३६, कला १४४, बोल ३६, जर्ब १३, द्रुत २, लघु १, द्रुत विराम २, द्रुत १, विराम १, लघुद्रुत १, लघुविराम १, द्रुत १, लघु २, विराम १, सम ग्यारहवीं जर्बपर. यथाः—

१ २ १ २ १ २ ३ ४ १ २ ३ १ २ ३ १ २
१ २ ३ ४ ५ ६
धा किट धुम किट धिध किट तिका किट धा गड़ तिट ता गड़ तिट किड तिक

१ १ २ ३ ४ ५ ६ १ २ ३ ४ ५ १ २ १
७ ८ ९ १० ११ स.
धिन किड तिक धिन किड तिक धिन किड तिक धिन किट तिका गद गिन धा

२ ३ ४ १ २ ३ ४ १
१२ १३
किट तिक धुम तिं न्ना धिंन धिंन ना

३२ **लक्ष्मी**—मात्रा २१, कला ८४, बोल २१, जर्ब १८, सम १८ वीं जर्बपर, विराम ८, द्रुत १, विराम ८, द्रुतविराम १. यथाः—

१ १ १ १ १ १ १ १ १ २ १ १
१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११
धिंत धिंन ना धिंन ना किड तिक धा धिंम ना धिंन ना

१ १ १ १ १ १ १ २ ३
१२ १३ १४ १५ १६ १७ १८
स.
ती गिन किट धा किड तिक धा ती गिन.

कहीं २ इस प्रकारसे भी ताल बर्तते हैं. यथाः—

एकताला—. १ २ ३ ४ ५ ६:

दोताला, रूपक—१ २ ३ ४ ५ ६ ७.

तीन ताला—. १ २ ३ ४.

चौताला—. १ २ ३ ४ ५ ६.

आड़ा चौताला—१ २ ३ ४ ५ ६ ७.

तीव्रा—. १ २ ३ ४ ५ ६ ७

धमार—. १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४

सूर पारवा—. १ २ ३ ४ ५.

झंपा—. १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०.

सवारी—. १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १५

ब्रह्म—. १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४.

इति तालविचार—चतुर्थांक समाप्त !

भाग दूसरा.

प्रथमांक.

सितार.

एक तोंबा जिसमें पोली दंडी लगी हो और उस दंडीपर अटी सहित सतरहसे लेकर पच्चीस (१७ से २५) तक पड़दे बंधे हों और जिसमें पांचसे लेकर सात तार लगे हों और सुरतालसहित बजे, उसे **सितार** वाद्य कहते हैं.

सत आर अर्थात् अच्छा मित्र अर्थात् एकान्त स्थानमें अकेला पुरुष, जिसे अनेकों शोक संताप, खेद, पीड़ा दे रहे हों ऐसा प्राणी, वह यदि सितार वाद्य बजाना जानता है. यहांतक कि वह गायन न भी जानता हो, तो भी सितार परसे गतें ही बजाकर अथवा सुनकर या सुनाकर अपने या दूसरोंके मनको प्रसन्न, प्रफुल्लित, आनंदित कर सकता है.

अमीर अथवा फकीर, स्त्री, पुरुष, बालक, वृद्ध तरुण, पढ़ा हुआ अथवा बे पढ़ा हुआ और ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्रादि सबोंको प्रियवाद्य होकर जिसे सब राग रागिणियों और सब ताल सुरोंमें बजा सकते हैं; ऐसा यह सब वाद्योंमें श्रेष्ठ और माननीय वाद्य **सितार** मात्र ही है.

तारः—सितारके दंडेके जिस तरफ खूंटियां नहीं होतीं, उस तरफ जो पहिला पोलादका तार मध्यम स्वरमें मिलाकर लगाया जाता है वह बजानेका तार होता है. इस तारको मध्यम अथवा चुकटीका तार कहते हैं. इसके पीछे पीतलके दो तार जो षड्ज-के स्वरमें मिले होते हैं, उन्हें जोड़ी कहते हैं. इनके पीछे चौथा तार पोलादका होता है और जो पंचमके स्वरमें मिली रहता है, उस तारको पंचम ही कहते हैं. परन्तु जिस रागमें पंचम स्वर वर्ज्य होता है, यदि वही राग बजाना हो तो यह चौथा पोलादी पंचम नामका तार मध्यम स्वरमें मिलाना चाहिये, तब उसे मध्यम कहेंगे. पांचवां तार पीतलका होता है, उसे चौथे तारकी बराबर मिलाकर लगाते हैं और उसे खर्जका पंचम या मध्यम कहते हैं. छठा तार पोलादका षड्जके स्वरमें मिलाया जाता है. इसे पपैय

या काड़जिला कहते हैं. सातवां तार भी पोलादका होता है, यह पंचमके स्वरमें मिलाकर लगाया जाता है. इसे चिकारी कहते हैं.

ये सब तार तोंबेकी पेंदीमें तारदान या खूंटीमें बँधे हुए होकर, पड़दोंसे अंतरमें कुछ ऊंचे रहें, इससे तोंबे परकी तबलीपरकी घोड़ी या गुर्जपर और डंडेपर खूंटियोंकी तरफ अटीपर रक्खे हुए होते हैं; और अटीके पास तारदानमेंके सूराखोंमेंसे पिरोकर या निकालकर उन तारोंके छोर खूंटियोंमें लपेटे हुए होते हैं.

पोलादके सब अर्थात् चारों तार एकसी मुटाईके होते हैं, इनसे अधिक मोटे पीतलके जोड़ीके तार होने चाहिये, और खर्जके पंचमका पीतलका तार उन पोलादी तारोंसे डचोढ़ा मोटा होना चाहिये.

खूंटियां.—सितारके डंडेके अग्र भागपर, व बांई ओर तारोंके छोर लपेटनेके लिये लकड़ीकी कुंजियांसी लगी होकर, जिनके फिरानेसे तार चाहे जितने चढ़ाते या उतारते बने, उन्हें खूंटियां कहते हैं.

अटीः—खूंटियोंकी तरफ, सितारके डंडेपर हाथी दांतकी अथवा लकड़ीकी दो पट्टियां लगी होती हैं, जिनमेंसे एक जिसके ऊपर तार रक्खे हुए होते हैं, उसे **अटी** कहते हैं. यह अटी सितारका पहिला पड़दा कहलाती है. इसके पीछेकी पट्टी जिसमे तार पिरोये जाते हैं उसे **तारदान** कहते हैं.

घोड़ीः—तार रखनेके लिये तोंबेकी तबलीपर हाथीदांतकी या लकड़ीकी छोटी चौकीकी तरह जो पट्टी लगी होती है, उसे घोड़ी, गुर्ज, ब्रुर्च कहते हैं.

तारदानः—अटीके पीछेली पट्टी और तोंबेकी पेंदीमें अर्थात् नीचेकी तरफ तार बांधनेके लिये जो छोटी हाथीदांतकी या लकड़ीके कीलसी लगी हुई होती है, उसे **तारदान** कहते हैं.

पड़दे.—स्वरोंकी जगहें निश्चित करनेके अर्थ धातकी अर्थात् पितल या लोहेकी सलाइयोंके टुकड़े सितारके दंडेपर बँधे हुए होते हैं, उन्हें पड़दे, कट अथवा सुंदरी कहते हैं.

जवारीः—घोड़ी या गुर्जकी सतह एकसी होनेसे स्वर ठीक २ और शुद्ध, मधुर और अच्छा बोलता है, उस एकसी सतहको **जवारी** कहते हैं और यदि सतहमें फर्क पड़गया हो तो उसे साफ करने या ठीक मिलानेको **जवारी खोलनां** कहते हैं.

सितार चन्द्रोदय.

मिज़राब- चार छः अंगुल लंबे लोहेके तार की अंगूठी की तरह बनी हुई होती है. यह दाहिने हाथके अंगूठेके पासकी तर्जनी उंगलीमें पहिन कर इसीसे सतार बजाते हैं. बिना इसके सितार बज नहीं सकता, कारण तारसे उंगली कट जाती है और नारवून भी कट जाता है अत एव यह बनाई गई है. इसे मिजराब, या नरवी कहते हैं.

मिजराबके नकशे वगैर:

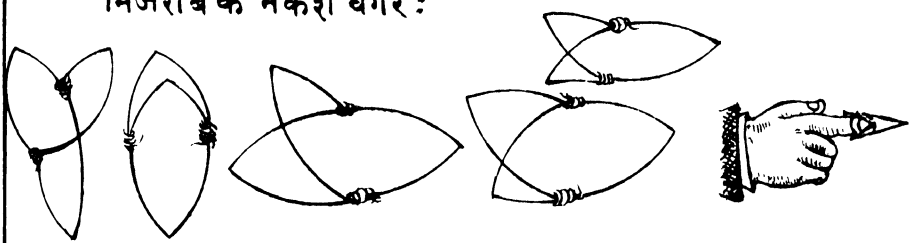

मिजराब बनानेका तरीका. और सतार का नकशा.

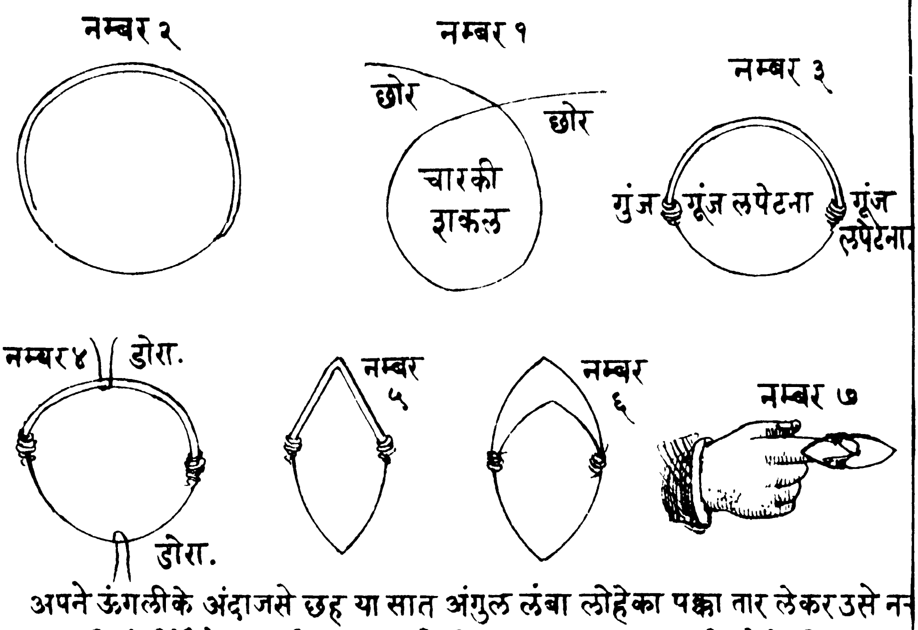

अपने ऊंगलीके अंदाजसे छह या सात अंगुल लंबा लोहेका पक्का तार लेकर उसे नम्बर एक की जो हिंदी के चार की तरह बनावे, फिर उस बनाए हुए चार के दोनो छोर घुमाकर नम्बर २ की तरह तार की गोलाई के अर्ध में मिला देवे, तब फिर उन मिले हुए दोनों छोरों-को नंबर ३ की तरह चमीटीसे बाली की गूंज की तरह लपेट देना चाहिये फिर दो डोरे लेकर नंबर चार की तरह बीचों बीच तार के आमने साम्हने बांधकर एक हाथसे एक डोरा -

भाग दूसरा प्रथमांक.

और दूसरे हाथसे दूसरा डोरा पकड़कर खींच देवे तो नंबर ५ की शकल बन जायगी बस यही मिजराब बनकर तयार होगई. फिर उस मिजराबका जो दुहेरी हिस्सा है उसे जरा उमका कर यानी खोलकर अंगूठे के पासवाली तर्जनी दाहिने हाथकी उंगली में इस तरहसे पहिनना चाहिये कि मिजराबकी एक गूंजकी गांठ उंगली नाखून के ऊपर बीचों बीच रहे और उंगली की गद्दीपर जहां शंख चक्र इत्यादिकी रेखाएं बनी हुई होती हैं. वहां पोरे की रंगीचके बीचों बीच दूसरी गूंजकी गांठ रहे. नंबर ७ देखो.

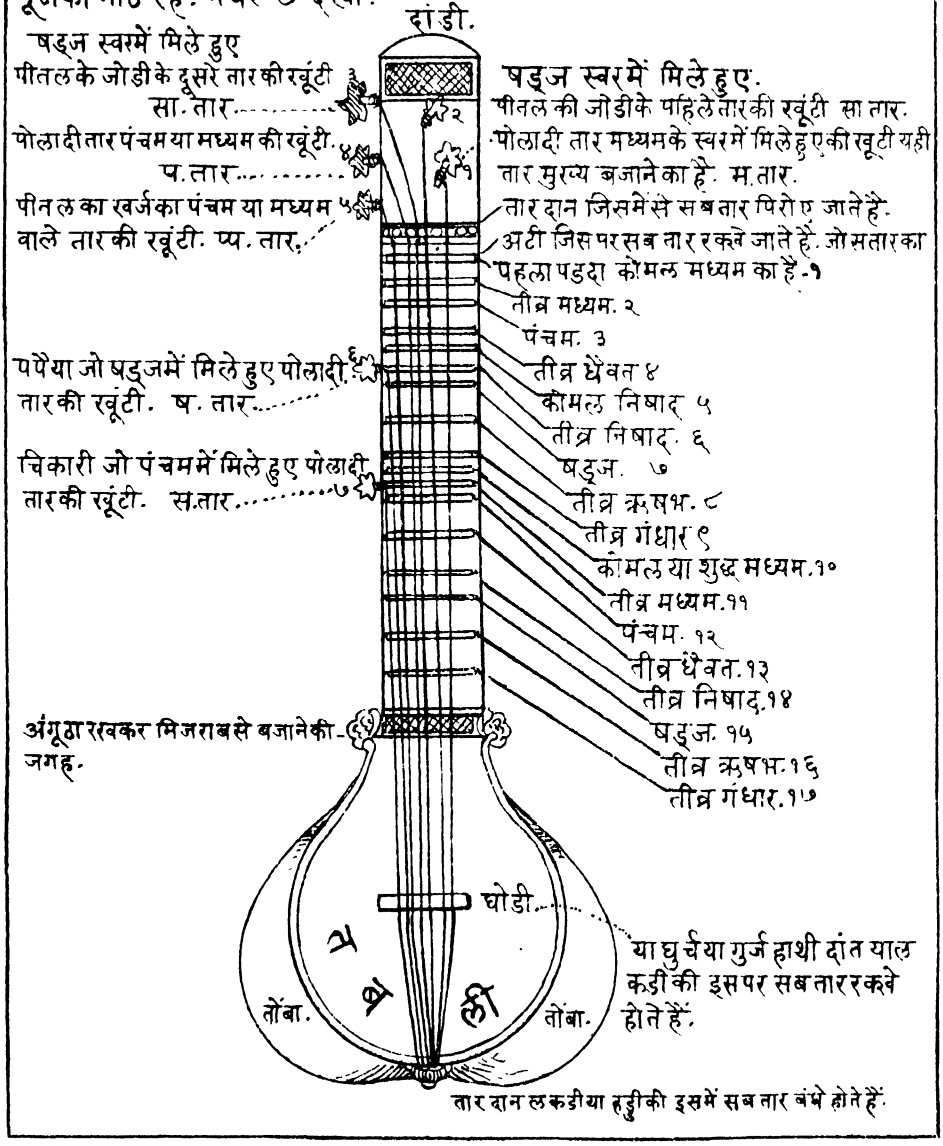

सितार चन्द्रोदय.

ठाट.

जिस जिस स्थान में जो जो स्वर उत्पन्न होते हैं, उस उस स्थान में वही वही स्वर उत्पन्न करने के अर्थ यानी बुलाने के अर्थ पडदों की रचना करना, उसे ठाट ऐसा कहते हैं. ठाट दो प्रकार के होते हैं. १ अचल. २ चल.

पच्चीस पडदे सितार में बांधने से अचल ठाट का सितार कहलाता है. कारण उसमें तीव्र कोमलादि सब स्वर कायम रहते हैं. इस से उसकी रचना में पडदों का फेरफार (यानी आगे पीछे सरकाना) नहीं करना पडता. इससे उसे अचल ठाट का सितार कहते हैं.

नकशा अचल ठाटका.

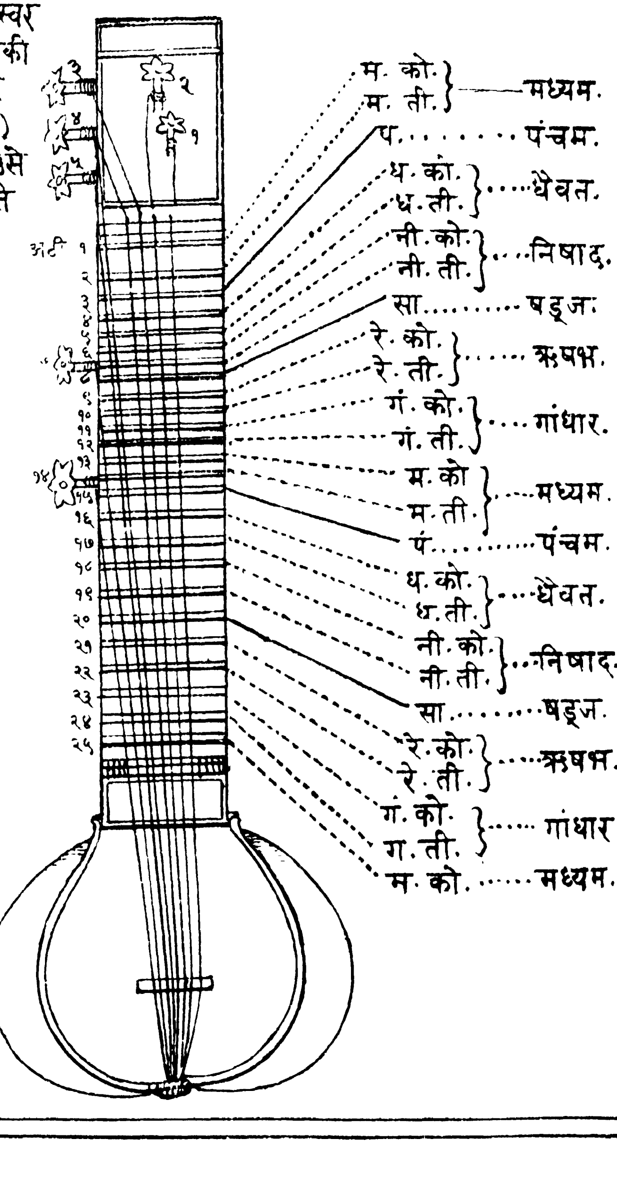

भाग दूसरा प्रथमांक.

सत्रह, अठारह या उन्नीस पडदों वाले सितारपर सब राग बजाए जा सकते हैं, परंतु तीव्र, कोमल ये सब स्वर, पडदे अचल रखनेसे, इतनेही पडदों से काम पूरा न निकलने के कारण रागोंकें अनुसार इन पडदों की जगहें बदलनी पडतीं हैं. इस कारण उसे चल ठाट की सितार, ऐसा नाम रक्खा है. रागरागिनियों के अनुसार चल थाट कई प्रकारके हैं.

ठाट. यमन. नंबर १.

इस थाटमें इतनी रागरागिनी बज - सकती हैं: —

यमन, यमनकल्याण, हमीरकल्याण, श्यामकल्याण, कल्याण, अल्हैया, अल्हैया बिलावल, बिलावल, बिहाग, भोपाली, भूप, विभास, बिहागरा, तिलंग, झिंझोटी, छाया, नट, छायानट, हमीरनट, देवगिरी, जैत, देवसाख, सुरपर्दा, शाम, गारा, केदारा, केदारनट, गौडसारंग, हमीर, हमीरनट, मल्हार, गौड, सकल-बिलावल, बिलावली, गुनकली, कोकब, बडहंस, तिलककामोद, कामोदी, पट-मंजरी, कामोद, जैजैवंती, नटनारायण, शंकराभरन, बिहारी, सुरपर्दा, बेसवाडा, पहाडा झिंझोटी, श्याम, देस, हुजाज, शंकरा, बेसोरी, परदीपिका, हैम, हंसध्वनि, मयूरध्वनी.

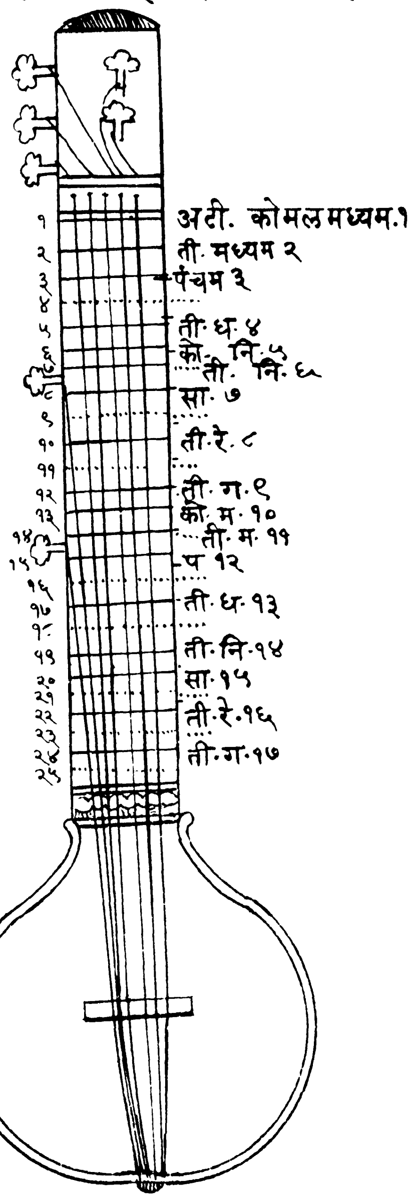

सितार चन्द्रोदय.

ठाट. भैरवी. नम्बर २.

इस रागमें नीचे लिखी हुई राग-रागिनियां बज सकती हैं.:-

भैरवी, आसावरी, मालकंस, जोनपुरी, सिंधभैरवी, गंधारी, पीलू, देसकार, षट, तोडी, देशकारी.

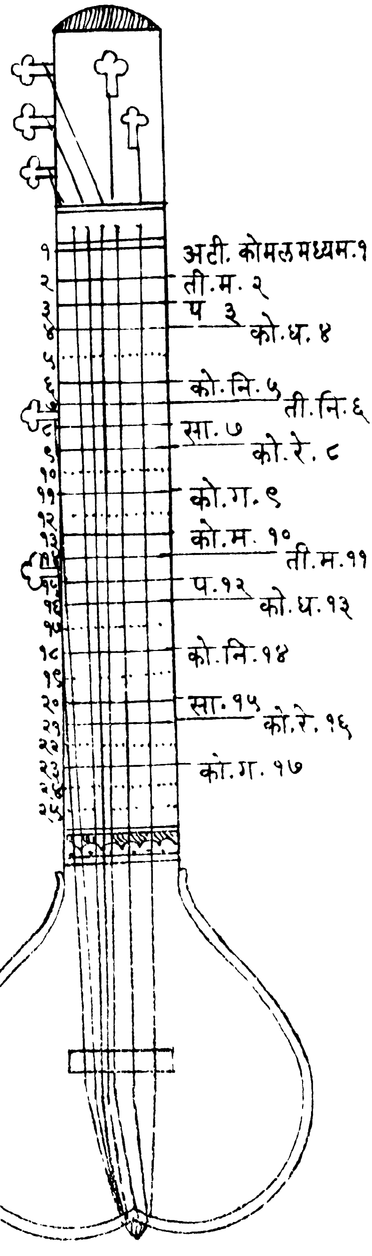

भाग दूसरा प्रथमांक.

ठाट. काफी. नंबर. ३

इस ठाटमें नीचे लिखी हुई रागरागिनी बज सकती हैं :-

जंगला, काफी, सारंग, सिंधुरिया, सुघरेई, सहाना, जिला, मेघ, मिधगोई, कान्हडा, बागेश्वरी, सावंत, पीलू, धानी, सुरमल्हार, मियाकी मल्हार, जोतपुरी, बाहरी, सिंधभैरवी, साहना, सिंदूरा, अडाना, भीमपलासी, सुगरेई, मधुमाधवी, सिंधवी, खमाच, धनाश्री, बाहरी, सावंत कानडी कर्नाटकी.

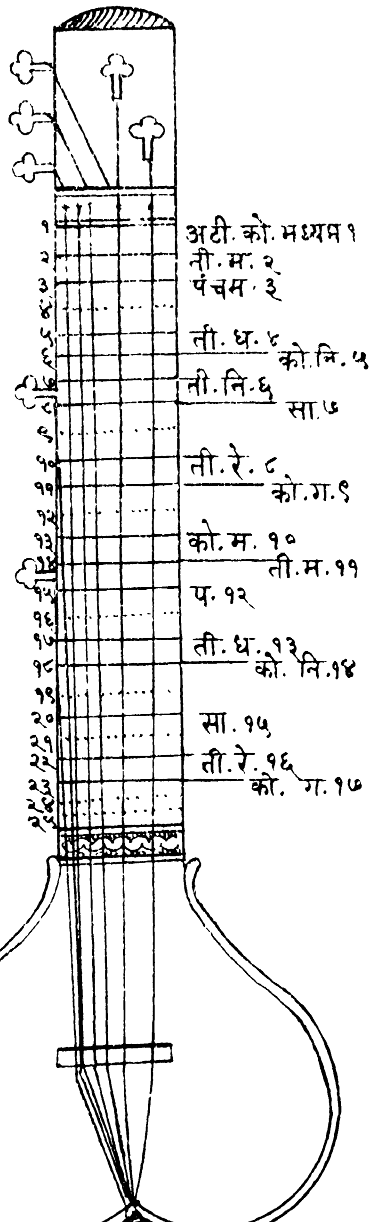

सितार चन्द्रोदय.

ठाट-पीलू. नंबर ४.

इसमें इतनी रागनी बज सकती हैं :-

पीलू, बरवा, धनाश्री.

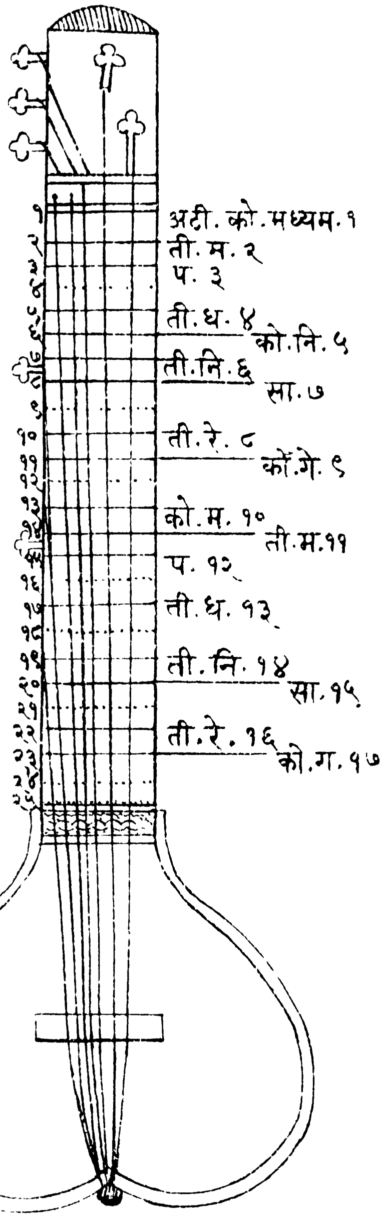

भाग दूसरा प्रथमांक.

ठाट. खम्माच या देस. नंबर ५.

इसमें नीचे लिखी हुई रागरागिनी बजसकती हैं. :—

देस, खम्माचजैजेवंती, सोरठ, गोंड, गोंडमल्हार, सोरठी, कुंबाएती, मल्हार, खंभावती.

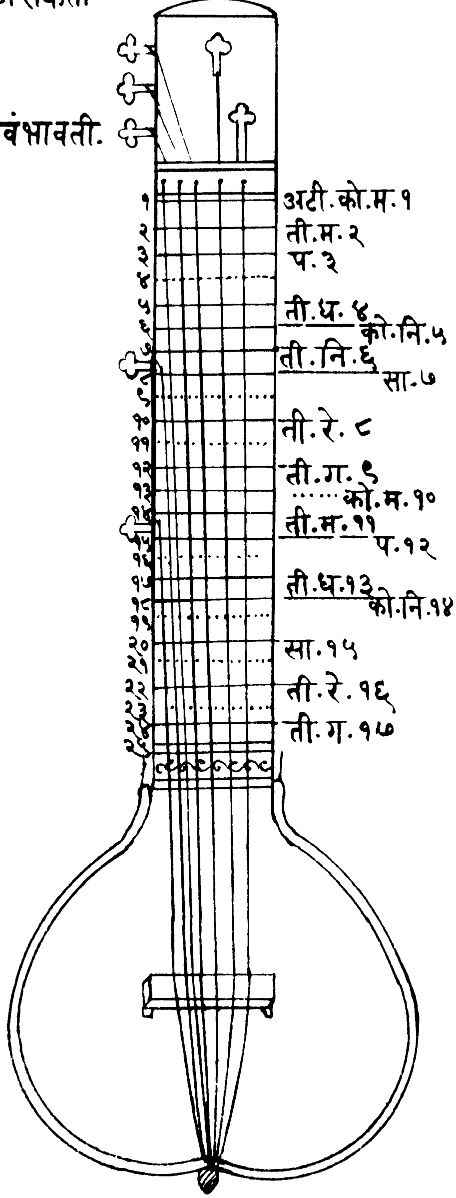

सितार चन्द्रोदय.

ठाट कालिंगडा. नंबर ६.

इसमें नीचे लिखी हुई राग रागिनी बज-सकती हैं. :-

भैरव, पर्ज, पूरिया, श्री, रामकली, ललित, कालिंगड़ा, गौरी, बेरारी, बैंगाल, पंचम, पूर्वी, भाकरा, मालीगोरा, जेलफ, देवगंधार, रैनकी पूर्वी, जोगी कालिंगड़ा, पर्ज कालिंगड़ा, विभास, तोडी, वसंत, वसंती, धनाश्री, सोहिनी.

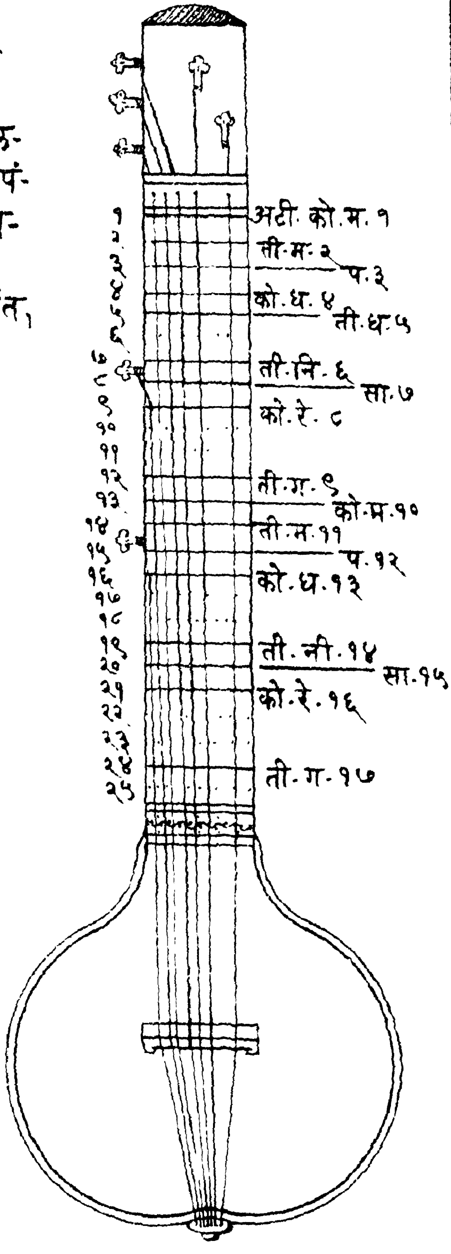

भाग दूसरा प्रथमांक.

ठाट. हिंडोल. नंबर ७.

इसमें नीचे लिखी हुई राग रागिनियां बज सकती हैं. :—

हिंडोल, मारू, मालश्री, जेतश्री, गोरा, तिरवन, वसंत, मारवा, तनक. वसंती, मालवी, टंकल, टंक.

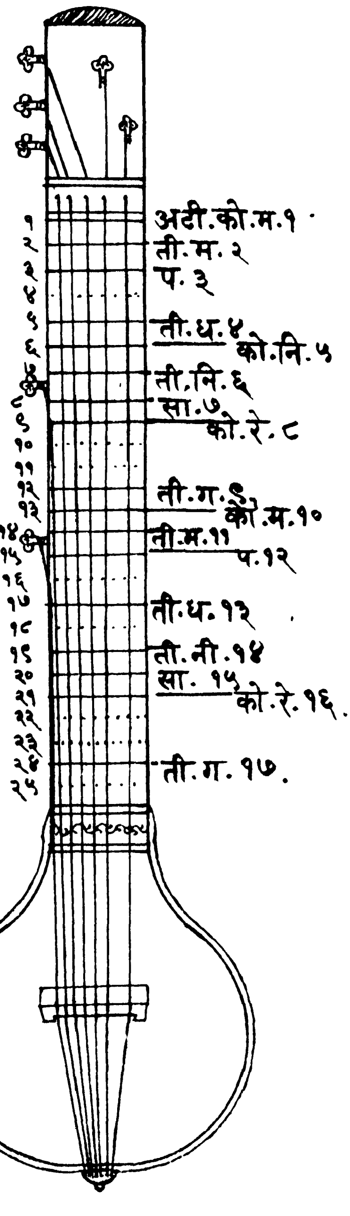

सितार चन्द्रोदय.

ठाट. जौनपुरी नंबर ८.

इसमें नीचे लिखी हुई रागरागिनी बज-सकती हैं :-

देसी, जौनपुरी, गांधारमेधकापुत्र, जोगिय, धोलश्री.

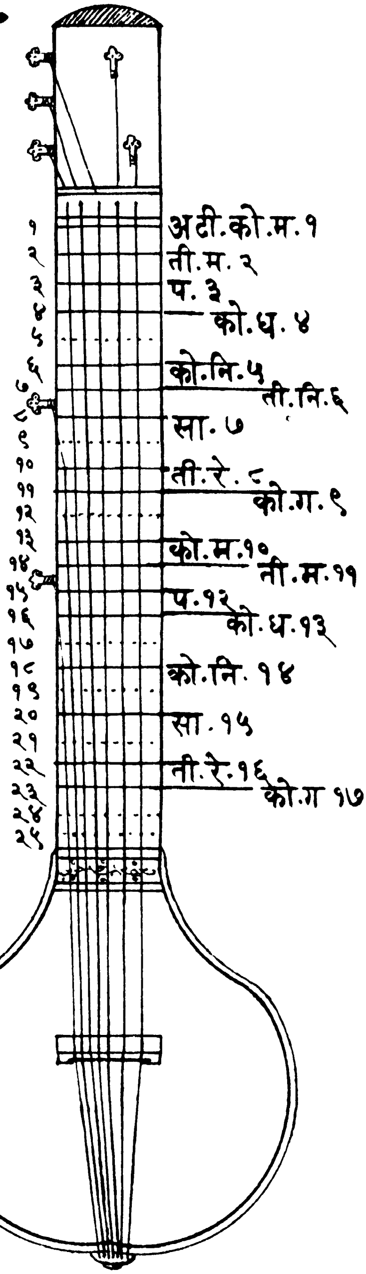

भाग दूसरा प्रथमांक

ठाट एज़न. नंबर ९.

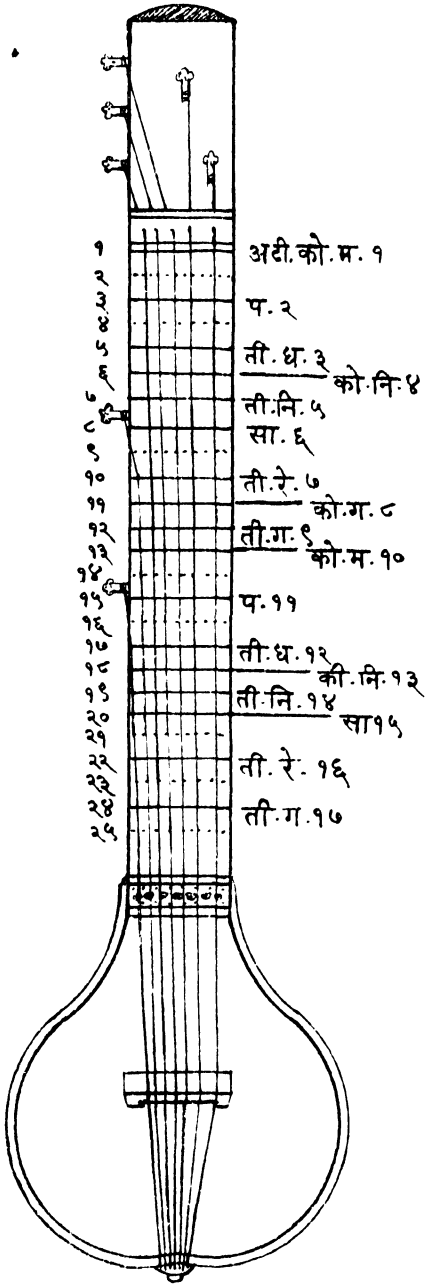

सितार चन्द्रोदय.

ठाट, नंबर १०

इसपर नीचे लिखे राग बजसकते हैं:-

तोडी, गूजरी, जोनपुरी तोडी, लाचारी-तोडी, सुल्तानी, भटियार.

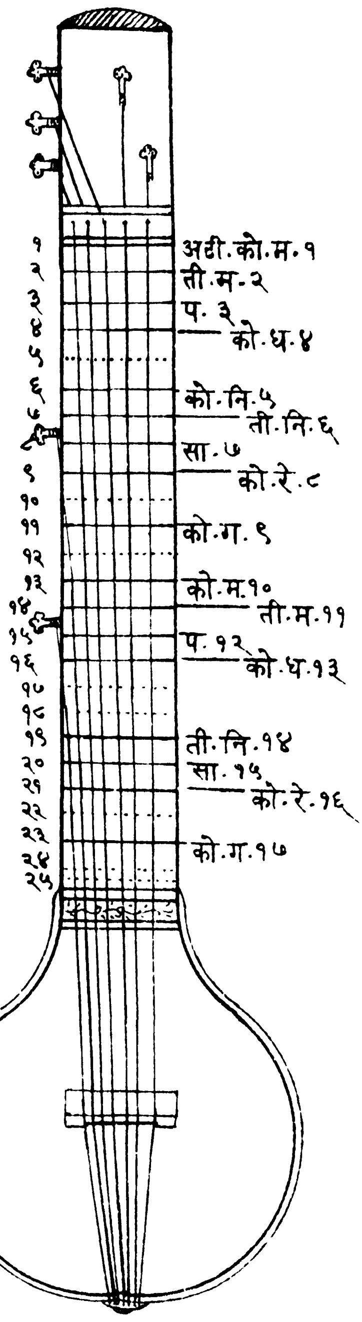

भाग दूसरा प्रथमांक.

ठाट. नंबर ११.

इसपर नीचे लिखे राग बजसकते हैं:-

गंधार, मालकंसरागकापुत्र, बीरवा.

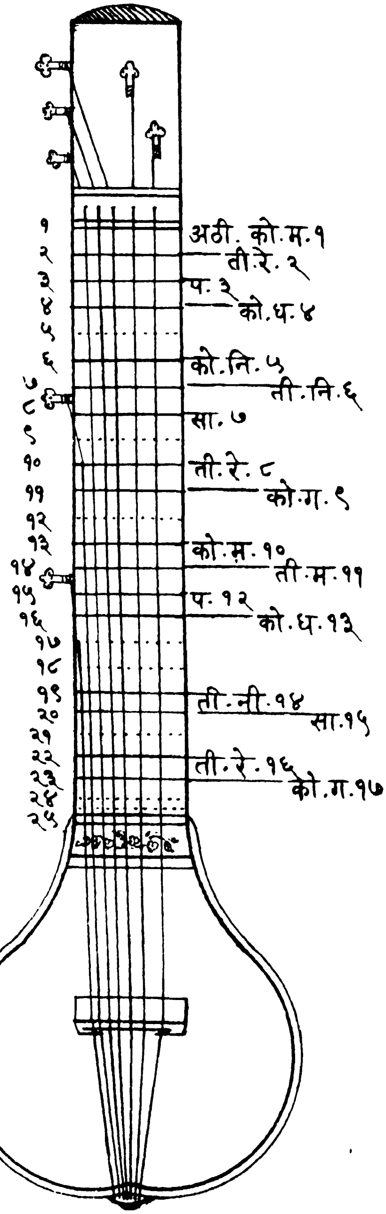

सितार चन्द्रोदय.

ठाट. नंबर १२.

इसपर इतनी रागिनी बज सकती हैं:-

दीपक.

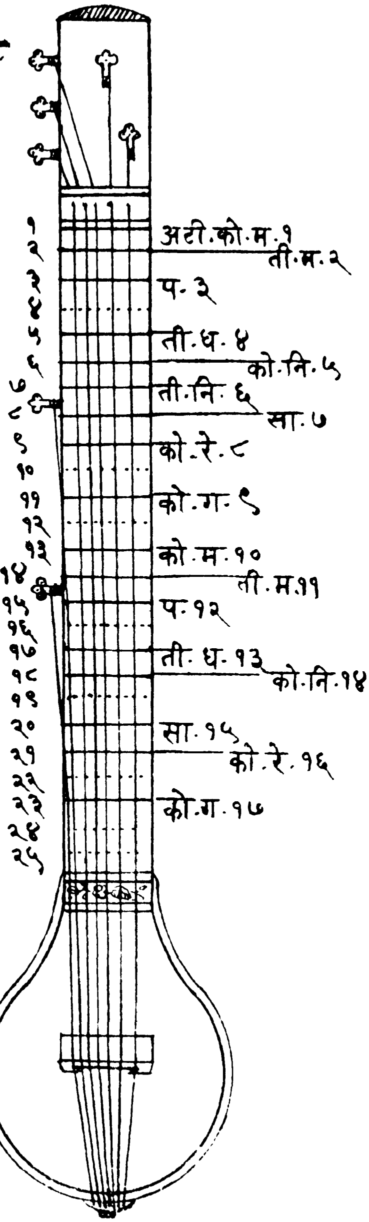

भाग दूसरा प्रथमांक.

ठाट, नंबर १३.

इसपर नीचे लिखे राग बज सकते हैं :—

सोहनी, खमाएच.

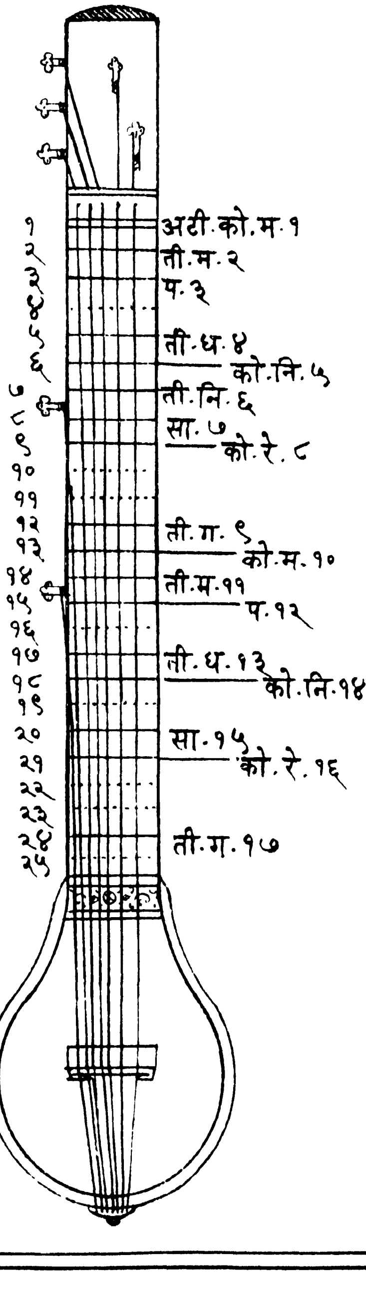

सितार चंद्रोदय.

आवश्यकीय सूचना.

सितार सीखनेवालेको चाहिये कि, जो हमने इस किताबमें ठाटके बयानमें अचल ठाट २५ पड़देके सितारका नकशा बनाया है. उसीके अनुसार सतारमें २५ ही पड़दे किसी उस्तादसे बंधवा लेवे अथवा स्याहीयापैंसिलसे अपने सतारपर पड़दोंके पच्चीसों निशान ठीक २ स्थानपर बना लेवे. जिससे याद करनेमें बड़ी सहलता पड़ेगी. इस कारणसे कि सतारतो बहुधा दुकानदारोंके यहांसे ठाट यमन नंबर १ के हमारे इस किताबमेंके दिये हुए नकशेके मुताबिक १६ पड़दे बंधे हुए मिलते हैं. अतएव ठाट यमन नंबर १ के सितारके नकशेमें खूंटियोंकी तरफ जो १ से लेकर २५ तक पडदोंके नंबर पडे हैं. उसीके अनुसार निशान अपने सतारपर बनालेवें और जब जिस रागरागिनीकी गत सीखना हो तो ठाटोंके नकशोंके अनुसार पड़दे ऊंचे या नीचेकी तरफ ठीक २ सरकालेवे. ठाटमें जिन २ स्वरोंकी आवश्यकता हो उन २ स्थानोंमें पड़दे रक्खें और बाकी निशान खाली रहने दे. जैसे ठाटोंमें खाली पडदोंके चिह्न ...... इस प्रकार दर्शाए हैं. और खास पड़दोंके चिह्न —— इस प्रकारकी लकीर करके दर्शाए हैं. इस प्रकार गत बजानेको ठाट ठीक २ मिलाना चाहिये और पच्चीसों निशानोंके अनुसार सितारके तारभी आगे लिखे हुए रीतिके अनुसार मिलावे. हम सोलह पड़दोंके अनुसार किताबमें सितारकी मिलाने और गतोंके बजानेकी रीति लिखते परन्तु उसमें सीखने वालोंकी समझमें आना बड़ा कठिन था. इस कारण ऐसी रीति रक्खी.

दिक्कत उसी वक्त तक पडेगी जब तक कि पच्चीसों पडदोंके नाम व स्थान याद न होवें, अतएव पड़दोंके स्थान, नाम और स्वरोंकी पहिचान अवश्य ही ध्यानके साथ ठीक २ याद करलेना चाहिये.

ध्यान रहे कि, सतारके ठाटके नकशेमें जो १ से लेकर २५ तक नंबर पड़े हैं, उसी तरह अपने सतारपर निशान बनालेवे और ठाट जरूरतके मुवाफिक चाहे जैसा बनालेवे. लेकिन खाली निशानोंकीभी गिनती पड़दोंमें मानकर गत याद करनी होगी.

भाग दूसरा- प्रथमांक.

सितारकी स्वर सप्तकें (पडदोंकेनाम, स्वर)

सितारमें तीन स्वर सप्तकें बजती हैं. वे इस प्रकारः—— पोलादी तार चौथी जो अटी पर अर्था पड़दा नंबर १ पर पंचम स्वरमें बजती है, उसे षड्-जका पंचम यानी नीच सप्तकका पंचम कहते हैं, इसी तारके दूसरे पड़दे-पर कोमल धैवत बजता है, तीसरे पर तीव्र धैवत, चौथेपर कोमल निषाद और पांचवेपर तीव्र निषाद बजता है. यहांतक आधा सप्तक हुआ. छट-वें पड़देपर यद्यपि षड्ज होताहै, तथापि इस षड्जसे पीतलके दूसरे और तीसरे अर्थात् जोडीके तारके अटीपर बोलनेवाला षड्ज स्वर बजानेमें सु-गम पड़ता है. अतएव बजानेवाले उसे पसंद करते हैं. जोडीके तारके दूसरे पड़देपर कोमल ऋषभ बजता है. तीसरेपर तीव्र ऋषभ, चौथेपर कोमल गं-धारवपांचवेपर तीव्र गंधार बजता है. छटवें पड़देपर यद्यपि कोमल मध्यम होता है. तथापि इस कोमल मध्यमसे पोलादी पहली मध्यमकी तार अटी पर यानी पहिले पड़देपर कोमल मध्यमके स्वरमें बोलती है सो वह कोम-ल मध्यम बजानेमें सुगम पड़ती है. इससे बजानेवाले उसे पसंद करते हैं. इसी म तारके दूसरे पड़देपर तीव्र मध्यम बजता है. तीसरेपर पंचम, चौथे पर कोमल धैवत, पांचवेपर तीव्र धैवत, छटवेपर कोमल निषाद, सात-वेंपर तीव्र निषाद बजता है यहांपर डेड़ सप्तक हुआ. आठवें पड़देपर ष-ड्ज निकलता है. नववेंपर कोमल ऋषभ, दशवेंपर तीव्र ऋषभ, ग्यारह-वेंपर कोमलगंधार, बारहवेंपर तीव्र गंधार, तेरहवेंपर कोमल मध्यम, चौद-हवेपर तीव्र मध्यम, पंद्रहवेंपर पंचम, सोलहवें पर कोमल धैवत, सतरहवेंपर तीव्र धैवत, अठारहवेंपर कोमल निषाद, उन्नीसवेंपर तीव्र निषाद बजता है. यहांतक अढ़ाई सप्तक हुवा. आगे वीसवें पड़देपर षड्ज स्वर बजता है. इक्कीसवेंपर कोमल ऋषभ, बाईसवें पर तीव्र ऋषभ, तेईसवेंपर कोमल गंधा-र, चौवीसवेंपर तीव्र गंधार और पच्चीसवेंपर कोमल मध्यम निकलता है. यहांपर तीन सप्तकें पूरी होती हैं. आगे साफ २ समझनेके लिये नकशा दिया है. उसपरसे समझमें ठीक २ आवेगा. सो देखो.

सितारचन्द्रोदय.

नकशा सितारके तीनो ग्राम स्वर सप्तमोंका.

सा. तारपीतल ३ — सा. तारपीतल २ — प· तारपोलादी ४ — प· तारपी· ५ — प· तारपो· लादी १

पपैया सा· तारपोलादी ६

चिकारी प· तारपोलादी ७

अटी — अटी जिसपर तार रहते हैं

१	पंचम		१ सा·	⌣ कोः	म· ⌣	१
२	कोः	ध·	२ कोः रे·	⌣ ती·	म· ⌣	२
३	ती·	ध·	३ ती· रे·	⌣	प· ⌣	३
४	को·	नि·	४ को· ग·	⌣ कोः	ध· ⌣	४
५	ती·	नि·	५ ती· ग·	⌣ तीः	ध· ⌣	५
		सा	म·	कोः	नि· ⌣	६
		रे	म·	ती·	नि· ⌣	७
		रे	प·		सा· ⌢	८
		ग	ध·	को·	रे· ⌢	९
		ग	ध·	ती·	रे· ⌢	१०
		म	नि·	को·	ग· ⌢	११
		म	नि·	ती·	ग· ⌢	१२
		प	सा·	को·	म· ⌢	१३
		ध	रे·	ती·	म· ⌢	१४
		ध	रे·		प· ⌢	१५
		नि	ग·	कोः	ध· ⌢	१६
		नि	ग·	तीः	ध· ⌢	१७
		सा	म·	को·	नि· ⌢	१८
		रे	म·	ती·	नि· ⌢	१९
		रे	प·		सा· ⌢	२०
		म	ध	को·	रे· ⌢	२१
		ग	ध	तीः	रे· ⌢	२२
		म	नि·	को·	ग· ⌢	२३
		म	नि·	तीः	ग· ⌢	२४
		प	सा·	कोः	म· ⌢	२५

भाग दूसरा - प्रथमांक.

सितार मिलानेकी रीति.

सितारमें सात खूंटियां जिनमें सात तार इस प्रकारसे बंधे होते हैं कि पहिली नंबर एककी खूंटीमें पोलादी पक्का तार जो मध्यमके स्वरमें मिलाना चाहिये बंधा रहता है. दूसरी नंबर दोकी खूंटीमें पीतलका तार जो षड्जके स्वरमें मिला होता है. तीसरी नंबर तीनकी खूंटीमें भी पीतलका तार नंबर दोकी तरह ठीक वही षड्जके स्वरमें मिला होता है. इससे इसे जोडीके तार कहते हैं. चौथी नंबर चारकी खूंटीमें पोलादका पक्का तार षड्जके पंचमके स्वरमें मिला होता है. पांचवी नंबर पांचकी खूंटीमें पीतलका तार नंबर चारकी खूंटीके स्वरमें मिला होता है. छटवी नंबर छहकी खूंटीमें पोलादी पक्का तार यह जोडीके तार जो षड्जमें मिले बोलते हैं. उस षड्जके दूने यानी टीपके षड्जमें मिला होता है और सातवींभी पंचमके स्वरमें मिली होती है. इन सब तारोंमेंसे पांच तार अटीपर यानी नंबर एकके पड्देपर लिखे हुए अपने २ स्वरोंमें बोलते हैं और दो तार अपनी अपनी खूंटियोंके पास खूंटीपर बोलते हैं. इन सब तारोंका अपने २ स्वरमें ठीक २ यथा योग्य बोलना और पच्चीसों पड्दोंपर उनसे यथायोग्य ठीक २ जो स्वर बंधे हुए हैं उन स्वरोंकी ठीक २ ध्वनि निकलनेको सतारका **मिलाना** कहते हैं. यह **मिलाना** अतिआवश्यक है.

सितार सीखने या बजानेके पहिले सब तार अवश्य ही मिलाना चाहिये. तार मिलाते हुए तारकी खूंटी धीरे २ थोडी २ घुमानी चाहिये. क्योंकि जो तार जिस चाहे हुए स्वरके बराबर करना है और अगर खूंटी बहुत ज्यादह सूधी घुमादी जायगी तो तार बहुत ऊंचे स्वरके आवाजमें चढकर चटसे टूट जायगा और अगर बहुत ज्यादह उल्टी खूंटी घुमादी जायगी. तो तार बहुत कम नीचे स्वरके आवाजमें होकर बोलने लगेगा. इससे चाहे हुए स्वरमें तार मिलानेके वास्ते खूंटी (चढते या उतारते हुए स्वरमें) धीरे २ और थोडी २ घुमाना चाहिये.

जो तार अगर टूट जावे तो फिर दूसरे तारको गांठ देकर न बांधना चाहिये. उसके बांधनेका तरीका हमने नकशा देकर इस तरह समझाया है:-

सितारचन्द्रोदय.

नकशा खूंटियों में तार बांधने का.

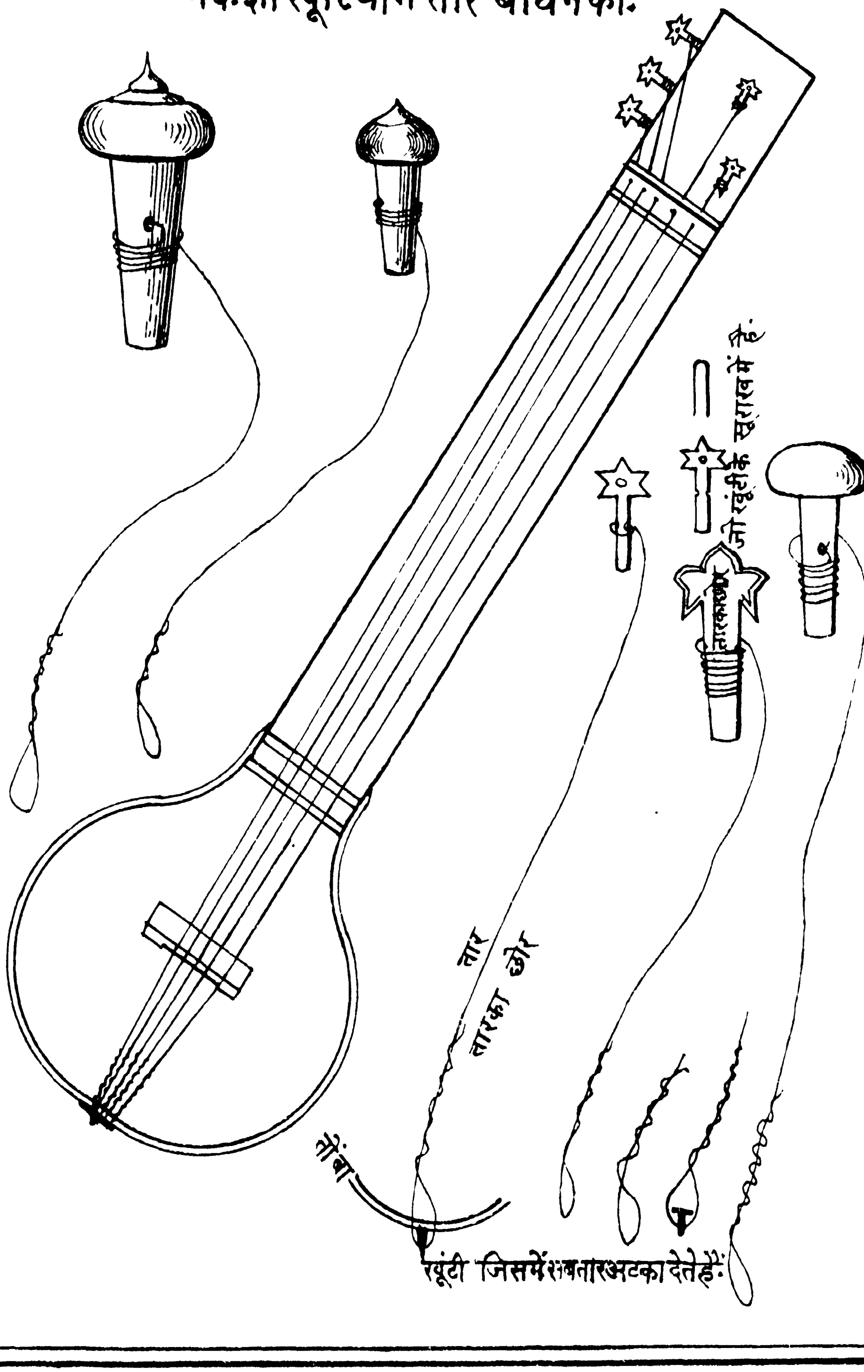

भाग दूसरा-प्रथमांक.

सितार मिलानेकी रीति.

सा,सा. ये दोनों जोडीके तार चाहे जिस स्वरमें दोनोंकी एकही ध्वनी उत्पन्न हो एसी ठीक २ मिला लेवे, और इन दोनोंको मिलकर जो स्वर बोलेगा उसे षड्ज मानकर, इन्हीं दोनों तारोंको छठवें पड़देपर दाबकर बजानेसे, जो मध्यम स्वर निकलता है, उस स्वरके बराबर यानी एकहीसी आवाजमें **म** यह जो नंबर एकके खूंटीकी पोलादी मुख्य बजानेकी तार मिलालेवे. यही **म**, तार आठवें पड़देपर दाबकर बजानेसे षड्जके स्वरमें बोलती है. यही षड्ज जोडीके तार का जो षड्ज है उसका दूना यानी टीपका षड्ज अर्थात् **सा** है. लोग गानेमें जो कहते हैं कि, सुर छेडो या दीजियेतो वह मुख्य यही है. इस **सा** का स्वर और जोडीके तारोंका स्वर ठीक एकसा बराबर मिलना चाहिये. कारण कि येह सब षड्ज है. जोडीके **सा.सा.** य तार आठवें पड़देपर दाबकर बजानेसे पंचमके स्वरमें बोलते हैं, उस पंचमके स्वरके बराबर **प**, यह जो नंबर चारके खूंटीकी पोलादी तार है ठीक एक ही आवाजमें बराबर मिलानी चाहिये. और **म**, पहिली खूंटीके पोलादी तारको तीसरे पड़देपर दाबकर जो पंचमकी आवाज निकले वही ठीक बराबर, एकसा स्वर इस **प**, नंबर ४ के खूंटीके पोलादी तारकी ध्वनी एकसी मिलेगी. और **प्प**, नंबर ५ के खूंटीकी पीतलकी तार भी नंबर ४ वाले **प** तारके आवाजमें एक सी मिलाना चाहिये. परन्तु **प**, **प्प**, यानी नंबर ४ नंबर ५ के ये दोनों तारें रागपरत्व मध्यम स्वरमें मिलानी पडें अर्थात् जिस रागमें पंचम वर्ज्य हो यानी न लगे. उस रागमें ये दोनों तारें, नंबर १ **म**, तारके आवाजमें मिलानी चाहिये. **म**, नंबर १ के तारको आठवें पड़देपर दबानेसे जो षड्ज स्वर उत्पन्न हो उस स्वरके बराबर **ष** यानी नंबर ६ की खूंटी पपैयाके तारको मिलाना चाहिये. और जोडीके **सा. सा.** दोनों तारोंको बजाकर उसकी आवाज और पपैयाकी आवाज ठीक मिलान कर लेना चाहिये. नंबर ७ की खूंटीकी **स**, यह चिकारीकी तार यदि पंचमके स्वरमें मिलाकर लगानी हो तो, **म**, नंबर १ खूंटीवाली तार पंद्रहवें पड़देपर दाबकर बजानेसे जो ध्वनि निकले, उस ध्वनीके बराबर मिलानी चाहिये. व **प**, नंबर ४ के तारसे बजाकर मिलान कर देखना चाहिये. और रागपरत्व वोह चिकारी नंबर ७ की तार मध्यमके स्वरमें मिलानी हो तो **म**, नंबर १

सितार चन्द्रोदय.

तारको तेरहवें पड़देपर दाबकर ध्वनि उत्पन्न करके उस ध्वनिके बराबर मिलानी चाहिये. और म. तारसे मिलानकर देखना चाहिये. परन्तु अगर यह तार (यानी नंबर ७ चिकारीकी सा. तार) षड्जमें मिलानी हो तो म. नंबर १ के तारको बीसवें पड़देपर दाबकर जो आवाज निकले उस आवाजके बराबर मिलालेवें, व ष, नंबर ६ पपीया तारसे मिलादेखे.

यथा नकशेमें देखो.

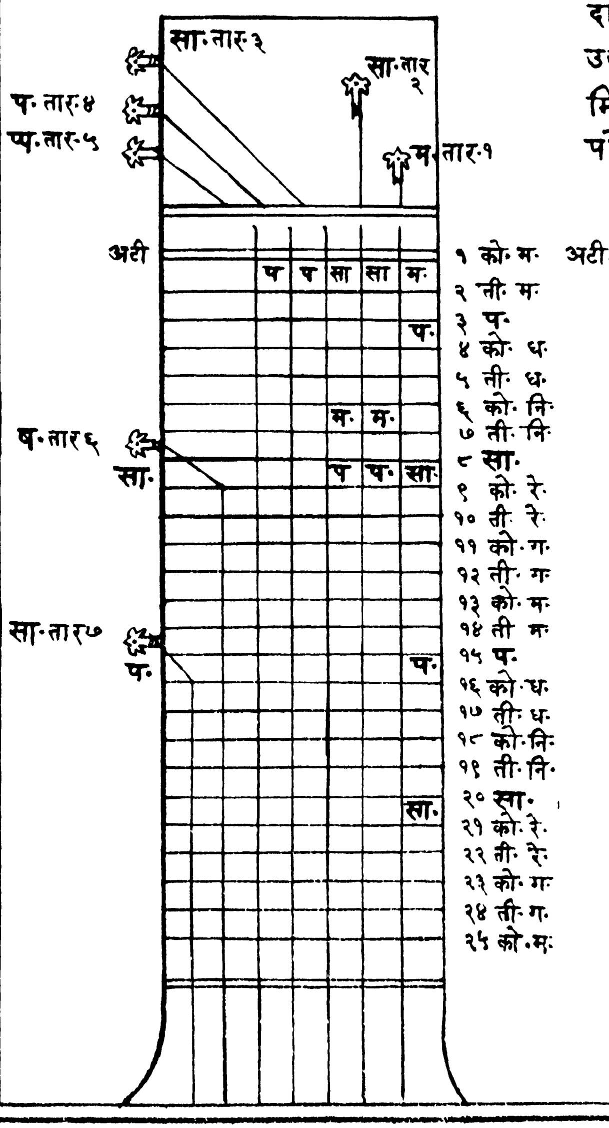

भाग दूसरा-प्रथमांक.

सितारका आरोह और अवरोह.

अटीकी तरफसे तोंबेकी तरफ यानी पडदा नंबर १ की तरफसे पडदा नंबर २५ की तरफको आते हुए यानी नीचे उतरते हुए, पडदोंके स्वर क्रम २ से ऊंचे चढते जाते हैं. इससे उसे सतारका आरोह कहते है. और तोंबेकी तरफसे अटीकी तरफको जाते हुए यानी २५ वें पडदेसे पहिले पडदेकी तरफ, ऊपर चढते हुए, पडदोंके स्वर क्रम २ से नीचे होते जाते हैं. इस कारण उसे सितारका अवरोह कहते हैं.

सितारके तारपर आरोह करते समय बांए हाथके मध्यमा यानी बीचकी उंगलीसे करे, और अवरोह उसी हाथके तर्जनी यानी अंगूठेके पासवाली ऊंगलीसे करना चाहिये.

सितार किस प्रकार पकडे?

सतार लेकर बजानेको बैठनेके दो तरीके है. जिन्हें आसन या बैठक कहते हैं. एक तो सर्दारी बैठक. दूसरी दर्बारी बैठक.

१- सीखनेवालेने सितारकी पीठ (जिसतरफ पडदे नहों) अपनी छातीकी तरफ करना, व उसका तोंबा (पालथीमारकर यांनी पद्मासन लगाकर बैठनसे) दाहिने घुंटनेकी तरफ जांघके पास रक्खे. और तोंबेपर दाहिने हाथकी कलाई या पंहुचा रखकर, उसके लकबसे यानी जोरसे सितार तिरच्छी खडी रहे ऐसी पकडे. इस हाथका अंगूठा, सितारके दांडेके पच्चीसवें पडदेके नीचे जो हड्डीकी पट्टी अंगूठा रखकर बजानेकी जगह है. उसपर रक्खकर, तर्जनी यानी अंगूठेके पास वाली उंगली, खूंटी नंबर १ म. पोलादी तार पर चाहे जैसी फिराते बने, ऐसि तरह रक्खे. सितारके दांडेके पीठके हिस्सेको बांए हाथके अंगूठेका सहारा देकर, उस हाथकी मध्यमा और तर्जनी ये दोनों उंगलियां इनके नीचे खूंटी नंबर १ म. पोलादी तार दाबकर, वे चाहे जिन पडदोंपर फिराते बने, इस प्रकार रक्खे. और इस तरह सितार पकडनेकी-

आदत करके फिर बजानेका अभ्यास करना चाहिये. यह सर्दारी आसन सार्वजनिक उपयोगी है.

२–दूसरा दर्बारी आसन यह रोजगारी लोग जो सर्दारोंके यहां दर्बारमें मुजरा वगैरेमें जाते हैं उनके उपयोगी है. इसकी बैठक दाहिना घुटना मोड़कर पैरका पंजा इस तरह रक्खे कि पैरके तलवेपर दाहिना चूतड़ रहे और बांए पैरको इस तरह रक्खे कि एड़ी बांए चूतड़से छूती रहे और घुटना बांए बगलके पास बांई छातीके सामने रहे और सितारका तोंबा दोनो पैरोंके बीचमें धोती या पैजामेंकी सीधमें इस तरह रक्खे कि सितारका डाडां बांए घुटनेपर रक्खा हुआ सीधा तिरछा रहे और सब बात पहिले आसनकी तरह रहे.

ये दोनो आसन सितार बजाने या सीखनेके परमोपयोगी हैं. इनके सिवाय चाहे जिस तरह बैठकर सितार बजा सकते हैं. यह अपनी २ खुशीपर है.

सितारका उपयोग और गतिविचार.

किसी रागमें, रागके जो स्वर हों उन स्वरोंमें ठुमरी, पद, ध्रुपद, ख्याल, टप्पा, गजल, लावनी, चौतार, कजली इत्यादि चीजोंका अनुकरण करनेवाले जो दा, दिड़, दा, ड़ वगैरे गतियोंके बोल हैं, उन्हें गति कहते हैं.

सितार तो मुख्य गतेंही बजानेके अर्थ है, कारण कि सितारमें तो कुछ वर्णोच्चार होता ही नहीं, लेकिन सितारमें कोई पद या ठुमरी हूबहू सुनाई देते हुए सुननेवालेके मनको भास होता है. इसका कारण पदमें या ठुमरीमें रागोंके मानसे जो स्वर होते हैं, वे ही स्वर दा, दिड़, दाड़ा इनके आधारसे हूबहू दर्सा देना ही है. इसके सिवाय और दूसरा कारण कोई नहीं. इसी प्रकार हारमोनियम, सनई व अन्य तंतुवाद्योंमें भी समझना. इसका मुख्य तत्त्व स्वर ही है.

सितारके बोल.

सितारके तारपर मिजराबसे प्रहार करनेसे जो ध्वनि निकले उसे बोल कहते हैं.

बोल मुख्य चार हैं और उनके दो प्रकार हैं:–दा; दि, द और ड़ा; ड़.

दा और दि, द, ये बोल मिजराबकी अंगुलीका आकर्ष दिखलाते हैं, और ड़ा, ड़, ये अपकर्ष दिखलाते हैं.

तारकी उस तरफसे तार पर प्रहार करके, मिजराबवाली अंगुली अपनी तरफको लाना, यह आकर्ष हुआ. (उंगली मारकर अपनी तरफ हटा लेना.)

तारकी इस तरफसे तारपर प्रहार करके, मिजराबवाली उंगली उस तरफ ले जाना, यह अपकर्ष हुआ. (टुनकार देना, फेंकना.)

आकर्ष

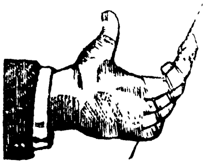

अपकर्ष

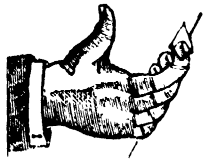

दि, द, या ड, बोल बजानेको जो काल लगता है उससे दुगना काल, दा, अथवा ड़ाके बजानेमें लगता है.

तालके अनुसार दा, ड़ा, दिड़ इनकी एक एक मात्राकी कीमत समझी जाती है अर्थात् दा=१ मात्राके; ड़ा=१मात्राके और दिड = एक मात्राके बराबर हैं. और द, ड, दि इनकी कीमत आधी २ मात्राके बराबर है. अर्थात् द बराबर ॥ मात्राके ड = ॥ के और दि =॥ के और दाड़ और दिड़ इनकी कीमत १॥ डेढ २ मात्राके बराबर होती है.

प्रसंगानुसार गतमें एक आधा बोल विलंब पद्का आता है, उस समय उस बोलकी एक मात्राके अतिरिक्त और उसमें जितनी मात्राओंका अवकाश हो, यह दिखलानेके अर्थ, प्रत्येक मात्राके लिये S यह चिह्न हमने गतोंमें योजित किया है. और अर्ध मात्राको C यह चिह्न योजित किया है.

जैसे—

दा	ड	दा	दा	S	दिड़	दिड़	दा	C
१	॥	१	१	१	॥ ॥	॥ ॥	१	॥

इस S या C का मुखसे उच्चारण आ या अ ऐसा करना चाहिये. और जिस तरह दाड़ दा दा इत्यादि मिजराबसे बजाते हैं उस तरह S, C इन चिह्नोंकी जगह न बजाना चाहिये. उसकी जगह मिजराब तार पर न लगाकर खाली ही आकर्ष या अपकर्ष करते जाना चाहिये और मात्रा गिननेके अर्थ केवल मुखसे ही आ या अका उचारण मात्र करना चाहिये जिससे गति तालमें अशुद्ध न होवे.

गति बजाते समय या गाते समय ताल अवश्य ही देते जाना चाहिये; कारण कि तालके विना अशुद्ध चीज होती है, अतएव गाने बजानेका अभ्यास करते समय दाहिने या बांए पैरसे तालका अभ्यास भी करता जावे. जहां तालका चिह्न लिखा हो वहां पैर जमीनपर हला देना चाहिये और जहां खालीका चिह्न हो वहां पैर थाम देना चाहिये. गतिमें तालका चिह्न—इस प्रकार और खालीका चिह्न ० इस प्रकार दिया है. ताल तो एक ही ताली बजाकर या पैर हिलाकर दिया जाता है. इसी प्रकार समपर भी एकही ताली या पैर बजता है परन्तु किताबमें हमने समका चिह्न=इस प्रकारसे दिया है. जहां तालमें यह चिह्न आवे वहां एकही ताल दे, दोबार न देना चाहिये.

इति भाग दूसरा प्रथमांक समाप्त.

—:०:—

भाग दूसरा.

द्वितीयांक.

सितारका वाद्य.

सितारका वाद्य सुलभ रीतिसे सीखनेमें आवे इसलिये हमने यह आगे दी हुई पद्धति योजना करके, उसमें पहिले पहल सहल स्वरमाला, स्वरवटिका और सादी गतियां लिखी हैं.

नोट १—स्वरज्ञान भली भांति होने तक व सितारपर अच्छी तरह हाथ बैठने, जमने या चलने लगने तक आगे दिये हुए पाठोंका अभ्यास विना उकताते हुए अवश्य और खूब ही करना चाहिये.

नोट २—सितारके डंडेमें जो कुल स्वर होते हैं उनमेंसे नंबर १ म, पोलादी तार परसे बजानेके लिये एकसे लेकर पचीस तक पड़देके नंबर लिख दिये हैं, परन्तु जहां स्वरमाला या स्वरवटिका या गतियोंमें; सा रे रे ग ग; एसे चिन्ह आवें वहां ध्यान रखना

दा ड़ा दि ड़ दा

१ २ ३ ४ ५

चाहिये कि यह बोल, खूंटी नंबर २ और ३ जोड़ीके पीतलके तारोंमेंसे पहिले तार अर्थात् नंबर २ खूंटीके तारपर मिजराबसे बजावे, और तारको पहिले नंबर १ म. पोलादी तारकी तरह पड़दा अटी नंबर १ पड़दा २, ३, ४, ५ पर तारपर उंगली प ध ध नि नि, रखकर स्वर निकाले और,

× × × × ×

दा ड़ा दा ड़ा दा

× × × × ×

१ २ ३ ४ ५

ये बोल खूंटी नंबर ४ पोलादी प. तारपर पड़दोंपर निकाले.

स्वरमाला एक स्वरका प्रकार.

पाठ १ ला आरोही.

आरोही.

स्वर.	प	ध	नि	सा	रे	ग	म	प	ध	नि	सा
बोल.	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा
	×	×	×	◡	◡	◡					
पड़दा.	१	३	५	१	३	५	१	३	५	७	८

स्वर.	रे	ग	म	प	ध	नि	सा	रे	ग	म.
बोल.	ड़ा	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा.
पड़दा.	१०	१२	१३	१५	१७	१९	२०	२२	२४	२५

अवरोही.

स्वर.	म	ग	रे	सा	नि	ध	प	म	ग	रे	सा
बोल.	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा
पड़दा.	२५	२४	२२	२०	१९	१७	१५	१३	१२	१०	८

स्वर.	नि	ध	प	म	ग	रे	सा	नि	ध	प
बोल.	ड़ा	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा.
					◡	◡	◡	×	×	×
पड़दा	७	५	३	१	५	३	१	५	३	१

स्वरमाला–दो स्वरोंका प्रकार.

पाठ १. ला. आरोही.

स्वर.	प ध	ध नि	नि सा	सा रे	रे ग	ग म	म प	प ध
बोल.	दा ड़ा	दा ड़ा	दा ड़ा	दा ड़ा	दा ड़ा	दा ड़ा	दा ड़ा	दा ड़ा
	× ×	× ×	× ◡	◡ ◡	◡ ◡	◡		
पड़दा.	१ ३	३ ५	५ १	१ ३	३ ५	५ १	१ ३	३ ५

स्वर.	ध नि	नि सा	सा रे	रे ग	ग म	म प	प ध	ध नि
बोल.	दा ड़ा	दा ड़ा	दा ड़ा	दा ड़ा	दा ड़ा	दा ड़ा	दा ड़ा	दा ड़ा
पड़दा.	५ ७	७ ८	८ १०	१० १२	१२ १३	१३ १५	१५ १७	१७ १९

स्वर.	नि सा	सा रे	रे ग	ग म.
बोल.	दा ड़ा	दा ड़ा	दा ड़ा	दा ड़.
पड़दा.	१९ २०	२० २२	२२ २४	२४ २५.

अवरोही.

स्वर.	म ग	ग रे	रे सा	सा नि	नि ध	ध प	प म	म ग
बोल.	दा ड़ा	दा ड़ा	दा ड़ा	दा ड़ा	दा ड़ा	दा ड़ा	दा ड़ा	दा ड़ा
पड़दा.	२५ २४	२४ २२	२२ २०	२० १९	१९ १७	१७ १५	१५ १३	१:

स्वर.	ग रे	रे सा	सा नि	नि ध	ध प	प म	म ग	ग रे
बोल.	दा ड़ा	दा ड़ा	दा ड़ा	दा ड़ा	दा ड़ा	दा ड़ा	दा ड़ा	दा ड़ा
							⌣ ⌣	⌣
पड़दा.	१२ १०	१० ८	८ ७	७ ५	५ ३	३ १	१ ५	५ ३

स्वर.	रे सा	सा नि	नि ध	ध प.
बोल.	दा ड़ा	दा ड़ा	दा ड़ा	दा ड़ा.
	⌣ ⌣	⌣ ×	× ×	× ×
पड़दा	३ १	१ ५	५ ३	३ १

स्वरमाला. तीन स्वरोंका प्रकार.

पाठ १ ला. आरोही.

स्वर.	ध प नि	नि ध सा	सा नि रे	रे ग स	ग रे म
बोल.	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा
	× × ×	× × ⌣	⌣ × ⌣	⌣ ⌣ ⌣	⌣ ⌣
पड़दा	३ १ ५	५ ३ १	१ ५ ३	३ १ ५	५ ५ १

स्वर.	म ग प	प म ध	ध प नि	नि ध सा	सा नि रे	रे स ग
बोल.	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा
	⌣					
पड़दा	१ ५ ३	३ १ ५	५ ३ ७	७ ५ ८	८ ७ १०	१० ८ १२

स्वर.	ग रे म	प म ध	ध प नि	नि ध सा	सा नि रे	
बोल.	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा
पड़दा.	१२ १० १३	१३ १२ १५	१५ १३ १७	१७ १५ १९	१९ १७ २०	२० १९ २२

स्वर.	रे स ग	ग रे म.
बोल.	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा.
पड़दा.	२२ २० २४	२४ २२ २५

अवरोही

स्वर.	म रे ग	ग सा रे	रे नी सा	सा ध नी	नी प ध	ध म प
बोल.	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा
पड़दा.	२५ २२ २४	२४ २० २२	२२ १९ २०	२० १७ १९	१९ १५ १७	१७ १३ १५

स्वर.	प ग म	म रे ग	ग सा रे	रे नी सा	सा ध नी	नी प ध
बोल.	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा
पड़दा.	१५ १२ १३	१३ १० १२	१२ ८ १०	१० ७ ८	८ ५ ७	७ ३ ५

स्वर.	ध म प	प ग म	म रे ग	ग सा रे	रे नी सा	सा ध नी
बोल.	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा
पड़दा	५ १ ३	३ ५ १	१ ३ ५	५ १ ३	३ ५ १	१ ३ ५

स्वर.	नी प ध.
बोल.	दा दा ड़ा.
पड़दा.	५ १ ३

स्वरमाला. तीन स्वरोंका प्रकार.

पाठ २ रा. आरोही.

स्वर.	प नी ध	ध सा नी	नी रे सा	सा ग रे	रे म गा	ग प म
बोल.	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा
	× × ×	× ⌣ ×	× ˘ ˘	˘ ⌣ ˘	˘ ˘	˘
पड़दा.	१ ५ ३	३ १ ५	५ ३ १	१ ५ ३	३ १ ५	५ ३ १

स्वर.	म ध प	प नी ध	ध स नी	नी रे सा	सा ग रे	रे म गा
बोल.	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा
पड़दा	१ ५ ३	३ ७ ५	५ ८ ७	७ १० ८	८ १२ १०	१० १३ १२

स्वर.	ग प म	म ध प	प नी ध	ध सा नी	नीं रे सा
बोल.	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा
पड़दा.	१२ १५ १३	१३ १७ १५	१५ १६ १७	१६ २० १९	१९ २२ १०

स्वर.	सा ग रे	रे म गा		गा म रे	रे ग सा
बोल.	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	अवरोही.	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा
पड़दा.	२० २४ २२	२२ २५ २४		२४ २५ २२	२२ २४ २०

स्वर.	सा रे नी	नीं स धा	ध नी प	प ध म	प म गा
बोल.	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा
पड़दा	२० २२ १९	१९ २० १७	१७ १९ १५	१५ १७ १३	१३ १५ १२

स्वर.	गा म रे	रे ग सा	सा रे नी	नी स धा	ध नी प
बोल.	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा दा ड़ा
पड़दा.	१२ १३ १०	१० १२ ८	८ १० ७	७ ८ ५	५ ७ ३

स्वर.	प ध म	म प गा	गा म रे	रे ग सा	सा रे नी
बोल.	दा दा डा	दा दा डा	दा दा डा	दा दा डा	दा दा डा
पड़दा.	३ ५ १	१ ३ ५	५ १ ३	३ ५ १	१ ३

स्वर.	नी स धा	धा नी प.
बोल.	दा दा डा	दा दा डा.
	× ⌣ ×	× × ×
पड़दा.	५ १ ३	३ ५ १.

स्वरमाला. चार स्वरोंका प्रकार.

पाठ १ ला. आरोही.

स्वर.	प ध नी सा	ध नी सा रे	नी सा रे गा	सा रे ग म
बोल,	दा डा दा डा	दा डा दा डा	दा डा दा डा	दा डा दा डा
	× × × ⌣	× × ⌣ ⌣	× ⌣ ⌣ ⌣	⌣ ⌣ ⌣
पड़दा.	१ ३ ५ १	३ ५ १ ३	५ १ ३ ५	१ ३ ५
स्वर.	रे ग म प	ग म प ध	म प ध नी	प ध नी सा
बोल.	दा डा दा डा	दा डा दा डा	दा डा दा डा	दा डा दा डा
पड़दा.	३ ५ १ ३	५ १ ३ ५	१ ३ ५ ७	३ ५ ७ ८
स्वर.	ध नी सा रे	नी सा रे ग	सा रे ग म	रे ग म प
बोल.	दा डा दा डा	दा डा दा डा	दा डा दा डा	दा डा दा डा
पड़दा.	५ ७ ८ १०	७ ८ १० १२	८ १० १२ १३	१० १२ १३ १५
स्वर.	ग म प ध	म प ध नी	प ध नी सा	ध नी सा रे
बोल.	दा डा दा डा	दा डा दा डा	दा डा दा डा	दा डा दा डा
पड़दा.	१२ १३ १५ १७	१३ १५ १७ १९	१५ १७ १९ २०	१७ १९ २० २२
स्वर.	नी सा रे गा	सा रे गा म		
बोल.	दा डा दा डा	दा डा दा डा		
पड़दा.	१९ २० २२ २४	२० २२ २४ २५		

अवरोही

स्वर.	म ग रे सा	ग रे सा नी	रे सा नी ध	सा नी ध प
बोल.	दा डा दा डा	दा डा दा डा	दा डा दा डा	दा डा दा डा
पड़दा.	२५ २४ २२ २०	२४ २२ २० १९	२२ २० १९ १७	२० १९ १७ १५

स्वर.	नी ध प म	ध प म गा	प म गा रे	म गा रे सा
बोल.	दा ड़ा दा ड़ा	दा ड़ा दा ड़ा	दा ड़ा दा ड़ा	दा ड़ा दा ड़ा
पड़दा	१९ १७ १५ १३	१७ १५ १३ १२	१५ १३ १२ १०	१३ १२ १० ८
स्वर.	ग रे सा नी	रे सा नी ध	सा नी ध प	नी ध प म
बोल.	दा ड़ा दा ड़ा	दा ड़ा दा ड़ा	दा ड़ा दा ड़ा	दा ड़ा दा ड़ा
पड़दा.	१२ १० ८ ७	१० ८ ७ ५	८ ७ ५ ३	७ ५ ३ १
स्वर.	ध प म गा	प म गा रे	म गा रे सा	गा रे सा नी
बोल.	दा ड़ा दा ड़ा	दा ड़ा दा ड़ा	दा ड़ा दा ड़ा	दा ड़ा दा ड़ा
	◡	◡ ◡	◡ ◡ ◡	◡ ◡ ◡ ◡
पड़दा.	५ ३ १ ५	३ १ ५ ३	१ ५ ३ १	५ ३ १ ५
स्वर.	रे सा नी ध	स नी ध प.		
बोल.	दा ड़ा दा ड़ा	दा ड़ा दा ड़ा.		
	◡ ◡ × ×	◡ × × ×		
पड़दा.	३ १ ५ ३	१ ५ ३ १.		

इस ◡ चिन्हके पड़देवाले बोल जोड़ीके पहिले तार परसे बजाना चाहिये.

इस × चिन्हके पड़देवाले बोल पोलादी पंचम तार नंबर ४ परसे बजाना चाहिये.

स्वरमाला. चार स्वरोंका प्रकार.

पाठ २ रा. आरोही.

स्वर.	ध प नी सा	नी ध सा रे	सा नी रे ग	रे स गा मा	गा रे म प
बोल.	दा दा दा ड़ा	दा दा दा ड़ा	दा दा दा ड़ा	दा दा दा ड़ा	दा दा दा ड़ा
	× × ×	◡ × × ◡	◡ ◡ + ◡	◡ ◡ ◡	◡ ◡
पड़दा.	३ १ ५ १	५ ३ १ ३	१ ५ ३ ५	३ १ ५ १	५ ३ १ १
स्वर.	म गा प ध	प म ध नी	ध प नी सा	नी ध सा रे	सा नी रे ग
बोल.	दा दा दा ड़ा	दा दा दा ड़ा	दा दा दा ड़ा	दा दा दा ड़ा	दा दा दा ड़ा
पड़दा.	१ ५ ३ ५	३ १ ५ ७	५ ३ ७ ८	७ ५ ८ १०	८ ७ १० १२
स्वर.	रे स गा मा	ग रे म प	म गा प ध	प म ध नी	ध प नी सा
बोल.	दा दा दा ड़ा	दा दा दा ड़ा	दा दा दा ड़ा	दा दा दा ड़ा	दा दा दा ड़ा
पड़दा.	१० ८ १२ १३	१२ १० १३ १५	१३ १२ १५ १७	१५ १३ १७ १९	१७ १५ १९ २०
स्वर.	नी ध सा रे	सा नी रे गा	रे सा गा मा		म गा सा रे
बोल.	दा दा दा ड़ा	दा दा दा ड़ा	दा दा दा ड़ा	अवरोही.	दा दा दा ड़ा
पड़दा.	१९ १७ २० २२	२० १९ २२ २४	२२ २० २४ २५		२५ २४ २० २२

स्वर.	गा रे नी सा	रे सा ध नी	सा नी प ध	नी ध म प	ध प गा म
बोल.	दा दा दा ड़ा	दा दा दा ड़ा	दा दा दा डा	दा दा दा ड़ा	दा दा दा डा
पड़दा	२४ २२ १९ २०	२२ २० १७ १९	२० १९ १५ १७	१९ १७ १३ १५	१७ १५ १२ १३
स्वर.	प म रे गा	म गा सा रे	गा रे नी सा	रे सा ध नी	सा नी प धा
बोल.	दा दा दा ड़ा	दा दा दा ड़ा	दा दा दा ड़ा	दा दा दा ड़ा	दा दा दा ड़ा
पड़दा.	१५ १३ १० १२	१३ १२ ८ १०	१२ १० ७ ८	१० ८ ५ ७	८ ७ ३ ५
स्वर.	नी ध म प	ध प ग म	प म रे गा	म गा सा रे	ग रे नी सा
बोल.	दा दा दा ड़ा	दा दा दा ड़ा	दा दा दा ड़ा	दा दा दा ड़ा	दा दा दा ड़ा
पडदा.	७ ५ १ ३	५ ३ ५ १	३ १ ३ ५	१ ५ १ ३	५ ३ ५ १
स्वर.	रे सा ध नी	सा नी प ध.			
बोल.	दा दा दा ड़ा	दा दा दा ड़ा.			
	‿ ‿ × ×	‿ × × ×			
	३ १ ३ ५	१ ५ १ ३.			

स्वरमाला–चार स्वरोंका प्रकार.

पाठ ३ रा. आरोही.

स्वर.	प ध सा नी	ध नी रे सा	नी सा ग रे	सा रे म गा	रे गा प म
बोल.	दा ड़ा दा दा	दा ड़ा दा दा	दा ड़ा दा दा	दा ड़ा दा दा	दा ड़ा दा दा
	× × ‿ ×	× × ‿‿	× ‿‿ ‿	‿ ‿ ‿	‿ ‿
पड़दा	१ ३ १ ५	३ ५ ३ १	५ १ ५ ३	१ ३ १ ५	३ ५ ३ १
स्वर.	ग म प ध	म प नी ध	प ध सा नी	धा नी रे सा	नी सा ग रे
बोल	दा ड़ा दा दा	दा ड़ा दा दा	दा ड़ा दा दा	दा ड़ा दा दा	दा ड़ा दा दा
पड़दा	५ १ ५ ३	१ ३ ७ ५	३ ५ ८ ७	५ ७ १० ८	७ ८ १२ १०
स्वर.	सा रे म गा	रे गा प म	गा म ध प	म प नी ध	प ध सा नी
बोल.	दा ड़ा दा दा	दा ड़ा दा दा	दा ड़ा दा दा	दा ड़ा दा दा	दा ड़ा दा दा
पड़दा	८ १० १३ १२	१० १२ १५ १३	१२ १३ १७ १५	१३ १५ १९ १७	१५ १७ २० १९
स्वर.	ध नी रे सा	नी सा ग रे	सा रे म गा		गा म रे सा
बोल.	दा ड़ा दा दा	दा ड़ा दा दा	दा ड़ा दा दा	अवरोही.	दा ड़ा दा दा
पड़दा	१७ १९ २२ २०	१९ २० २४ २२	२० २२ २५ २४		२४ २५ २२ २०

स्वर.	रे ग सा नी	सा रे नी ध	नी सा ध प	ध नी प म	प ध म गा
बोल.	दा ड़ा दा दा	दा ड़ा दा:दा	दा ड़ा दा दा	दा ड़ा दा दा	दा ड़ा दा दा
पड़दा	२२ २४ २० १९	२० २२ १९ १७	१९ २० १७ १५	१७ १९ १५ १३	१५ १७ १३ १२
स्वर.	म प गा रे	गा म रे सा	रे ग सा नी	सा रे नी ध	नी सा ध प
बोल.	दा ड़ा दा दा	दा ड़ा दा:दा	दा ड़ा दा दा	दा ड़ा दा दा	दा ड़ा दा दा
पड़दा	१३ १५ १२ १०	१२ १३ १० ८	१० १२ ८ ७	८ १० ७ ५	७ ८ ५ ३
स्वर.	ध नी प म	प ध म गा	म प गा रे	ग म रे सा	रे ग सा नी
बोल.	दा ड़ा दा दा	दा ड़ा दा दा	दा ड़ा दा दा	दा ड़ा दा दा	दा ड़ा दा दा
		◡	◡ ◡	◡ ◡ ◡	◡ ◡ ◡ ◡
पड़दा	५ ७ ३ १	३ ५ १ ५	१ ३ ५ ३	५ १ ३ १	३ ५ १ ५
स्वर.	सा रे नी ध	नी सा ध प.			
बोल.	दा ड़ा दा दा	दा ड़ा दा दा.			
	◡ ◡ × ×	× ◡ × ×			
	१ ३ ५ ३	५ १ ३ १			

स्वरमाला—चार स्वरोंका प्रकार.

पाठ ४ था आरोही.

स्वर.	प नी ध सा	ध सा नी रे	नी रे सा ग	सा ग रे म	रे म गा प
बोल.	दा ड़ा दा दा	ड़ा दा दा ड़ा	दा ड़ा दा दा	ड़ा दा दा ड़ा	दा ड़ा दा दा
	× × × ◡	× ◡ × ◡	+ ◡ ◡ ◡	◡ ◡ ◡	◡ ◡
पड़दा	१ ५ ३ १	३ १ ५ ३	५ ३ ९ ५	१ ५ ३ १	३ १ ५ ३
स्वर.	गा म प ध	म ध प नी	प नी ध सा	ध सा नी रे	नी रे सा ग
बोल.	ड़ा दा दा ड़ा	दा ड़ा दा दा	ड़ा दा दा ड़ा	दा ड़ा दा दा	ड़ा दा दा ड़ा
	◡				
पड़दा.	५ ३ ९ ५	१ ५ ३ ७	३ ७ ५ ८	५ ८ ७ १०	७ १० ८ १२
स्वर.	सा ग रे म	रे म ग प	ग प म ध	म प ध नी	प नी ध सा
बोल.	दा ड़ा दा दा	ड़ा दा दा ड़ा	दा ड़ा दा दा	ड़ा दा दा ड़ा	दा ड़ा दा दा
पड़दा.	८ १२ १० १३	१० १३ १२ १५	१२ १५ १३ १७	१३ १७ १५ १९	१५ १९ १७ २०
स्वर.	ध सा नी रे	नी रे सा ग	सा ग रे म.		म रे ग सा
बोल.	ड़ा दा दा ड़ा	दा ड़ा दा दा	ड़ा दा दा ड़ा.	**अवरोही.**	दा ड़ा दा दा
पड़दा	१७ २० १९ २२	१९ २२ २० २४	२० २४ २२ २५.		२५ २२ २४ २०

स्वर.	ग सा रे नी	रे नी सा ध	सा ध नी प	नी प ध म	ध म प गा
बोल.	ड़ा दा दा ड़ा	दा ड़ा दा दा	ड़ा दा दा ड़ा	दा ड़ा दा दा	ड़ा दा दा ड़ा
पड़दा	२४ २० २२ १९	२२ १९ २० १७	२० १७ १९ १५	१९ १५ १७ १३	१७ १३ १५ १२
स्वर.	प गा म रे	म रे ग सा	ग सा रे नी	रे नी सा ध	सा ध नी प
बोल.	दा ड़ा दा दा	ड़ा दा दा ड़ा	दा ड़ा दा दा	ड़ा दा दा ड़ा	दा ड़ा दा दा
पड़दा	१५ १२ १३ १०	१३ । १० १२ ८	१२ ८ १० ७	१० ७ ८ ५	८ ५ ७ ३
स्वर.	नी प ध म	ध म प गा	प गा म रे	म रे ग सा	ग सा रे नी
बोल.	ड़ा दा दा ड़ा	दा ड़ा दा दा	ड़ा दा दा ड़ा	दा ड़ा दा दा	ड़ा दा दा ड़ा
		˘	˘ ˘	˘ ˘ ˘	˘ ˘ ˘ ×
पड़दा.	७ ३ ५ १	५ १ ३ ५	३ ५ १ ३	१ ३ ५ १	५ १ ३ ५
स्वर.	रे नी सा ध	सा ध नी प.			
बोल.	दा ड़ा दा दा	ड़ा दा दा ड़ा.			
	˘ × ˘ ×	˘ × × ×			
पड़दा.	३ ५ १	३ १ ३	५ १		

स्वरमाला. चार स्वरोंका प्रकार.

पाठ ५ वां. आरोही.

स्वर.	ध नी प सा	नी सा ध रे	सा रे नी ग	रे ग सा म	ग म रे प
बोल.	दा दा ड़ा दा	दा ड़ा दा ड़ा	दा दा ड़ा दा	दा दा ड़ा दा	दा ड़ा दा ड़ा
	+ + + ˘	+ ˘ + ˘	˘ ˘ + ˘	˘ ˘ ˘	˘ ˘
पड़दा.	२ ५ १ १	५ १ ३ ३	१ ३ । ५ ५	३ ५ १ १	५ १ ३ ३
स्वर.	म प गा ध	प ध म नी	ध नी प सा	नी सा ध रे	सा रे नी ग
बोल.	दा दा ड़ा दा	दा ड़ा दा ड़ा	दा दा ड़ा दा	दा ड़ा दा ड़ा	दा दा ड़ा दा
पड़दा.	१ ३ ५ ५	३ ५ १ ७	५ ७ ३ ८	७ ८ ५ १०	८ १० ७ १२
स्वर.	रे ग सा म	ग म रे प	म प गा ध	प ध म नी	ध नी प सा
बोल.	दा ड़ा दा ड़ा	दा दा ड़ा दा	दा ड़ा दा ड़ा	दा दा ड़ा दा	दा ड़ा दा ड़ा
पड़दा.	१० १२ ८ १३	१२ १३ १० १५	१३ १५ १२ १७	१५ १७ १३ १९	१७ १९ १५ २०
स्वर.	नी सा ग रे	सा रे नी ग	रे ग सा म.		
बोल.	दा दा ड़ा दा	दा ड़ा दा ड़ा	दा ड़ा दा ड़ा.	अवरोहीमें	इसका उल्टा.
पड़दा.	१९ २० १७ २२	२० २२ १९ २४	२२ २४ २१ २५		

जैसेः—यह स्वरमाला (रे ग सा म) यहां खतम हुई तो अब म स ग रे, ग नीं रे सा, रे ध सा नी इत्यादि. उल्टा बजाते हुए वहांतक बजावे जहांसे कि प्रारंभ किया था. अर्थात्–(सा प नी ध) तक बजावे. इसी रीतिसे अन्य आगे दिये हुए सरगमोंको जो आरोहीमें हों तो उनको अवरोहीमें और जो अवरोहीमें दिये हों तो आरोहीमें बजाना चाहिये. जिस रास्तेसे आवे उसी रास्तेसे वापस जाना चाहिये.

स्वरमाला. पांच स्वरोंका प्रकार.

पाठ १ ला. आरोही.

स्वर.	प ध नी सा रे	ध नी सा रे गा	नी सा रे ग म	सा रे ग म प
बोल.	दा ड़ा दा दा ड़ा	दा ड़ा दा दा ड़ा	दा ड़ा दा दा ड़ा	दा ड़ा दा दा ड़ा
	+ + + ◡ ◡	+ + ◡ ◡ ◡	+ ◡ ◡ ◡ ◡	◡ ◡ ◡
पड़दा.	१ ३ ५ १ ३	३ ५ १ ३ ५	५ १ ३ ५ १	१ ३ ५ १ ३
स्वर.	रे ग म प ध	ग म प ध नी	म प ध नी सा	प ध नी सा रे
बोल.	दा ड़ा दा दा ड़ा	दा ड़ा दा दा ड़ा	दा ड़ा दा दा ड़ा	दा ड़ा दा दा ड़ा
	◡ ◡	◡		
पड़दा	३ ५ १ ३ ५	५ १ ३ ५ ७	१ ३ ५ ७ ८	३ ५ ७ ८ १०
स्वर.	ध नी सा रे गा	नी सा रे गा मा	सा रे ग म प	रे ग म प ध
बोल.	दा ड़ा दा दा ड़ा	दा ड़ा दा दा ड़ा	दा ड़ा दा दा ड़ा	दा ड़ा दा दा ड़ा
पड़दा.	५ ७ ८ १० १२	७ ८ १० १२ १३	८ १० १२ १३ १५	१० १२ १३ १५ १७
स्वर.	ग म प ध नी	म प ध नी सा	प ध नी सा रे	ध नी सा रे ध
बोल.	दा ड़ा दा दा ड़ा	दा ड़ा दा दा ड़ा	दा ड़ा दा दा ड़ा	दा ड़ा दा दा ड़ा
पड़दा.	१२ १३ १५ १७ १९	१३ १५ १४ १५ २०	१५ १७ १९ २० २२	१७ १९ २० २२ २४

स्वर.	नी सा रे ग म.	अवरोहीमें 'म ग रे सा नी' इसी प्रकार सब उल्टे ऊपरको
बोल.	दा ड़ा दा दा ड़ा.	चढ़ता जावे. जिन पड़दोंसे आना उन्हींपर वापस जाना चाहिये.
पड़दे.	१९ २० २२ २४ २५.	

स्वरमाला–पांच स्वरोंका प्रकार.

पाठ २ रा. आरोही.

स्वर.	ध प नी सा रे	नी ध सा रे गा	सा नी रे ग म	रे सा ग म प
बोल.	दा दा ड़ा दा ड़ा	दा दा ड़ा दा ड़ा	दा दा ड़ा दा ड़ा	दा दा ड़ा दा ड़ा
	× । × × ◡ ◡	× × ◡ ◡ ◡	◡ × ◡ ◡	◡ ◡ ◡
पड़दे.	३ १ ५ १ ३	५ ३ १ ३ ५	१ ५ ३ ५ १	३ १ ५ १ १

स्वर.	गा रे म प ध	म ग प ध नी	प म ध नी सा	ध प नी सा रे
बोल.	दा दा ड़ा दा ड़ा	दा दा ड़ा दा ड़ा	दा दा ड़ा दा ड़ा	दा दा ड़ा दा ड़ा
	⌣ ⌣	⌣		
पड़दे.	५ ३ १ ३ ५	१ ५ ३ ५ ७	३ १ ५ ७ ८	५ ३ ७ ८ १०
स्वर.	नी ध सा रे गा	सा नी रे ग म	रे सा ग म प	गा रे म प ध
बोल.	दा दा ड़ा दा ड़ा	दा दा ड़ा दा ड़ा	दा दा ड़ा दा ड़ा	दा दा ड़ा दा ड़ा
पड़दे.	७ ५ ८ १० १२	८ ७ १० १२ १३	१० ८ १२ १३ १५	१२ १० १३ १५ १७
स्वर.	म गा प ध नी	प म ध नीता	ध प नी सा रे	नी ध सा रे ग
बोल.	दा दा ड़ा दा ड़ा	दा दा ड़ा दा ड़ा	दा दा ड़ा दा ड़ा	दा दा ड़ा दा ड़ा
पड़दे.	१३ १२ १५ १७ १९	१५ १३ ११ १९ २०	१७ १५ १९ २० २२	१९ १७ २० २२ २४
स्वर.	सा नी रे ग म			
बोल.	दा दा ड़ा दा ड़ा			
पड़दे.	२० १९ २२ २४ २५			

अवरोहीमें 'म ग रे नी सा' इसी प्रकार सब उल्टे ऊपरको बजाते हुए वापस आवे.

स्वरमाला—पांच स्वरोंका प्रकार.

पाठ ३ रा. आरोही.

स्वर.	प ध नी रे सा	ध नी सा ग रे	नी सा रे म गा	सा रे ग प म
बोल.	दा दा दा ड़ा दा	दा दा दा ड़ा दा	दा दा दा ड़ा दा	दा दा दा ड़ा दा
	× × × ⌣ ⌣	× × ⌣ ⌣ ⌣	× ⌣ ⌣ ⌣	⌣ ⌣ ⌣
पड़दे.	१ ३ ५ ३ १	३ ५ १ ५ ३	५ १ ३ १ ५	१ ३ ५ ३ १
स्वर.	रे ग म प ध	ग मं प नी ध	म प ध सा नी	प ध नी रे सा
बोल.	दा दा दा ड़ा दा	दा दा दा ड़ा दा	दा दा दा ड़ा दा	दा दा दा ड़ा दा
	⌣ ⌣	⌣		
पड़दे.	३ ५ १ ५ ३	५ १ ३ ७ ५	१ ३ ५ ८ ७	३ ५ ७ १० १
स्वर.	ध नी सा ग रे	नी सा रे म गा	सा रे ग प म	रे ग म ध प
बोल.	दा दा दा ड़ा दा	दा दा दा ड़ा दा	दा दा दा ड़ा दा	दा दा दा ड़ा दा
पड़दे.	५ ७ ८ १२ १०	७ ८ १० १३ १२	८ १० १२ १५ १३	१० १२ १३ १७ १५
स्वर.	ग म प नी ध	म प ध सा नी	प ध नी रे सा	ध नी सा ग रे
बोल.	दा दा दा ड़ा दा	दा दा दा ड़ा दा	दा दा दा ड़ा दा	दा दा दा ड़ा दा
पड़दे.	१२ १३ १५ १५ १७	१३ १५ १७ २० १९	१५ १७ १९ २२ २०	१७ १९ २० २४ २२
स्वर.	नी सा रे म गा			
बोल.	दा दा दा ड़ा दा			
पड़दे.	१९ २० २२ २५ २४			

अवरोहीमें 'गा म रे सा नी, रे ग सा नी ध' इत्यादि सब उल्टे बजावे.

स्वरमाला—पांच स्वरोंका प्रकार.

पाठ ४ था. आरोही.

स्वर.	प नी ध सा रे	ध सा नी रे गा	नी रे सा ग म	सा ग रे म प
बोल.	दा ड़ा ड़ा दा ड़ा	दा ड़ा ड़ा दा ड़ा	दा ड़ा ड़ा दा ड़ा	दा ड़ा ड़ा दा ड़ा
	× × × ⌣ ⌣	× ⌣ × ⌣ ⌣	× ⌣ ⌣ ⌣	⌣ ⌣ ⌣
पड़दे.	१ ५ ३ १ ३	३ १ ५ ३ ५	५ ३ १ ५ १	१ ५ ३ १ ३
स्वर.	रे म गा प ध	गा प म ध नी	म ध प नी सा	प नी ध सा रे
बोल.	दा ड़ा ड़ा दा ड़ा	दा ड़ा ड़ा दा ड़ा	दा ड़ा ड़ा दा ड़ा	दा ड़ा ड़ा दा ड़ा
	⌣ ⌣	⌣		
पड़दे.	३ १ ५ ३ ५	५ ३ १ ५ ७	१ ५ ३ ७ ८	३ ७ ५ ८ १०
स्वर.	ध सा नी रे ग	नी रे सा ग म	सा ग रे म प	रे म ग प ध
बोल.	दा ड़ा ड़ा दा ड़ा	दा ड़ा ड़ा दा ड़ा	दा ड़ा ड़ा दा ड़ा	दा ड़ा ड़ा दा ड़ा
पड़दा.	५ ८ ७ १० १२	७ १० ८ १२ १३	८ १२ १० १३ १५	१० १३ १२ ११ १७
स्वर.	गा प म ध नी	म ध प नी सा	प नी ध सा रे	ध सा नी रे ग
बोल.	दा ड़ा ड़ा दा ड़ा	दा ड़ा ड़ा दा ड़ा	दा ड़ा ड़ा दा ड़ा	दा ड़ा ड़ा दा ड़ा
पड़दा.	१२ १५ १३ १७ १९	१३ १७ १५ १९ २०	१५ १९ १७ २० २२	१७ २० १९ २२ २४
स्वर.	नी रे सा ग म			
बोल.	दा ड़ा ड़ा दा ड़ा			
पड़दे.	१९ २२ २० २४ २५			

अवरोहीमें 'म ग सा रे नी, ग रे नी सा ध' इत्यादि सब उल्टे बजाता हुआ ऊपरको वापिस जावे.

स्वरमाला—पांच स्वरोंका प्रकार.

पाठ ५ वां. आरोही.

स्वर.	प ध सा नी रे	ध नी रे सा ग	नी सा ग रे म	सा रे म ग प
बोले.	दा ड़ा दा ड़ा ड़ा	दा ड़ा दा ड़ा ड़ा	दा ड़ा दा ड़ा ड़ा	दा ड़ा दा ड़ा ड़ा
	× × ⌣ × ⌣	× × ⌣ ⌣ ⌣	× ⌣ ⌣ ⌣ ⌣	⌣ ⌣ ⌣
पड़दे.	१ ३ १ ५ ३	३ ५ ३ १ ५	५ १ ५ ३ १	१ ३ १ ५ ३
स्वर.	रे ग प म ध	ग म ध प नी	म प नी ध सा	प ध सा नी रे
बोल.	दा ड़ा दा ड़ा ड़ा	दा ड़ा दा ड़ा ड़ा	दा ड़ा दा ड़ा ड़ा	दा ड़ा दा ड़ा ड़ा
	⌣ ⌣	⌣		
पड़दा.	३ ५ ३ १ ५	५ १ ५ ३ ७	१ ३ ७ ५ ८	३ ५ ८ ७ १०
स्वर.	ध नी रे सा ग	नी सा ग रे म	सा रे म ग प	रे ग प म ध
बोल.	दा ड़ा दा ड़ा ड़ा	दा ड़ा दा ड़ा ड़ा	दा ड़ा दा ड़ा ड़ा	दा ड़ा दा ड़ा ड़ा
पड़दा.	५ ७ १० ८ १२	७ ८ १२ १० १३	८ १० १३ १२ १५	१० १२ १५ १३ १७

स्वर.	ग म ध प नी	म प नी ध सा	प ध सा नी रे	ध नी रे सा ग
बोल.	दा ड़ा दा ड़ा ड़ा	दा ड़ा दा ड़ा ड़ा	दा ड़ा दा ड़ा ड़ा	दा ड़ा दा ड़ा ड़ा
पड़दा.	१२ १३ १७ १५ १९	१३ १५ १९ १७ २०	१५ १७ २० १९ २२	१७ १९ २२ २० २४
स्वर.	नी सा रे ग म			
बोल.	दा ड़ा दा ड़ा ड़ा			
पड़दा.	१९ २० २४ २२ १५			

अवरोहींमें 'म ग रे सा नी' 'ग सा रे नी ध' इत्यादि उल्टे सब बजाता हुआ वापिस जावे.

स्वरमाला. पांच स्वरोंका प्रकार.

पाठ ६ ठा. आरोही.

स्वर.	नी ध प सा रे	सा नी ध रे ग	रे सा नी ग म	ग रे सा म प
बोल.	ड़ा दा दा ड़ा दा	ड़ा दा दा ड़ा दा	ड़ा दा दा ड़ा दा	ड़ा दा दा ड़ा दा
	+ + + ◡ ◡	◡ + + ◡ ◡	◡ ◡ + ◡	◡ ◡ ◡
पड़दा.	५ ३ १ १ ३	१ ५ ३ ३ ५	३ १ ५ ५ १	५ ३ १ १ ३
स्वर.	म ग रे प ध	प म ग ध नी	ध प म नी सा	नी ध प सा रे
बोल.	ड़ा दा दा ड़ा दा	ड़ा दा दा ड़ा दा	ड़ा दा दा ड़ा दा	ड़ा दा दा ड़ा दा
	◡ ◡	◡		
पड़दे.	१ ५ ३ ३ ५	३ १ ५ ५ ७	५ ३ १ ७ ८	७ ५ ३ ८ १०
स्वर.	सा नी ध रे गा	रे सा नी ग म	ग रे सा म प	म ग रे प ध
बोल.	ड़ा दा दा ड़ा दा	ड़ा दा दा ड़ा दा	ड़ा दा दा ड़ा दा	ड़ा दा दा ड़ा दा
पड़दे.	८ ७ ५ १० १२	१० ८ ७ १२ १३	१२ १० ८ १३ १३	१३ १२ १० १५ १७
स्वर.	प म ग ध नी	ध प म नी सा	नी ध प सा रे	सा नी ध रे गा
बोल.	ड़ा दा दा ड़ा दा	ड़ा दा दा ड़ा दा	ड़ा दा दा ड़ा दा	ड़ा दा दा ड़ा दा
पड़दे.	१५ १३ १२ १७ १९	१७ १५ १३ १९ २०	१९ १७ १५ २० २२	२० १९ १७ २२ २४
स्वर.	रे सा नी ग म.			
बोल.	ड़ा दा दा ड़ा दा.			

अवरोही 'म ग नी सा रे' 'गा रे ध नी सा' इत्यादि उल्टे बजाता हुआ वापस जावे.

स्वरमाला. पांच स्वरोंका प्रकार.

पाठ ७ वां. आरोही.

स्वर.	प ध रे सा नी	ध मी ग रे सा	नी सा म ग रे	सा रे प म गा
बोल.	ड़ा दा दा ड़ा ड़ा	ड़ा दा दा ड़ा ड़ा	ड़ा दा दा ड़ा ड़ा	ड़ा दा दा ड़ा ड़ा
	+ + ◡ ◡ +	+ + ◡ ◡ ◡	◡ ◡ ◡ ◡	◡ ◡ ◡
पड़दे.	१ ३ ३ १ ५	३ ५ ५ ३ ९	५ १ १ ५ ३	१ १ १ १ १

स्वर.	रे ग ध प म	ग म नी ध प	म प सा नी ध	प ध रे सा नी
बोल.	ड़ा दा दा ड़ा ड़ा	ड़ा दा दा ड़ा ड़ा	ड़ा दा दा ड़ा ड़ा	ड़ा दा दा ड़ा ड़ा
पड़दे.	३ ५ ५ ३ १	५ १ ७ ५ ३	१ ३ ८ ७ ५	३ ५ १० ८ ७
स्वर.	ध नी ग रे सा	नी सा म ग रे	सा रे प भ ग	रे ग ध प म
बोल.	ड़ा दा दा ड़ा ड़ा	ड़ा दा दा ड़ा ड़ा	ड़ा दा दा ड़ा ड़ा	ड़ा दा दा ड़ा ड़ा
पड़दे.	५ ७ १२ १० ८	७ ८ १३ १२ १६	८ १० १५ १३ १२	१० १२ १७ १५ १३
स्वर.	ग म नी ध प	म म सा नी ध	प ध रे सा नी	ध नी ग रे सा
बोल.	ड़ा दा दा ड़ा ड़ा	ड़ा दा दा ड़ा ड़ा	ड़ा दा दा ड़ा ड़ा	ड़ा दा दा ड़ा ड़ा
पड़दे.	१२ १३ १९ १७ १५	१३ १५ २० १९ १७	१५ १७ २२ २० १९	१७ १९ २४ २२ २०

स्वर. नी सा म ग रे. अवरोहीमें 'रे ग म सा नी' 'सा रे ग नी ध' इत्यादि उल्टे
बोल. ड़ा दा दा ड़ा ड़ा. बजाते हुए वापस जाना.
पड़दे. १९ २० २५ २४ २२

ऊपर जो स्वरमालाओंके पाठ दिये हैं उसी प्रकार बाकी स्वरोंके भी पाठ बनाकर उसके अनुसार बजानेका अभ्यास करे. और स्वर, ग्राम, ताल, और रागोंका जो हाल दिया है उनका भली भांति विचार कर रागोंके वर्ज्यावर्ज्य स्वरोंके माफक नई गतियें बना कर बजानेका अभ्यास करे. कुछ नई गतियें बेढँगी चालपर किस प्रकार बजानी चाहिये, यह बात हमने आगे लिखी है. एक गति पांच रागों व पांच तालोंमें किस प्रकार बजती है इसको भी लिखा है. वह नमूना देखकर उसी प्रकार और नई गतें तय्यार करके बजानेका अभ्यास व प्रयत्न करे, जिससे तालों व रागोंमें नई गत कैसे बनानी चाहिये यह मालूम हो जायगा. हमारी सम्मति ऐसी है कि, चाहे जिन चीजोंको चाहे जिस रागमें व तालमें बजानेके लिये कोई हर्ज नहीं है. उनमेंकी खूबियां ध्यानमें आनी चाहिये. कई लोगोंका कहना इसप्रकार है कि, पुस्तक परसे गाना, बजाना कभी नहीं आसकता.

परंतु हमने (पुस्तककर्तोने) इस पुस्तकमें जो जो नियम दिये हैं उन्हे पूर्ण रीतिसे अच्छी तरह समझ कर क्रमसे व सावकाश अर्थात् धीरे २ सावधानीसे अभ्यास करनेसे सीखनेवालेकों सितार बजाना व उसी अनुसार गाना भी भली भांति आ जावेगा. सितार बजानेवालोंको छह राग व विशेष करके हर समयके उपराग और उपरागिणी अर्थात् भार्या, पुत्रादि और जो सर्वत्र, चीजें बाजोंमें बजाई या गई जाती हैं उन सबका मालूम होना बहुत जरूरी है. इससे हमने इस पुस्तकमें छः राग, तीस रागिणी इनका विस्तार पूर्वक सब हाल आगे लिखा है, उसका उपक्रम इस प्रकारसे है कि प्रथम प्रत्येक रागके शृंगार, स्वरूप और वर्ज्यावर्ज्य

तोडा १ ला.

पड़दा.	९ ९ १० ९ १२ १० १३ १२ १० १० १२ १२ ९ ९ १० १० १४ १३ १३ १२ १२ १० १० ९ ९ १० १२
स्वर.	गा ऽऽ मा गा पा मा धा पा म म प प गा ग मा म नी ध ध प प मा म गा ग मा पा
बोल.	दा ऽ दा डा दा डा दा डा दि ड दि ड दा ड दा ड दा दि ड दि ड दा ड दा ड दा डा
मात्रा.	१ १ १ १ १ १ १ १ ॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ १ १
ताल	= ० — — • — — — ० — —

पंड़दा.	१० १३ १३ १० १० १२ १२ १० १० ९ ९ १३ १३ १२ १२ १० ९ ८ ७ ४ ४ ५ ५ ७ ७ ५ ५ ७ ७
स्वर.	मा ध ध म म प प मा म गा ग ध ध प प मा गा रे सा धा ध नी नि साऽऽ नि नि स स
बोल.	दा दि ड दि ड दि ड दा ड दा ड दि ड दि ड दा डा दा डा दा ड दा ड़ दा ऽ दि ड दि ड
मात्रा.	१ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ १ १ १ १ १ ॥ १ ॥ १ १ ॥ ॥ ॥ ॥
ताल.	— — ० = • — — • — —

पड़दा.	५ ४ ४ १ ३ ३ १ ३ ३ ४ ४ ५ ५ १० १० ९ ९ ८ ७
स्वर.	नी धा ऽऽ मा पा ऽऽ मा प प ध ध नि नि मा म गा ग रे सा
बोल.	दा डा ऽ दा डा ऽ दा दि ड दि ड दि ड दा ड दा ड दा डा
मात्रा.	१ १ १ १ १ १ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ १ १
ताल.	— ० — — . — — ०

इति भैरवी रागिणी समाप्त.

---

(२) रागिणी वैराटी.

शृंगार स्वरूप—यह रागिनी अप्सरा समान, घुंघरारे मुक्तबाल, वस्त्र श्वेत, सर्वांगपर पारिजातक पुष्पोंके अलंकार धारण किये हुए पतिसह अभिनययुक्त क्रीडा करनेमें निमग्न होगई है.

जाति संपूर्ण. निषाद कोमल होकर बाकीके सब स्वर शुद्ध हैं. इस रागिणीमें विभास रागका भास होता है.

मुख्य उपराग माधव. समय--सायंकाल या तीसरा पहर. शरदऋतु. खुशी उत्पन्न करती है. यह देसी, तिरवन, और तोडीसे मिश्रित है.

यह रागिणी ठाट कालिंगडा नंबर ६ के ठाटपर बजाई जाती है.

२०

सरगम.

अस्ताई—सा रे ध रे सा नी रे रे सा नी ध प मं प ग रे सा।

अन्तरा—प म प सा सा ध रे सा प ग रे सा नी ध प म प ग रे रे सा नी ध प म प ग रे सा।

अभोग—म प सा सों रे रे रे रे ग ग रे रे सा नी ध प सा सा सा रे ग ग ग रे रे सा ध प म प ग रे सा।

वैराटी गत १ ली. ताल—सूलफाख्ता.

पड्दा.	७ ७ ८ ४ ८ ७ ७ ८ ८ ८ ८ ७ ६ ६ ४ ३ १ ३ ३ १ ८ ४ ८ ७
स्वर.	स स रे धा रे स स रे रे रे रे सा नि नि धा पा मा प प गा रे धा रे सा
बोल.	दि ड दा डा दा दि ड दा डा दा दा डा दि ड दा डा दा दि ड दा डा दा दा डा
मात्रा.	॥ ॥ १ १ १ ॥ ॥ १ १ १ १ १ ॥ ॥ १ १ १ ॥ ॥ १ १ १ १ १
ताल.	*|— — ═ — —| ═

तोडा १ ला.

पड्दा.	१२ १० १२ १५ १५ १५ १५ १३ १६ १६ १५ १७ १७ १६ १५ १३ १३ १२ १० १२ ९ ९ ८ ७
स्वर	पा मा पा स स सा सा धा रि रि सा गा गा रे सा ध ध पा मा पा ग ग रे सा
बोल.	दा दा डा दि ड दा डा दा दि ड दा डा दा दा डा दि ड दा डा दा दि ड दा डा
मात्रा.	१ १ १ ॥ ॥ १ १ १ ॥ ॥ १ १ १ १ १ ॥ ॥ १ १ १ ॥ ॥ १ १
ताल.	═ — — ═ — —

वैराटी गत २ री. ताल—खम्सा.

पड्दा.	७ ८ ४ ८ ७ ७ ७ ६ ८ ८ ८ ७ ६ ४ ३ १ ३ १ ८ ७
स्वर.	सा रे धा रे सा स स नी रे ए रि सा नी धा पा मा पा गा रे सा
बोल.	दा डा दा डा दा दि ड दा दा C ड दा दा डा दा डा दा दा डा दा
मात्रा.	१ १ १ १ १ ॥ ॥ १ १ ॥ ॥ १ १ १ १ १ १ १ १ १
ताल.	═ — — — —

---

* **नोट**—तोडा बजानेके पहिले इस गतको जहांसे जहांतक |————| ऐसी लकीर नीचे खींची है वहांतक बजाकर फिर समहीसे तोडा शुरू करे और तोडा खतम हो जानेके बाद उस गतका बाकी हिस्सा बजाकर फिर गत शुरूसे आखिरतक बजावे. यही क्रम समसे तोडे शुरू होनेवाली गतोंका जानना. बशर्ते कि गत समसे शुरू न हो.

तोडा १ ला.

पड़दा.	१२	१२	१०	१२	१५	१५	१३	१६	१६	१५	१५	१७	१७	१६	१६	१५	१५	१३	१२	१०	१२	९	८	७
स्वर.	पा	प	मा	प	स	स	धा	रि	रि	स	स	ग	ग	रे	रि	सा	स	धा	पा	मा	पा	गा	रे	सा
बोल.	दा	ड	दा	ड	दि	ड	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा	दा	डा	दा	दा	डा	दा
मात्रा.	१	॥	१	॥	॥	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	१	१	१	१	१
ताल.	==						—							—					—·					—

(३) रागिनी मधुमाधवी.

शृंगारस्वरूप—सुकुमार, सुंदर, कांती सतेज, श्यामवर्ण, पीला वस्त्र, नेत्रोंमें कज्जल धारण किये है: सर्वांगमें केशर लेपन किया है व पतिसह विलास करनेमें निमग्न है.

जाति—ओडव. गंधार व धैवत वर्ज्य. निषाद कोमल व न्यास है. मध्यम व निषाद प्रधान स्वर है. इस रागिणीका व वृंदावनी सारंगका स्वरूप बहुत कुछ एकसा है.

समय—ग्रीष्म व शरद ऋतुमें प्रातःकालमें या दो पहरमें वीर व शृंगार रसमें गाई जाती है. वियोगमें खुशी पैदा करती है. मल्हार, कल्याण, शुद्ध व मालश्रीसे मिश्रित है.

यह रागिणी ठाट काफी नंबर ३ के ठाटपर बजाई जाती है.

स र ग म.

अस्ताई--म प प म नी सा रे रे रे नी सा ध ध ध प म पॅ म नी सा।

अन्तरा—प म प नी सा सा सा रे रे रे रे नी सा ध ध ध म प रे सा।

अभोग—म प नी सा सा सा सा नी सा रे रे रे प प प म प ध म प म ध ध म प प प प म प रे सा।

मधुमाधवी गत १ ली. ताल—झप.

पड़दा.	१	३	३	१	५	७	८	८	८	८	८	५	५	७	४	४	४	४	३	१	३	५	७
स्वर.	मा	पा	पा	मा	नी	सा	रे	रि	रि	रिं	रिं	नि	नि	सा	धा	SS	धा	SS	पा	मा	पा	नी	सा
बोल.	दा	डा	दा	दा	डा	दा	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड	दा	डा	S	दा	S	दा	दा	डा	दा	डा
मात्रा.	१	१	१	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
ताल.	—			==		—				०				—			==		—			०	

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	१	३	३	१२	१२	१०	१२	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१४	१५	१३	१३	१०	१२		
स्वर.	मा	पा	पा	पा	ऽऽ	मा	पा	सा	स	स	सं	स	रे	रे	नी	सा	धा	धा	मा	पा		
बोल.	दा	डा	दा	दा	ऽ	दा	डा	दा	दि	ड	दि	ड	दा	दा	डा	दा	डा	दा	दा	डा	दा	डा
मात्रा.	१	१	१	१	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
ताल.	—			==		—			०				—			==		—			०	

(४) रागिणी सिन्धवी.

शृंगार स्वरूप—सुंदर परन्तु भव्य और क्रोधयुक्त, वस्त्रलाल, कानोंमें पुष्पोंके अलंकार पहिने हुए, एक हाथमें त्रिशूल व दूसरे हाथमें जपकी माला धारण किये है और अपने पतिकी भेंट होनेके अर्थ आतुर भई हुई शंकरजीका ध्यान कर रही है.

जाति—संपूर्ण. गंधार व निषाद कोमल. आरोहमें तीव्र व अवरोहमें कोमल निषाद लेते हैं. मध्यम ग्रह व प्रधान स्वर है. कितनेएकोंके मतसे धैवत प्रधान स्वर है.

समय—गीष्म ऋतुमें (शरदऋतुमें भी) दिनको तीसरे प्रहरमें वीररसमें गाते हैं. मुख्य उपराग—मधु व बलनेह. वीररस उत्पन्न करती है. अहीरी व आसावरीसे मिश्रित है.

यह रागिणीभी ठाट काफी नंबर ३ के ठाटपर बजाई जाती है.

स र ग म.

अस्ताई—ध नी सा ग रे सा सा ग रे सा ध नी सा सा सा नी सा ग रे सा।

अन्तरा—ग रे म ध नी सा ध नी सा सा सा सा सा नी सा सा ध नी सा ध नी सा सा सा नी सा ध ध नी सा ध नी सा ग रे सा।

अभोग—म ग प म ध नी सा ग रे सा सा सा नी सा ग ग रे रे म ग रे सा ग रे सा ध नी सा ध ध सा सा ध नी सा सा सा ध ध नी नी सा सा सा सा ग रे सा ध नी सा ग रे सा।

सिंधवी गत १ ली. ताल—झूमरा.

पड़दा.	४	५	७	९	९	८	७	७	७	७	९	८	७	२	५	७	९	८	७	४	४	४	५	५	९
स्वर.	धा	नी	ई	ग	ग	रे	स	स	सा	सा	गा	रे	सा	म	नि	सा	गा	रे	सा	धा	धा	SS	नि	नि	गा
बोल.	*दा	ड़ा	S	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	ड़ा	S	दि	ड़	द
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	१	१	॥	॥	१
ताल.	=					—					०					—				—					—

पड़दा.	८	८	७	७	९	८	७	४	४	७	९	९	८	७
स्वर.	रि	रि	सा	सा	गा	रे	सा	ध	ध	सा	ग	ग	रे	सा
बोल.	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताल.					०					—				

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	९	८	१०	१३	१३	१४	१५	१५	१५	१५	१३	१४	१५	१४	१४	१५	९	८	७
स्वर.	गा	रे	ए	ध	ध	नी	स	स	सा	सा	धा	नी	सा	नि	नि	सा	गा	रे	सा
बोल.	दा	दा	S	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	ड़ा
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१
ताल.	=					—					०					—			

---

(५) रागिणी बंगाली.

शृंगारस्वरूप—भाल विशाल, विभूति व कस्तूरीतिलकयुक्त, हास्य मंद, बेनी टेढी, सर्वांग चंदनचर्चित, स्वरूप जोगिनीसमान, मंत्र तंत्र जाननेवाली, वस्त्र केशरी, बाँए हाथमें त्रिशूल व दाहिने हाथमें कमलपुष्प धारण कीहुई लतामंडपमें बैठीहुई है.

जाति—ओड्व. ऋषभ व धैवत वर्ज्य हैं. मध्यम दोनों आते हैं.

समय—ग्रीष्मऋतुमें दिनमें पहिले अथवा चौथे प्रहरमें वीररसमें गाते हैं. वियोग व भय पैदा करनेवाली है.

यह धनाश्री, ललित, मारवा व गौरीसे मिश्रित है.

यह रागिणी ठाट कलिंगड़ा नंबर ९ के ठाटमें बजाई जाती है.

***नोट**—गतमें S और C ये चिन्ह १ एक और आधी ॥ मात्राके कीमत के हैं और गलेसे इनका उच्चारण आ (SS) और अ (S) होता है. और स र ग म में जो स्वर हो उसीकी मात्रा (अ आ इ ई ए) जो होगी उसीके मानिंद इनका उच्चारण होगा. यह बात पीछे भी (पृ. १२२) लिख आये हैं.

स र ग म.

अस्ताई—सा रे म प ध प ध म म ग ग म ग ध रे सा।

अन्तरा— म ध सा नी सा रे सा सा सा सा रे नी ध प ध म ध प म म ग म ध प म ग रे सा।

अभोग—म सा सा सा सा रे सा ग ग म म ग म ग ध रे सा सा सा म म ग ग रे रे ग म ग रे नी ध प प ध प ध म ग म ग म ग रे सा।

बंगाली गत १ ली. ताल तिताला.

पड़दा. ७ ८ १० १२ १३ १२ १३ १३ १० १० ९ ९ १० १० ९ ९ १३ १३ १३ १३ १० १० १३ १३
स्वर. सा रे मा पा धा पा धा ऽ म मा गा गा म म ग ग ध ध धा ध मा म ध ध
बोल. दा ड़ा दा दा ड़ा दा दा C ड़ दा ड़ा दा दि ड़ दि ड़ दि ड़ दा ड़ दा ड़ दि ड़
मात्रा. १ १ १ १ १ १ १ ॥ ॥ १ १ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ ॥ ॥
ताल. — = — ०

|————————|

पड़दा. १२ १३ १३ १० १० १२ १२ १२ १३ १० ९ १० १० ९ ८ ८ ८ ७
स्वर. पा ध ध मा मा प पा प धा मा गा म म गा रे ए रि सा
बोल. दा दि ड़ दा ड़ा ध रा ड़ दा ड़ा दा दि ड़ दा दा C ड़ दा (?)
मात्रा. १ ॥ ॥ १ १ ॥ १ ॥ १ १ १ ॥ ॥ १ १ ॥ ॥ १
ताल. — = — ०

तोड़ा १ ला. (शुरू समसे)

पड़दा. १० १३ १३ १३ १५ १६ १५ १७ १७ १६ १६ १५ १५ १४ १४ १३ १० १० १२ ९ १० १० १०
स्वर. मा धा ऽ ध सा रे सा गा गा रे रि सा स नि नि धा म म पा गा मा मा ऽऽ
बोल. दा दा C ड दा दा डा दा डा दा ड़ दा ड दि ड दा दि ड दा डा दा डा S
मात्रा. १ १ ॥ ॥ १ १ १ १ १ १ ॥ १ ॥ ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ १ १ १ १
ताल. = — ० — =

पड़दा. ९ ९ ९ १० १० ९ ९ ७
स्वर. गा गा ऽ म मा गा गा सा
बोल. दा दा C ड़ दा ड़ा दा ड़ा
मात्रा. १ १ ॥ ॥ १ १ १ १
ताल. — ०

गतको पहिले बजाकर फिर जब तोड़ा बजाना चाहे तब गतके नीचे ऐसी |————| लकीर जहांतक खींची है वहीं तक गत बजाकर तोड़ा बजाना शुरू करे और उसके अनंतर फिर बाकी गत बजावे.

पाठ दूसरा.

२. राग मालकंस.

इस रागको मालकंस अथवा कौशिकभी कहते हैं.

शृंगारस्वरूप—इसका स्वरूप विष्णुके स्वरूपके समान है. शरीर भव्य व श्यामवर्ण, वय तरुण, चतुर, हास्यविनोदी, शृंगारप्रिय, वस्त्र पीला, मस्तकपर सुवर्णका मुकुट, कंठमें मौक्तिकहार व हाथमें गुलछब्बूके (निशागंध) के पुष्प धारण किये हुए स्त्रियों सहित अनेक प्रकारकी क्रीड़ा व विलास करता है.

जाति—ओडव. ऋषभ व पंचम वर्ज्य होकर बाकीके सब स्वर कोमल हैं. गंधार या मध्यम ग्रह व धैवत न्यास है. इसमें धैवत व निषाद ये स्वर मारू रागके हैं. कई एकोंके मतसे यह राग संपूर्ण जातिका है व ऋषभ कोमल है. परन्तु कोमल ऋषभ व कोमल गंधार इनके स्वरूपका लक्ष्य करनेसे कान्हड़ेका भास होता है. इस कारण इस रागमें ऋषभ व पंचम वर्ज्य करना चाहिये. जिससे शुद्ध मालकंस होगा.

समय—शिशिरऋतुमें उत्तर रात्रिमें वीररसमें गाते हैं. खुशी उत्पन्न करता है. परजी, बाहरी व हिंडोलसे मिश्रित है.

इस रागकी पांच रागिनियां हैं. तोड़ी १, गौरी २, गुणकली ३, खंबावती ४ व ककुभ ५.

यह राग ठाँट भैरवी नंबर २ के ठाटमें बजाया जाता है.

स्वर विस्तार धृपद.

॥ सा-नी, ध-नी-ध-म-ध-सा-नी-सा, ग-नी-सा-नी-ध-सा-नी-म-ग-म-ग-म-ग-सा-नी-ध, सा-सा-सा-नी-सा-नी-सा-नी-ध-म-ग-सा-नी-सा-ग-म ।

स र ग म.

अस्ताई—मा नी ध नी सा म म म म म ग म ग म ग ग ग ग म ग ग सा ।

अन्तरा—म ग म सा सा सा नी ध नी सा ध ध नी ध म म नी ध ध म नी ध म ग ग सा ।

अभोग—म सा सा सा नी ध नी सा म म म म ग ग म ग म ग ग ग सा म ग सा म म सा ग ग सा नी ध ध ध नी नी ध ध ध ध ध म नी ध म ध म म म ग ग सा ।

मालकंस गत १ ली. ताल–तिताला.

पड़दा.	७	५	७	७	५	४	४	५	७	१०	१०	१०	९	९	९	१०	१०	९	९	७
स्वर.	स	नि	सा	स	नि	धा	धा	नी	सा	मा	म	म	गा	ग	ग	मा	मा	गा	गा	सा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	ड़ा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=		—			०			—		=		—

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	७	७	९	९	९	१०	१०	१३	१४	१४	१५	१५	१४	१३	१३	१०	१०	९	९	७
स्वर.	स	स	गा	ग	ग	मा	मा	धा	नि	नि	सा	सा	नी	ध	ध	मा	मा	गा	गा	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=			—		०			—		=		—

मालकंस गत २ री. ताल–तिताला.

पड़दा.	९	९	९	७	७	७	७	५	७	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	९	९	१०	१३	१३	१४	१४
स्वर.	ग	ग	गा	स	स	सा	सा	नी	सा	मा	म	म	मा	म	म	मा	मा	मा	मा	मा	ग	ग	मा	ध	ध	नी	नी
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताल.			०			—		=		—			०			—		=		—			०			—	

पड़दा.	१४	१४	१४	१३	१०	१३	१३	१३	१३	१०	९	९	७
स्वर.	नी	नि	नि	धा	मा	धा	ध	ध	धा	मा	गा	गा	सा
बोल.	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.	=			—		०			—		=		—

तोडा १ ला.

पड़दा.	१५	१५	१४	१३	१३	१०	९	१०	१३	१३	१४	१५	१४	१३	१३	१०	९	९	९	७	७	७	५	७	७	४	४
स्वर.	स	स	नी	ध	ध	मा	गा	मा	ध	ध	नी	सा	नी	ध	ध	मा	गा	गा	गा	सा	स	स	नी	स	स	धा	धा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताल.			०			—		=			—		०			—		=		—			०			—	

पड्दा. ×	१२ १२ १२ १३ १२ १२ १० ९	९ १० ९ ९ ८ ७	९ १० ९ ९ १२ १३ १२ १२	९ ८ ७
स्वर.	प प पऽ प प मा गा	गऽ ग ग रे सा	गऽ ग ग पऽ प प	गा रे सा
बोल.	दि. ड़ द़ऽ दि ड़ दा ड़ा	द़ऽ दि ड़ दा ड़ा	द़ऽ दि ड़ द़ऽ दि ड़	दा दा ड़ा
मात्रा.	॥ ॥ १ ॥ ॥ १ १	१ ॥ ॥ १ १	१ ॥ ॥ १ ॥ ॥	१ १ १
ताल.	० —	═ —	० —	═ —

भैरव गत तीसरी. ताल–तिताल.

पड्दा.	६ ८ ८ ७ ८	६ ७ ७ ६ ६	६ ७ ७	६ ७ ७ ७ ७
स्वर.	नी रि रि सा रे	नी स स नी नी	नी सा सा	नी सा सा सा सा
बोल.	दा दि ड़ दा ड़ा	दा दि ड़ दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा ड़ा दा दा ड़ा
मात्रा.	१ ॥ ॥ १ १	१ ॥ ॥ १ १	१ १ १	१ १ १ १ १
ताल.	═ —	• —	═ —	• —

तोड़ा १ ला.

पड्दा.	९ ९ ९ ९ १०	९ ८ ८ ९ १०	९ ८ ८	९ ८ ८ ७ ७
स्वर.	गा ग ग गा मा	गा रि रि गा मा	गा रे रे	गा रे रे सा सा
बोल.	दा दि ड़ दा ड़ा	दा दि ड़ दा ड़ा	दा दा ड़ा	दा ड़ा दा दा ड़ा
मात्रा.	१ ॥ ॥ १ १	१ ॥ ॥ १ १	१ १ १	१ १ १ १ १
ताल.	═ —	• —	═ —	• —

भैरव गत चौथी ताल तीव्रा.

पड्दा.	९ १० १० १२ १३ १३ १२ १२ १० १० ९ ९ ८ ८ ८ ९ १० १० ९ ९
स्वर.	गा म म पा धा ऽऽ प प म म ग ग रे ए रि गा मा ऽऽ ग ग
बोल.	दा दि ड़ दा ड़ा ऽ दि ड़ दि ड़ दि ड़ दा C ड़ दा ड़ा ऽ दि ड़
मात्रा.	१ ॥ ॥ १ १ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ १ १ ॥ ॥
ताल.	═ — —— ═ — —

पड्दा. *	८ ७ ६ ४ ४ ३ ३	१ १ ५ ५	१ १ ३ ३ ४ ४	६ ६ ७ ७
स्वर.	रे सा नी ध ध प प	मा म गा ग	म म प प ध ध	नी नि सा स
बोल.	दा ड़ा दा दि ड़ दि ड़	दा ड़ दा ड़	दि ड़ दि ड़ दि ड़	दा ड़ दा ड़
मात्रा.	१ १ १ ॥ ॥ ॥ ॥	१ ॥ १ ॥	॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥	१ ॥ १ ॥
ताल.	═ —	— ═	—	—

× **नोट १**––भाग पहिला द्वितीयांकमें गमकके बयानमें मींढ़ नंबर १–जिसका ⌒ ऐसा चिन्ह है–उस लिखी हुई रीतिसे मींढ़ देकर यहाँ स्वरका उच्चार करना चाहिये.

* **नोट २**—इस चौथी गतमें गा ग ये स्वर और बोल जोड़ीवाले पीतलकी षड्जकी खूंटीके तार पर अर्थात् पांचवें पडदेपर बजाने चाहिये. आगेके पोलादी तार (मध्यम) जो बजानेका खास है–उसपरसे उंगली पिछले तारपर लेजाकर रखना होगी. यह ध्यान रहे.

तोड़ा १ ला.

पड़दा. ९ १० १२ १३ १४ १५ १५ १४ १३ १२ १२ १३ १३ १२ १२ १० १० ९
स्वर. गा मा पा धा नी स स नी धा प प ध ध पा प मा म गा
बोल. दा ड़ा दा ड़ा दा दि ड़ दा ड़ा दि ड़ दि ड़ दा ड़ दा ड़ दा
मात्रा. १ १ १ १ १ ॥ ॥ १ १ ॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ १
ताल. = — — = — —

पड़दा ८ ८ ७ ७ ६ ६ ४ ४ ३ १ ३ ३ ४ ६ ७ ७ ८ ८ ७ ७
स्वर. रि रि स स नी नि धा ध पा मा प प धा नी स स रे रि सा स
बोल. दि ड़ दि ड़ दा ड़ दा ड़ दा ड़ा दि ड़ दा ड़ा दि ड़ दा ड़ दा ड़
मात्रा. ॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ १ १ ॥ ॥ १ १ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥
ताल. = — — = — —

भैरव गत पांचवीं. ताल—झप.

पड़दा. ८ ८ ७ ६ ७ ६ ६ ४ ४ ३ ३ १ १ ५ ५ १ ४ ६ ६ ७ ७
स्वर. रे ए सा नी सा नि नि ध ध प प मा म गा ग मा धा नि नि स स
बोल. दा ऽ दा ड़ा दा दि ड़ दि ड़ दि ड़ दा ड़ दा ड़ दा दा दि ड़ दि ड़
मात्रा. १ १ १ १ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ १ १ ॥ ॥ ॥ ॥
ताल. = — — — —

पड़दा. ८ ७ ८ ८ ९ १० ९ ९ १३ १३ १२ १० १० १२ १२ १० ९ ८ ६ ७
स्वर. रे सा रि रि गा मा गा ग धा ध पा म म प प मा ग रे नि सा
बोल. दा ड़ा दि ड़ दा ड़ा दा ड़ दा ड़ दा दि ड़ दि ड़ दा ड़ दा ड़ दा
मात्रा. १ १ ॥ ॥ १ १ १ ॥ १ ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ १
ताल. — = — —

पड़दा. ८ ७ ९ ८ ८ १० १० ९ ९ ४ ४ ६ ६ ७
स्वर. रे सा गा रि रि म म ग ग धा ध नी नि सा
बोल. दा ड़ा दा दि ड़ दि ड़ दि ड़ दा ड़ दा ड़ दा
मात्रा. १ १ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ १
ताल. = — —

तोड़ा १ ला.

पड़दा. ९ १० ४ ४ ६ ७ ८ ८ ७ १० १० ९ ९ १३ १३ १२ १२ १० १० ९ ९
स्वर. गा मा ध ध नी सा रि रि सा म म ग ग ध ध पा प मा म ग ग
बोल. दा ड़ा दि ड़ दा ड़ा दि ड़ दा दि ड़ दि ड़ दि ड़ दा ड़ दा ड़ दि ड़
मात्रा. १ १ ॥ ॥ १ १ ॥ ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ ॥ ॥
ताल. = — — = —

पड्दा.	१०	१०	८	७	७	८	८	६	७	६	४	४	३	३	१	१	३	३	४	४	७	
स्वर.	म	म	रे	सा	SS	रि	रि	नी	सा	नी	ध	ध	प	प	म	म	पा	प	धा	ध	सा	
बोल.	दि	ड़	दा	ड़ा	S	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा	
मात्रा	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	
ताल.				—				═			—										—	

पडदा.	९	९	१०	१०	८	८	९	९	१०	१०	८	८	७	७	६	६	७	७	
स्वर.	ग	ग	म	म	रे	रि	गा	ग	म	म	रि	रि	स	स	नी	नि	सा	स	
बोल.	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	
मात्रा.	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	
ताल.			═		—										—				

यह भैरव राग शरद्ऋतुमें चार घडी रात रहनेपर प्रातःकालमें शांतरसमें गाया जाता है. इस रागकी पांच रागिनियां हैं:—

१ भैरवी, २ वैराटी, ३ मधुमाधवी, ४ सिंधवी, और ५ बंगाली. यह राग पूरिया, हिंडोल शुद्ध व कानड़ासे मिश्रित है.

---

(१) रागिणी भैरवी.

शृंगार व स्वरूप—यह रागिनी सुन्दर, सुकुमार, श्यामवर्ण, वस्त्र श्वेत, कंचुकी रक्तवर्ण, केश मुक्त, गलेमें चंपक पुष्पका हार, हाथमें शिरस पुष्प व वीणा धारण किये है व पर्वतपर बैठकर शंकरके ध्यानपूर्वक गायन कर रही है.

जाति—संपूर्ण. मध्यम शुद्ध व बाकीके स्वर कोमल हैं. मध्यम अथवा धैवत प्रधान स्वर है. गंधार ग्रह व धैवत न्यास है. कईएकोंके मतसे ऋषभ ग्रह व मध्यम न्यास है. गंधार, मध्यम व धैवत इनपर मूर्च्छना है. धैवत अंशस्वर है. मध्यम अंशस्वर करनेसे सिंधभैरवी होती है.

इस रागिणीकी उत्पत्ति गंधारग्रामसे है. फक्त यही रागिणी गंधारग्रामका नमूना है. इस रागिणीके गंधारस्वरके कोमलताईकी तरफ लक्ष्य देनेसे टोडीका भास होता है. परन्तु टोडीमें मध्यमतीव्र है व इस रागिणीमें शुद्ध है. उसी प्रकार टोडीमें दोनों निषाद आते हैं व इस रागिणीमें फक्त कोमल निषाद आता है.

इस रागिणीके मुख्य उपराग हर्ष व तिलक हैं.

समय शरदऋतु. प्रातःकालमें गाई जाती है. मोद उत्पन्न करती है.

यह रागिणी वैराटी, शुद्ध ललित, सारंग व पंचममे मिश्रित है.

स र ग म.

अस्ताई—म प ध प प म प मा म ग ग रे सा नी ध म प ध सा सा सा ।

अन्तरा—म प प ध नी सा सा सा सा नी ध म प ध प म ग ध प ध प म ग ध प म प म ग रे सा ।

अभोग—म प ध ध नी नी सा सा सा सा ग म ग ग रे सा म म ग ग ग रे रे सा सा सा ग ग ग रे रे सा सा नी नी ध ध ध प म प प प म म ग ग ग ध प म ग ध म प म ग रे सा ।

इस रागिणीकी गतें वगैरः ठाट भैरवी नंबर २ के ठाटमें बजती हैं.

रागिनी भैरवी. गत १ ली. ताल—तिताला.

पडदा.	७	७	८	१०	१०	१०	१०	९	९	९	१०	१०	९	८	८	७	८	५	७	७
स्वर.	स	स	रे	म	म	मा	मा	गा	गा	गा	म	म	गा	रि	रि	सा	रे	नी	सा	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्राः	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		═		—			०			—		═		—

तोड़ा १ ला.

पडदा.	४	४	४	५	५	७	७	५	७	७	१०	१०	९	८	८	७	८	५	७	७
स्वर.	ध	ध	धा	नि	नि	सा	सा	नी	सा	सा	म	म	गा	रि	रि	सा	रे	नी	सा	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		═		—			०			—		═		—

तोड़ा २ रा.

पडदा.	१३	१३	१२	१३	१३	१०	१२	९	१०	९	१०	१०	८	७	७	८	१०	९	८	७
स्वर.	ध	ध	पा	ध	ध	मा	पा	गा	म	ग	मा	मा	रे	स	स	रे	मा	गा	रे	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		═			—		०			—		═		—

नोट—इस किताबमें सुगमसे सुगम और कठिनसे कठिन भी गतें दी गई हैं.नवीन सीखनेवालेको चाहिये. कि–पहिले पहिल, सुगम गतें जिनमें खम दम मींढ जम जमा वगैरः और एंडे बेंडे ताल न होंवे याद करे जब उनका खूब अभ्यास होकर हाथ जमे तब कठिन गतें याद करे.

तोड़ा ३ रा.

पडदा.	१५ १५ १४ १३ १३ १२ १३ ९ १० ९ १० १० १० १४ १४ १३ १० ९ ८ ७
स्वर.	स स नी ध ध पा धा गा म ग मा मा मा नि नि धा मा गा रे सा
बोल.	दि ड़ दा दि ड़ दा ड़ा दा दि ड़ दा ड़ा दा दि ड़ दा ड़ा दा दा ड़ा
मात्रा.	॥ ॥ १ ॥ ॥ १ १ १ ॥ ॥ १ १ १ ॥ ॥ १ १ १ १ १
ताल.	० — = — ० — = —

भैरवी गत २ री. ताल–तिताला या आदि.

पड़दा.	५ ८ ८ ७७ ५ ५ ५ ४ १ ३ ४ ५ ५ ८८ ७ ७ ८ ८ ५ ५ ७
स्वर.	नी रि रि सस नी ऽ नि धा मा पा धा नि नि रिरि स स रे रि नी नि सा
बोल.	दा दि ड़ दिड़ दा C ड़ दा दा ड़ा दा दि ड़ दिड़ दि ड़ दा ड़ दा ड़ दा
मात्रा.	१ ॥ ॥ ॥॥ १ ॥ ॥ १ १ १ १ ॥ ॥ ॥॥ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ १
ताल.	= — ० — = — ० —

पड़दा.	९ ९ ९ १० १२ १२ १० १० १० १२ १३ १२ १२ १० १० ९ ९ ८ ८ ५ ५ ७
स्वर.	गा ऽ ग मा पा ऽऽ मा ऽ म पा धा प प म म ग ग रे रि नी नि सा
बोल.	दा C ड़ दा दा S दा C ड़ दा दा दि ड़ दि ड़ दि ड़ दा ड़ दा ड़ दा
मात्रा.	१ ॥ ॥ १ १ १ १ ॥ ॥ १ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ १
ताल.	= — ० — = — ० —

पड़दा.	४ ४ ५ ५ १ १ ३ ३ ४ ५ ७ ९ १० १० ९ ९ १२ १२ १ १ १३ १३ १२
स्वर.	ध ध नि नि मा म पा प धा नी सा गा म म ग ग प प मा म धा ध पा
बोल.	दि ड़ दि ड़ दा ड़ दा ड़ दा दा ड़ा दा दि ड़ दि ड़ दि ड़ दा ड़ दा ड़ दा
मात्रा.	॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ १ १ १ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ १
ताल.	= — • — = — ० —

पडदा.	९ ९ १० १० ८ ८ १० १० ९ ८ ७
स्वर.	ग ग म म रे रि मा म गा रे सा
बोल.	दि ड़ दि ड़ दा ड़ दा ड़ दा दा ड़ा
मात्रा.	॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ १ १ १
ताल.	= — • —

तोड़ा १ ला.

पडदा.	९ ९ १० ९ १२ १० १३ १२ १० १० १२ १२ ९ ९ १० १० १४ १३ १३ १२ १२
स्वर.	गा ऽऽ मा गा पा मा धा पा म म प प गा ग मा म नी ध ध प प
बोल.	दा S दा ड़ा दा ड़ा दा ड़ा दि ड़ दि ड़ दा ड़ दा ड़ दा दि ड़ दि ड़
मात्रा.	१ १ १ १ १ १ १ १ ॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥
ताल.	= — • — = — ० —

पड़दा. १० १० ९ ९ १० १२ १० १३ १३ १० १० १२ १२ १० १० ९ ९ १३ १३ १२ १२ १० ९
स्वर. मा म गा ग मा पा मा ध ध म म प प मा म गा ग ध ध प प मा गा
बोल. दा ड़ दा ड़ दा ड़ा दा दि ड़ दि ड़ दि ड़ दा ड़ दा ड़ दि ड़ दि ड़ दा ड़ा
मात्रा. १ ॥ १ ॥ १ १ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ १ १
ताल. = — • — — — • —

पड़दा. ८ ७ ४ ४ ५ ५ ७ ७ ५ ५ ७ ७ ५ ४ ४ १ ३ ३ १
स्वर. रे सा धा ध नी नि सा ऽऽ नि नि स स नी धा ऽऽ मा पा ऽऽ मा
बोल. दा ड़ा दा ड़ दा ड़ दा ऽ दि ड़ दि ड़ दा ड़ा ऽ दा ड़ा ऽ दा
मात्रा. १ १ १ ॥ १ ॥ १ १ ॥ ॥ ॥ ॥ १ १ १ १ १ १ १
ताल. = — ० — = — ० —

पड़दा. ३ ३ ४ ४ ५ ५ १० १० ९ ९ ८ ७
स्वर. प प ध ध नि नि मा म गा ग रे सा
बोल. दि ड़ दि ड़ दि ड़ दा ड़ दा ड़ दा ड़ा
मात्रा. ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ १ १
ताल. = — • —

भैरवी गत ३ री. ताल–धमार.

पड़दा. ५ ८ ८ ७ ७ ५ ५ ५ ४ १ ३ ४ ५ ५ ८ ८ ७ ७ ८ ८ ५ ५ ७ ९ ९ ९
स्वर. नी रि रि स स नी ऽ नि धा मा पा धा नि नि रि रि स स रे रि नी नि सा गा ऽ ग
बोल दा दि ड़ दि ड़ दा C ड़ दा दा ड़ा दा दि ड़ दि ड़ दि ड़ दा ड़ दा ड़ दा दा C ड़
मात्रा. १ ॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ १ १ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ १ १ ॥ ॥
ताल. = — — =

पड़दा. १० १२ १२ १० १० १० १२ १३ १२ १२ १० १० ९ ९ ८ ८ ५ ५ ७ ४ ४ ५ ५ १ १ ३ ३
स्वर. मा पा ऽऽ मा ऽ म पा धा प प म म ग ग रे रि नी नि सा ध ध नि नि मा म पा प
बोल. दा ड़ा ऽ दा C ड़ दा दा दि ड़ दि ड़ दि ड़ दा ड़ दा ड़ दा दि ड़ दि ड़ दा ड़ दा ड़
मात्रा. १ १ १ १ ॥ ॥ १ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥
ताल. — — = —

पड़दा. ४ ५ ७ ९ १० १० ९ ९ १२ १२ १० १० १३ १३ १२ ९ ९ १० १० ८ ८ १० १० ९ ८ ७
स्वर. धा नी सा गा म म ग ग प प मा म धा ध पा ग ग म म रे रि मा म गा रे सा
बोल. दा दा ड़ा दा दि ड़ दि ड़ दि ड़ दा ड़ दा ड़ दा दि ड़ दि ड़ दा ड़ दा ड़ दा दा ड़ा
मात्रा. १ १ १ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ १ १ १
ताल. — = — —

तोडा १ ला.

पडदा.	९	९	१०	९	१२	१०	१३	१२	१०	१०	१२	१२	९	९	१०	१०	१४	१३	१३	१२	१२	१०	१०	९	९
स्वर.	गा	SS	मा	गा	पा	मा	धा	पा	म	म	प	प	गा	ग	मा	म	नी	ध	ध	प	प	मा	म	गा	ग
बोल.	दा	S	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़
मात्रा.	१	१	१	१	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥
ताल.	=					—							—						=						

पडदा.	१०	१२	१०	१३	१३	१०	१०	१२	१२	१०	१०	९	९	१३	१३	१२	१२	१०	९	८	७	४	४	५	५
स्वर.	मा	पा	मा	ध	ध	म	म	प	प	मा	म	गा	ग	ध	ध	प	प	मा	गा	रे	सा	धा	ध	नी	नि
बोल.	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	ड़	दा	ड़
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	१	॥
ताल.	—								—						=						—				

पडदा.	७	७	५	५	७	७	५	४	४	१	३	३	१	३	३	४	४	५	५	१०	१०	९	९
स्वर.	सा	SS	नि	नि	स	स	नी	धा	SS	मा	पा	SS	मा	प	प	ध	ध	नि	नि	मा	म	गा	ग
बोल.	दा	S	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़ा	S	दा	ड़ा	S	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़
मात्रा.	१	१	॥	॥	॥	॥	१	१	१	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥
ताल.		—						=					—									—	

पडदा.	८	७
स्वर.	रे	सा
बोल.	दा	ड़ा
मात्रा.	१	१
ताल.		

भैरवी गत ४ थी. ताल–रूपक या दोताला.

पडदा.	९	१३	१३	१०	१२	१२	९	९	८	८	७	७	८	८	८	५	७	७	४	४	५	७	९
स्वर.	गा	ध	ध	मा	पा	SS	ग	ग	रि	रि	स	स	रे	ए	रि	नी	सा	SS	ध	ध	नी	सा	गा
बोल.	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	S	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	C	ड़	दा	ड़ा	S	दि	ड़	दा	ड़ा	दा
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१
ताल.	=			—								=			—						=		—

पडदा.	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१२	१२	१०	१०	९	९	८	८	७	७
स्वर.	स	स	रि	रि	गा	ग	मा	म	प	प	म	म	ग	ग	रे	रि	सा	स
बोल.	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़
मात्रा.	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥
ताल.								=			—							

तोडा १ ला.

पडदा. ५ ८ ७ ९ ८ १० १० ९ १२ १० १० १३ १३ १० १० १२ १२ ९ १० १० ९ ९
स्वर. नी रे सा गा रे म म गा पा म म ध ध मा म पा प गा म म ग ग
बोल. दा डा दा डा दा दि ड़ दा डा दि ड़ दि ड़ दा ड़ दा ड़ दा दि ड़ दि ड़
मात्रा. १ १ १ १ १ ॥ ॥ १ १ ॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥
ताल. ═ — ═ — ═

पडदा. ८ ८ ७ ७ ५ ७ ८ ८ ९ १० ९ ९ ८ ८ ७ ७
स्वर. रे रि सा स नी सा रि रि गा मा ग ग रे रि सा स
बोल. दा ड़ दा ड़ दा डा दि ड़ दा डा दि ड़ दा ड़ दा ड़
मात्रा. १ ॥ १ ॥ १ १ ॥ ॥ १ १ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥
ताल — ═ —

भैरवी गत ५ वीं. ताल—ब्रह्मताल.

पडदा. ५ ८ ८ ७ ७ ५ ५ ५ ४ १ ३ ४ ५ ५ ८ ८ ७ ७ ८ ८ ५ ५ ७
स्वर. नी रि रि स स नी ऽ नि धा मा पा धा नि नि रि रि स स रे रि नी नि सा
बोल. दा दि ड़ दि ड़ दा C ड़ दा दा डा दा दि ड़ दि ड़ दि ड़ दा ड़ दा ड़ दा
मात्रा. १ ॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ १ १ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ १
ताल. ═ ० — — ० — — —

पडदा. ९ ९ ९ १० १२ १२ १० १० १० १२ १३ १२ १२ १० १० ९ ९ ८ ८ ५ ५ ७
स्वर. गा ऽ ग मा पा ऽऽ मा ऽ म पा धा प प म म ग ग रे रि नी नि सा
बोल. दा C ड़ दा दा S दा C ड़ दा दा दि ड़ दि ड़ दि ड़ दा ड़ दा ड़ दा
मात्रा. १ ॥ ॥ १ १ १ १ ॥ ॥ १ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ १
ताल. ० — ═ — — ० — —

पडदा. ४ ४ ५ ५ १ १ ३ ३ ४ ५ ७ ९ १० १० ९ ९ १२ १२ १० १० १३ १३
स्वर. ध ध नि नि मा म पा प धा नी सा गा म म ग ग प प मा म धा ध
बोल. दि ड़ दि ड़ दा ड़ दा ड़ दा दा डा दा दि ड़ दि ड़ दि ड़ दा ड़ दा ड़
मात्रा. ॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ १ १ १ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥
ताल. — — • — — — ० —

पडदा. १२ ९ ९ १० १० ८ ८ १० १० ९ ८ ७
स्वर. पा ग ग म म रे रि मा म गा रे सा
बोल. दा दि ड़ दि ड़ दा ड़ दा ड़ दा दा डा
मात्रा. १ ॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ १ १ १
ताल. — — — •

तोडा १ ला.

पड़दा.	९ ९ १० ९ १२ १० १३ १२ १० १० १२ १२ ९ ९ १० १० १४ १३ १३ १२ १२ १० १० ९ ९ १० १२
स्वर.	गा ऽऽ मा गा पा मा धा पा म म प प गा ग मा म नी ध ध प प मा म गा ग मा पा
बोल.	दा ऽ दा डा दा डा दा डा दि ड दि ड दा ड दा ड दा दि ड दि ड दा ड दा ड दा डा
मात्रा.	१ १ १ १ १ १ १ १ ॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ १ १
ताल	= ० — — • — — — ० — —

पंड़दा.	१० १३ १३ १० १० १२ १२ १० १० ९ ९ १३ १३ १२ १२ १० ९ ८ ७ ४ ४ ५ ५ ७ ७ ५ ५ ७ ७
स्वर.	मा ध ध म म प प मा म गा ग ध ध प प मा गा रे सा धा ध नी नि साऽऽ नि नि स स
बोल.	दा दि ड दि ड दि ड दा ड दा ड दि ड दि ड दा डा दा डा दा ड दा ड़ दा ऽ दि ड दि ड
मात्रा.	१ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ १ १ १ १ १ ॥ १ ॥ १ १ ॥ ॥ ॥ ॥
ताल.	— — ० = • — — • — —

पड़दा.	५ ४ ४ १ ३ ३ १ ३ ३ ४ ४ ५ ५ १० १० ९ ९ ८ ७
स्वर.	नी धा ऽऽ मा पा ऽऽ मा प प ध ध नि नि मा म गा ग रे सा
बोल.	दा डा ऽ दा डा ऽ दा दि ड दि ड दि ड दा ड दा ड दा डा
मात्रा.	१ १ १ १ १ १ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ १ १
ताल.	— ० — — — —— ०

इति भैरवी रागिणी समाप्त.

---

(२) रागिणी वैराटी.

शृंगार स्वरूप—यह रागिनी अप्सरा समान, घुंघरारे मुक्तबाल, वस्त्र श्वेत, सर्वांगपर पारिजातक पुष्पोंके अलंकार धारण किये हुए पतिसह अभिनययुक्त क्रीडा करनेमें निमग्न होगई है.

जाति संपूर्ण. निषाद कोमल होकर बाकीके सब स्वर शुद्ध हैं. इस रागिणीमें विभास रागका भास होता है.

मुख्य उपराग माधव. समय--सायंकाल या तीसरा पहर. शरदऋतु. खुशी उत्पन्न करती है. यह देसी, तिरवन, और तोडीसे मिश्रित है.

यह रागिणी ठाठ कालिंगडा नंबर ६ के ठाटपर बजाई जाती है.

सरगम.

अस्ताई—सा रे ध रे सा नी रे रे सा नी ध प म प ग रे सा ।

अन्तरा—प म प सा सा ध रे सा प ग रे सा नी ध प म प ग रे रे सा नी ध प म प ग रे सा ।

अभोग—म प सा सां रे रे रे रे ग ग रे रे सा नी ध प सा सा सा रे ग ग ग रे रे सा ध प म प ग रे सा ।

वैराटी गत १ ली. ताल—सूलफाख्ता.

पड़दा. ७ ७ ८ ४ ८ ७ ७ ८ ८ ८ ८ ७ ६ ६ ४ ३ १ ३ ३ ९ ८ ४ ८ ७
स्वर. स स रे धा रे स स रे रे रे रे सा नि नि धा पा मा प प गा रे धा रे सा
बोल. दि ड दा डा दा दि ड दा डा दा दा डा दि ड दा डा दा दि ड दा डा दा दा डा
मात्रा. ॥ ॥ १ १ १ ॥ ॥ १ १ १ १ १ ॥ ॥ १ १ १ ॥ ॥ १ १ १ १ १
ताल. — — ═ — — ═
*|————————————|

तोडा १ ला.

पड़दा. १२ १० १२ १५ १५ १५ १५ १३ १६ १६ १५ १७ १७ १६ १५ १३ १३ १२ १० १२ ९ ९ ८ ७
स्वर पा मा पा स स सा सा धा रि रि सा गा गा रे सा ध ध पा मा पा ग ग रे सा
बोल. दा दा डा दि ड दा डा दा दि ड दा डा दा दा डा दि ड दा डा दा दि ड दा डा
मात्रा. १ १ १ ॥ ॥ १ १ १ ॥ ॥ १ १ १ १ १ ॥ ॥ १ १ १ ॥ ॥ १ १
ताल. ═ — — ═ — —

वैराटी गत २ री. ताल—खम्सा.

पड़दा. ७ ८ ४ ८ ७ ७ ७ ६ ८ ८ ८ ७ ६ ४ ३ १ ३ ९ ८ ७
स्वर. सा रे धा रे सा स स नी रे ए रि सा नी धा पा मा पा गा रे सा
बोल. दा डा दा डा दा दि ड दा दा C ड दा दा डा दां डा दा दा डा दा
मात्रा. १ १ १ १ १ ॥ ॥ १ १ ॥ ॥ १ १ १ १ १ १ १ १ १
ताल. ═ — — — —

---

* **नोट**—तोडा बजानेके पहिले इस गतको जहांसे जहांतक |————| ऐसी लकीर नीचे खींची है वहांतक बजाकर फिर समहीसे तोडा शुरू करे और तोडा खतम हो जानेके बाद उस गतका बाकी हिस्सा बजाकर फिर गत शुरूसे आखिरतक बजावे. यही क्रम समसे तोडे शुरू होनेवाली गतोंका जानना. बशर्ते कि गत समसे शुरू न हो.

तोडा १ ला.

पड़दा.	१२	१२	१०	१२	१५	१५	१३	१६	१६	१५	१५	१७	१७	१६	१६	१५	१५	१३	१२	१०	१२	९	८	७
स्वर.	पा	प	मा	प	स	स	धा	रि	रि	स	स	ग	ग	रे	रि	सा	स	धा	पा	मा	पा	गा	रे	सा
बोल.	दा	ड	दा	ड	दि	ड	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा	दा	डा	दा	दा	डा	दा
मात्रा.	१	॥	१	॥	॥	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	१	१	१	१	१
ताल.	==						—							—					—.					—

---

(३) रागिनी मधुमाधवी.

शृंगारस्वरूप—सुकुमार, सुंदर, कांती सतेज, श्यामवर्ण, पीला वस्त्र, नेत्रोंमें कज्जल धारण किये है: सर्वांगमें केशर लेपन किया है व पतिसह विलास करनेमें निमग्न है.

जाति—ओडव. गंधार व धैवत वर्ज्य. निषाद कोमल व न्यास है. मध्यम व निषाद प्रधान स्वर है. इस रागिणीका व वृंदावनी सारंगका स्वरूप बहुत कुछ एकसा है.

समय—ग्रीष्म व शरद ऋतुमें प्रातःकालमें या दो पहरमें वीर व शृंगार रसमें गाई जाती है. वियोगमें खुशी पैदा करती है. मल्हार, कल्याण, शुद्ध व मालश्रीसे मिश्रित है.

यह रागिणी ठाट काफी नंबर २ के ठाटपर बजाई जाती है.

स र ग म.

अस्ताई—म प प म नी सा रे रे रे नी सा ध ध ध प म पँ म नी सा।

अन्तरा—प म प नी सा सा सा रे रे रे रे नी सा ध ध ध म प रे सा।

अभोग—म प नी सा सा सा सा नी सा रे रे रे प प प म प ध म प म ध ध म प प प प म प रे सा।

मधुमाधवी गत १ ली. ताल—झप.

पड़दा.	१	३	३	१	५	७	८	८	८	८	८	५	५	७	४	४	४	४	३	१	३	५	७
स्वर.	मा	पा	पा	मा	नी	सा	रे	रि	रि	रि	रि	नि	नि	सा	धा	SS	धा	SS	पा	मा	पा	नी	सा
बोल.	दा	डा	दा	दा	डा	दा	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड	दा	डा	S	दा	S	दा	दा	डा	दा	डा
मात्रा.	१	१	१	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
ताल.	—			==		—				०				—			==		—			०	

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	१	३	३	१२	१२	१०	१२	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१४	१५	१३	१३	१०	१२	८	७।
स्वर.	मा	पा	पा	पा	ऽऽ	मा	पा	सा	स	स	सं	स	रे	रे	नी	सा	धा	धा	मा	पा	रे	सा
बोल.	दा	डा	दा	दा	S	दा	डा	दा	दि	ड	दि	ड	दा	दा	डा	दा	डा	दा	दा	डा	दा	डा
मॉत्रा.	१	१	१	१	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
तॉलं.	—			=		—			०				—			=		—			०	

---

(४) रागिणी सिन्धवी.

शृंगार स्वरूप—सुंदर परन्तु भव्य और क्रोधयुक्त, वस्त्रलाल, कानोंमें पुष्पोंके अलंकार पहिने हुए, एक हाथमें त्रिशूल व दूसरे हाथमें जपकी माला धारण किये है और अपने पतिकी भेंट होनेके अर्थ आतुर भई हुई शंकरजीका ध्यान कर रही है.

जाति—संपूर्ण. गंधार व निषाद कोमल. आरोहमें तीव्र व अवरोहमें कोमल निषाद लेते हैं. मध्यम ग्रह व प्रधान स्वर है. कितनेएकोंके मतसे धैवत प्रधान स्वर है.

समय—गीष्म ऋतुमें (शरदऋतुमें भी) दिनको तीसरे प्रहरमें वीररसमें गाते हैं. मुख्य उपराग—मधु व बलनेह. वीररस उत्पन्न करती है. अहीरी व आसावरीसे मिश्रित है.

यह रागिणीभी ठाट काफी नंबर ३ के ठाटपर बजाई जाती है.

स र ग म.

अस्ताई—ध नी सा ग रे सा सा ग रे सा ध नी सा सा सा नी सा ग रे सा।

अन्तरा—ग रे म ध नी सा ध नी सा सा सा सा सा नी सा सा ध नी सा ध नी सा सा सा नी सा ध ध नी सा ध नी सा ग रे सा।

अभोग—म ग प म ध नी सा ग रे सा सा सा नी सा ग ग रे रे म ग रे सा ग रे सा ध नी सा ध ध सा सा ध नी सा सा सा ध ध नी नी सा सा सा सा ग रे सा ध नी सा ग रे सा।

सिंधवी गत १ ली. ताल–झूमरा.

पड़दा.	४	५	७	९	९	८	७	७	७	७	९	८	७	२	५	७	९	८	७	४	४	४	५	५	९
स्वर.	धा	नी	ई	ग	ग	रे	स	स	सा	सा	गा	रे	सा	म	नि	सा	गा	रे	सा	धा	धा	ऽऽ	नि	नि	गा
बोल.	* दा	ड़ा	S	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	ड़ा	S	दि	ड़	द
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	१	१	॥	॥	१
ताल.	═					—					०					—				—					—

पड़दा.	८	८	७	७	९	८	७	४	४	७	९	९	८	७
स्वर.	रि	रि	सा	सा	गा	रे	सा	ध	ध	सा	ग	ग	रे	सा
बोल.	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताल.					०					—				

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	९	८	१०	१३	१३	१४	१५	१५	१५	१५	१३	१४	१५	१४	१४	१५	९	८	७
स्वर.	गा	रे	ए	ध	ध	नी	स	स	सा	सा	धा	नी	सा	नि	नि	सा	गा	रे	सा
बोल.	दा	दा	S	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	ड़ा
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१
ताल.	═					—					०					—			

---

(५) रागिणी बंगाली.

शृंगारस्वरूप—भाल विशाल, विभूति व कस्तूरीतिलकयुक्त, हास्य मंद, बेनी टेढी, सर्वांग चंदनचर्चित, स्वरूप जोगिनीसमान, मंत्र तंत्र जाननेवाली, वस्त्र केशरी, बाँए हाथमें त्रिशूल व दाहिने हाथमें कमलपुष्प धारण कीहुई लतामंडपमें बैठीहुई है.

जाति—ओड़व. ऋषभ व धैवत वर्ज्य हैं. मध्यम दोनों आते हैं.

समय—ग्रीष्मऋतुमें दिनमें पहिले अथवा चौथे प्रहरमें वीररसमें गाते हैं. वियोग व भय पैदा करनेवाली है.

यह धनाश्री, ललित, मारवा व गौरीसे मिश्रित है.

यह रागिणी ठाट कलिंगड़ा नंबर ६ के ठाटमें बजाई जाती है.

***नोट**—गतमें S और C ये चिन्ह १ एक और आधी ॥ मात्राके कीमत के हैं और गलेसे इनका उच्चारण आ (ऽऽ) और अ (ऽ) होता है. और स र ग म में जो स्वर हो उसीकी मात्रा (अ आ इ ई ए) जा होगी उसीके मानिंद इनका उच्चारण होगा. यह बात पीछे भी (पृ. १२२) लिख आये हैं.

सरगम.

अस्ताई—सा रे म प ध प ध म म ग ग म ग ध रे सा।

अन्तरा— म ध सा नी सा रे सा सा सा सा रे नी ध प ध म ध प म म ग म ध प म ग रे सा।

अभोग—म सा सा सा सा रे सा ग ग म म ग म ग ध रे सा सा सा म म ग ग रे रे ग म ग रे नी ध प प ध प ध म ग म ग म ग रे सा।

बंगाली गत १ ली. ताल तिताला.

पड़दा.	७	८	१०	१२	१३	१२	१३	१३	१०	१०	९	९	१०	१०	९	९	१३	१३	१३	१३	१०	१०	१३	१३
स्वर.	सा	रे	मा	पा	धा	पा	धा	ऽ	म	मा	गा	गा	म	म	ग	ग	ध	ध	धा	ध	मा	म	ध	ध
बोल.	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दा	दा	C	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दि	ड़
मात्रा.	१	१	१	१	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	॥	॥
ताल.			—				=					—							०					

|————————|

पड़दा.	१२	१३	१३	१०	१०	१२	१२	१२	१३	१०	९	१०	१०	९	८	८	८	७	
स्वर.	पा	ध	ध	मा	मा	प	पा	प	धा	मा	गा	म	म	गा	रे	ए	रि	सा	
बोल.	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	ध	रा	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	दा	C	ड़	दा	(?)
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	॥	१	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	॥	॥	१	
ताल.	—					=					—						०		

तोड़ा १ ला. (शुरू समसे)

पड़दा.	१०	१३	१३	१३	१५	१६	१५	१७	१७	१६	१६	१५	१५	१४	१४	१३	१०	१०	१२	९	१०	१०	१०
स्वर.	मा	धा	ऽ	ध	सा	रे	सा	गा	गा	रे	रि	सा	स	नि	नि	धा	म	म	पा	गा	मा	मा	ऽऽ
बोल.	दा	दा	C	ड	दा	दा	डा	दा	डा	दा	ड़	दा	ड	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	डा	S
मात्रा.	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	१	॥	१	॥	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.	=					—				०						—					=		

पड़दा.	९	९	९	१०	१०	९	९	७
स्वर.	गा	गा	ऽ	म	मा	गा	गा	सा
बोल.	दा	दा	C	ड़	दा	ड़ा	दा	ड़ा
मात्रा.	१	१	॥	॥	१	१	१	१
ताल.		—					०	

गतको पहिले बजाकर फिर जब तोड़ा बजाना चाहे तब गतके नीचे ऐसी |———| लकीर जहांतक खींची है वहीं तक गत बजाकर तोड़ा बजाना शुरू करे और उसके अनंतर फिर बाकी गत बजावे.

पाठ दूसरा.

२. राग मालकंस.

इस रागको मालकंस अथवा कौशिकभी कहते हैं.

शृंगारस्वरूप—इसका स्वरूप विष्णुके स्वरूपके समान है. शरीर भव्य व श्यामवर्ण, वय तरुण, चतुर, हास्यविनोदी, शृंगारप्रिय, वस्त्र पीला, मस्तकपर सुवर्णका मुकुट, कंठमें मौक्तिकहार व हाथमें गुलछब्बूके (निशागंध) के पुष्प धारण किये हुए स्त्रियों सहित अनेक प्रकारकी क्रीड़ा व विलास करता है.

जाति—ओडव. ऋषभ व पंचम वर्ज्य होकर बाकीके सब स्वर कोमल हैं. गंधार या मध्यम ग्रह व धैवत न्यास है. इसमें धैवत व निषाद ये स्वर मारू रागके हैं. कई एकोंके मतसे यह राग संपूर्ण जातिका है व ऋषभ कोमल है. परन्तु कोमल ऋषभ व कोमल गंधार इनके स्वरूपका लक्ष्य करनेसे कान्हड़ेका भास होता है. इस कारण इस रागमें ऋषभ व पंचम वर्ज्य करना चाहिये. जिससे शुद्ध मालकंस होगा.

समय—शिशिरऋतुमें उत्तर रात्रिमें वीररसमें गाते हैं. खुशी उत्पन्न करता है. परजी, बाहरी व हिंडोलसे मिश्रित है.

इस रागकी पांच रागिनियां हैं. तोड़ी १, गौरी २, गुणकली ३, खंबावती ४ व ककुभ ५.

यह राग ठाँट भैरवी नंबर २ के ठाटमें बजाया जाता है.

स्वर विस्तार धृपद.

॥ सा-नी, ध-नी-ध-म-ध-सा-नी-सा, ग-नी-सा-नी-ध-सा-नी-म-ग-म-ग-म-ग-सा-नी-ध, सा-सा-सा-नी-सा-नी-सा-नी-ध-म-ग-सा-नी-सा-ग-म ।

स र ग म.

अस्ताई—मा नी ध नी सा म म म म म ग म ग म ग ग ग ग म ग ग सा ।

अन्तरा—म ग म सा सा सा नी ध नी सा ध ध नी ध म म नी ध ध म नी ध म ग ग सा ।

अभोग—म सा सा सा नी ध नी सा म म म म ग ग म ग म ग ग ग सा म ग सा म म सा ग ग सा नी ध ध ध नी नी ध ध ध ध ध म नी ध म ध म म म ग ग सा ।

मालकंस गत १ ली. ताल–तिताला.

पड़दा. ७ ५ ७ ७ ५ ४ ४ ५ ७ १० १० १० ९ ९ ९ १० १० ९ ९ ७
स्वर. स नि सा स नि धा धा नी सा मा म म गा ग ग मा मा गा गा सा
बोल. दि ड दा दि ड दा डा दा दा डा दि ड दा दि ड दा ड़ा दा दा डा
मात्रा. ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ १ १ १ १ ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ १ १ १ १
ताल. ० — = — ० — = —

तोड़ा १ ला.

पड़दा. ७ ७ ९ ९ ९ १० १० १३ १४ १४ १५ १५ १४ १३ १३ १० १० ९ ९ ७
स्वर. स स गा ग ग मा मा धा नि नि सा सा नी ध ध मा मा गा गा सा
बोल. दि ड़ दा दि ड़ दा ड़ा दा दि ड़ दा ड़ा दा दि ड़ दा ड़ा दा दा ड़ा
मात्रा. ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ १ १ ॥ ॥ १ १ १ ॥ ॥ १ १ १ १ १
ताल. ० — = — ० — = —

मालकंस गत २ री. ताल–तिताला.

पड़दा. ९ ९ ९ ७ ७ ७ ७ ५ ७ १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० ९ ९ १० १३ १३ १४ १४
स्वर. ग ग गा स स सा सा नी सा मा म म मा म म मा मा मा मा मा ग ग मा ध ध नी नी
बोल. दि ड़ दा दि ड़ दा ड़ा दा दा ड़ा दि ड़ दा दि ड़ दा ड़ा दा दा ड़ा दि ड़ दा दि ड़ दा ड़ा
मात्रा. ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ १ १ १ १ ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ १ १ १ १ ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ १
ताल. ० — = — ० — = — ० —

पड़दा. १४ १४ १४ १३ १० १३ १३ १३ १३ १० ९ ९ ७
स्वर. नी नि नि धा मा धा ध ध धा मा गा गा सा
बोल. दा दि ड़ दा ड़ा दा दि ड़ दा ड़ा दा दा ड़ा
मात्रा. १ ॥ ॥ १ १ १ ॥ ॥ १ १ १ १ १
ताल. = — ० — = —

तोडा १ ला.

पड़दा. १५ १५ १४ १३ १३ १० ९ १० १३ १३ १४ १५ १४ १३ १३ १० ९ ९ ९ ७ ७ ७ ५ ७ ७ ४ ४
स्वर. स स नी ध ध मा गा मा ध ध नी सा नी ध ध मा गा गा गा सा स स नी स स धा धा
बोल. दि ड़ दा दि ड़ दा ड़ा दा दि ड़ दा ड़ा दा दि ड़ दा ड़ा दा दा ड़ा दि ड़ दा दि ड़ दा ड़ा
मात्रा. ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ १ १ ॥ ॥ १ १ १ ॥ ॥ १ १ १ १ १ ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ १
ताल. ० — = — ० — = — ० —

पड़दा.	४	५	५	७	९	१०	१३	१३	१३	१३	९	९	७
स्वर.	धा	नि	नि	सा	गा	मा	ध	ध	धा	धा	गा	गा	सा
बोल.	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.	=			—		०			—		=		—

तोडा २ रा.

पड़दा.	९	९	१०	१३	१३	१४	१५	१७	१७	१७	९	९	१४	१४	१४	४	४	९	९	७
स्वर.	ग	ग	मा	ध	ध	नी	सा	गा	ग	ग	गा	गा	नी	नि	नि	धा	धा	गा	गा	सा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=			—		•			—		=		—

मालकंस गत ३ री. ताल—तिताला.

		९ × ५-७								^ ९						^	^	^	^	
पड़दा. *	७	५	७	५	४	५	७	१०	१०	९	९	९	१०	१३	१३	१३	१३	१०	९	७
स्वर.	स	नि	सा	नि	ध	नी	सा	मा	मा	गा	ग	ग	मा	ध	ध	धा	धा	मा	गा	सा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=		—			०			—		=		—

तोडा १ ला.

						^ ९		^ ९			१७-१८	१७-१८				^ ९		^ ९		
पड़दा.	१०	१०	१०	१३	१३	१४	१५	१४	१५	१५	१७	१७	१५	१५	१५	१४	१५	१४	१५	१५
स्वर.	म	म	मा	ध	ध	नी	सा	नी	सा	सा	म	म	सा	स	स	नी	सा	नी	सा	सा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=		—			०			—		=		—

---

* **नोट**—इस तीसरी गतके बजानेमें गतके ऊपर जो २ चिन्ह दिये हैं वे चिन्ह (पृ० ३१-३६) गमकके बयानमेंसे जहां २ के हों देखकर उसीके अनुसार ठीक २ रीतिसे गतके बजानेका अभ्यास करे. यह सूचना तो करही दी है कि, जहां २ जो २ चिन्ह गतोंमें आवें वे यथास्थित ठीक २ याद कर ले तब गत बजावे.

	^	^				^		^			^		^		^	^	^	^		
पड़दा.	१४	१४	१३	१०	१०	९	१०	९	१०	१०	९	१०	१०	१३	१३	१४	१३	१०	९	७
स्वर.	नि	नि	धा	म	म	गा	मा	गा	म	म	गा	मा	मा	ध	ध	नी	धा	मा	गा	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=		—		०			—		=		—	

मालकंस गत ४ थी. ताल—तिताला.

																				⌒ १७-१८
पडदा.	५	७	७	५	७	९	१०	१०	९	१०	१०	१०	१५	१३	१४	१५	१५	१५	१५	१७
स्वर.	नी	स	स	नी	सा	गा	म	म	गा	मा	ऽऽ	ऽ	सा	ध	नी	सा	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	मा
बोल.	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	S	C	दा	ड़	दा	दा	S	S	S	दा
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	१	॥	१	१	१	१	१	१
ताल.	—					०					—					=				—

पडदा.	१५	१५	१५	१५	१४	१५	१५	१४	१४	१४	१४	१३	१३	१०	१०	१०	१०	१०	१३	१३
स्वर.	स	सा	सा	ऽ	नी	स	स	नि	नि	नि	नि	धा	ध	मा	म	मा	मा	म	धा	ध
बोल.	ड़	दा	दा	C	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	ड़	दा	ड़
मात्रा	॥	१	१	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	॥	१	॥
ताल.					०								—					—		

	^																				
पडदा.	१४	१४	१४	१४	१३	१०	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१३	१३	१०	१०	९	१०	७	७	७
स्वर.	नी	नी	ई	नी	धा	मा	नि	नि	नि	नि	निं	नि	धा	ध	मा	म	गा	मा	सा	सा	सा
बोल.	दा	दा	S	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	ड़ा	दा	ड़ा
मात्रा.	१	१	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	१	१	१
ताल.	—					०							—					—			

मालकंस गत ५ वी. ताल—चौताला या ध्रुपद.

पडदा.	*१३	९	१०	१०	९	५	७	७	५	४	१	४̐	१	१	४	४	५	७	५	७	७
स्वर.	धा	गा	मा	ऽऽ	गा	नी	सा	ऽऽ	नी	धा	मा	गाँ	म	म	ध	ध	नी	सा	नी	स	स
बोल.	दा	ड़ा	दा	S	दा	ड़ा	दा	S	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़
मात्रा.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	१	१	१	॥	॥
ताल.			=					०					—							०	

* नोट—इस पंचवीं गतमें जो { ४̐ गाँ ड़ा १ } यह बोल आया है वह जोडीके यानी दोनों पीतलके षडज तारके ४ थे पडदेपर बजाना। [पृ. १२३ नोट २ देखो.]

पड़दा.	४	४	५	५	७	७	१०	१०९	१०	१०	९	१०	१०	५	७
स्वर.	ध	ध	नि	नि	सा	स	मा	मगा	मा	SS	गा	म	म	नो	सा
बोल.	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़दा	ड़ा	S	दा	दि	ड़	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥१	१	१	१	॥	॥	१	१
ताल.								—					—		

तोडा १ ला.

पड़दा.	९	७	७	१०	१०	९	९	१०	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१४	१४	१५	१५	१४	१४	१३
स्वर.	गा	स	स	म	म	ग	ग	मा	ध	ध	नि	नि	सा	स	नी	नि	स	स	नी	नि	धा
बोल.	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा
मात्रा.	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	॥	॥	१	॥	१
ताल.				—									०								—

पड़दा.	१३	१०	१०	९	७	५	५	७	७	१३	१३	१०	१०	९	९	७	७	५	५
स्वर.	ध	म	म	गा	सा	नि	नि	स	स	धा	ध	मा	म	ग	ग	स	स	नि	नि
बोल.	ड़	दि	ड़	दा	ड़ा	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़
मात्रा.	॥	॥	॥	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	॥
ताल.							०								—				

पड़दा.	१	१	४	४	५	७
स्वर.	मा	म	धा	ध	नी	सा
बोल.	दा	ड़	दा	ड़	दा	ड़ा
मात्रा.	१	॥	१	॥	१	१
ताल.			—			

(१) रागिणी तोड़ी (टोड़ी)

शृंगार स्वरूप—यह रागिनी कुमारी, हास्य मन्द व कटाक्षयुक्त, वर्ण गौर, वस्त्र श्वेत, कंचुकी श्याम, शरीरमें केशर व कर्पूरका लेपन की हुई, उपवनके स्थानमें लतामंडपके तरे बैठी है; रुद्रवीणा बजाकर गायन कर रही है. साम्हने गायनके माधुर्यसे लुब्ध होकर मृग तटस्थ हुए हैं.

जाति—संपूर्ण, मध्यम तीव्र व बाकीके स्वर कोमल हैं. आरोहमें शुद्ध व अवरोहमें कोमल निषाद लेते हैं. गंधार प्रधान स्वर है. गंधारसे धैवततक ग्रह व न्यास है. गंधार व मध्यम अंशस्वर है. मध्यमभी ग्रह होता है. इस रागिणीमें गंधार यह समका स्वर है इस सबबसे जिस भैरवीमें गंधारपर सम होता है उस भैरवीको तोड़ी भैरवी कहते हैं, यह तोड़ी रागिणी आसावरी, धनाश्री, व षटसे मिश्रित है.

समय—शरद व हेमंत ऋतुमें पहिले व दूसरे पहरमें शृंगाररसमें गाते हैं.

मुख्य उपराग—मारू व मेवाड़ हैं. तासीर वियोग उत्पन्न करती है.

यह रागिणी ठाट नंबर १० के ठाटमें बजाई जाती है. और कोई २ इसे ठाट भैरवी नंबर २ के ठाटमें भी बजाते हैं.

सरगम.

अस्ताई—सा ध नी सा रे ग ग ग म प ध प म ग रे सा।

अन्तरा—ग ग म प ध नी नी नी सा सा सा सा ध नी सा सा नी नी ध प म प ध प म ग रे सा।

अभोग—म प ध नी नी सा सा सा सा सा सा रे ग ग ग ग रे सा ग ग रे रे सा सा रे ग ग म ग ग रे सा सा ध नी नी सा सा ध प म प ध प म ग रे सा।

टोडी गत १ ली. ताल—तिताला. (ठाट नंबर १० पर.)

पड़दा.	७	७	४	५	५	७	८	९	९	९	११	११	१२	१३	१३	१२	११	९	८	७
स्वर.	स	स	धा	नि	नि	सा	रे	गा	गा	गा	म	म	पा	ध	ध	पा	मा	गा	रे	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			—						=				—					०		

तोडा १ ला.

पड़दा.	९	९	९	११	११	१२	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१४	१३	१३	१२	११	९	८	७
स्वर.	ग	ग	गा	म	म	पा	धा	नी	नि	नि	सा	सा	नी	ध	ध	पा	मा	गा	रे	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			—					=					—					०		

टोडी गत २ री. ताल—तिताला. (ठाट कलिंगड़ा नंबर ६ पर.)

पड़दा.	७	७	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	९	१०	१४	१४	१३	१२	१०	९	८
स्वर.	स	स	गा	ग	ग	गा	गा	मा	म	म	मा	गा	मा	नि	नि	धा	पा	मा	गा	रे
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल			०			—		=			—		•			—		—		—

तोड १ ला.

पड़दा.	१२	१२	१२	१३	१३	१५	१५	१५	१५	१५	१४	१४	१५	१६	१६	१५	१४	१३	१२	१२
स्वर.	प	प	पा	ध	ध	सा	सा	सा	सा	सा	नि	नि	सा	रि	रि	सा	नी	धा	पा	पा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			•			—		=		—			०			—		=		—

पड़दा.	१५	१५	१४	१३	१३	१२	१०	१२	१४	१४	१३	१२	१०	९	९	९	१०	९	८	७
स्वर.	स	स	नी	ध	ध	पा	मा	पा	नि	नि	धा	पा	मा	ग	ग	गा	मा	गा	रे	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=			—		०			—		=		—

टोडी गत ३ री. ताल–तिताला. (ठाट भैरवी नंबर २ पर)

पड़दा.	८	८	७	५	५	७	८	९	९	९	१२	१२	११	१०	१०	१२	११	९	८	७
स्वर.	रि	रि	सा	नि	नि	सा	रे	गा	गा	गा	प	प	मा	म	म	पा	मा	गा	रे	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=		—			०			—		=		—

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	८	८	९	११	११	१२	१३	१४	१४	१४	१४	१३	११	१३	१३	१२	११	९	८	७
स्वर.	रि	रि	गा	म	म	पा	धा	नी	नि	नि	नी	धा	मा	ध	ध	पा	मा	गा	रे	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=			—		०			—		=		—

तोडा २ रा.

पड़दा.	१७	१७	१६	१५	१५	१४	१३	१४	१४	१४	१४	१३	११	१३	१३	१२	११	९	८	७
स्वर.	ग	ग	रे	स	स	नी	धा	नी	नि	नि	नी	धा	मा	ध	ध	पा	मा	गा	रे	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=			—		०			—		=		—

तोडा ३ रा.

पड़दा.	८	८	७	५	५	४	३	२	२	२	४	४	५	५	५	७	९	९	८	७
स्वर.	रि	रि	सा	नि	नि	धा	पा	मा	म	म	धा	धा	नी	नि	नि	सा	गा	गा	रे	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=		—		०				—		=		—

टोडी गत ४ थीः ताल–ब्रह्मताल, (ठाट नंबर १० पर.)

पडदा.	१३	१२	१२	११	९	९	८	८	६	६	७	७	२	२	२	४	७	७	८	८	६	७	११	१२	१२
स्वर.	धा	प	प	मा	गा	SS	रि	रि	नि	नि	स	स	मा	S	म	धा	सा	SS	रि	रि	नी	सा	मा	प	प
बोल.	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	S	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	C	ड़	दा	ड़ा	S	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥
ताल.	=			०		—			—				०			—		—			—		०		

पडदा.	९	९	८	८	७	७	२	२	४	४	३	३	६	६	७	७
स्वर.	ग	ग	रे	रि	सा	स	म	म	ध	ध	प	प	नी	नि	सा	स
बोल.	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़
मात्रा.	॥	॥	१	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥
ताल.	—			—			—				—				०	

तोडा १ ला.

पडदा.	९	८	११	१२	११	१३	१३	११	१२	१४	१४	१५	१५	१४	१४	१३	१३	१२	११	११	९	९
स्वर.	गा	रे	मा	पा	मा	ध	ध	मा	पा	नि	नि	स	स	नी	नि	धा	ध	पा	म	म	ग	ग
बोल.	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा	दि	ड़	दि	ड़
मात्रा.	१	१	१	१	१	॥	॥	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	॥	॥	॥	॥
ताल.	=		०		—			—		०				—		—			—			

पडदा.	८	८	७	७	२	४	२	२	६	७	४	४	८	८	७	७
स्वर.	रे	रि	सा	स	मा	धा	म	म	नी	सा	ध	ध	रे	रि	सा	स
बोल.	दा	ड़	दा	ड़	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़
मात्रा.	१	॥	१	॥	१	१	॥	॥	१	१	॥	॥	१	॥	१	॥
ताल.	०		—			—			—		—				०	

---

(२) रागिणी गौरी या गोडी.

शृंगारस्वरूप—यह ज्ञात यौवना, वर्ण श्याम, स्वर कोकिलासमान, भाषण मिष्ट, वस्त्र श्वेत, कानोंमें कर्णफूल, हाथमें आम्रमंजरी, अभिनय इतना प्रेम भराहुआ कि किंचित्

मद्यपान कियेहुएका भास होवे; मानसिक श्रमसे गात्र शिथिल हो जानेके कारण गायन करनेको असमर्थ भईसी जान पडती है.

जाति—संपूर्ण. ऋषभ व धैवत कोमल. मध्यम तीव्र. आरोहमें गंधार वर्ज्य होकर धैवत प्रधान स्वर है. ऋषभसे धैवततक ग्रह व न्यास है. कई लोगोंके मतसे निषाद ग्रह व ऋषभ न्यास है. पंचमपर ठहरकर धैवतपरसे ऋषभका लाग लेना चाहिये. इस रागिनीमें कुछ थोडीसी सोहिनी की छाया है ऐसा भास होता है.

समय—शिशिरऋतुमें दिनके चोथे पहरमें शृंगाररसमें गाते हैं.

मुख्य उपराग—बडहंस. वियोगी खुशी पैदा करती है.

यह जैजैवंती, आसावरी शुद्ध व सोरठसे मिश्रित है.

यह रागिणी ठाट कालिंगडा नंबर ६ पर बजेगी.

सरगम

अस्ताई—सा प ध म म ग रे रे ग रे म म ग रे ग ग रे सा।

अन्तरा—प ध सा सा सा रे रे रे ग रे सा सा सा ध प म ग ग ग म म ग रे ग ग रे सा।

अभोग—म म सा सा सा सा सा सा रे सा ग रे सा ग ग म म म ग ग रे रे सा सा सा ध प म ग ग रे म म ग रे ग रे ग ग रे सा।

गौरी गत १ ली. ताल—तिताला.

पड़दा. *	८	८	७-८	७	७	८-७	४	६	७	७	८	८	७-८	७	८	९	८	७	६	६
स्वर.	रि	रि	स-रि	स	स	रि-स	धा	नी	सा	सा	रि	रि	स-रि	स	रि	गा	रे	सा	नी	नी
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=		—			०			—		=		—

* इस गतमें जहां दो पड़दोंको मिलाकर एक द्रा बोलता है.

जैसे ८-७ रिस दा, ७-८ सरि दा, ९-१० गम दा इत्यादि हैं-वे बोल दोनों ऊँगलियोंसे बजाना चाहिये.

एक पड़देपर द् और दूसरेपर अ. तब द अ मिलकर द्रा होगा. परन्तु मिजराब एकही वार आकर्ष करे. पहिले पड़देपर ऊँगली रखतेही मिजराबसे द् निकालकर झट दूसरी ऊँगली दूसरे पड़देपर रख देवे जिससे द्रा निकलेगा.

तोडा १ ला.

पड्दा.	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	९	९	९	९-१०	१०	८	७	७
स्वर.	स	स	सा	रि	रि	गा	गा	मा	मा	मा	म	म	गा	ग	ग	ग-म	मा	रे	सा	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=		—			०			—		=		—

पड्दा.	७	७	७	८	८	९-१०	१०	८	७	७	८	८	७-८	७	८	९	८	७	६	६
स्वर.	स	स	सा	रि	रि	ग-म	मा	रे	सा	सा	रि	रि	स-रि	स	रि	गा	रे	सा	नी	नी
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=		—			०			—		=		—

---

(३) रागिणी गुणकली.

शृंगारस्वरूप— यह रागिनी विरहनी, है; वस्त्र मलीन, केशमुक्त, व शरीर शुष्क होकर शृंगारभूषण अस्ताव्यस्त (बिखरे) हुए हैं. पतिविरहसे उत्पन्न हुई उदासीनता व निराशासे कष्टी अर्थात् अति दुखित होकर उपवनमें वृक्षके नीचे बैठकर रुदन करती है. आंसुओंसे कंचुकी आर्द्र होगई है और हृदय श्वाससे भरा है.

जाति—ओडव, गंधार व निषाद वर्ज्य. ऋषभ व धैवत कोमल. मध्यम शुद्ध. अन्यमतसे जाति षाडव समझें तो शुद्ध गंधार लेना.

समय—शरद ऋतुमें दिनको पहिले प्रहरमें गाते हैं.

मुख्य उपराग—चन्द्रक व भ्रमर हैं. खुशी उत्पन्न करती है,

यह आसावरी, वैराटी व सिंधवीसे मिश्रित है. कितनेएकोंके मतसे इसमें षड्ज, मध्यम, पंचम शुद्ध लगते हैं और बाकी सब तीव्र लगते हैं.

इससे यह रागिणी ठाट यमन नंबर १ पर बजाई जाती है और इसमें कहीं २ गंधार निषाद भी लगा देते हैं.

स र ग म.

अस्ताई—सा रे नी सा रे रे रे रे सा सा रे सा ।

अन्तरा—म प नी सा सा सा सा सा़ सा रे रे नी सा सा सा रे रे रे रे नी सा रे सा

अभोग—प नी सा सा सा सा सा रे रे नी सा सा सा रे रे रे रे नी सा सा सा म म ग म ग रे सा सा ग रे सा सा सा नी ध नी नी ध सा सा सा ध ध प प ग ग रे सा ।

गुणकली गत १ ली. ताल–चौताला या ध्रुपद.

पड़दा.	७	८	८	६	७	८	८	८	८	८	७	१५	१५	८	७	७	७	१५	१५	८	८	८
स्वर.	सा	रि	रि	नी	सा	रे	रे	रे	रि	रि	सा	स	स	रे	सा	सा	सा	सा	सा	रे	रे	रे
बोल.	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	१	१	१	१
ताल.	—			—		═		०			—			०		—		—		═		०

पड़दा.	८	८	७	८	८	६	७
स्वर.	रि	रि	सा	रि	रि	नी	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताल.			—			०	

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	१०	१२	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१५	८	८
स्वर.	मा	पा	नी	स	स	सा	सा	सा	स	स	रे	रि	रि	नी	सा	सा	स	स	सा	रे	सा	रे	रे
बोल:	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.	—		—			═		०			—			०		—			—		═		०।

पड़दा.	८	८	७	८	६	६
स्वर.	रि	रि	सा	रे	नी	नी
बोल.	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	१	१	१
ताल.			—		०	

(४) रागिणी खम्बावती.

शृंगारस्वरूप—यह रागिनी सुकुमार, मृगाक्षी, हंसगामिनी, लज्जावती है. इसका वर्ण गौर; स्वर कोकिला समान, वस्त्र हरा, कंचुकी लाल, कंठ अलंकारोंसे सुशोभित, ललाटमें अर्थात् माथे या भालमें ऊर्ध्व कुंकुमरेषा खींचीहुई है और आनंदसे नृत्य व गायन करनेमें तल्लीन हुई है.

जाति—संपूर्ण. आरोहमें शुद्ध व अवरोहमें कोमल निषाद लेते हैं. गंधार तीव्र व बाकीके स्वर शुद्ध हैं. आरोहमें ऋषभ व धैवत नहीं आता. गंधारग्रह व प्रधान स्वर है. निषाद न्यास है. किसी २ के मतसे गंधार या पंचम न्यास है. षड्ज शुद्ध, मध्य, ऋषभ, गंधार, व धैवत तीव्र; निषाद अति कोमल है. मालश्री और मल्हारसे मिश्रित है. खुशी उत्पन्न करती है.

समय—शरदऋतुमें दिनके तीसरे प्रहरसे रात्रिके तीसरे प्रहरतक शृंगाररसमें गाते हैं.

मुख्य उपराग—नंद, मीन व द्रुग हैं.

इसे स्तंभावती, कुंबाएती, और खमाच भी कहते हैं.

यह रागिणी ठाट खम्माच या देस, नंबर ९ के ठाटपर बजती है.

सरगम.

अस्ताई—ध म ग रे सा नी सा ग म ध ध म ग रे सा।

अन्तरा—म ध सा सा सा ध सा नी सा नी सा ध नी ध म ध म ग म ग रे सा।

अभोग—म सा सा सा रे नी सा नी सा सा नी म म ग ग रे रे म ग रे सा सा सा सा नी ध म ध म ग ग म ध म ग रे सा।

खम्बावती गत १ ली. ताल—तिताला.

पड़दा.	८	८	१०	१०	१२	१२	१३	१३	१२	१३	१३	१२	१२	१०	१०	१०	१०	९	९	८
स्वर.	रे	रे	मा	मा	पा	पा	धा	धा	पा	ध	ध	प	प	म	म	मा	म	गा	ग	रे
बोल.	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा
मात्रा.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.	=				—				०							—				

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	८	१५	१५	१४	१४	१५	१५	१४	१४	१३	१३	१२	१०	१३	१३	१२	१२	१०	१०	९	९	८	८	८
स्वर.	रे	स	स	नि	नि	स	स	नी	नि	धा	ध	पा	मा	ध	ध	प	प	म	म	गा	ग	रे	रि	रे
बोल.	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा
मात्रा.	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.	=							—					०							—				

खम्बावती गत २ री. ताल तिताला:

पड़दा.	८	८	६	७	७	८	९	८	९	९	१०	१०	९	८	८	७	७	६	७	७
स्वर.	रि	रि	नी	स	स	रे	गा	रे	गा	गा	म	म	गा	रि	रि	सा	सा	नी	सा	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=		—			०			—		=		—

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१२	१०	९	९	१०	१०	९	८	८	७	७	६	७	७
स्वर.	प	प	पा	प	प	धा	पा	मा	गा	गा	म	म	गा	रि	रि	सा	सा	नी	सा	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=		—			०			—		=		—

खम्बावती गत ३ री: ताल–शूलफाख्ता.

पड़दा.	१३	११	९	८	८	७	५	७	९	११	१३	१३	९	११	१३	१३	११	९	९	८	७	७	५	७
स्वर.	धा	मा	गा	रि	रि	सा	नी	सा	गा	मा	ध	ध	गा	मा	धा	धा	मा	ग	ग	रे	स	स	नी	सा
बोल.	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताल.	—		—			०		=		०			—		—		०			=			०	

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	९	११	१३	१४	१४	१५	१५	१४	१५	१४	१५	१५	१४	१३	११	१३	१३	११	९	९	९	८	७
स्वर.	गा	मा	धा	नि	नि	सा	सा	नी	सा	नी	स	स	नी	धा	मा	ध	ध	मा	गा	गा	गा	रे	सा
बोल.	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	ड़ा
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	१
	—		—			०		=		०			—		—			०		=		०	

---

(५) रागिणी ककुभ (या कोकवा)

शृंगारस्वरूप—विलासिनी. जागरन करनेसे नेत्र आरक्त व जड़ दिखाई देते हैं. वस्त्र बिगलित, केश व कंचुकीकी ग्रंथी मुक्त होकर कपोलोंपर दंतचिह्न दिखाई देते हैं. गलेका

पुष्पहार तुटा हुआ, शृंगार भूषण सब अस्ताव्यस्त (बिखरे) हुए हैं; शरीरपर सुरत चिह्न दिखाई देते हैं; श्रमसे गात्र शिथिल व भारी हो जानेसे गति मंद हुई है; विनयका त्याग करके पतिके मुखकी तरफ टक लगाकर देख रही है.

जाति—संपूर्ण है; तथापि धैवत क्वचित् लेते हैं. निषाद कोमल व बाकीके स्वर शुद्ध हैं. ऋषभ प्रधान स्वर है. आरोहमें गंधार व धैवत वर्ज्य हैं.

समय—शरदऋतुमें मध्यरात्रके अनंतर शृंगाररसमें गाते हैं. किसी २ के मतसे समय दुपहरकाभी है. तब षड्ज व पंचम शुद्ध; ऋषभ, गंधार व धैवत तीव्र; मध्यम कोमल व निषाद दोनों लगते हैं.

मुख्य उपराग—खोखर व प्रबल हैं.

यह बिलावल, देवगिरी, पूर्वी, गंधारी, सोरठ व मारूसे मिश्रित है. खुशी उत्पन्न करती है.

यह रागिणी यमन नंबर १ के ठाटमें बजती है.

स र ग म.

अस्ताई—ध नी सा ग रे नी सा नी नी नी प प ध ध ध प म प म ग ग
६ ५ ५
ग ग रे नी नी सा ।
५ ६

अन्तरा—प प प ध ध नी सा नी सा सा सा सा सा सा नी ध प ग म प ग
ग रे नी नी सा ।
५

अभोग—प प ध ध नी सा सा सा सा ध ध नी सा ग रे सा रे सा रे सा ग ग ग ग रे सा ग रे सा ध ध प ग म प ग ग रे नी नी सा ।

ककुभ गत १ ली. ताल—झप.

पड़दा.	४	५	६	७	९	८	६	७	६	५	६	१२	१२	१३	१२	१०	९	८	५	७
स्वर.	धा	नी	नी	सा	गा	रे	नी	सा	नी	नी	नी	पा	पा	धा	पा	मा	गा	रे	नी	सा
बोल.	दा	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दा	ड़ा
मात्रा.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
ताल.	—			=		—			०		—			=		—			०	

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	१२	१२	१३	१४	१५	१५	१४	१५	१५	१४	१३	१२	९	१०	१२	१२	९	९	८	७
स्वर.	पा	पा	धा	नी	सा	सा	नी	सा	सा	नी	धा	पा	गा	मा	पा	पा	गा	गा	रे	सा
बोल.	दा	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दा	ड़ा
मात्रा.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
ताल.	—			=		—			०		—			=		—			०	

पाठ तीसरा.

३. राग हिंडोल.

शृंगारस्वरूप—यह राग विलासी, आनंदी, श्याम वर्ण, पीत वस्त्र, है. मस्तकपर मुगुट धारण किया है. हिंडोलेपर बैठकर स्त्रियोंके साथ क्रीडा कररहा है; व मंद और गंभीर स्वरसे गायन करता है. इसकी उत्पत्ती ब्रह्मदेवसे कही गई है.

जाति—ओडव. ऋषभ व पंचम वर्ज्य. मध्यम तीव्र व बाकीके स्वर शुद्ध हैं. निषाद ग्रह व गंधार न्यास है; उसी प्रकार निषाद व गंधार प्रधान स्वर है. आरोहमें निषाद क्वचित् आता है. इस रागमें स्वरोंकी गति समुद्रके गंभीर व मंद गतिसे बहनेवाले तरंगोंके समान है.

कईएकोंके मतसे यह राग संपूर्ण जातिका होकर इसकी उत्पत्ती भैरव, मालकंस, ललित व बिलावल इन रागोंसे हुई है. षड्ज शुद्ध, ऋषभ शृंगारिक, गंधार, धैवत, निषाद तीव्र, मध्यम दोनों लगते हैं. पूरिया, ललित व पंचमसे मिश्रित है.

समय—वसन्तऋतुमें दूसरे अथवा तीसरे प्रहरमें शृंगाररसमें गाते हैं. प्रसन्नता उत्पन्न करता है.

इस रागकी पांच रागिणी हैं—रामकली १, देशाख्य २, ललित ३, बिलावल ४, व पटमंजरी ५.

इस रागका स्वरविस्तार इस प्रकारसे है:—

ललित बिलावलके स्वर—ध सा ध प म। **मालकंस**—ध सा नी ध सा। **भैरव**—रे नी सा ग रे सा। **ललित**—नी ग रे सा। **बिलावल**—ग प ध प। **भैरव बिलावल**—ग रे ग प म ग म ग रे सा ध म ग रे ग म रे सा। **मालकंस**—ध सा ध नी।

भैरव ललित–रे सा नी रे नी ध प ध प। **बिलावल भैरव**–ध प नी ध प म ध ग म। **भैरव**–ग रे सा नी रे सा। **बिलावल**–ग म ध प। **मालकंस**–ध सा नी ध सा। **बिलावल**–ध म ग म रे सा। **भैरव ललित**–ग म ध नी प म.

कोई २ इसे शामके समय यानी दिनके अंतमें संध्यासमयमें गाते हैं और वसंत ऋतुमें हरवक्त गाते हैं.

यह राग ठाट हिंडोल नंबर ७ के ठाटमें बजेगा.

स र ग म.

अस्ताई—सा ग म ध नी सा नी ध सा नी सा नी ग रे ग म ग रे सा।

अन्तरा—ग म ध नी सा सा सा सा सा नी ध ध म म सा सा नी ध ध ध नी नी ध ध म ध नी ग रे सा।

अभोग—म म ध ध म म ध ध ध ध नी नी सा सा सा सा ग ग नी सा सा सा ग ग ग म ग ग म मँ ध नी सा सा सा सा सा नी ध म ग रे सा।

हिंडोल गत १ ली. ताल–तिताला.

पड़दा.	६	६	६	८	८	९	११	१३	१४	१४	१३	११	९	९	९	९	११	९	८	७
स्वर.	नि	नि	नी	रि	रि	गा	मा	धा	नि	नि	धा	मा	गा	ग	ग	गा	मा	गा	रे	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=			—		०			—		=		—

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	७	७	६	८	८	७	६	४	२	४	२	२	२	२	७	७	७	७	७
स्वर.	स	स	नी	रि	रि	सा	नी	धा	मा	धा	मा	मा	मा	मा	स	स	सा	सा	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	१	१	१	१	॥	॥	१	१	१
ताल.			०			—		=		—		०		—			=		—

तोड़ा २ रा.

पड़दा.	७	७	७	६	६	४	२	४	२	२	४	७	६	८	८	४	६	८	७	७
स्वर.	स	स	सा	नि	नि	धा	मा	धा	म	म	धा	सा	नी	रि	रि	धा	नी	रे	सा	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=			—		०			—		=		—

तोड़ा ३ रा.

पड़दा.	९	९	९	११	११	१३	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१४	१६	१६	१४	१३	११	९	९
स्वर.	ग	ग	गा	म	म	धा	नी	सा	सा	सा	स	स	नी	रि	रि	नी	धा	मा	गा	गा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=		—			०			—		=		—

पड़दा.	९	९	९	११	११	१३	१४	१६	१४	१४	१३	११	९	९	९	९	११	९	८	७
स्वर.	ग	ग	गा	म	म	धा	नी	रे	नि	नि	धा	मा	गा	ग	ग	गा	मा	गा	रे	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=			—		०			—		=		—

हिंडोल गत २ री. ताल–तिताला.

पड़दा.	९	९	९	९	७	७	१५	१४	१४	१३	१२	१३	१३	१३	११	९	९–७	९	९
स्वर.	गा	गा	ग	ग	सा	सा	सा	नि	नि	धा	पा	धा	ध	ध	मा	गा	ग-स	गा	गा
बोल.	दा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.		०			—		=			—		०			—		=		—

पड़दा.	९	९	९	९	९	९	६	७	७	९	९	११	१३	१३	१३	१३	१३	११	९
स्वर.	गा	गा	ग	ग	गा	गा	नी	स	स	गा	गा	मा	ध	ध	धा	धा	धा	मा	गा
बोल.	दा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.		०			—		=			—		०			—		=		—

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	९	९	९	११	११	१३	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१४	१६	१६	१४	१३	११	१०	१०
स्वर.	ग	ग	गा	म	म	धा	नी	सा	सा	सा	स	स	नी	रि	रि	नी	धा	मा	मा	मा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=		—			०			—		=		—

पड्दा.	१०	१०	१०	११	११	१३	१४	१६	१४	१४	१३	११	९	९	९	९	११	९	८	७
स्वर.	म	म	मा	म	म	धा	नी	रे	नि	नि	धा	मा	गा	ग	ग	गा	मा	गा	रे	सा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=			—		०			—		=		—

हिंडाल गत ३ री. ताल–तिताला.

			^		^		^											^	^		^	^		
पड्दा.	७	७	९	९	११	११	१३	१३	१४	१३	१३	१४	१४	१३	११	९	९	१४	१४	१३	१४	१४	१३	११	९
स्वर.	सा	सा	गा	गा	मा	मा	धा	धा	नी	धा	ऽऽ	नि	नि	धा	मा	गा	गा	नी	नी	धा	नी	नी	धा	मा	गा
बोल.	दा	डा	दा	डा	दा	डा	दा	डा	दा	डा	ऽ	दि	ड	दा	दा	दा	डा	दा	डा	दा	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
ताल.	•				—				=					—				०				—			

पड्दा.	९	१४	१४	१३	१३	१३	१३	११	११	९	९	९
स्वर.	गा	नि	नि	ध	ध	ध	ध	मा	म	गा	ग	गा
बोल.	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा
मात्रा.	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.	=							—				

तोड़ा १ ला.

			^								^	^											
पड्दा.	९	९	११	११	१३	१५	१५	१५	१५	१५	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१७	१५	१५	१५	१५	१५	१५
स्वर.	गा	ग	मा	म	धा	सा	स	सा	स	सा	नी	नी	स	स	स	स	गा	स	स	स	स	स	स
बोल.	दा	ड	दा	ड	दा	दा	ड	दा	ड	दा	दा	डा	दि	ड	दि	ड	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड
मात्रा.	१	॥	१	॥	१	१	॥	१	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥
ताल.	०					—					=						—						

	^																						
पड्दा.	१४	१४	१३	१३	११	१३	१३	११	११	१३	९	९	११	११	११	११	९	१३	१३	११	११	९	९
स्वर.	नी	नि	धा	ध	मा	धा	ध	मा	म	धा	गा	गा	म	म	म	म	गा	ध	ध	म	म	ग	ग
बोल.	दा	ड	दा	ड	दा	दा	ड	दा	ड	दा	दा	डा	दि	ड	दि	ड	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड
मात्रा.	१	॥	१	॥	१	१	॥	१	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥
ताल.	•					—					=						—						

हिंडोल गत ४ थी. ताल—सवारी.

पड़दा. *	२	४	७	७	६	४	६	६	२	४	२	४	२	२	४	४	६	७
स्वर.	मा	धा	सा	ऽऽ	नी	धा	नी	ई	मा	धा	मा	गॉ	म	म	ध	ध	नी	सा
बोल.	दा	ड़ा	दा	ऽ	दा	ड़ा	दा	ऽ	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़ा
मात्रा.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	१	१
ताल.			=			—				—					—			

पड़दा.	९	११	११	९	९	१३	१३	११	११	९	९	६	७	७	४	६	६	२	४
स्वर.	गा	म	म	ग	ग	ध	ध	मा	म	गा	ग	नी	सा	ऽऽ	धा	नि	नि	मा	धा
बोल.	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा	ड़ा	ऽ	दा	दि	ड़	दा	ड़ा
मात्रा.	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	१	१	॥	॥	१	१
ताल.		=						—					—						—

तोड़ा १ ला.

पड़दा,	१५	१४	१४	१३	१३	१४	१४	११	१४	१४	१३	१३	११	११	९	९	७	७	६	६	२	२
स्वर.	सा	नि	नि	ध	ध	नि	नि	मा	नि	नि	ध	ध	मा	म	गा	ग	स	स	नी	नि	मा	म
बोल.	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़
मात्रा.	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	॥	॥	१	॥	१	॥
ताल.				=					—						—						—	

पड़दा.	४	४	२	७	९	९	१३	१३	११	११	९	९	११	११	९	९	७	७	६	६	४	४	२	४
स्वर.	ध	ध	मा	सा	ग	ग	ध	ध	मा	म	गा	ग	म	म	ग	ग	स	स	नी	नि	धा	ध	मा	धा
बोल.	दि	ड़	दा	ड़ा	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१
ताल.					=					—							—						—	

(१) रागिणी रामकली. (रामकरी)

शृंगारस्वरूप—इसका वर्ण गौर, भाल विशाल व कस्तूरीकी ऊर्ध्वरेषासे सुशोभित, दृष्टि अभिनय व कटाक्षयुक्त, वस्त्र हरा, शृंगाराभूषण धारण करके पतिके आगमनकी उत्कंठासे मार्गप्रतीक्षा कर रही है. (अधीर नायिका) इतनेमें उसके आतेही उसके शरीर

---

* नोट— { ४̆ गॉ डा १ } यह पड़दा इस चौथी गतमें जोड़ीवाले पीतलके तारपर, अर्थात् इसी ठाटके चौथे पड़देवाले तीव्र. ध. बजानेके पोलादी तारपर यह तीव्र ग. जोड़ीके तारपर होता है पृ. [१२३ नोट २ देखो.]

पर सुरतचिन्ह देखकर खिन्न व संतप्त होती हुई गर्वसे उसका धिःकार करती है (रतिखंडिता).

जाति—संपूर्ण. ऋषभ व धैवत कोमल, व गंधार तीव्र है. शुद्ध मध्यम ग्रह व धैवत न्यास है. आरोहमें गंधार व निषाद वर्ज्य हैं. अवरोहमें ऋषभ क्वचित् लेते हैं. धैवत प्रधान स्वर है.

कितनेएकोंके मतसे ऋषभ व धैवत कोमल, गंधार व निषाद तीव्र, व मध्यम तीव्र है. आरोहमें मध्यम व निषाद वर्ज्य होकर धैवतपर मूर्च्छना है.

समय—वसंतऋतुमें तड़के सबेरे करुणारसमें गाते हैं.

मुख्य उपराग—चंद्रबिंब व मंगल हैं.

यह रागिनी शंकराभरण, अड़ाना, व सोरठसे मिश्रित है.

वियोग उत्पन्न करती है.

यह रागिणी ठाठ कालिंगड़ा नंबर ६ के ठाटमें बजाई जाती है.

स र ग म.

अस्ताई—सा सा सा ध सा सा रे ग म प नी ध म प म ग रे सा रे ग ग म ग रे सा सा ग रे सा ।

अन्तरा—ग म प सा सा सा ध सा सा रे ग म नी ध प म ग रे सा रे ग ग
१६ १७ १८
म ग रे सा ग रे सा ।

अभोग—म नी सा सा सा सा ध सा सा सा सा रे ग म नी ध म प म ग रे सा
१६ १७ १८ १५
सा सा रे ग ग म ग रे सा सा सा ग रे सा सा सा ध सा सा रे सा ग म नी ध
१६ १७ १८ १७ १६ १५ १७ १६ १५ १६ १७ १८
म प म ग रे सा सा ग रे सा ।

रामकली गत १ ली. ताल–तिताला.

पड़दा.	७	७	८	१०	१०	१०	१०	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१५	१५	१५	१५	१४	१३	१२
स्वर.	स	स	सा	म	म	मा	मा	पा	पा	पा	प	प	धा	स	स	सा	सा	नी	धा	पा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=		—			०			—		=		—

पड़दा.	१३	१३	१२	१०	१०	९	१०	१०	१३	१३	१२	१३	१०	१२	१२	९	१०	९	८	७
स्वर.	ध	ध	पा	म	म	गा	मा	मा	ध	ध	पा	धा	मा	प	प	गा	मा	गा	रे	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०										०							

तोडा १ ला.

पड़दा	१४	१४	१५	१६	१६	१५	१६	१५	१४	१५	१४	१४	१३	१४	१४	१५	१५	१४	१३	१२
स्वर.	नि	नि	सा	रि	रि	सा	रे	सा	नी	सा	नि	नि	धा	नि	नि	सा	सा	नी	धा	पा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०										०							

पड़दा.	१३	१३	१२	१०	१०	९	१०	१०	१३	१३	१२	१३	१०	१२	१२	९	१०	९	८	७
स्वर.	ध	ध	पा	म	म	गा	मा	मा	ध	ध	पा	धा	मा	प	प	गा	मा	गा	रे	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०										०							

रामकली गत २ री. ताल—तिताला.

पड़दा.	७	७	७	१०	१०	९	१०	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१५	१५	१५	१५	१४	१३	१२
स्वर.	स	स	सा	म	म	गा	मा	पा	पा	पा	प	प	धा	स	स	सा	सा	नी	धा	पा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०										०							

पड़दा.	१३	१३	१२	१०	१०	९	१०	१०	१३	१३	१२	१३	१०	१२	१२	९	१०	९	८	७
स्वर.	ध	ध	पा	म	म	गा	मा	मा	ध	ध	पा	धा	मा	प	प	गा	मा	गा	रे	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०										०							

तोडा १ ला.

पड़दा.	१६	१६	१५	१६	१६	१५	१६	१५	१४	१५	१४	१४	१३	१४	१४	१५	१५	१४	१३	१२
स्वर.	रि	रि	सा	रि	रि	सा	रे	सा	नी	सा	नि	नि	धा	नि	नि	सा	सा	नी	धा	पा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०										०							

पड़दा.	१३	१३	१२	१०	१०	९	१०	१०	१३	१३	१२	१३	१०	१२	१२	९	१०	९	८	७
स्वर.	ध	ध	पा	म	म	गा	मा	मा	ध	ध	पा	धा	मा	प	प	गा	मा	गा	रे	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०										०							

(२) रागिणी देशाख्य (देवशाख)

शृंगारस्वरूप—इसकी आकृति वीरसमान मर्दानी, वस्त्रश्याम, शरीर मल्लसदृश बंधाहुआ व भव्य, विभूतिचर्चित, वाघिनी समान क्रुद्ध, नागिनी समान चंचल, हाथमें नग्न खड्ग धारण की हुई है, जिसे देखतेही शत्रुओंके मनमें भय उत्पन्न होता है. स्वरूप ऐसा गंभीर है कि, जिसे देखतेही प्रीतिकी अपेक्षा पूज्यबुद्धीही अधिक उत्पन्न होवे. यह अपने पतिमें पूर्ण प्रेम रखकर प्रफुल्लित व उल्हास वृत्तिसे रहनेवाली है।

जाति—संपूर्ण. गंधार व निषाद कोमल, आरोहमें गंधार व अवरोहमें धैवत वर्ज्य, गन्धार न्यास व उसीपर मूर्च्छना भी है. कभी २ दोनों निषाद लेते हैं.

समय—वसंतऋतुमें दिनमें तीसरे पहरमें वीररसमें गाते हैं. तब क्रोध उत्पन्न करती है.

मुख्य उपराग—शोभा व आनंद हैं.

कोई २षड्ज, मध्यम, पंचम व गंधार ये शुद्ध व तीव्र, व धैवत, निषाद तीव्र मानते हैं. यह शुद्ध शंकराभरण, कान्हड़ा व मल्हारसे मिश्रित है.

यह रागिणी ठाट यमन नंबर १ के ठाटमें बजती है.

सरगम.

अस्ताई—सा सा ध ध ग प प ध ध सा ध ध प प प ग ध ध प
१५
ग ग ग ध प ग रे ग रे सा रे सा।

अन्तरा—प ध सा सा सा सा ध ध प प प ग ध ध प ग ग ग ध प ग रे ग रे सा रे सा।

अभोग—प प ध ध सा सा सा सा सा ध ध प प प ग ध ध प ग ग ग ध प ग ग ग ग रे ग रे सा सा सा सा ध ध प प प ग ध ध प ग ग ग ध प ग रे ग रे सा रे सा।

देशाख्य गत १ ली. ताल—तिवाला.

पड़दा.	१५	१५	१३	१३	१३	९	१२	१२	१२	१३	१३	१५	१३	१३	१३	१२	१२	१२	१२	९	१३	१३	१३
स्वर.	सा	सा	धा	ध	ध	गा	प	प	पा	धा	धा	सा	धा	ध	ध	पा	प	प	पा	गा	धा	ध	ध
बोल.	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥
ताल.	=					—					०					—					=		

पड़दा.	१२	९	९	९	९	१३	१२	९	८	९	८	८	७	८	८	७	७
स्वर.	पा	गा	गा	ग	ग	धा	पा	गा	रे	गा	रि	रि	सा	रि	रि	सा	सा
बोल.	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताल.			—					०					—				

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	१२	१३	१३	१५	१५	१५	१५	१५	१३	१३	१२	१२	१२	९	९	१३	१३	१३	९	९
स्वर.	पा	ध	ध	सा	सा	सा	स	स	धा	धा	पा	पा	पा	ग	ग	धा	ध	ध	गा	गा
बोल.	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताल.	=					—					०					—				

पड़दा.	१३	१२	९	१३	१३	१३	१२	१२	९	९	९	८	९	८	८	७	८	८	७	७
स्वर.	धा	पा	गा	ध	ध	धा	प	प	गा	गा	गा	रे	गा	रि	रि	सा	रि	रि	सा	सा
बोल.	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताल.	=					—				०						—				

---

(३) रागिणी ललित.

शृंगारस्वरूप—अनुकूला. इसका वर्ण गौर, वस्त्र केसरी, स्वभाव आनंदी, भाषण शृंगारयुक्त व विनोदी, हास्य मंद, ग्रीवा हंसके समान, स्वर कोकिलाके समान मधुर, और चापल्य विद्युल्लतासदृश है. यह तारुण्यसे प्रफुल्लित, स्वरूप सुंदर व नेत्रोंमें कज्जल धारण कीहुई है.

जाति—संपूर्ण. ऋषभ व धैवत कोमल. मध्यम शुद्ध होकर प्लुत स्वर है. ऋषभ अथवा गंधार ग्रह व धैवत न्यास है.

कईएकोंके मतसे यह रागिणी गौरीसे उत्पन्न हुई होकर षाडवजातिकी है व पंचम वर्ज्य है. ऋषभ व धैवत कोमल होकर मध्यम तीव्र है. आरोहमें निषाद वर्ज्य है. षड्ज ग्रह व शुद्ध मध्यम न्यास है.

कईलोग यह रागिणी ओड़वजातिकी समझकर ऋषभ व पंचम वर्ज्य करते हैं. इस रागिणीमें गमकोंकी विशेष खूबी है. गमक लेनेके गंधार व धैवत ये दोनों स्वर मुख्य हैं.

यह देसी, विभास व पंचमसे मिश्रित है. खुशी व विरह उत्पन्न करती है.

समय—वसंतऋतुमें उत्तररात्रिमें अथवा दिनके प्रथम प्रहरमें करुणारसमें गाते हैं.

मुख्य उपराग—प्रधान व विनोद हैं.

यह रागिणी ठाट कालिंगड़ा नंबर ६ के ठाटमें बजती है.

स र ग म.

अस्ताई—सा नी रे ग ग म म म ग म ध नी सा नी ध म ग रे सा ।

अन्तरा—ग म ध नी सा सा सा सा सा नी रे ग म म ग रे सा नी ध म ग रे सा ।

अभोग—म म ध नी सा सा सा सा नी ध म म म ध सा सा सा सा नी रे ग ग म म म ग म ग रे सा सा सा सा नी ध म ग रे सा ।

ललित गत १ ली. ताल–तिताला.

पड़दा.	१०	१०	१०	१२	१२	१०	१०	१०	९	१०	१०	१३	१२	१३	१३	१२	१०	१०	९	९	७	८	७
स्वर.	मा	मा	मा	प	प	मा	म	म	गा	मा	मा	धा	पा	ध	ध	पा	म	म	गा	गा	सा	रे	सा
बोल.	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.	=		—			०			—		=		—			०			—		=		—

पड़दा.	७	७	७	७	७	८	९	८	१०	९	१०	१०	१०	९	९	८	७
स्वर.	स	स	सा	स	स	रे	गा	रे	मा	गा	म	म	मा	ग	ग	रे	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताल.			०			—		=		—			०			—	

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	१२	१३	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१५	१४	१३	१२	१३	१३	१२	१०	१०	१२	१२
स्वर.	पा	धा	पा	प	प	पा	प	प	धा	सा	नी	धा	पा	ध	ध	प।	ग	म	पा	पा
बोल.	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताल.	=		—			०			—		=		—			०			=	

ललित गत २ री. ताल—तिताला.

९ × ९-८ (ऊपर ६ वे स्वर के) ; १३-१४ (ऊपर १७-१८ वे स्वर के)

पड़दा.	८	७	६	७	८	९	९	१०	१०	१०	९	९	१०	१३	१३	१०	१३	१३	१०	१०
स्वर.	रि	स	नी	स	रि	गा	गा	मा	मा	मा	ग	ग	मा	ध	ध	मा	धा	धा	मा	मा
बोल	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=		—			०			—		=		—

४-१ (ऊपर ८ वे स्वर के)

पड़दा.	१०	९	८	७	७	६	७	४	४	४	६	७	९	९	८	९	१०	९	८	७
स्वर.	म	ग	रे	स	स	नी	सा	धा	ध	ध	नी	सा	गा	ग	रि	गा	मा	गा	रे	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=			—		०			—		=		—

तोड़ा १ ला.

९ × १३-१० (ऊपर ६ वे स्वर के) ; १ × १५-१६ (ऊपर १६ वे स्वर के)

पड़दा.	१०	१०	९	१०	१०	१३	१३	१४	१५	१५	१३	१३	१४	१५	१५	१६	१५	१४	१५	१५
स्वर.	म	म	गा	म	म	धा	धा	नी	सा	सा	ध	ध	नी	स	स	रे	सा	नी	सा	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=		—			०			—		=		—

पड़दा.	१७	१७	१६	१५	१५	१४	१५	१४	१३	१३	१०	१०	१०	१३	१३	१४	१३	१०	९	९
स्वर.	ग	ग	रे	स	स	नी	सा	नी	ध	ध	मा	मा	मा	ध	ध	नी	धा	मा	गा	गा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=			—		०			—		=		—

(४) रागिणी बिलावल.

शृंगार स्वरूप—अभिसारिका. इसका वर्ण श्याम, वसन लाल, कंचुकी नीलवर्ण, पूर्ण शृंगार करके लतामंडपके तरे पतिकी मार्गप्रतीक्षा अर्थात् राह देखती हुई बैठी है.

जाति—संपूर्ण. आरोहमें शुद्ध व अवरोहमें कोमल निषाद आता है. कभी २ अवरोहमें दोनों निषाद आते हैं. गंधार तीव्र होकर प्रधान स्वर है. बाकीके स्वर शुद्ध हैं. आरोहमें ऋषभ वर्ज्य है. कभी २ मध्यम व निषाद येभी आरोहमें वर्ज्य होते हैं. यह कल्याण व केदारासे मिश्रित है. इसमें किसी २ के मतसे षड्ज, मध्यम, पंचम ये शुद्ध व ऋषभ, गंधार, धैवत व निषाद ये तीव्र स्वर लगते हैं.

समय—वसंतऋतुमें दिनमें दूसरे प्रहरमें शृंगाररसमें गाते हैं तब वियोग उत्पन्न करती है.

मुख्य उपराग—सोहु या सूहा, सुहो है.

यह रागिणी ठाट यमन नंबर १ के ठाटपर बजती है.

सरगम.

अस्ताई—ध प म ग रे सा नी सा रे ग प ध प म ग रे सा।

अन्तरा—रे ग प ध नी सा सा सा सा सा नी ध प म ग रे ध ध प प म ग रे सा।

अभोग—प ध नी सा सा सा सा सा नी सा रे ग ग ग रे सा सा सा सा सा नी ध प म ग रे ध ध ध प प ग ग ध ध प प ग सा नी ध प म ग रे सा।

बिलावल गत १ ली. ताल—तिताला.

पड़दा.	१३	१२	१०	९	८	७	६	७	८	९	९	१२	१२	१३	१३	१२	१०	९	८	७
स्वर.	धा	पा	मा	गा	रे	सा	नी	सा	रे	ग	ग	प	प	ध	ध	पा	म	गा	रि	सा
बोल.	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा
मात्रा.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.	=				—				०							—				

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	९	९	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१४	१४	१३	१३	१२	१२	१०	९	८	७	७
स्वर.	ग	ग	प	प	धा	ध	नी	नि	सा	सा	सा	स	स	नि	नि	ध	ध	प	प	मा	ग	रे	स	सा
बोल.	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा
मात्रा.	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.	=	=					—					०								—				

(५) रागिनी पटमञ्जरी.

शृंगारस्वरूप—यह श्वेतवस्त्र, ज्ञातयौवना व विरहिनी है. शरीर शुष्क हो गया है और शृंगाराभूषणोंसे जिसे अप्रीति उत्पन्न हुई है; गलेका पुष्पहार सूख गया है; श्वाससे हृदय उड़ रहा है; विरहसे उदास व खिन्न होकर पतिके दर्शनार्थ आतुर होती हुई उसका शोध, (तलाश) करती है, परन्तु उसका दर्शन जल्दी न होनेके कारण व्याकुल हो रही है.

जाति—संपूर्ण. गंधार व निषाद कोमल हैं. पंचम प्रधान स्वर होकर ग्रह व न्यास है. निषाद अंशस्वर है. इस रागिनीमें धनाश्री, पलाशी व शंकरा इन रागनके छायाका भास होता है. कोई २ षड्ज, मध्यम, पंचम शुद्ध; ऋषभ गंधार शुद्ध व तीव्र; धैवत शुद्ध और निषाद तीव्र स्वर लगाते हैं.

यह मारवा, धौलश्री, धनाश्री व खंबावतीसे मिश्रित है. वियोग उत्पन्न करती है.

समय—वसंतऋतुमें मध्यरात्रिमें गाते हैं. **मुख्य उपराग**–विभास अथवा भास्कर हैं.

यह रागिणी ठाट यमन नंबर १ के ठाटमें बजाई जाती है.

सरगम.

अस्ताई—प म ग रे ग नी रे रे ग म प ग रे ग सा सा।

अन्तरा—ग म प सा सा सा सा सा सा नी ध प म ग रे ग सा।

अभोग—म प सा सा सा सा सा सा सा नी सा सा सा सा म म ग ग रे रे रे सा सा सा सा सा सा सा नी ध प म ग रे ग सा।

पटमञ्जरी गत १ ली. ताल–तिताला.

पड़दा.	१२	१२	१०	९	९	८	९	६	८	८	९	९	१०	१२	१२	९	८	९	७	७
स्वर.	प	प	मा	ग	ग	रे	गा	नी	रे	रे	ग	ग	मा	प	प	गा	रे	गा	सा	सा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			—					=					—					०		

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	१०	१०	१२	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१४	१३	१३	१२	१०	९	९	७
स्वर.	म	म	पा	स	स	सा	सा	सा	सा	सा	स	स	नी	ध	ध	पा	मा	गा	गा	सा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			—					=					—					•		

पाठ चौथा.

४ राग दीपक.

शृंगारस्वरूप—इसका स्वरूप अग्निसमान आरक्तवर्ण, केश मुक्त, वस्त्र लाल, हाथीपर आरूढ होनेवाला है; यह विलासी, स्त्रियोंके साथ नाना प्रकारकी क्रीडा करता है व मधुरस्वरसे गायन करता है. इसकी उत्पत्ति सूर्यके तेजसे हुई है. इसके गायनसे दीप अपने आपही प्रदीप्त होते हैं ऐसा कहा गया है. इसे **दीपराग** अथवा **नटनारायण**भी कहते हैं.

जाति—संपूर्ण. ऋषभ, गंधार व निषाद कोमल हैं. मध्यम तीव्र है. इसके सिवाय इसमें शुद्ध गंधार, शुद्ध धैवत व शुद्ध निषादभी आते हैं. यह राग काफी, केदारा, बिहाग, भीमपलासी व शंकराभरण इन रागोंसे उत्पन्न होता है.

समय—ग्रीष्मऋतुमें दिनको दो प्रहरमें अथवा संध्याकालमें शृंगार अथवा करुणारसमें गाते हैं.

इस रागकी पांच रागिनियां हैं—नट १, केदारी २, कानडी ३, देशी ४ व कामोदी ५.

यह राग ठाट नंबर १२ के ठाटमें बजता है.

स्वरविस्तार.

काफीरागके स्वर—सा नी ध प । **केदारा**—नी ध सा नी । **काफी**—रे सा नी ध सा । **बिहाग**—नी ग रे म ग । **भीमपलासी**—रे सा नी सा रे म । **केदारा**—ग रे ग सा । **शंकराभरण**—प सा नी सा नी । **केदारा**—रे सा नी ध । **काफी**—नी ध प म प । **बिहाग**—ग रे सा रे म । **शंकराभरण**—ग रे ग रे । **भीमपलासी**—ग प ध प म । **बिहागकेदार**—प नी सा नी ध नी प म ग रे । **काफी**—सा रे सा नी । **केदारा**—सा म ग रे, ग सा नी ध प । **बिहाग शंकराभरण**—नी सा प नी सा नी ध प ध प । **भीमपलासी**—म प ग सा ।

स र ग म.

अस्ताई—सा नी ध प नी ध सा नी रे सा नी ध सा नी ग रे सा ।

अन्तरा—म ग रे सा नी सा रे म ग रे ग सा प सा नी सा नी रे सा नी ध नी ध प म प म रे सा रे म ग रे ग रे ग रे सा ।

अभोग—प ध प म प नी स नी ध नी प म ग रे सा रे सा नी सा म ग रे ग सा नी ध प नी सा प नी सा नी ध प ध प म प ग रे सा।

दीपकराग गत १ ली. ताल–तिताला.

पड़दा.	७	७	५	५	४	३	३	५	५	४	७	५	८	८	७	७	५	४	४	७	७	७	७
स्वर.	सा	स	नी	नि	धा	पा	प	नी	नि	धा	सा	नी	रि	रि	स	स	नी	ध	ध	स	स	स	स
बोल.	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दि	ड़	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़
मात्रा.	१	॥	१	॥	१	१	॥	१	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥
ताल.	=					—					०						—						

पड़दा.	५	५	९	९	८	११	११	९	९	८	७	५	७	८	११	११	९	८	८	९	९	७	७
स्वर.	नी	नि	गा	ग	रे	मा	म	गा	ग	रे	सा	नी	स	रि	म	म	गा	रि	रि	ग	ग	स	स
बोल.	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दि	ड़	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़
मात्रा.	१	॥	१	॥	१	१	॥	१	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥
ताल.	=					—					०						—						

पड़दा.	१२	१५	१५	१४	१५	१४	१६	१५	१४	१४	१३	१४	१४	१३	१२	११	१२	१२	९	८
स्वर.	पा	स	स	नी	सा	नी	रे	सा	नि	नि	धा	नि	नि	धा	पा	मा	प	प	गा	रे
बोल.	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१
ताल.	=					—					●					—				

तोडा १ ला.

पड़दा.	१२	१२	१५	१५	१४	१५	१५	१४	१४	१६	१५	१५	१४	१४	१३	१४	१३	१२	१२	११	१२
स्वर.	पा	प	सा	स	नी	सा	स	नी	नि	रे	सा	स	नी	नि	धा	नी	धा	प	प	म	प
बोल.	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दि	ड़
मात्रा.	१	॥	१	॥	१	१	॥	१	॥	१	१	॥	१	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥
ताल.	=					—					०					—					

पड़दा.	९	८	८	७	८	११	११	९	८	९	८	९	१२	१२	१३	१२	११	१२	१४
स्वर.	गा	रि	रि	स	रि	म	म	गा	रि	गा	रि	गा	पा	प	धा	प	मा	पा	नी
बोल.	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	॥	१	॥	१	१	१
ताल.	=							—					●					—	

पड़दा.	१५	१५	१४	१४	१३	१४	१४	१२	१२	११	११	९	८	८	७	८	७	५	५
स्वर.	स	स	नि	नि	धा	नि	नि	प	प	म	म	गा	रि	रि	सा	रे	सा	नि	नि
बोल.	दि	ड़	दि	ड़	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़
मात्रा.	॥	॥	॥	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥
ताल.																			

पड़दा.	७	७	११	११	९	९	८	८	९	१५	१४	१३	१३	१२	१२	१४–१५	१२	१२	१४	१५
स्वर.	स	स	म	म	गा	ग	रे	रि	गा	सा	नी	ध	ध	प	प	नि-स	प	प	नि	स
बोल.	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दि	ड़	दा	दि	ड़	दि	ड़
मात्रा.	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	॥	॥	॥
ताल.																				

पड़दा.	१४	१४	१३	१२	१२	१३	१२	११	१२	१२	९	९	७	७
स्वर.	नि	नि	धा	प	प	धा	पा	मा	प	प	ग	ग	स	स
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥
ताल.														

इस दीपकरागके विषे अकबर बादशाहके समयकी एक आख्यायिका (कहावत) ऐसी प्रसिद्ध है कि:—"एक समय प्रसिद्ध तानसेन इसने दपिराग गातेही सब दीप अपने आप प्रदीप्त होगये; परन्तु उससे उसके शरीरका अत्यन्त दाह होने लगा; वह किसी उपायसेभी शमन न हुआ. तब उससमय शोरीने मल्हार राग गाकर उसपर पर्जन्यकी वृष्टी की तब उसका दाह शांत हुआ." तानसेनके धृपद व उसी प्रकार शोरीके टप्पा प्रसिद्ध हैं. तानसेनके इस रागको गाकर फिर तलाक देदी तबसे दीपकराग गाना बंद हो गया. इसी कारण दीपक राग अब प्रचलित नहीं है.

(१) रागिणी नट (नाटिका.)

शृंगारस्वरूप—यह अप्सरा समान सुंदर, तरुण व हंसगामिनी है. इसका वर्ण गुलाबी, वस्त्र लाल, आकृति बीरके समान, अश्वारूढ होकर हाथमें खड्ग धारण किया है व शत्रुओंके मध्यभागमें खड़ी होकर वीरश्रीयुक्त युद्धके लिये सजकर तयार हुई है.

जाति—षाडव निषाद वर्ज्य होकर सब स्वर शुद्ध हैं. कितनेएकोंके मतसे यह रागिणी संपूर्ण जातिकी है. ऋषभ, गंधार, धैवत, निषाद तीव्र, षड्ज व पंचम शुद्ध, मध्यम कोमल है. यह कोकब, पूर्वी, बिलावल व सारंगसे मिश्रित है. क्रोध उत्पन्न करती है.

समय—ग्रीष्म अथवा हेमन्तऋतुमें दिनको तीसरे प्रहरमें बीररसमें गाते हैं.

मुख्य उपराग—चंपक व कुसुम हैं.

यह रागिणी ठाट यमन नंबर १ पर बजती है.

स र ग म

अस्ताई—सा ग म प ध प म ग रे प म प म ग म ग म रे ग रे म ग रे सा नी।

अन्तरा—म प सा सा सा नी सा ध सा नी सा ध प म ग रे प म प म म ग म रे ग रे सा।

अभोग—म प सा सा सा सा नी सा ध सा सा सा सा ध ध सा सा सा नी नी सा सा सा ध ध प म ग रे प म प म ग म ग म रे ग रे म ग रे सा।

नट गत १ ली. ताल—चौताला.

पड़दा	७	९	९	१०	१२	१३	१२	१०	९	९	८	१२	१२	१०	१२
स्वर.	सा	ग	ग	मा	पा	धा	पा	मा	ग	ग	रे	प	प	मा	पा
बोल.	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताल.	—			—		=		०			—			०	

पड़दा	१०	९	१०	९	९	१०	८	९	८	८	१०	९	९	८	७
स्वर.	मा	गा	मा	ग	ग	मा	रे	गा	रि	रि	मा	ग	ग	रे	सा
बोल.	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताल.	—		—			=		०			—			०	

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	१२	१५	१५	१५	१३	१५	१४	१३	१२	१२	१०	९	८	१२	१२
स्वर.	पा	स	स	सा	धा	सा	नी	धा	प	प	मा	गा	रे	प	प
बोल.	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दा	ड़ा	दि	ड़
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥
ताल.	—			—		=		०			—		०		

पड़दा.	१०	१२	१२	१०	९	१०	९	१०	९	९	८	७	६	७	७
स्वर.	मा	प	प	मा	गा	मा	गा	मा	ग	ग	रे	सा	नी	स	स
बोल.	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दा	ड़ा	दि	ड़
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥
ताल.	—			—		=		०			—		०		

(२) रागिणी केदारी (केदारा)

शृंगार स्वरूप—यह रागिनी तपस्विनी समान केशमुक्त है. इसका वस्त्र गेरुआ, अंग भस्मचर्चित है. गलेमें सर्पमाला है व मुखसे मंत्रोच्चार करती है. नेत्र अर्धोन्मीलित हुए हैं, गायनमें तल्लीन होकर महादेवजीका चिंतन करती है.

जाति—संपूर्ण. ऋषभ व धैवत कोमल हैं, मध्यम शुद्ध व तीव्र दोनों आते हैं. आरोहमें ऋषभ व निषाद वर्ज्य है. गंधार अथवा मध्यम ग्रह व पंचम न्यास है. कितनेएकोंके मतसे यह रागिणी षाड़वजातिकी होकर ऋषभ वर्ज्य हैं. व कोई ओडवजाति समझकर ऋषभ व धैवत वर्ज्य करते हैं व निषाद दोनों लेते हैं. और कोई २ तो षड्ज, मध्यम, पंचम शुद्ध, और ऋषभ, गंधार, मध्यम, धैवत, व निषाद तीव्र लेते हैं.

यह कोकब, पूर्वी व बिलावलसे मिश्रित है. खुशी वियोग उत्पन्न करती है.

समय—दोपहर रातमें शांतरसमें गाते हैं; गीष्म ऋतु है. यह रागिनी ईश्वरकी आराधना करनेके लिये बहुतही उत्तम है.

मुख्य उपराग—राम है.

स र ग म.

अस्ताई—सा रे नी सा म म म म म ग म प म ग रे सा ।

अन्तरा—ग म प सा सा सा सा प म म म प म ध प ग रे सा ।

अभोग—म प म सा सा सा सा म म म म ग म म म ग रे सा सा सा सा रे नी सा सा सा सा म प म म प प ध प म म म प म म ग म म म म प ग रे सा ।

यह रागिनी ठाट यमन नंबर १ के ठाटमें बजती है.

केदारा गत १ ली. ताल—तिताला.

पड़दा.	७	७	६	८	८	६	७	१०	१०	१०	१०	१०	९	९	९	१२	१२	९	९	८
स्वर.	स	स	नी	रि	रि	नी	सा	मा	मा	मा	म	म	गा	ग	ग	पा	पा	गा	गा	रे
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.																				

तोडा १ ला.

पड्दा.	९	९	९	९	९	१२	१३	१३	१३	१३	१२	१२	९	९	९	१२	१२	९	९	८
स्वर.	ग	ग	गा	ग	ग	पा	धा	धा	ध	ध	पा	पा	गा	ग	ग	पा	पा	गा	गा	रे
बोल.	दि	ड़	दा	दिं	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=			—		०			—		=		—

केदारा गत २ री. ताल—तिताला.

	^२		९-१०		९-१०					^२		^२	१३-१४				^२			
पड्दा.	६	१०	१०	९	१०	९	१२	१२	११	१२	११	१३	१३	१२	१२	११	१३	१३	१२	१२
स्वर.	नी	म	म	गा	मा	गा	प	प	मा	पा	मा	धा	धा	प	प	मा	ध	ध	पा	पा
बोल.	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताल.	=			—		०			—		=		—			०			—	

	^२			^२		^२	^						^२		^२	
पड्दा	९	१०	१०	९	१०	९	१३	१३	१२	१२	१२	१२	११	१२	११	१२
स्वर.	गा	म	म	गा	मा	गा	ध	ध	प	प	प	प	मा	प	मा	प
बोल.	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥
ताल.	=			—		०			—				=		—	

	^२		^			६-८	
पड्दा.	११	१२	९	८	८	६	८
स्वर.	म	प	गा	रि	रि	नी	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताल.			०			—	

तोड़ा १ ला.

	^					^२					^					^२		^		
पड्दा.	१७	१६	१६	१५	१५	१४	१६	१६	१५	१५	१४	१३	१२	१२	१२	११	१३	१३	१२	१२
स्वर.	गा	रि	रि	सा	सा	नी	रि	रि	सा	सा	नी	धा	पा	प	प	मा	ध	ध	पा	पा
बोल.	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताल.	=			—		०			—		=		—			०			—	

	^			^२		^२	^						^२		^२	
पडदा.	९	१०	१०	९	१०	९	१३	१३	१२	१२	१२	१२	११	१२	११	१२
स्वर.	गा	म	म	गा	मा	गा	ध	ध	प	प	प	प	मा	प	मा	प
बोल.	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥
ताल.	=			—		०			—				=			—

			^			६-८	
पड़दा.	१२	१२	९	८	८	६	७
स्वर.	प	प	गा	रि	रि	नी	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताल.			०			—	

केदारा गत ३ री. ताल—तिताला.

	^					^										
पड़दा.	६	१०	१०	१०	१०	९	१२	१२	१३	१३	१२	१२	१२	१२	१२	९
स्वर.	नी	म	म	मा	मा	गा	पा	पा	ध	ध	पा	प	प	पा	पा	गा
बोल.	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१
ताल.	=					—					०					—

										^						^		^
पड़दा.	१२	१२	११	१३	१२	१६	१६	१५	१५	१३	१३	१२	१२	१२	१२	१०	१०	९	९
स्वर.	प	प	मा	धा	पा	रि	रि	सा	सा	धा	धा	प	प	प	प	मा	म	गा	ग
बोल.	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़
मात्रा.	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥
ताल.					=					—						०			

पड़दा.	८	८	७	७	७	७	७
स्वर.	रि	रि	सा	स	सा	स	सा
बोल.	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.			—				

तोड़ा १ ला.

											^	^											
पड़दा.	९	९	११	११	१३	१५	१५	१५	१५	१५	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१६	१५	१५	१५	१५	१५	१५
स्वर.	गा	ग	मा	म	धा	सा	स	सा	स	सा	नी	नी	स	स	स	स	रे	स	स	स	स	स	स
बोल.	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दि	ड़	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़
मात्रा.	१	॥	१	॥	१	१	॥	१	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥
ताल.	=					—					०						—						

	^					^					^	^					^						
पड़दा.	१४	१४	१३	१३	१२	११	११	१३	१३	१२	९	९	१०	१०	१०	१०	९	८	८	७	७	७	७
स्वर.	नी	नि	धा	ध	पा	मा	म	धा	ध	पा	गा	गा	म	म	म	म	गा	रि	रि	स	स	स	स
बोल.	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दि	ड़	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़
मात्रा.	१	॥	१	॥	१	१	॥	१	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥
ताल.	=					—					०						—						

---

(३) रागिणी कान्हड़ी (कर्नाटकी.)

शृंगार स्वरूप—इसका वर्ण श्याम, हास्य मंद, व वस्त्र शुभ्र है. रविपूजनमें सदा तत्पर, आकृति भव्य व मर्दानी, दाहिने हाथमें खड्ग व बांए हाथमें हाथीदांत धारण किया है और आगे जिसके भाट स्तुतिपाठ गाते हैं.

जाति—संपूर्ण. गंधार व निषाद कोमल. मध्यम शुद्ध. ऋषभ व धैवत तीव्र. निषाद प्रधान स्वर है, ऋषभ ग्रह व गंधार न्यास है. शुद्ध निषादभी लगता है.

समय—ग्रीष्मऋतुमें दो पहर रातमें शृंगाररसमें गाते हैं.

मुख्य उपराग—विहल व हिमाल हैं. क्रोधयुक्त खुशी उत्पन्न करती है.

यह रागिणी ठाट काफी नंबर ३ के ठाटपर बजती है.

सरगम.

अस्ताई—नी सा रे रे ग रे रे सा म म म मं पं मं ग म प ग ग रे सा।

अंतरा—म ग म प सा सा सा सा रे रे सा सा सा नी ध प प म प ग म ग रे सा।

अभोग—म प सा सा सा सा रें रे ग रे सा सा सा रे रे सा सा म म म म ग म ग ग रे रे सा सा म म ग ग रे रे सा सा सा सा नी ध प प म प ग म ग ग रे सा।

कान्हड़ी (कानड़ा) गत १ ली. ताल–तिताला.

पड़दा.	५	५	७	८	७	८	८	९	८	७	८	५	७	८	७	८	७	३	३	३
स्वर.	नि	नि	सा	रि	स	रे	रे	गा	रे	सा	रि	नि	सा	रि	स	रे	सा	पा	पा	पा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.																				

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	८	८	८	१०	१०	१२	१२	१०	१२	१२	१०	१०	१०	१२	१२	१४	१५	१४	१५	१५	१६	१६	१६
स्वर.	रि	रि	रे	म	म	पा	पा	मा	पा	पा	म	म	मा	प	प	नी	सा	नी	सा	सा	रि	रि	रे
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१
ताल.																							

पड़दा.	१५	१५	१४	१५	१४	१५	१५	१४	१५	१०	१२	१२	१०	१२	९	८	७
स्वर.	स	स	नी	सा	नी	स	स	नी	सा	मा	प	प	मा	पा	मा	रे	सा
बोल.	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.																	

कान्हड़ी (कानड़ा) गत २ री. ताल–तिताला.

पड़दा.	९	१०	१०	८	८	८	८	७	७	७	७	७	७	१०	८	८	८	८	८	८	८	७	७	७
स्वर.	गा	म	म	रे	ए	रे	ऐ	स	स	सा	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	मा	रि	रि	रि	रि	रि	रि	रे	स	सा	स
बोल.	दा	ड़	दि	दा	C	दा	S	ड़	दि	दा	C	S	S	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़
मात्रा.	१	॥	॥	१	॥	१	१	॥	॥	१	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥
ताल.																								

पड़दा	७	८	८	७	७	८	५	७	५	८	५	८	८	७	७	७	७	५	५	१	१	१
स्वर.	सा	रे	रि	सा	स	रे	नी	सा	नी	रे	नी	रि	रि	स	स	स	स	नी	नि	पा	प	पा
बोल.	दा	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	डा	दा	डा	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा
मात्रा.	१	१	॥	१	॥	१	१	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.																						

पड़दा-	७	५	३	३	१	३	३	१	३	५	७	७	५	७	७	७
स्वर.	सा	नी	पा	पा	मा	प	प	मा	पा	नी	स	स	नी	सा	ऽऽ	ऽऽ
बोल.	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	डा	दा	दि	ड़	दा	डा	ऽ	ऽ
मात्रा.	१	१	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१
ताल.																

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	१०	१०	१२	१२	१२	^१४	१४	१५	१५	१५	^१४	^१४	१५	१५	१५	१५	^१७	१६	१६	१५
स्वर.	मा	म	पा	प	पा	नी	नि	सा	स	सा	नी	नी	स	स	स	स	गा	रे	रे	सा
बोल.	दा	ड	दा	ड	दा	दा	ड	दा	ड	दा	दा	डा	दि	ड	दि	ड	दा	डा	दा	डा
मात्रा.	१	॥	१	॥	१	१	॥	१	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥	१	१	१	१
ताल.																				

---

(४) रागिणी देशी.

शृंगारस्वरूप—यह विलासिनी, तारुण्यसे प्रफुल्लित, वर्ण गौर, स्वर कोकिलासमान, वस्त्र हरित, पतिको रोककर उससे शृंगारिक बातोंसे विनोद करती है व मंदहास्य करती हुई उसपर बींजना डुलारही है अर्थात् पंखा झूलरही है.

जाति—संपूर्ण. धैवत प्रधान स्वर व पंचम न्यास है. आरोहमें गंधार व धैवत वर्ज्य हैं. इसका व सोरठीका स्वरूप बहुतायतसे एकसाही है; परन्तु भेद मात्र इतनाही है कि, सोरठीमें निषाद कोमल आता है व इस रागिणीमें शुद्ध आता है.

कोई २ ऋषभ तीव्र; गंधार, मध्यम, पंचम, धैवत कोमल; निषाद दोनों व षड्ज शुद्ध लगाते हैं. यह टोड़ी व षट्से मिश्रित है. खुशी उत्पन्न करती है.

समय—ग्रीष्मऋतुमें दिनको दूसरे प्रहरमें गाते हैं.

मुख्य उपराग—कुन्तल व कमल हैं.

यह रागिणी ठाट जौनपुरी नंबर ८ के ठाटमें बजाई जाती है.

सरगम.

अस्ताई—रे ग रे सा रे नी सा सा रे ग म म ग प रे सा रे रे म म प प प म प रे रे सा ।

अन्तरा—म प ध ध ध ध सा सा सा सा नी ध प सा ध प प म प म ग रे सा ।

अभोग—म प ध ध सा सा सा सा रे नी सा सा रे ग म म ग प रे सा सा सा सा रे ग रे सा रे नी सा सा सा रे रे म म प प प म प म ग रे सा ।

देशी गत १ ली. ताल—तिताला.

पड़दा.	१२	१२	१२	१२	१०	१२	१२	१२	१२	१०	१२	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१३	१२
स्वर.	पा	प	प	पा	मा	पा	प	प	पा	मा	पा	धा	नी	नि	नि	नी	नि	नि	धा	पा
बोल.	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताल.	═					—					०					—				

पड़दा.	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१२	१२	१२	९	८	१०	१२	१३	१३	१२	१०	१०	९	८
स्वर.	मा	म	म	मा	मा	मा	प	प	पा	गा	रे	मा	पा	ध	ध	पा	म	म	गा	रे
बोल.	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताल.	═					—					०					—				

पड़दा.	८	७	७	७	८	१०	१०	१०	१२	१२	८	७	७	७	७	७	८	८	५	७
स्वर.	रे	स	स	सा	रे	मा	म	म	पा	पा	रे	सा	सा	स	स	सा	रि	रि	नी	सा
बोल.	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताल.	═					—					०					—				

तोडा १ ला.

पड़दा.	१५	१५	१५	१५	१४	१५	१५	१५	१५	१४	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१५	१५
स्वर.	सा	स	स	सा	नी	सा	स	स	सा	नी	सा	रे	रे	रि	रि	रे	रि	रि	सा	सा
बोल.	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताल.	═					—					०					—				

पड़दा.	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१३	१२	१४	१५	१६	१६	१५	१४	१४	१३	१२
स्वर.	नी	नि	नि	नी	नी	नी	स	स	सा	धा	पा	नी	सा	रि	रि	सा	नि	नि	धा	पा
बोल.	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताल.	=					—					०					—				

---

(५) रागिणी कामोदी (कमोद)

शृंगारस्वरूप—इस रागिनीका वर्ण गुलाबी, वस्त्र पीला, कंचुकी लाल, पतिके विरहसे व्याकुल होकर उसके मिलनेके अर्थ आतुर होतीहुई शोक करती है.

जाति—ओडव. गंधार व निषाद वर्ज्य. मध्यम तीव्र व शुद्ध दोनों. बाकी सब स्वर शुद्ध. आरोहमें ऋषभ व धैवत वर्ज्य है. मध्यम ग्रह व धैवत न्यास है. मध्यम प्रधान स्वर है. इस रागिणीकी मल्हाररागसे बहुतसी साम्यता है.

समय—ग्रीष्मऋतुमें दिनको तीसरे प्रहरमें करुणारसमें गाते हैं. विरह निवेदनार्थ यह रागिणी उत्तम है. बिरहसे खुशी उत्पन्न करती है.

मुख्य उपराग—कलिंग.

यह रागिणी ठाट यमन नंबर १ के ठाटपर बजाई जाती है.

स र ग म.

अस्ताई—सा रे रे प प ध ध प ध ध प ग म प ग म प ग म रे सा ध ध प नी सा।

अन्तरा—प म प नी नी सा सा सा सा रे रे प प ध ध ध प ग म प ग म रे सा।

अभोग—म प नी नी सा सा सा सा रे रे सा सा सा ध ध प नी सा सा सा सा ध ध प ध ध प ग म प ग म प ग म रे सा।

कामोदी (कमोद) गत १ ली. ताल—कोकिला.

पड़दा.	७	७	७	८	८	८	१२	१२	१३	१३	१३	१२	१३	१३	१३	१२	९
स्वर.	सा	सा	सा	रि	रि	रे	पा	पा	ध	ध	धा	पा	धा	ध	ध	पा	गा
बोल.	दा	दा	डा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१
ताल.	=		०			—		—					—			—	

पड़दा.	१०	१२	९	१०	१०	१२	९	१०	८	८	७	४	४	३	३	६	७
स्वर.	मा	पा	गा	म	म	पा	गा	मा	रि	रि	सा	धा	धा	प	प	नी	सा
बोल.	दा	दा	डा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१
ताल.	=		०			—		—			०		—			—	

तोड़ा १ ला

पड़दा.	१२	१०	१२	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१२	१२	१२	१३	१३
स्वर.	पा	मा	पा	नि	नि	नी	सा	सा	स	स	रे	रे	पा	प	प	धा	धा
बोल.	दा	दा	डा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१
ताल.	=		०			—		—			०		—			—	

पड़दा	१२	१३	१३	१२	१२	९	१०	१०	१२	९	१०	१२	९	१०	१०	८	७
स्वर.	पा	धा	धा	प	प	गा	म	म	पा	गा	मा	पा	गा	म	म	रे	सा
बोल.	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	१
ताल.	=		०			—			—		०		—			—	

पाठ पांचवाँ

५ श्रीराग.

शृंगारस्वरूप—यह राग तरुण, विलासी, वस्त्रलाल है; गलेमें नवरत्नका हार धारण किया है, व लतामंडपके नीचे सिंहासनारूढ हुआ है. सामने गायकजन बैठे हैं; एक हाथमें वीणा व एक हाथमें कमलपुष्प धारण किया हुआ है व मूर्च्छनायुक्त मधुरस्वरसे गायन कर रहा है.

इसकी उत्पत्ति शेषनागसे है, ऐसा कहा गया है. यह राग आलाप मूर्च्छनायुक्त स्वरोंसे शुष्कवृक्षके नीचे बैठकर गानेसे वह वृक्ष प्रफुल्लित हराभरा हो जाता है. ऐसी प्राचीन कहावत है.

जाति—संपूर्ण. ऋषभ व धैवत कोमल और मध्यम तीव्र है. आरोहमें गंधार व धैवत वर्ज्य है. पंचम बहुत नहीं आता. ऋषभ प्रधान स्वर है. यह राग गौरी मारू व टंकल इन रागोंसे उत्पन्न हुआ है. बडहंस, तनक व गौरीसे मिश्रित है.

कोई २ गंधार व निषाद तीव्र लेते हैं; तब शंकराभरण व मालश्रीसे मिश्रित होता है

समय—हेमंतऋतुमें दिनको चतुर्थप्रहरमें गाते हैं. तब प्रसन्नता उत्पन्न करता है. और बीमारी आराम करता है.

इस रागकी पांच रागिनियां हैं—वसंती १, आसावरी २, मालवी ३, धनाश्री ४, व मालश्री ५.

यह राग ठाट कालिंगड़ा नंबर ६ के ठाटमें बजाता है.

इसका स्वर विस्तार यह है.—

टंकल रागके स्वर—ग रे सा नी। **गौरी**—ध प ध नी। **टंकलमारू**—ध रे प म ध म ग प म ग। **गौरी**—रे ग रे सा नी रे ग रे ग सा प म ध सा । **मारू**—नी रे सा रे नी ध सा प म ध सा । **मारू**—नी रे सा रे नी ध प म ध सा नी सा म। **टंकल**—ध सा ग रे सा नी ध म ध म ग रे.

स र ग म.

अस्ताई—सा रे प ध प ग रे सा ध सा सा रे सा ग रे ग रे सा।

अन्तरा—प म ध सा सा सा सा सा ध सा सा नी ध प म प ध प प म ग रे ग रे सा।

अभोग—म ध सा सा सा सा सा रे रे सा सा ग रे ग रे सा सा सा सा रे रे प प ध प ग रे सा सा सा सा ध ध सा सा रे रे सा ग रे ग रे सा सा सा सा नी ध प म प ध प प म ग रे ग रे सा।

श्रीराग गत १ ली. ताल—तिताला.

पड़दा.	७	७	९	८	८	७	७	६	४	३	४	४	६	४	४	८	८	१२	११	१३	११	११	९
स्वर.	स	स	गा	रि	रि	सा	सा	नी	धा	पा	ध	ध	नी	ध	ध	रे	रे	पा	मा	धा	म	म	गा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१
ताल.			०																				०

पडदा.	१२	१२	११	९	८	९	९	८	७	६	८	८	९	८	९	८	७
स्वर.	प	प	मा	गा	रे	ग	ग	रे	सा	नी	रि	रि	गा	रे	गा	रे	सा
बोल.	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.										०							

तोडा १ ला.

पडदा.	१२	१२	१२	१२	१२	११	१३	१५	१४	१६	१५	१५	१६	१४	१४	१३	१५	१२	११	१३
स्वर.	प	प	पा	प	प	मा	धा	सा	नी	रे	स	स	रे	नि	नि	धा	सा	पा	मा	धा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल,			०										०							

पडदा.	११	११	९	१२	१२	११	९	८	९	९	८	७	६	८	८	९	८	९	८	७
स्वर.	म	म	गा	प	प	मा	गा	रे	ग	ग	रे	सा	नी	रि	रि	गा	रे	गा	रे	सा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०										०							

श्रीराग गत २ री. ताल–कोकिला.

पडदा.	१२	१२	१३	१२	१२	९	८	७	४	४	४	७	७	८	८	८	१२
स्वर.	पा	पा	धा	प	प	गा	रे	सा	ध	ध	धा	सा	सा	रि	रि	रे	पा
बोल.	दा	दा	डा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१
ताल.			०								०						

पडदा.	१२	१३	१२	९	९	८	७	७	९	८	९	८	७	७	८	८
स्वर.	पा	धा	पा	ग	ग	रे	स	स	गा	रे	गा	रे	सा	सा	रे	रे
बोल.	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	डा	दा	डा	दा	डा
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	१	१	१
ताल.			•								०					

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	१२	११	१३	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१३	१३	१५	१५
स्वर.	पा	मा	धा	स	स	सा	सा	सा	स	स	सा	सा	धा	धा	सा	सा
बोल.	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	ड़ा
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	१
ताल.	=		०								•					

पड़दा.	१४	१३	१२	११	११	१२	१३	१२	१२	१२	११	९	८	९	८	८
स्वर.	नी	धा	पा	म	म	पा	धा	पा	प	प	मा	गा	रे	गा	रे	रे
बोल.	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	ड़ा
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	१
ताल.	=		०								०					

(१) रागिणी वसंती (वसंत).

शृंगारस्वरूप—इसका वर्ण श्याम, वस्त्र श्वेत व आकृति मर्दानी है; मस्तकमें मुकुट है; अंगमें केशर चर्चित है. कंठमें चंपकपुष्पोंका हार व हाथमें आम्रमंजरी लेकर बैठी है; इसके सुगंधको लुब्ध होकर भ्रमर आसपास गूंज रहे हैं. इसप्रकार यह उपवनमें सखियोंके साथ नृत्य व गायन करती है.

जाति—संपूर्ण. ऋषभ कोमल; मध्यम शुद्ध व तीव्र दोनों लगते हैं. शेष स्वर शुद्ध. मध्यम प्रधान स्वर व न्यास है. इस रागिनीमेंके स्वर बहार व हिंडोलसे मिलते हैं. परंतु ऋषभ व पंचम इन स्वरोंके योगसे भिन्नता दिखाई पड़ती है. तैसेही इस रागिणीमें थोड़ा मालकंस रागकी छायाकाभी भास होता है.

कोई २ षड्ज व पंचम शुद्ध; ऋषभ कोमल; गंधार, मध्यम, धैवत व निषाद तीव्र लगाते हैं. धैवत व मध्यम कोमलभी लगाते हैं. यह देवगिरी, नट, मल्हार, सारंग व बिलावलसे मिश्रित है. खुशी उत्पन्न करती है.

समय—वसंत अथवा हेमंतऋतुमें दिनको प्रथम अथवा दूसरे प्रहरमें शृंगार रसमें गाते हैं. वसंतऋतुमें हरसमयभी गाते हैं.

मुख्य उपराग—गुणसागर, कुंभ, व गंगीर हैं.

यह रागिणी ठाट कालिंगड़ा नंबर ६ के ठाटपर कई लोग बजाते हैं; परंतु सब लोक यह रागिणी ठाट हिंडोल नंबर ७ के ठाटमेंही बजाते हैं.

सरगम.

अस्ताई—प म प ध प म ग ग म ध सा सा ध म ग रे रे सा सा नी नी रे रे ग ग प म ग ग सा नी नी सा नी नी ध ध ग ग रे रे सा।

अन्तरा—ग म ध सा सा सा ध म ग रे रे सा नी नी रे रे ग ग प म ग ग सा नी नी ध ध ग ग रे रे सा।

अभोग—म ध सा सा सा सा सा नी नी रे रे ग ग प म ग ग सा सा सा सा सा नी नी सा नी नी ध ध ग ग रे रे सा प म प ध प म ग ग म ध सा सा ध म ग रे रे सा।

वसंती गत १ ली. ताल–तिताला. (ठाठ कालिंगड़ा नंबर ६ पर.)

पड़दा.	१०	१०	१०	८	८	६	५	४	३	३	४	५	६	८	८	१०	८	१०	११	१३	१२	१२	१३
स्वर.	म	म	मा	रि	रि	नी	धा	धा	प	प	धा	धा	नी	रि	रि	मा	रे	मा	मा	धा	प	प	धा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१
ताल.			—					=					—					०					—

पड़दा.	११	११	१४	१३	१४	१३	१३	१२	१०	८	६	६	५	४	५	६	६
स्वर.	म	म	नी	धा	नी	ध	ध	पा	मा	रे	नि	नि	धा	धा	धा	नी	नी
बोल.	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.					=					—					०		

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	१०	१०	१०	८	८	६	५	४	४	४	४	४	५	३	३	४	५	४	५	६
स्वर.	म	म	मा	रि	रि	नी	धा	धा	धा	धा	ध	ध	धा	प	प	धा	धा	धा	धा	नी
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			—					=					—					०		

पड़दा.	५	५	४	३	३	३	४	४	५	५	६	५	६	५	५	४	५	६	८	१०
स्वर.	ध	ध	धा	प	प	पा	धा	धा	ध	ध	नी	धा	नी	ध	ध	धा	धा	नी	रे	मा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			—					=					—					०		

वसन्ती गत २ री. ताल—तिताला. (ठाट हिंडोल नंबर ७ पर)

पड़्दा.	१२	१२	११	१२	१२	१३	१२	११	९	९	११	११	१३	१५	१५	१५	१३	११	९	८
स्वर.	प	प	मा	प	प	धा	पा	मा	गा	गा	म	म	धा	स	स	सा	धा	मा	गा	रे
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	ड़ा	दि	ड	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			—					=					—					०		

पड़्दा.	७	७	७	६	६	८	९	१२	११	११	९	१५	१४	१५	१५	१४	१३	९	८	७
स्वर.	स	स	सा	नि	नि	रे	गा	पा	म	म	गा	सा	नी	स	स	नी	धा	गा	रे	सा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	ड़ा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			—					=					—					०		

तोड़ा १ ला.

पड़्दा.	९	९	११	१३	१३	१५	१५	१५	१३	११	९	९	८	८	८	१५	१४	१४	१६	१६
स्वर.	ग	ग	मा	ध	ध	सा	सा	सा	धा	मा	ग	ग	रे	रि	रि	सा	नी	नी	रे	रे
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			—					=					—					०		

पडदा.	१७	१७	१७	१२	१२	११	९	९	१५	१५	१४	१४	१३	१३	१३	९	५	८	८	७
स्वर.	ग	ग	गा	प	प	मा	गा	गा	स	स	नी	नी	धा	ध	ध	गा	गा	रे	रे	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			—					=					—					०		

(२) रागिणी आसावरी.

शृंगारस्वरूप—यह रागिणी श्यामवर्ण, सुकुमार, गुणवती, व सधवा है. इसके ललाटपर चंदनतिलक, गलेमें कुसुमके हार, भुजंग (सांप) सम बेनी, शरीरमें सुगंध द्रव्यका सुवास आ रहा है. यह श्वेतवल्कल परिधान करके पर्वतके शिखरपर शीतल वायु सेवन करती हुई बैठी है और कितनेक लोकोंके मतसे यह पर्वतके समीप सरोवरमें वस्त्ररहित यानी नंगी बैठी है. व विचारमें इतनी निमग्न हुई है कि, हाथ पैर सर्पोंने लिपेट लिये होकरभी, जिसे खबरही नहीं है कि, मेरे हाथ पैरोंमें सर्प लिपट गये हैं; इतनी विचार करनेमें निमग्न भई है.

जाति—संपूर्ण. गंधार व धैवत कोमल, निषाद दोनों और ऋषभ तीव्र है. आरोहमें गंधार व निषाद वर्ज्य हैं. शुद्धमध्यम ग्रह व पंचम न्यास है. कितनेएकोंके मतसे ऋषभ कोमल होकर धैवत न्यास है.

यह मल्हार, पर्ज व वसंतीसे मिश्रित है. खुशी उत्पन्न करती है.

समय—वसंत, हेमंत अथवा शिशिरऋतुमें दिनके प्रथम प्रहरमें शांतरसमें गाते हैं.

मुख्य उपराग—शंकर व बिहागरा हैं.

यह रागिणी ठाट भैरवी नंबर २ के ठाटमें बजाई जाती है.

सरगम.

अस्ताई—सा रे म प म म म म प प प प नी नी सा सा नी नी प प ध प म प नी नी प म म म ग रे सा।

अन्तरा—म प नी सा सा सा सा नी सा रे सा नी ध प नी ध प म ग रे सा।

अभोग—प नी सा सा सा सा सा नी सा रे रे सा सा सा सा ग ग रे रे सा सा सा नी सा सा नी ध प प नी ध प म ग रे सा।

आसावरी गत १ ली. ताल—तिताला.

पड़दा.	७	७	५	७	७	९	१०	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१२	१२
स्वर.	स	स	नी	स	स	गा	मा	पा	पा	पा	प	प	पा	ध	ध	धा	धा	धा	पा	पा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=		—			०			—		=		—

पड़दा.	१०	१०	१०	१०	१०	१२	१३	१३	१२	१२	१०	९	७	९	९	७	७	९	८	७
स्वर.	म	म	मा	म	म	पा	धा	धा	प	प	मा	गा	सा	ग	ग	सा	सा	गा	रे	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			•			—		=			—		०			—		=		—

तोड़ा १ ला.

			१०-११			१०-११				१५-१६	१५-१६		१५-१६		१५-१६		१५-१६
पड़दा.	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१२	१२	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५
स्वर.	म	म	मा	म	म	मा	पा	पा	सा	सा	स	स	सा	स	स	सा	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताल.			०			—		=		—			०			—	

		१५-१६	१५-१६	१५ १६	१५-१६							१५-१६		१४.१५	१४-१५
पड्दा.	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१४	१४	१२	१३	१५	१५	१५	१४	१४
स्वर.	सा	सा	सा	स	स	सा	नि	नि	पा	धा	सा	स	स	नी	नी
बोल.	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१
ताल.	=		—			०			—		=			—	

				१२-१३	१२-१३	१०-११		
पड्दा.	१३	१३	१३	१२	१२	१०	९	८
बोल.	धा	ध	ध	पा	पा	मा	गा	रे
बोल.	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.	०			—		=		—

(३) रागिणी मालवी.

शृंगारस्वरूप—यह विलासिनी, सुकुमार, मध्यवया, और रतिप्रसंगविषय. मुदिता है—इसका वस्त्र चित्र—विचित्र रंगका है. पुष्पोंके अलंकार धारण किये हैं. व सर्व शृंगारआभूषण धारण करके पतिकी राह देख रही है.

जाति—संपूर्ण, ऋषभ व धैवत कोमल; मध्यम तीव्र; आरोहमें ऋषभ व पंचम वर्ज्य हैं. निषाद अधिक नहीं आता. अवरोहमें धैवत क्वचित् आता है. गंधार ग्रह व धैवत न्यास है.

कोई २ षड्ज व पञ्चम शुद्ध, ऋषभ शृंगारिक, गंधार व धैवत तीव्र और मध्यम, निषाद दोनों लगाते हैं. यह गौरी, पर्ज व सोरठसे मिश्रित है.

समय—हेमंतऋतुमें संध्यासमय शृंगाररसमें गाते हैं. दिनको दो पहरपर भी गाई जाती है; तब संयोगकी खुशी देती है.

मुख्य उपराग—मालु है.

यह रागिणी ठाट हिंडोल नंबर ७ के ठाटमें बजाई जाती है.

स र ग म.

अस्ताई—सा नी ध म म रे म रे म म प नी रे नी म रे म म म म म म म
११ १०   ११   ११
रे ग म ध ध ध म ध नी ।
१४

अन्तरा—म प ध म ध नी सा सा सा सा नी ध म म रे म रे ग म प ध ध म ध नी ।

अभोग—म ध नी सा सा सा सा सा सा नी ध म म रे म रे म म प नी रे नी सा सा सा सा नी म रे म म म म म म म म रे ग म प ध ध म ध नी सा सा म म म रे ग ग नी सा ।

माळवी गत १ ली. ताळ—आडा चौताळा.

पड़दा.	७	१४	१३	११	११	१०	८	१०	८	१०	११	११	३	६	६	८	६
स्वर.	सा	नी	धा	म	म	मा	रे	मा	रे	मा	म	म	पा	नि	नि	रे	नी
बोल.	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताळ.	—		—			०		=		०			—			०	

पड़दा.	१०	११	११	१०	१०	१०	८	९	१०	१२	१३	१३	१३	११	११	१३	१४
स्वर.	मा	मा	मा	म	म	मा	रे	गा	मा	पा	ध	ध	धा	म	म	धा	नी
बोल.	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताळ.	—		—			०		=		०			—			०	

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	१०	१२	१३	११	११	१३	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१४	१३	१३	११	१०
स्वर.	मा	पा	धा	म	म	धा	नी	सा	सा	सा	स	स	नी	ध	ध	मा	मा
बोल.	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताळ.	—		—			•		=		•			—			०	

पड्दा.	८	१०	८	९	९	१०	१२	१३	१३	१३	११	११	१०	११	११	१३	१४
स्वर.	रे	मा	रे	ग	ग	मा	पा	धा	धा	धा	म	म	मा	म	म	धा	नी
बोल.	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताल.	—		—			•		=		०			—			०	

---

(४) रागिणी धनाश्री.

शृंगारस्वरूप—यह रागिनी विरहिनी है. इसका वस्त्र केशरी व शरीर शुष्क हुआ है. और हृदय श्वासभरित है. यह कंठमें मालतीके पुष्पोंकी माला धारण करके उपवनमें बकुलवृक्षके नीचे बैठी है, और पतिके विरहसे व्याकुल व निराश होकर रुदन करती है.

जाति—संपूर्ण. गंधार व निषाद कोमल और मध्यम शुद्ध; कईएकोंके मतसे तीव्र मध्यमभी लगता है; परन्तु ऐसा करनेसे धनाश्रीका स्वरूप बदलकर मुल्तानी राग हो जायगा; इससे मध्यम शुद्ध लेना चाहिये. आरोहमें ऋषभ व धैवत वर्ज्य हैं. गंधार ग्रह व पंचम न्यास है और पंचम प्रधानस्वर है. इस रागिनीमेंकी व भैरव और टोड़ीमेंके गंधार-की कोमलता एकसी है. कोई २ इसमें षड्ज व पंचम शुद्ध, ऋषभ मध्यम धैवत व निषाद तीव्र, गंधार व निषाद कोमल स्वर लगाते हैं.

समय—हेमंतऋतुमें दिनको दूसरे अथवा तीसरे प्रहरमें शृंगार अथवा वीररसमें गाते हैं.

मुख्य उपराग—गौड़ है.

यह रागिणी ठाट काफी नंबर ३ और ठाट पीलू नंबर ४ तथा ठाट कालिंगड़ा नंबर १ पर बजाई जाती है.

स र ग म.

अस्ताई—स नी नी सा सा म ग ग म प प नी नी सा नी ध प म ग ग ग प प म ग म ग रे सा।

अन्तरा—म म ग म प मी सा सा सा नी सा रे सा गा ध प प प म ग म ग रे सा।

अभोग—म म ग म प प नी सा सा सा सा सा नी सा सा रे सा सा सा सां नी ध प प रे रे सा सा सा सा नी सा प म ग म प प म ग म ग रे सा।

धनाश्री गत १ ली. ताल–तिताला (ठाट कालिंगडा नंबर ६ पर)

पड्दा.	६	६	७	९	९	११	१२	१३	११	९	११	११	९	८	८	७	६	७	७	७
स्वर.	नि	नि	सा	ग	ग	मा	पा	धा	मा	गा	म	म	गा	रि	रि	सा	नी	सा	सा	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			•			—		=		—			•			—		=		—

तोड़ा १ ला.

पड्दा.	१५	१५	१४	१३	१३	१२	११	१३	११	९	११	११	९	८	८	७	६	७	७	७
स्वर.	स	स	नी	ध	ध	पा	मा	धा	मा	गा	म	म	गा	रि	रि	सा	नी	सा	सा	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
बोल.			०			—		=		—			०			—		=		—

धनाश्री गत २ री. ताल–आड़ा चौताला: (ठाट काफी नं. ३ पर.).

पड्दा.	७	५	५	७	७	७	१०	९	९	१०	१२	१२	१२	१४	१४	१४	१५
स्वर.	सा	नी	नी	स	स	सा	मा	गा	गा	मा	प	प	पा	नि	नि	नी	सा
बोल:	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा
मात्रां.	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताल.	—		—			०		=		०			—			•	

पड्दा.	१४	१३	१२	१०	१०	९	९	९	१२	१२	१०	१०	९	१०	१०	९	८
स्वर.	नी	धा	पा	म	म	गा	गा	गा	पा	पा	म	म	गा	म	म	गा	रे
बोल.	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताल.	—		—			०		=		•			—			०	

तोड़ा १ ला.

पड्दा.	१०	१०	९	१०	१०	१२	१४	१५	१५	१४	१५	१५	१६	१५	१५	१४	१३
स्वर.	मा	मा	:गा	म	म	पा	नी	सा	सा	नी	स	स	रे	स	स	नी	धा
बोल.	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताल.	—		—			•		=		०			—			०	

पड़दा.	१२	१२	१६	१६	१६	१५	१५	१४	१५	१२	१०	१०	९	१०	१०	९	८
स्वर.	पा	पा	रे	रि	रि	सा	सा	नी	सा	पा	म	म	गा	म	म	गा	रे
बोल.	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताल.	—		—			०		=		०			—			०	

(५) रागिनी मालश्री.

शृंगारस्वरूप—यह गृहिणी सुकुमार है. इसका वर्ण गुलाबी, वस्त्र लाल, व कंचुकी पीत है. यह विरहिनी परन्तु वस्त्रालंकार पहिनकर सखियोंके समेत आम्रवृक्षके नीचे आनंदसे क्रीडा करती है.

जाति—षाडव. ऋषभ वर्ज्य; व सर्व स्वर शुद्ध हैं. गंधार प्रधान स्वर व पंचम न्यास है. धैवत व निषाद लुप्त हैं. कई लोग यह रागिनी षड्ज, गंधार व पंचम ये तीनही स्वर लेकर गाते हैं और कईलोग षड्ज पंचम शुद्ध, ऋषभ कोमल, गंधार मध्यम धैवत व निषाद तीव्र लगाते हैं. यह मधुमाधवी, शंकराभरण, केदारी व सरस्वतीसे मिश्रित है. खुशी उत्पन्न करती है.

समय—हेमन्तऋतुमें दिनको दूसरे अथवा तीसरे प्रहरमें गाते हैं.

मुख्य उपराग—सिंधु है.

यह रागिणी ठाट हिंडोल नंबर ७ के ठाटमें बजाई जाती है.

स र ग म.

अस्ताई—ग म ग रे नी सा नी सा ग म प प म ग ।

अन्तरा—ग म प सा सा सा सा नी ध प म प म ग रे सा ।

अभोग—म प सा सा सा सा ग ग रे रे नी नी सा सा सा सा नी सा सा सा सा नी ध प म सा नी ध प म सा सा सा सा नी ध प म प म ग प म ग रे सा ।

मालश्री गत १ ली. ताल--तिताला.

पड़दा.	१२	१२	१२	११	११	९	८	८	६	७	६	७	७	९	९	११	११	१२	११	९	८	७
स्वर.	पा	पा	SS	म	म	गा	रि	रि	नी	सा	नी	स	स	ग	ग	म	म	पा	म	गा	रि	सा
बोल.	दा	ड़ा	S	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.	=					—					०							—				

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	९	९	११	११	१२	१२	१५	१५	१५	१५	१४	१३	१२	१२	११	११	१२	१२	११	११	९	८	७
स्वर.	ग	ग	म	म	पा	प	सा	स	सा	सा	नी	धा	प	प	म	म	प	प	मा	म	गा	रि	सा
बोल.	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा
मात्रा.	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.	=						—					०							—				

पाठ छठवां.

(६) राग मेघ.

शृंगारस्वरूप—यह राग कामातुर, श्यामवर्ण, भव्यशरीर है. इसने हाथमें शस्त्र व मस्तकपर मुकुट धारण किये हैं; नाद सिंहके समान गंभीर होकर वीरोंकी सभामें छत्रयुक्त सिंहासनपर महावीर समान शोभित (विराजमान) है. इसकी उत्पत्ति इन्द्रसे है, ऐसा कहा गया है.

जाति—संपूर्ण. गंधार कोमल व निषाद शुद्ध हैं. मध्यम प्रधान स्वर है. गंधार ग्रह व न्यास है. आरोहमें गंधार वर्ज्य है. इस रागमें सारंग व गौड़मल्हार इन रागोंकी छाया लुप्त है. कईलोग यह राग ओड़वजातिका मानकर गंधार व निषाद वर्ज्य करते हैं. इसमें धैवत व गंधार ये स्वर कान्हड़ाके हैं.

यह राग कान्हड़ा, तिलक कामोद व सारंग इनसे मिलकर बना है. कल्याण, सावंत, कामोद व वसंतसेभी मिश्रित है. खुशी उत्पन्न करता है व गर्मीकी बीमारी दूर करता है.

समय—वर्षाऋतुमें दिनको तीसरे प्रहरमें अथवा उत्तररात्रिमें अथवा हरसमय शृंगार या वीररसमें गाते हैं.

इस रागकी पांच रागिनियां हैं:—टंकल १, मल्हारी २, गुर्जरी ३, भूपाली ४, और देशकारी ५.

इस रागका स्वरविस्तार इस प्रकारसे है:—

कानडा—तिलककामोदके स्वर—सा ध प ध प सा नी सा नी रे सा नी ।
सारंग—तिलक कामोद—कानड़ा—ध सा रे प म प म ग रे सा नी प म नी सा नी सा नी

प नी सा नी सा नी रे सा। **सारंग**—ध प ध प म ध **तिलक कामोद**—कानड़ा—सा ध प म ध सा ध प म ग रे म प सा नी सा ध प म प म ग रे सा.

यह राग ठाट काफी नंबर ३ के ठाटपर बजाया जाता है.

स र ग म.

अस्ताई—म म ध ध ध सा सा सा ध प म ग रे सा सा सा सा सा सा नी सा सा म म म म ध ध ध म सा सा सा।

अन्तरा—ग म म ध ध सा सा सा सा ध ध ध म म ध सा सा सा ध ध ध सा सा नी सा सा ध प म ग रे सा।

अभोग—म म ध ध ध सा सा सा सा नी सा म म म म ग ग रे सा सा सा ध ध ध म म म ध ध सा सा सा म म म ग ग ग रे रे सा सा सा नी सा सा ध ध सा सा ध प म ग रे सा।

मेघराग गत १ ली. ताल—तिताला.

पड़दा.	१२	१२	१२	१०	१०	१०	८	८	७	८	५	५	८	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१२
स्वर.	प	प	पा	म	म	मा	रे	रे	सा	रे	नि	नि	रे	म	म	मा	मा	मा	मा	पा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=		—			०		.	—		=		—

पड़दा.	१०	१०	१२	१३	१३	१५	१३	१२	९	९	१०	९	१०	९	९	१०	१०	१०	९	९
स्वर.	म	म	पा	ध	ध	सा	धा	पा	ग	ग	मा	गा	मा	ग	ग	मा	मा	मा	गा	गा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=			—		०			—		=		—

पड़दा.	१२	१२	१२	९	९	१०	८	७	८	८	१२	१२	९	१०	१०	१०	८	८	७	७
स्वर.	प	प	पा	ग	ग	मा	रे	सा	रे	रे	प	प	गा	म	म	मा	रे	रे	सा	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=		—			॰			—		=		—

तोडा १ ला.

पडदा.	१५	१५	१६	१४	१४	१५	१३	१२	१२	१२	१०	१०	१२	१०	१०	८	८	७	७	७
स्वर.	स	स	रे	नि	नि	सा	धा	पा	पा	पा	म	म	पा	म	म	रे	रे	सा	सा	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=		—			०			—		=		—

मेघराग गत २ री. ताल—ब्रह्म.

पडदा.	१५	१५	१५	१३	१३	१२	१०	९	८	८	७	७	७	७	७	७	७	७
स्वर.	सा	सा	सा	ध	ध	पा	मा	गा	रि	रि	सा	सा	सा	सा	सा	स	स	सा
बोल.	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१
ताल.	=		०			—		•			—		—		०			—

पडदा.	५	५	७	१०	१०	१०	१०	१३	१३	१३	१५	१५	१५	१०	१०	१०	१३	१३
स्वर.	नि	नि	सा	मा	मा	मा	मा	ध	ध	धा	सा	सा	सा	मा	म	म	धा	धा
बोल.	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	१
ताल.			—		—		०			—		—		—			०	

तोडा १ ला.

पडदा.	१०	१०	१३	१३	१३	१५	१५	१५	१५	१५	१३	१३	१३	१०	१०	१०	१०	१३
स्वर.	मा	मा	धा	ध	ध	सा	सा	सा	स	स	धा	धा	धा	मा	मा	म	म	धा
बोल.	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१
ताल.	=		०			—		०			—		—		०			—

पडदा.	१३	१३	१५	१५	१५	१५	१५	१४	१४	१५	१५	१३	१२	१०	९	९	८	७
स्वर.	ध	ध	सा	सा	सा	सा	सा	नि	नि	सा	सा	धा	पा	मा	ग	ग	रे	सा
बोल.	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१		॥	१	१
ताल.			—		—		०			—		—		—			•	

(१) रागिणी टंकल (टंक) या तनक.

शृंगारस्वरूप—यह रागिनी विरहिनी, श्वेतवस्त्र और अतिदुःखित है; अतएव पीतवर्ण जान पड़ती है. इसका चित्त क्षुब्ध होगया है; हृदय श्वासयुक्त होगया है; यह पतिविरहसे संतप्त होनेके कारण मनको शांतता प्राप्त होनेके वास्ते कमलपुष्पकी शैयापर सोनेपरभी मनका ताप कम न होनेसे शय्यापरही नागिनसी तड़फड़ा रही है.

जाति—संपूर्ण. ऋषभ व धैवत कोमल; मध्यम तीव्र है; ऋषभ ग्रह व न्यास होकर प्रधानस्वरभी वही है. पंचम अंशस्वर है. कोई २ षड्ज मध्यम व पंचम शुद्ध, ऋषभ कोमल, गंधार व निषाद तीव्र और धैवत अतितीव्र ऐसे स्वर लगाते हैं.

श्रीराग, कान्हड़ा व भैरवसे यह मिश्रित है. वियोगकी खुशी उत्पन्न करती है.

समय—वर्षाऋतुमें मध्यरात्रिमें गाई जाती है. इसका प्रचार पंजाबमें ज्याद: है.

मुख्य उपराग—जालंधर है.

यह रागिणी ठाट हिंडोल नंबर ७ पर बजाई जाती है.

स र ग म.

अस्ताई—ग म प सा नी रे सा प ग प म ग ग रे सा नी सा ग म प प सा नी रे सा सा प प ।

अन्तरा—ग म प सा सा सा सा नी रे नी रे नी सा सा प सा नीं सा रे सा प ग प प म ग रे सा ।

अभोग—प प सा सा सा सा नी रे नी रे नी सा सा सा प सा नी सा रे सा प ग प प प म ग ग ग रे सा नी सा सा सा रे रे सा प प ।

टंकल गत १ ली. ताल—चौताला.

पड़दा.	९	९	१०	१२	१२	१५	१४	१६	१५	१२	९	९	१२	१०	९
स्वर.	ग	ग	मा	प	प	सा	नी	रे	सा	पा	ग	ग	पा	मा	गा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	१	१
ताल.			—			—		=		०			—		०

पड़दा.	८	७	७	६	६	७	९	१०	१२	१५	१४	१४	८-७	७	१२
स्वर.	रि	स	सा	नि	नि	सा	गा	मा	पा	सा	नि	नि	रि-स	सा	पा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	१	१
ताल.			—			—		═		०			—		०

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	१०	१०	१२	१५	१५	१५	१४	१६	१४	१६	१४	१४	१५	१२	१५
स्वर	म	म	पा	स	स	सा	नी	रे	नी	रे	नि	नि	सा	पा	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	१	१
ताल			—			—		═		०			—		•
पड़दा.	१४	१४	१५	१६	१६	१५	१५	९	१२	१२	१०	१०	९	८	७
स्वर.	नि	नि	सा	रि	रि	सा	सा	गा	पा	पा	म	म	गा	रे	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	१	१
ताल.			—			—		═		•			—		०

---

(२) रागिणी मल्हारी (मल्हार.)

शृंगारस्वरूप—यह रसिकप्रिया, रतिविचित्रा, विरहिणी और एकांतवासिनी है. इसका वर्ण गौर, वस्त्र मलीन, शरीर शुष्क, गति मंद, शरीरपर चंपकपुष्पके अलंकार धारण किये हैं; नेत्र अश्रुयुक्त हुए हैं व हाथमें वीणा लेकर उदासमनसे गायन कर रही है.

जाति—संपूर्ण. सब स्वर शुद्ध हैं. पञ्चम ग्रह व धैवत न्यास है. आरोहमें गंधार वर्ज्य है; धैवत प्रधान स्वर है. मध्यम स्वरपर ठहरनेसे विशेष खूबी मालूम पड़ती है. कईलोग यह रागिनी षाड़वजातिकी समझकर निषाद वर्ज्य करते हैं. कोई २ षड्ज व मध्यम शुद्ध, ऋषभ गंधार व धैवत तीव्र; पंचम; निषाद कोमल स्वर लगाते हैं. सारंग सोरठ व बिलाव-वलसे मिश्रित है. खुशी उत्पन्न करती है.

समय—वर्षाऋतुमें दिनको अथवा रात्रिमें दो पहरपर वीर अथवा शृंगार रसमें गाते हैं. कोई २ वर्षाऋतुमें भी हरसमयमें गाते हैं.

मुख्य उपराग—सारंग व नंद हैं.

यह रागिनी ठाट खम्माच या देस नंबर ९ पर बजाई जाती है.

स र ग म.

अस्ताई—ध सा ध प म म ग रे सा रे म म म ग म म ।

अन्तरा—ग म ध सा सा सा सा ध प म म ग रे सा ।

अभोग—म म ध सा सा सा सा ध प म ग रे सा सा सा सा म म म म ग म म म ग रे सा सा सा सा सा ध सा ध ध ध ध सा सा सा ध प म ग रे सा ।

मल्हारी (मल्हार) गत १ ली. ताल—तिताला.

पड़दा.	७	७	८	१०	१०	१२	१२	१२	९	८	१०	१०	९	७	७	८	९	९	७	७
स्वर.	स	स	रे	म	म	पा	पा	पा	गा	रे	म	म	गा	स	स	रे	गा	गा	सा	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल,			०			—		=		—			०			—		=		—

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	८	८	८	८	८	८	८	७	७	८	१०	१०	९	७	७	८	९	९	७	७
स्वर.	रि	रि	रे	रि	रि	रे	रे	सा	सा	रे	म	म	गा	स	स	रे	गा	गा	सा	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=		—			०			—		=		—

तोड़ा २ रा.

पड़दा.	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	९	८	८	१०	१०	९	७	७	८	९	९	७	७
स्वर.	प	प	पा	प	प	पा	पा	गा	रे	रे	म	म	गा	स	स	रे	गा	गा	सा	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=		—			०			—		=		—

मल्हारी (मल्हार) गत २ री. ताल—तिताला.

पड़दा.	१३	१३	१५	१३	१३	१२	१०	१०	९	८	७	७	८	१०	१०	१०	१०	९	१०	१०
स्वर.	ध	ध	सा	ध	ध	पा	मा	मा	गा	रे	स	स	रे	म	म	मा	मा	गा	मा	मा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			—					=					—					०		

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	९	९	१०	१०	१०	१३	१५	१५	१५	१५	१३	१३	१२	१०	१०	१०	१०	९	८	७
स्वर.	ग	ग	मा	म	म	धा	सा	सा	सा	सा	ध	ध	पा	म	म	मा	मा	गा	रे	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			—					=					—					•		

---

(३) रागिणी गुर्जरी.

शृंगारस्वरूप—इसका वर्ण गौर, कटि सिंहसदृश, व वाणी मधुर है. यह सुकुमार, चतुर, गानकलाप्रवीण, रतिविचित्रा है. वस्त्र लाल और कंचुकी पीतवर्ण है. यह पतिसुखके अभावसे मनको ताप होनेके कारण शय्यापर व्याकुल होकर तड़फड़ा रही है. व थोड़ासी निद्रा लगीही थी, इतनेमें दचक कर इकाइक उठ कर वारंवार रुदन करती है.

जाति—संपूर्ण. ऋषभ व धैवत कोमल, अवरोहमें कोमल गंधार व शुद्ध निषादभी कभी २ आते हैं. निषाद बहुत ज्यादह नहीं आता. आरोहमें शुद्ध गंधार आता है. अवरोहमें मध्यम व निषाद वर्ज्य हैं. कोई २ षड्ज मध्यम व पंचम शुद्ध, ऋषभ गंधार व धैवत कोमल, मध्यम व निषाद तीव्र ऐसे स्वर लगाते हैं.

यह ललित और रामकरीसे मिश्रित है व खुशी उत्पन्न करती है.

समय—वर्षाऋतुमें दिनको अथवा रात्रिको दूसरे प्रहरमें शृंगाररसमें गाते हैं.

मुख्य उपराग—शंकराभरण है.

यह रागिणी ठाट नंबर १० के ठाटमें बजाई जाती है.

स र ग म.

अस्ताई—प म ध प म म रे सा सा सा नी सा सा रे रे रे ।

अन्तरा—म रे सा सा सा सा नी सा सा ध ध ध प म ध प म म रे सा ।

अभोग—प म म रे सा सा सा नी सा सा सा सा रे रे रे प म ध प म म रे
११ ११ ११

सा सा सा नी सा सा ध ध ध म म ग म ध प म रे सा नी ध ध ध ध म म ग म ध
११ ११ ११ ११ ११

प म म रे सा ।
११

गुर्जरी गत १ ली. ताल–तिताला.

पड़दा.	७	७	७ ८	६	६	७	७	१२	१२	१२	१२	१२	११	१३	१३	१२	११	९	८	७
स्वर.	स	स	स-रि	नि	नि	सा	सा	पा	पा	पा	प	प	मा	ध	ध	पा	मा	गा	रे	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=		—			०			—		=		—

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	८	८	७	६	६	४	४	४	६	६	७	९	११	१३	१३	१२	११	९	८	७
स्वर.	रि	रि	सा	नि	नि	धा	धा	धा	नि	नि	सा	गा	मा	ध	ध	पा	मा	गा	रे	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=			—		०			—		=		—

गुर्जरी गत २ री. ताल–तिताला.

पड़दा.	१२	१२	११	१३	१३	१२	११	१०	१०	८	७	७	७	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८
स्वर.	प	प	मा	ध	ध	पा	मा	मा	ऽ	रि	सा	सा	सा	नि	नि	स	स	स	स	रे	रि	रे	रि
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	C	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥
ताल-			- -					=					—							•			

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	१२	१२	१०	१०	८	८	१५	१५	१५	१५	१५	१४	१५	१३	१२	१२	११	११	१०	१०	८	८	८	७
स्वर.	प	प	म	म	रि	रि	सा	स	सा	स	सा	नी	सा	धा	प	प	म	म	म	म	रे	रि	रे	स
बोल.	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़
मात्रा.	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥
ताल.			—						=					—							•			

(४) रागिणी भूपाली.

शृंगारस्वरूप—इसका वर्ण गुलाबी, बोली मधुर व वस्त्र श्वेत है. इसके गलेमें सुगंधित पुष्पोंके हार पहिनेहुए हैं. शरीरमें केशर लेपन किया है; यह वस्त्रालंकारोंसे भूषित होकर आनंदसे अभिनययुक्त हो पतिके संग क्रीडा कर रही है.

जाति—ओडव. मध्यम व निषाद वर्ज्य हैं. धैवत ग्रह व प्रधान स्वर है. ऋषभसे ले गंधारतक न्यास है. बाकी सब स्वर शुद्ध हैं. यह रागिनी बिलावली, कल्याण व गौडसे मिश्रित है. प्रेमकी खुशी देती है.

समय--वर्षाऋतुमें सायंकाल अथवा प्रथम प्रहरमें शृंगाररसमें गाते हैं.

मुख्य उपराग---कल्याण व गजधर हैं.

यह रागिणी ठाट यमन नंबर १ के ठाटमें बजाई जाती है.

सरगम.

अस्ताई—सा सा सा प ग प ग रे रे सा ध ध सा रे ग ध प ग रे ग ग प ध प ग प ग रे सा।

अन्तरा—रे ग प ध सा सा सा ध ध सा सा ध प ग प ध सा सा ध सा ध प ग प ग रे सा।

अभोग—ग प सा सा सा ध ध सा सा सा रे रे ग ग ग रे सा सा सा सा ध प ग रे ग प सा ध ध सा प प ध सा सा ध प ग रे ग ग प ध सा सा ध प ग प ध प ग रे सा।

भूपाली गत १ ली. ताल-तिताला.

पड़दा.	३	३	३	४	४	७	८	९	९	९	९	९	८	१३	१३	१२	१२	१२	९	८
स्वर.	प	प	पा	ध	ध	सा	रे	गा	गा	गा	ग	ग	रे	ध	ध	पा	पा	पा	गा	रे
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=		—			०			—		=		—

पड़दा.	८	८	७	९	९	८	८	८	७	७	७	७	४	८	८	७	७	७	४	४
स्वर.	रि	रि	सा	ग	ग	रे	रे	रे	सा	सा	स	स	धा	रि	रि	मा	सा	सा	धा	धा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=		—			०			—		=		—

तोडा १ ला.

पड्दा.	९	९	९	१२	१२	१३	१५	१३	१६	१६	१५	१३	१२	९	९	८	९	९	८	७
स्वर.	ग	ग	गा	प	प	धा	सा	धा	रि	रि	सा	धा	पा	ग	ग	रे	गा	गा	रे	सा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=			—		०			—		=		—

भूपाली गत २ री. ताल–तिताला.

६-७

पड्दा.	७	७	७	४	४	७	८	९	९	८	८	८	६	८	८	९	९	८	८	७
स्वर.	स	स	सा	ध	धा	सा	रे	गा	गा	रे	रि	रि	नी	रि	रि	गा	गा	रे	रे	सा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड़	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=		—			०			—		=		—

पड्दा.	७	७	७	४	४	७	८	७	४	४	३	४	४	७	७	४	७	९	८	७
स्वर.	स	स	सा	ध	ध	सा	रे	सा	ध	ध	पा	धा	धा	स	स	धा	सा	गा	रे	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	डा	दा	दि	ड़	दा	डा	दा	दि	ड़	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=			—		०			—		=		—

तोडा १ ला.

१३ १२

पड्दा.	९	९	९	१२	१२	१३	१५	१३	१५	१५	१५	१५	१३	१६	१६	१५	१५	१३	१३	१३
स्वर.	ग	ग	गा	प	प	धा	सा	धा	सा	सा	स	स	धा	रि	रि	सा	सा	धा	धा	धा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=		—			०			—		=		—

पड्दा.	१७	१७	१६	१५	१५	१३	१५	१३	१६	१६	१५	१५	१३	१२	१२	९	१२	९	८	७
स्वर	ग	ग	रे	स	स	धा	सा	धा	रि	रि	सा	सा	धा	प	प	गा	पा	गा	रे	स
बोल.	दि	ड़	डा	दि	ड़	दा	डा	दा	दि	ड़	दा	डा	दा	दि	ड़	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=			—		०			—		=		—

भूपाली गत ३ री. ताल—एकताला.

पड़दा.	१२	८	९	९	१२	१३	१५	१५	१३	१२	९	१२	८	८	९	९	७	४	७
स्वर.	पा	रे	गा	ऽऽ	पा	धा	सा	ऽऽ	धा	पा	गा	पा	रि	रि	ग	ग	सा	धा	सा
बोल.	दा	ड़ा	दा	ऽ	दा	ड़ा	दा	ऽ	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़ा	दा
मात्रा.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	१	१	१
ताल.			=						=								=		

पड़दा.	८	८	७	७	९	९	७	७	४	४	३	४	४	७	८	८	७	९
स्वर.	रि	रि	स	स	ग	ग	सा	स	धा	ध	पा	धा	ऽऽ	सा	रि	रि	सा	गा
बोल.	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा	ड़ा	ऽ	दा	दि	ड़	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	१	१	॥	॥	१	१
ताल.							=							=				

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	८	१२	१२	९	९	१३	१३	१२	७	७	१२	१२	१३	१३	९	९	१२	१२	९	९
स्वर.	रे	प	प	ग	ग	ध	ध	पा	स	स	प	प	धा	ध	गा	ग	प	प	गा	ग
बोल.	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दि	ड़	दा	ड़
मात्रा.	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	॥	॥	१	॥
ताल.					=										=					

पड़दा.	८	८	७	७	४	७	३	३	४	४	८	७	७	१३	१३	१२	१२	९	९
स्वर.	रे	रि	स	स	धा	सा	प	प	ध	ध	रे	सा	सा	ध	ध	प	प	ग	ग
बोल.	दा	ड़	दि	ड़	दा	ड़ा	दि	ड़	दि	ड़	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़
मात्रा.	१	॥	॥	॥	१	१	॥	॥	॥	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥
ताल.			=	=								=							

पड़दा.	१२	१२	९	९	७	८
स्वर.	पा	प	गा	ग	सा	रे
बोल.	दा	ड	दा	ड	दा	डा
मात्रा.	१	॥	१	॥	१	१
ताल.		=				

---

(५) रागिणी देशकारी.

शृंगारस्वरूप—इसका वर्ण गौर, वचन मधुर और हास्य मंद है. कपोलपर काला तिल (मस्सा) शोभित हो रहा है; शरीरमें अरगजा व चंदनका लेप किया है;गलेमें मदनबाण व

निशागंधके फूलोंका हार धारण किया है व यह पतिके साथ अभिनय और आनंदयुक्त होकर क्रीडा करती है.

जाति—षाड्व. निषाद वर्ज्य है. मध्यम बहुतसा नहीं आता. सर्व स्वर शुद्ध हैं. कितनेएक लोग इसकी ओड्वजाति समझकर निषाद व मध्यम वर्ज्य करते हैं. और कोई २ षड्‌ज व पंचम शुद्ध, ऋषभ गंधार धैवत व निषाद कोमल, और मध्यम कोमल व तीव्र दोनों लगाते हैं.

यह पर्ज, सरस्वती व सोरठसे मिश्रित है. खुशी उत्पन्न करती है.

समय—वर्षाऋतुमें प्रथम प्रहरमें शृंगाररसमें गाते हैं.

मुख्य उपराग—गंधार व सूहा हैं.

यह रागिनी ठाट भैरवी नंबर २ के ठाटमें बजाई जाती है.

स र ग म.

अस्ताई—सा ध ध सा रे ग ग ग ग रे रे रे ग ग सा सा।

अन्तरा–रे ग ग सा रे नी नी रे प प ध ग गं रे ग सा रे ग ग ग रे ग सा।

अभोग—प प ध ग ग रे ग सा रे ग ग ग ग रे ग सा सा सा रे ग सा सा सा सा रे नी नी नी रे प प प ध ग ग ग ग रे ग सा रे ग ग ग ग रे ग सा रे ग सा सा।

देशकारी गत १ ली. ताल तीव्रा.

पड़दा.	७	७	४	४	४	७	८	९	९	९	९	९	८	८	८	८	९	९	७	७
स्वर.	स	स	धा	ध	ध	सा	रे	गा	गा	गा	ग	ग	रे	रि	रि	रे	गा	गा	सा	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	ड़
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			—			—		=		०			—			—		=		०

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	८	८	९	९	९	१५	१६	१४	१४	१६	१२	१२	१२	१३	९	९	८	९	७
स्वर.	रि	रि	गा	ग	ग	सा	रे	नी	नी	रे	प	प	पा	धा	गा	गा	रे	गा	सा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	डा	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	१	१
ताल.			—			—		=		०			—		—		=		०

पाठ सातवा.

मुख्य छः राग व तीस रागिनियोंका विस्तारसहित हाल पहले देही चुके हैं; उसके शिवाय अन्य दूसरेभी प्रचलित रागोंका संक्षिप्त हाल इसके आगे दिया जाता है:–

१ राग पंचम—जाति षाडव. ऋषभ वर्ज्य होकर मध्यम प्रधान स्वर है. कई इसे ओडवजातिका समझते हैं और ऋषभ व पंचम वर्ज्य करते हैं; परन्तु ऐसा करनेसे हिंडोल व वसंत इनके साथ इस रागका निकट साम्य हो जायगा अतएव पंचम स्वर इस पञ्चम रागमें वर्ज्य न करे. यह राग भैरवकी (व कईएकोंके मतसे हिंडोलकी) शाखामेंसे है.

२ देवगंधार—जाति संपूर्ण. ऋषभ व धैवत कोमल होकर शुद्ध मध्यम प्रधान स्वर है. इसमें भैरव, रामकली, व आसावरीके स्वर आते हैं. कितनेएकोंके मतसे यह राग टोडी व आसावरीसे उत्पन्न हुआ है और इसमें कोमल निषाद है व धैवत न्यास है; और अवरोहमें ऋषभ, गंधार व निषाद वर्ज्य हैं. यह राग योगाभ्यास करनेवालोंको बहुत उत्तम व योग्य (एक बड़ा साधन) है.

३ करनाट—जाति संपूर्ण. सब स्वर शुद्ध हैं. धैवत ग्रह व न्यास है. इसमें बिलावलीकी छाया आती है.

४ जौनपुरी टोड़ी—जाति संपूर्ण. यह आसावरी व टोडीसे उत्पन्न हुई है. शाखा भैरव रागकी.

५ लाचारी टोडी—जाति संपूर्ण. यह टोडी, आसावरी व देवगंधार इनसे उत्पन्न हुई है. ऋषभार मूर्च्छना है. शाखा भैरव रागकी.

६ पलाशिका—जाति संपूर्ण. गंधार व निषाद कोमल. मध्यम दोनों. कोमल निषाद व शुद्ध मध्यम प्रधान स्वर है. इसमें धनाश्री व पूर्वी इनकी संयुक्त छाया है. शाखा दीपक रागकी.

७ सारंग—जाति ओडव. गंधार व धैवत वर्ज्य. निषाद दोनों अर्थात् आरोहमें तीव्र व अवरोहमें कोमल, मध्यम प्रधानस्वर होकर षड्ज या ऋषभ ग्रह व पंचम या निषाद न्यास है; कभी मध्यमभी न्यास होता है.

८ गौड़सारंग—जाति षाडव. निषाद वर्ज्य. मध्यम दोनों. बाकीके स्वर शुद्ध हैं.

९ वृंदावनी सारंग—जाति ओडव. गंधार व धैवत वर्ज्य. निषाद कोमल होकर न्यास है. मध्यम व निषाद प्रधान स्वर हैं व बाकी स्वर सारंगके समान हैं.

१० सामतसारंग—जाति ओड़व, गंधार व धैवत वर्ज्य हैं; परन्तु धैवत लेकर षाडवी हो सकता है. यह सारंग मल्हार व सोरठसे हुआ है. सारंगका मध्यम प्रधान स्वर है.

११ नूरसारंग—जाति षाडव. धैवत वर्ज्य. निषाद दोनों. गंधार कोमल है, इसमें सारंग, बरवा व धानीकी छाया आती है.

१२ देवगिरी सारंग—जाति संपूर्ण. निषाद दोनों. बाकीके स्वर शुद्ध हैं. यह सारंग देवगंधार व बिलावल इनका मिश्रस्वरूप है.

१३ मेघसारंग—जाति षाडव. धैवत वर्ज्य. निषाद दोनों व गंधार कोमल है. मेघ व सारंग इनका यह मिश्रित स्वरूप है.

१४ लंकदहन सारंग—इसका स्वरूप बहुसा मेघसारंगके सदृश है.

१५ सोरठ—जाति संपूर्ण. निषाद दोनों यानी आरोहमें तीव्र व अवरोहमें कोमल. आरोहमें गंधार व धैवत वर्ज्य हैं. पंचम न्यास व ऋषभ प्रधान स्वर है. कभी २ षड्ज, ऋषभ या मध्यम न्यास हो जाता है. देस व सोरठ इन्होंसे बहुसा साम्य है.

१६ गौड़मल्हार—जाति षाडव. निषाद वर्ज्य. गंधार प्रधान स्वर व न्यास है. शायद तीव्रमध्यमभी आता है. मध्यमपर मूर्च्छना है. निषाद लेकर इसकी संपूर्ण जातिभी हो जाती है.

१७ मियानीमल्हार—जाति संपूर्ण. गंधार कोमल, निषाद दोनों व बाकीके स्वर शुद्ध हैं. यह राग मल्हार व कान्हड़ा इनका संयुक्त स्वरूपही है.

सारंगसे मियानी मल्हारतक (७ से १७) सर्व राग मेघरागकी शाखामें आते हैं.

१८ काफी—जाति संपूर्ण. गंधार व निषाद कोमल हैं. बाकीके स्वर शुद्ध हैं. गंधार अथवा निषाद ग्रह व पंचम न्यास है. गंधार अंशस्वर है.

१९ तिलंग—जाति संपूर्ण. सब स्वर शुद्ध हैं; परन्तु कभी २ कोमल गंधार व कोमल निषादभी आते हैं. आरोहमें ऋषभ व धैवत वर्ज्य हैं. तीव्र गंधार ग्रह व कोमल निषाद न्यास है. इसका व खमाच रागका स्वरूप बहुसा समानही है.

२० जंगला—जाति संपूर्ण. सर्व स्वर शुद्ध हैं, परन्तु कभी २ कोमल गंधार, कोमल निषाद व तीव्र मध्यम आते हैं. धैवत ग्रह व गंधार अथवा ऋषभ न्यास है. धैवत प्रधान स्वर है. गंधारपर मूर्च्छना है यह सोरठ व झिंझोटी इनसे उत्पन्न हुआ है.

२१ मांढ़—जाति संपूर्ण. सर्व स्वर शुद्ध हैं. धैवत प्रधान स्वर है. षड्ज ग्रह

व न्यास है. कभी २ पंचमभी न्यास होता है. आरोहमें गंधार वर्ज्य है. निषाद व गंधार पर मूर्च्छना है.

२२ **पीलु**—जाति संपूर्ण. ऋषभ, गंधार, मध्यम, धैवत व निषाद ये सब स्वर कोमल व तीव्र दोनों आते हैं; परन्तु विशेष करके गंधार, धैवत व निषाद येही कोमल होते हैं. गंधार प्रधान स्वर व निषाद न्यास है. और इस रागमें सब स्वर अर्थात् बारहों स्वर आते हैं.

२३ **हिजाज़**—जाति संपूर्ण. गंधार दोनों व निषादभी दोनों आते हैं. षड्ज ग्रह व न्यास है. ऋषभपर मूर्च्छना है. इसमें सोरठीकी छाया आती है.

२४ **मधुर**—जाति संपूर्ण. सब स्वर शुद्ध हैं. ऋषभपर मूर्च्छना है. धैवत अधिकसा नहीं आता.

२५ **देशी जिल्हा**—जाति संपूर्ण. सब स्वर शुद्ध हैं षड्ज ग्रह व न्यास है. मध्यम प्रधानस्वर है.

२६ **जैतश्री**—जाति संपूर्ण. ऋषभ और धैवत कोमल व मध्यम तीव्र है. आरोहमें ऋषभ व धैवत वर्ज्य हैं. शुद्ध धैवतभी कभी २ आता है. शाखा दीपक रागकी.

२७ **बरवा**—जाति संपूर्ण. गंधार दोनों व निषाद दोनों आते हैं; परन्तु बहुत करके गंधार कोमल. व निषाद शुद्ध लेते हैं. कभी २ ऋषभ व धैवत कोमल होता है. आरोहमें गंधार वर्ज्य है. धैवत प्रधान स्वर है.

२८ **मारवा**—जाति . षाड्व. पंचम वर्ज्य. ऋषभ कोमल व मध्यम तीव्र, शुद्ध धैवत प्रधान स्वर है. ऋषभ ग्रह व मध्यमसे धैवततक न्यास है. गंधार तीव्र है. इसका पूर्वीरागसे साम्य है.

२९ **रायसा**—जाति संपूर्ण. गंधार व निषाद कोमल व शुद्ध निषादभी आता है.

३० **सिंदूरा**—जाति संपूर्ण. गंधार व निषाद कोमल. आरोहमें शुद्ध निषाद आता है. शुद्ध मध्यम प्रधानस्वर है.

३१ **सुरपर्दा**—जाति संपूर्ण. सब स्वर शुद्ध. आरोहमें ऋषभ वर्ज्य. गंधार ग्रह है.

३२ **धानी**—जाति संपूर्ण. गंधार कोमल व बाकीके स्वर शुद्ध हैं. कोमल निषादभी आता है. गंधार प्रधान स्वर है.

३३ **दीपकी**—जाति संपूर्ण. गंधार व निषाद कोमल, व मध्यम तीव्र है. शुद्ध निषाद व कोमल धैवतभी आता है. इस रागिनीका धनाश्रीसे साम्य है.

३४ पूर्वी—जाति संपूर्ण. ऋषभ व धैवत कोमल. मध्यम तीव्र. शुद्ध धैवतभी आता है. अवरोहमें पंचम वर्ज्य. गंधार ग्रह व पंचम न्यास है. मारवा व पूर्वी इन दोनोंका स्वरूप बिलकुल एकसाही है. परन्तु फर्क इतनाही है कि, पूर्वीमें पंचम फकत् आरोहमें आता है और मारवामें पंचम बिलकुलही नहीं आता. इसके सिवाय मारवामें अवरोहमें सम है व इसमें आरोहमें सम है. गंधार स्वरपर थोड़ा ठहरनेसे सोहनीकी छाया जान पड़ती है.

३५ रैनकी पूर्वी—जाति षाड़व. पंचम वर्ज्य है. ऋषभ व धैवत कोमल है.

३६ ललित गौरी—जाति षाडव, पंचम वर्ज्य. मध्यम शुद्ध है, ललित व गौरी इनका यह संयुक्त स्वरूप है.

३७ त्रिवेणी—जाति षाडव. मध्यम वर्ज्य. आरोहमें निषाद व अवरोहमें धैवत वर्ज्य. धैवत ग्रह व न्यास है. मध्यम लेकर संपूर्णजातिभी इसकी होती है.

पूर्वीसे त्रिवेणीतक (३४ से ३७) सब रागिनी श्रीरागकी शाखामें आती हैं.

३८ शुक्ल बिलावल—जाति संपूर्ण. गंधार व निषाद कोमल व बाकीके स्वर शुद्ध हैं, आरोहमें निषाद वर्ज्य. यह राग मेघरागके समान स्वरवाला है.

३९ देवगिरी बिलावल—जाति संपूर्ण, मध्यम दोनों. बाकीके स्वर सब शुद्ध हैं. इसमें कल्याण व गौड़ इनकी छाया है.

४० नटबिलावल—जाति षाड़व. निषाद वर्ज्य. बाकीके सब स्वर शुद्ध हैं.

ऊपरके तीन राग (३८ से ४० तक) मालकंसकी शाखामें आते हैं.

४१ छायानट—जाति षाडव, निषाद वर्ज्य, धैवत या ऋषभ ग्रह व पंचम न्यास है. धैवत प्रधानस्वर है, कोमल निषाद लेकर संपूर्ण जातिभी होती है.

४२ हमीरनट—जाति संपूर्ण. मध्यम दोनों होकर बाकीके सब स्वर शुद्ध हैं. हमीर—कल्याण व नट इनका यह मिश्रित स्वरूप है.

४३ केदारनट—जाति संपूर्ण. मध्यम दोनों; निषाद कोमल; व बाकीके स्वर शुद्ध हैं. गंधार या मध्यम ग्रह व धैवत न्यास है. मध्यम या पंचम प्रधानस्वर है.

ऊपरके तीन राग (४१ से ४३ तक) दीपरागकी शाखाके हैं.

४४ झिंझोटी—जाति संपूर्ण. निषाद दोनों. व बाकीके स्वर शुद्ध हैं. धैवत प्रधान स्वर है. षड्ज व गंधार इनपर मूर्च्छना है.

४५ कल्याण—जाति संपूर्ण. मध्यम दोनों; व बाकीके स्वर शुद्ध हैं. गंधार प्रधान स्वर है.

४६ यमन–कल्याण—जाति संपूर्ण. मध्यम तीव्र है. आरोहमें कभी २ मध्यम व निषाद वर्ज्य करते हैं. गंधार ग्रह, न्यास, व प्रधान स्वर है.

४७ हमीर–कल्याण—जाति षाड्व, निषाद वर्ज्य. मध्यम दोनों. गंधार ग्रह व धैवत न्यास है. इसमें नट, केदारा व कल्याण इनकी छाया आती है. कई लोग इसे संपूर्णजाति समझकर शुद्ध निषाद लेते हैं परन्तु ऐसा करनेसे इसमें केदाराकी छाया स्पष्ट दिखाई देती है अतएव निषाद वर्ज्य करना चाहिये.

४८ पूर्वी–कल्याण—जाति संपूर्ण. ऋषभ व धैवत शुद्ध. कोमल ऋषभभी आता है. कल्याण व पूर्वी इनका यह संयुक्तरूप है. शाखा श्रीरागकी.

४९ भूपाली–कल्याण—जाति ओड्व. मध्यम व निषाद वर्ज्य. धैवत ग्रह व ऋषभ न्यास है और धैवत प्रधान स्वर है.

५० वाघेश्वरी (बागेसरी)—जाति संपूर्ण. गंधार कोमल. निषाद (विशेषकरके कोमल परन्तु कभी २ आरोहमेंही) दोनों आते हैं. अवरोहमें मध्यमपरसे ऋषभकी लाग है. षड्ज व धैवत इनपर मूर्च्छना है. धैवतपर निषादकी मेंढ़ लेते हैं.

५१ अड़ाना—जाति संपूर्ण. गंधार व निषाद कोमल. कभी २ शुद्ध निषादभी आता है. गंधार बहुत नहीं आता. ऋषभसे मध्यमतक ग्रह है.

५२ शहाना—जाति संपूर्ण. गंधार व निषाद कोमल. ऋषभ व धैवत तीव्र, मध्यम ग्रह व प्रधान स्वर है.

५३ ब्रह्मावर्त—जाति संपूर्ण. ऋषभ कोमल. निषाद दोनों. आरोहमें गंधार क्वचित् आता है. यह राग योगाभ्यासी लोग शांतरसमें गाते हैं.

५४ भूप—जाति ओड्व. मध्यम व निषाद वर्ज्य. भूपकल्याणसे इसकी अधिक समता है; परन्तु कल्याणमेंका तीव्र मध्यम इन दोनोंमेंभी नहीं आता. कई लोग शुद्ध मध्यम लेकर संपूर्ण जाति मानते हैं. मध्यम लेते समय झिंझोटी–जंगलाकी छाया आती है.

५५ दरबारी कानड़ा—जाति संपूर्ण. गंधार व निषाद कोमल, व बाकीके स्वर शुद्ध हैं. धैवत प्रधान स्वर व न्यास है.

५६ अड़ाना कानड़ा—जाति संपूर्णः गंधार व निषाद कोमल हैं; परन्तु शुद्ध निषादभी आता है. मध्यम ग्रह है. मेघ व कान्हडा इनका संयुक्त स्वरूप इसमें आता है.

५७ नायकी कानड़ा—जाति षाड्व. धैवत वर्ज्य. सारंग व कान्हड़ा इन रागोंसे इसकी उत्पत्ति है.

५८ काफी कानड़ा—जाति संपूर्ण. गंधार व निषाद कोमल; गंधार प्रधान स्वर है. काफी व कान्हड़ा इनका यह संयुक्त स्वरूप है.

५९ शहाना कानड़ा—जाति संपूर्ण. मल्हार, कान्हड़ा व सारंग इन रागोंसे इसकी उत्पत्ति है.

६० सूहा कानड़ा—सारंग व मियानी मल्हार इनके संयुक्त स्वरूपसे यह राग उत्पन्न हुआ है.

६१ रायसा कानड़ा—जाति संपूर्ण. गंधार दोनों आते हैं. कान्हड़ा व सारंग इनका यह मिश्रस्वरूप है. इसमें धानी व जंगला इनकी छाया आती है. यह राग शरद-ऋतुमें पौर्णिमाकी रात्रिमें रासक्रीड़ामें गाते हैं.

६२ बहार कानड़ा—जाति संपूर्ण. इसका स्वरूप मल्हारके समान बहुतसा है. परन्तु इसमें नट रागकी छाया विशेष आती है.

६३ कौशिक कानड़ा—जाति संपूर्ण. गंधार व निषाद कोमल. मध्यम प्रधान स्वर हैं. इसमें मालकंस व वाघेश्वरी (बागेसरी) की छाया आती है.

६४ गारा कानड़ा—जाति संपूर्ण. यह वाघेश्वरी झिंझोटीका संयुक्त स्वरूप है.

६५ सुघराई कानड़ा—जाति संपूर्ण. गंधार दोनों व निषादभी दोनों आते हैं. मल्हार व कानड़ा इनका यह संयुक्तस्वरूप है. इसमें सोरठीकी छाया मिश्र है. इसमेंके मल्हारको सुरमल्हार या सूरदासजीका मल्हार कहते हैं.

६६ सिंदूरा कानड़ा—जाति संपूर्ण. मध्यम ग्रह व प्रधान स्वर है, कान्हड़ा, वाघेश्वरी (बागेसरी) व काफी इनसे यह राग उत्पन्न हुआ है.

६७ चांदनी केदार—यह राग केदारा व शंकरा इन रागोंसे उत्पन्न हुआ है.

६८ जलधर केदार—केदारा व मल्हार इनका यह मिश्रस्वरूप है.

६९ कालिंगड़ा—जाति संपूर्ण. ऋषभ व धैवत कोमल, व बाकीके स्वर शुद्ध हैं. षड्ज ग्रह व मध्यम न्यास है. मध्यमपर मूर्च्छना है.

७० परज कालिंगड़ा—जाति संपूर्ण. परज व कालिंगड़ाका यह मिश्र स्वरूप है.

७१ जोगी कालिंगड़ा—जाति संपूर्ण. कालिंगड़ा व जोगी इनसे यह राग उत्पन्न हुआ है.

७२ शंकरा—जाति संपूर्ण. मध्यम दोनों. गंधार व निषाद तीव्र और वेही प्रधान स्वर हैं. गंधारसे पंचमतक ग्रह व न्यास है. आरोहमें ऋषभ व धैवत वर्ज्य हैं. अवरोहमें गंधारके साथ ऋषभ बिन जाने लेनेमें आता है. तीव्र मध्यम व गंधार इनका मिलाप पूर्वीकी छाया दिखलाता है.

७३ शंकरानंद—जाति संपूर्ण. ऋषभ, गंधार व पंचम अंशस्वर हैं. इस राग-मेंके स्वरोंको कंप बहुत है: यह राग शंकराभरणसे उत्पन्न हुआ है.

७४ जयजयवंती—जाति संपूर्ण. गंधार दोनों. निषाद दोनों अर्थात् आरोहमें शुद्ध व अवरोहमें कोमल निषाद. मध्यम तीव्र है. षड्ज ऋषभ व गंधार इनके बीचमें ग्रह व न्यास है. इसमें सोरठीकी छाया आती है. उसी प्रकार कोमल गंधार लेतेहुए कान्हड़ा या काफीका भास जान पड़ता है.

७५ बहार हिंडोल—जाति संपूर्ण है. तथापि ऋषभ बहुत नहीं आता.

७६ परज—जाति संपूर्ण. ऋषभ व धैवत कोमल. मध्यम दोनों आते हैं. षड्ज या गंधार ग्रह व धैवत न्यास है.इसमें वसंत और पूर्वी इनकी छाया आती है. उसी प्रकार भैरव-कामी भास होता है. यह राग गानेमें भक्तिरस प्रधान है.

७७ विहंग—जाति संपूर्ण. गंधार ग्रह व मध्यम न्यास है. धैवत प्रधानस्वर है. आरोहमें ऋषभ व धैवत वर्ज्य हैं. इसका बिहागके साथ बहुतसा साम्य है.

७८ सोहनी—जाति षाडव. पंचम वर्ज्य. ऋषभ व धैवत कोमल; मध्यम तीव्र व बाकीके सब स्वर शुद्ध हैं. ऋषभ ग्रह व गंधार प्रधान स्वर है. कई लोग ऋषभ व पंचम वर्ज्य करके ओडवजाति मानते हैं.

७९ बिहाग—जाति संपूर्ण. सब स्वर शुद्ध हैं. गंधार या निषाद ग्रह है. गंधार प्रधान स्वर है. आरोहमें ऋषभ व धैवत वर्ज्य है. पंचम ग्रह करनेसे आरोहमें गंधार वर्ज्य करना चाहिये. निषाद व मध्यम इनपर मूर्च्छना है. ऋषभ व धैवत वर्ज्य करके ओडव रूप होता है. उसी प्रकार ऋषभ या धैवत वर्ज्य करके षाडवरूपभी होता है.

८० षट्—जाति संपूर्ण. ऋषभ व धैवत कोमल: बाकीके सब स्वर शुद्ध हैं. तीव्र मध्यमभी कभी २ आता है. गंधार ग्रह व धैवत न्यास है. धैवत प्रधान स्वर है. अवरोहमें ऋषभ वर्ज्य है. इसका भैरव व रामकली इनसे समता है.

८१ बिभास—जाति ओडव. मध्यम व निषाद वर्ज्य. गंधार ग्रह व पंचम न्यास है. गंधार प्रधानस्वर है. इसका भूपकल्याणके साथ बहुतसा साम्य है.

ऊपर छः राग और तीस रागिनियां इनकी गतें तथा दूसरे प्रसिद्ध २ऐसे ८१ रागोंका संक्षिप्त हाल दिया है. अब आगे एकही गत पांच रागोंमें व पांच तालोंमें कैसी बजाना यह दिखकर कुछ विशेष प्रचलित राग रागिनियोंकी गतें, हर एक राग-रागिनियोंमें गानेकी चीजें और साहित्यविचारभी लिखकर इस पुस्तककी समाप्ति कीजायगी.

पाठ आठवां.

गत १ ली राग विभासमें.

ताल झप. (ठाट कालिंगडा. नंबर ६ पर.)

(यह एकही गत पांच रागों व पांच तालोंमें दी गई है. यथाः-)

पड़दा.	१३	९	१२	१२	९	८	७	७	४	३	४	७	८	८	७	७	९	८
स्वर.	धा	गा	पा	ऽऽ	गा	रे	सा	ऽऽ	धा	पा	धा	सा	रि	रि	स	स	गा	रे
बोल.	दा	डा	दा	S	दा	ड़ा	दा	S	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़ा
मात्रा.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	१	१
ताल.			═		—					—			═				—	

पड़दा.	९	१२	१२	९	९	१३	१३	१२	१२	१५	१५	१३	१२	१२	१३	९	९	८	७
स्वर.	गा	प	प	ग	ग	ध	ध	पा	प	सा	स	धा	पा	ऽऽ	धा	ग	ग	रे	सा
बोल.	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा	ड़ा	S	दा	दि	ड	दा	ड़ा
मात्रा.	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	१	१	॥	॥	१	१
ताल.						—	—			═	═		—						—

तोड़ा. १ ला

पड़दा.	१५	१२	१२	१३	१३	९	९	४	८	८	७	७	३	३	४	४	७	७	८	८	७	७
स्वर.	सा	प	प	ध	ध	ग	ग	धा	रि	रि	स	स	पा	प	धा	ध	स	स	रे	रि	सा	स
बोल.	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	दि	ड	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड
मात्रा.	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	॥	॥	१	॥	१	॥
ताल.				═	═			—							—					—		

पड़दा.	१	१	३	४	८	८	७	७	१	१	८	८	१२	१२	१	१	१३	१३	१२	१२	१	१	८	७
स्वर.	ग	ग	पा	धा	रि	रि	स	स	गा	ग	रे	रि	प	प	ग	ग	ध	ध	पा	प	गा	ग	रे	सा
बोल.	दि	ड़	दा	ड़ा	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१
ताल.	—								—				=	=			—							—

गत १ ली दूसरे रागमें.

राग—सारंग. ताल—सूल फाख्ता. (ठाट—काफी नंबर ३ पर.)

पड़दा.	१०	१२	८	८	६	७	८	८	३	६	८	७	८	८	१०	१०	८
स्वर.	मा	पा	रे	ए	नी	सा	रे	ए	पा	नी	रे	सा	रि	रि	म	म	रे
बोल.	दा	ड़ा	दा	S	दा	ड़ा	दा	S	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दि	ड़	दि	ड़	दा
मात्रा.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	१
ताल.			=			०			—			—					०

पड़दा.	१२	१०	१४	१४	१०	१०	१२	१२	१५	१५	१४	१४	१०	१२	१२	८	१०	१०	७	८
स्वर.	पा	मा	नि	नि	म	म	प	प	सा	स	नी	नि	मा	पा	SS	रे	म	म	सा	रे
बोल.	ड़ा	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा	ड़ा	S	दा	दि	ड़	दा	ड़ा
मात्रा.	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	१	१	॥	॥	१	१
ताल.			=	=					०				—			—				०

तोड़ा.

पड़दा.	१०	१२	१२	१०	१०	१४	१४	१५	१६	१६	१४	१४	१५	१५	१४	१४	१२	१२	१०	१०	८	८	१२	१२
स्वर.	मा	प	प	म	म	नि	नि	सा	रि	रि	नि	नि	सा	स	नी	नि	प	प	मा	म	रे	रि	प	प
बोल.	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दि	ड़
मात्रा.	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	॥	॥
ताल.				=	=				०					—					—					०

पड़दा.	३	६	७	७	६	६	८	८	७	७	१०	१०	८	८	१२	१२	३	३	६	६	८	७
स्वर.	पा	नी	स	स	नि	नि	रे	रि	सा	स	म	म	रि	रि	प	प	पा	प	नी	नि	रे	सा
बोल.	दा	ड़ा	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा	ड़ा
मात्रा.	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१
ताल.			=	=					०				—	—				—	—			०

गत १ ली तीसरे रागमें.

३ राग मालकंस. ताल—चौताला. (ठाट भैरवी नंबर २ पर.)

यह भाग दूसरा, द्वितीयांक, पाठ दूसरा, पृष्ठ १६२ में जो मालकंसकी ५ वी. गत है वही यहांपर बजेगी.

गत १ ली चौथे रागमें.

४ राग हिंडोल. ताल—सवारी. (ठाट हिंडोल नंबर ७ पर.)

पहले, भाग दूसरा, द्वितीयांक, पाठ तीसरा, पृष्ठ १७७ में जो हिंडोलकी गत ४ थी है. वही यहां जान लेना.

गत १ ली पांचवें रागमें.

५ राग भूपाली. ताल—एक ताला. (ठाट यमन नंबर १ पर.)

भाग दूसरा, द्वितीयांक, पाठ छठवां, पृष्ठ २२० में भूपालीकी जो तीसरी गत है वही यहांपरभी जाननी.

अब दूसरी गतभी ऊपरके समान पांच रागों व पांच तालोंमें लिखते हैं:—

गत दूसरी.

१ राग हंसध्वनी. ताल—धमार. (ठाट यमन नंबर १ पर.)

पड़दा.	१५	१४	१४	१२	९	९	८	८	१२	१२	९	९	८	८	८	६	७	७	३	३
स्वर.	सा	नि	नि	पा	गा	ऽऽ	रि	रि	प	प	ग	ग	रे	ए	रि	नी	सा	ऽऽ	प	प
बोल.	दा	दि	ड	दा	डा	ऽ	दि	ड	दि	ड	दि	ड	दा	C	ड	दा	डा	ऽ	दि	ड
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥
ताल.	=						—	—								—				

पड़दा.	६	७	६	८	८	७	७	६	६	९	९	८	८	१२	१२	९	९	१२	१२	१४	१४
स्वर.	नी	सा	नी	रि	रि	स	स	नी	नि	गा	ग	रि	रि	प	प	ग	ग	पा	प	नी	नि
बोल.	दा	डा	दा	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दि	ड	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥
ताल.	=							—								—					

तोड़ा.

पड़दा.	३	७	६	८	७	६	६	९	८	६	६	८	८	७	७	९	९	८
स्वर.	पा	सा	नी	रे	सा	नि	नि	गा	रे	नि	नि	रि	रि	सा	स	गा	ग	रे
बोल.	दा	डा	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा
मात्रा.	१	१	१	१	१	॥	॥	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.	=					—								—				

पड़दा.	१२	१२	९	९	३	३	६	६	३	७	१२	१२	९	१२	९	९	८	८	७	७
स्वर.	प	प	ग	ग	पा	प	नी	नि	पा	सा	प	प	गा	पा	ग	ग	रे	रि	सा	स
बोल.	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा	डा	दि	ड	दा	डा	दि	ड	दा	ड	दा	ड
मात्रा.	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	॥	॥	१	१	॥	॥	१	॥	१	॥
ताल.	=	=							—							—				

गत २ री दूसरे रागमें.

२ राग पूर्वी. ताल—आड़ा चौताला (ठाठ कालिंगडा नंबर ६ पर.)

पड़दा.	१२	१३	१३	११	१२	१२	९	९	११	११	९	९	८	८	७	११	९	९	८	८
स्वर.	पा	ध	ध	मा	पा	ऽऽ	ग	ग	म	म	ग	ग	रे	ए	स	मा	गा	ऽऽ	रि	रि
बोल.	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	S	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	C	ड़	दा	ड़ा	S	दि	ड़
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥
ताल.	=			—		०				—			०			—		०		

पड़दा.	७	६	२	४	४	३	३	७	७	६	६	८	८	७	७	९	९	८	८	७	७
स्वर.	सा	नी	मा	ध	ध	प	प	सा	स	नी	नि	रि	रि	स	स	ग	ग	रे	रि	सा	स
बोल.	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥
ताल.	=		—			०			—			०				—			०		

तोड़ा.

पड़दा.	२	४	३	७	६	८	८	७	९	११	११	१३	१३	११	११	१२	१२	१४
स्वर.	मा	धा	पा	सा	नी	रि	रि	सा	गा	म	म	ध	ध	मा	म	पा	प	नी
बोल.	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा
मात्रा.	१	१	१	१	१	॥	॥	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.	=		—		•			—		०				—		०		

पड़दा.	१३	१३	१२	१२	११	११	९	९	८	९	१३	१३	१२	११	९	९	८	८	७	७
स्वर.	ध	ध	प	प	मा	म	गा	ग	रे	गा	ध	ध	पा	मा	ग	ग	रे	रि	सा	स
बोल.	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़
मात्रा.	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	॥	॥	१	१	॥	॥	१	॥	१	॥
ताल.	=	=			—		◯			—			०		—	—		◯		

गत २ री तीसरे रागमें.

३ रागिनी भैरवी. ताल—रूपक. (ठाट भैरवी नंबर २ पर.)

भाग दूसरा, द्वितीयांक, पाठ पहिला, पृ० १९१ में भैरवीकी जो ४ थी गत है वह यहांपर देख लेनी.

गत २ री चौथे रागमें.

४ राग भैरव. ताल—तीव्रा. (ठाट कालिंगड़ा नंबर ६ पर.)

भाग दूसरा, द्वितीयांक, पाठ पहिला, पृ० १४९ में भैरव रागकी जो चौथी गत है वही यहांपर याद करना.

गत २ री पांचवें रागमें.

५ रागिनी तोडी. ताल—ब्रह्म. (ठाट नंबर १० पर.)

भाग दूसरा, द्वितीयांक, पाठ दूसरा, पृ० १६६ में रागिनी तोडीकी जो ४ थी गत लिखी है वही यहांपर बजाना.

अब तीसरी गतभी तीन रागों व तीन तालोंमें लिखते हैं—

गत ३ री.

राग यमन. ताल—तिताला या आदि (ठाट यमन नंबर १ पर.)

पड़दा.	९	९	८	९	७	८	८	६	६	७	७	६	६	४	४	३	४	६	६	४	४
स्वर.	गा	SS	रे	गा	सा	रि	रि	नि	नि	स	स	नी	नि	धा	ध	पा	धा	नि	नि	ध	ध
बोल.	दा	S	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	दि	ड़	दि	ड़
मात्रा.	१	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	॥	॥	॥	॥
ताल.	=		—		•			—	—			=		—	—		◯			—	—

पडदा.	६	७	६	६	८	७	१२	११	९	९	८	६	६	८	८	७	७	९	९	८
स्वर.	नी	सा	नि	नि	रे	सा	पा	म	गा	ग	रे	नि	नि	रि	रि	सा	स	गा	ग	रे
बोल.	दा	डा	दि	ड	दा	डा	दा	ड	दा	ड	दा	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा
मात्रा.	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	१	॥	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.							०												०	

पडदा.	११	१२	१३	१२	१२	११	११	९	९	८	८	६	६	७
स्वर.	मा	पा	धा	प	प	म	म	ग	ग	रे	रि	नी	नि	सा
बोल.	दा	डा	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.										०				

तोडा १ ला.

पडदा.	१२	११	९	९	८	९	८	८	६	८	८	७	७	९	९	२	२	३	३
स्वर.	पा	मा	ग	ग	रे	गा	रि	रि	नी	रि	रि	स	स	ग	ग	मा	म	पा	प
बोल.	दा	डा	दि	ड	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड
मात्रा.	१	१	॥	॥	१	१	॥	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥
ताल.						•												०	

पडदा.	६	६	४	४	६	७	७	८	८	४	६	२	४	४	३	३	६	६	४	४	८	८	७
स्वर.	नि	नि	ध	ध	नी	सा	ऽऽ	रि	रि	धा	नी	मा	ध	ध	प	प	नि	नि	धा	ध	रे	रि	सा
बोल.	दि	ड	दि	ड	दा	डा	ऽ	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा
मात्रा.	॥	॥	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.										०													•

पडदा.	८	८	१६	१६	१५	१५	१४	१४	१३	१३	१२	१२	११	११	९	९	८	८
स्वर.	रि	रि	रि	रि	सा	स	नी	नि	ध	ध	प	प	म	म	गा	ग	रे	रि
बोल.	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दि	ड	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड
मात्रा.	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥
ताल.														•				

गत ३ री दूसरे रागमें

२ राग भैरव. ताल–झप. (ठाट कालिंगड़ा नंबर ६ पर)

भाग दूसरा, द्वितीयांक, पाठ पाहिला, पृ० १४६ पर राग भैरवकी जो पांचवीं गत दी गई है, वही यहांपर बजाना.

गत ३ री तीसरे रागमें.

३ राग मयूरध्वनी, ताल–मूलफाख्ता (ठाट यमन नंबर १ पर)

पड़दा.	*	४	४	३	७	४	३	३	१	१	३̆	३̆	१̆	१̆	३̆	३̆	१	३	४	४	३	३
स्वर.		धा	ऽऽ	पा	सा	धा	प	प	म	म	रि̆	रि̆	सा̆	स̆	रे̆	रि̆	मा	पा	ध	ध	प	प
बोल.		दा	ऽ	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	दि	ड़	दि	ड़
मात्रा.		१	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	॥	॥	॥	॥
ताल.		=		०		—			—	—			०			=		•			—	—

पड़दा.	७	४	८	८	७	१०	८	८	१२	१२	१०	१३	१३	१०	१०	१२	१२	८	८	७
स्वर.	सा	धा	रि	रि	सा	मा	रे	रि	पा	प	मा	ध	ध	म	म	पा	प	रे	रि	सा
बोल.	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	ड़	दा	ड़	दा	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	ढा
मात्रा.	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	१	॥	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल,		—			०		=		◯			—	—			—			◯	

पड़दा.	४	७	८	७	७	१०	१०	८	८	३	३	४	४	७
स्वर.	धा	सा	रे	स	स	म	म	रि	रि	पा	प	धा	ध	सा
बोल.	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.	=		०			—	—			—		◯		

---

* नोट—३̆ ३̆ १̆ इत्यादि पड़दे इस गतमें जो आये हैं वो पीतलके जोडीवाले तारपरके
रि̆ रि̆ सा̆ पडदोंपर बजाने चाहिये.
दि ड़ दा
॥ ॥ १

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	८	१०	८	८	१२	१०	१२	१२	१३	७	७	१३	१३	१२	१२	१०	१०	८	८
स्वर.	रे	मा	रि	रि	पा	मा	प	प	धा	स	स	ध	ध	प	प	मा	म	रे	रि
बोल.	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़
मात्रा.	१	१	॥	॥	१	१	॥	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥
ताल.	=			○		—			—			○				=			○

पड़दा.	७	७	८	८	४	७	७	३	३	४	७	८	१०	१०	८	८	१२	१२	१०	१०	१३	१३	१२
स्वर.	स	स	रि	रि	धा	सा	SS	प	प	धा	सा	रे	म	म	रि	रि	प	प	मा	म	धा	ध	पा
बोल.	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़ा	S	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा
मात्रा.	॥	॥	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.			—	—		—		○			=		○				—	—			—		°

पड़दा.	१०	१०	८	८	४	४	७	७	८	८	७	७	१०	१०	८	८	७	७
स्वर	म	म	रि	रि	धा	ध	सा	स	रि	रि	स	स	म	म	रे	रि	सा	स
बोल.	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दि	ड	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड
मात्रा.	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥
ताल.			=	=		○			—	—			—	—		○		

गत चौथी.

१ राग भूप. ताल—चौताला. (ठाट यमन नंबर·१ पर.)

अब चौथी गतभी तीन रोगों व तीन तालोंमें देते हैं:—

पड़दा.	९	९	८	८	७	४	३	३	४	४	३	३	४	४	७	७	४	४	८	८
स्वर.	गा	SS	रि	रि	सा	धा	प	प	ध	ध	पा	प	धा	ध	स	स	ध	ध	रि	रि
बोल.	दा	S	दि	ड	दा	डा	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दि	ड	दि	ड	दि	ड
मात्रा.	१	१	॥	॥	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	॥
ताल.	=		°			—			°			—	—		—				=	=

पड़दा.	७	७	९	९	८	१२	८	९	९	१३	१३	१२	१२	१३	१५	१५	१२	१२	१३	१३
स्वर.	सा	स	गा	ग	रे	पा	रे	गा	SS	ध	ध	प	प	धा	स	स	प	प	ध	ध
बोल.	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	ड़ा	दा	S	दि	ड़	दि	ड़	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़
मात्रा.	१	॥	१	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥
ताल.			○		—		°		—			—	—		=	=				○

पडदा.	१२	१२	९	९	८	३	३	३	४	३	३	३	७	४	४	८	८
स्वर.	पा	प	गा	ग	रे	पा	ऽ	प	धा	पा	ऽ	प	सा	ध	ध	रि	रि
बोल.	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	C	ड़	दा	दा	C	ड़	दा	दि	ड़	दि	ड़
मात्रा.	१	॥	१	॥	१	१	॥	॥	१	१	॥	॥	१	॥	॥	॥	॥
ताल.		—			०		—			—			=			◯	

पडदा.	७	७	९	९	८	८	१२	१२	९	९	८	८	७	७
स्वर.	सा	स	गा	ग	रि	रि	प	प	ग	ग	रे	रि	सा	स
बोल.	दा	ड	दा	ड	दि	ड	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड
मात्रा.	१	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥
ताल.		—			◯				—			—		

तोड़ा १ का.

पडदा.	४	८	७	९	८	१२	९	१३	१२	११	१३	९	९	१२	१२	९	९	८	८
स्वर.	धा	रे	सा	गा	रे	पा	गा	धा	पा	ध	ध	ग	ग	प	प	गा	ग	रे	रि
बोल.	दा	डा	दा	डा	दा	डा	दा	डा	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड
मात्रा.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥
ताल.	=		०		—		०		—			—				=		◯	

पडदा.	९	७	७	८	८	७	७	९	९	८	४	७	३	४	४	३	३	७	७
स्वर.	गा	स	स	रि	रि	सा	स	गा	ग	रे	धा	सा	पा	ध	ध	प	प	स	स
बोल.	दा	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा	दा	डा	दा	दि	ड	दि	ड़	दि	ड़
मात्रा.	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥
ताल.		—				०			—		—		=			◯			

पडदा.	४	४	७	७	८	७	७	९	९	८	८	१२	१२	९	८	९
स्वर.	धा	ध	सा	स	रे	स	स	ग	ग	रे	रि	पा	प	गा	रे	गा
बोल.	दा	ड	दा	ड	दा	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा	दा	डा
मात्रा.	१	॥	१	॥	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	१
ताल.	—			०		—				—		=			०	

पडदा.	७	८	८	४	४	७	७	३	३	४	४	७
स्वर.	सा	रि	रि	ध	ध	स	स	पा	प	धा	ध	सा
बोल.	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा
मात्रा.	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.	—			०				—		—		

गत ४ थी दूसरे रागमें.

२ राग विभास. ताल–तिताला या आदि. (ठाट कालिंगड़ा नंबर ६ पर)

पडदा.	७	७	८	८	३	४	३	३	४	४	८	८	७	७	८	८	९	९	८	८
स्वर.	सा	ऽऽ	रि	रि	पा	धा	प	प	ध	ध	रे	रि	सा	स	रि	रि	ग	ग	रि	रि
बोल	दा	ऽ	दि	ड	दा	डा	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दि	ड	दि	ड	दि	ड
मात्रा.	१	१	॥	॥	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	॥
ताल.						०														०

पडदा.	९	९	१३	१३	१२	९	८	७	७	३	३	४	४	३	८	८	४	४	७	७
स्वर.	गा	ग	धा	ध	पा	गा	रे	सा	ऽऽ	प	प	ध	ध	पा	रि	रि	ध	ध	स	स
बोल.	दा	ड	दा	ड	दा	दा	डा	दा	ऽ	दि	ड	दि	ड	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड
मात्रा.	१	॥	१	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥
ताल.									०											

पडदा.	४	४	८	८	७	९	९	९	१२	१३	१३	१३	१२	९	९	१२	१२
स्वर.	धा	ध	रे	रि	सा	गा	ऽ	ग	पा	धा	ऽ	ध	पा	ग	ग	प	प
बोल.	दा	ड	दा	ड	दा	दा	C	ड	दा	दा	C	ड	दा	दि	ड	दि	ड
मात्रा.	१	॥	१	॥	१	१	॥	॥	१	१	॥	॥	१	॥	॥	॥	॥
ताल.		○											०				

पडदा-	९	९	८	८	४	४	८	८	७	७	३	३	४	४
स्वर.	गा	ग	रे	रि	ध	ध	रि	रि	स	स	पा	प	धा	ध
बोल.	दा	ड	दा	ड	दि	ड	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड
मात्रा.	१	॥	१·	॥	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥
ताल.									०					

तोड़ा.

पड़दा.	१३	९	१२	८	७	९	८	१२	१३	१२	१२	१३	१३	१२	१२	९	९	८	८
स्वर.	धा	गा	पा	रे	सा	गा	रे	पा	धा	पँ	प	ध	ध	प	प	गा	ग	रे	रि
बोल.	दा	डा	दा	डा	दा	डा	दा	डा	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड
मात्रा.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥
ताल.					०											०			

पड़दा.	७	३	३	४	४	३	३	४	४	७	८	७	८	१२	१२	९	९	१३	१३
स्वर.	सा	प	प	ध	ध	पा	प	धा	ध	सा	रें	सा	रे	प	प	ग	ग	ध	ध
बोल.	दा	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़
मात्रा.	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥
ताल.		=	=			—		०			—		=				— •	—	

पड़दा.	१२	१२	१३	१३	७	१३	१३	१२	१२	९	९	१३	१३	१२	९	१२
स्वर.	पा	प	धा	ध	सा	ध	ध	प	प	गा	ग	धा	ध	पा	गा	पा
बोल.	दा	ड़	दा	ड़	दा	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	१	॥	१	॥	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	१
ताल.	•		—	—		=	=			—			०		—	

पड़दा.	९	८	८	७	७	४	४	३	३	७	७	८
स्वर.	गा	रि	रि	स	स	ध	ध	पा	प	सा	स	रे
बोल.	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा
मात्रा.	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.	=			—	—			°		—	—	

गत ४ थी तीसरे रागमें.

३ राग पूर्वी. ताल—एकताला. (ठाट कालिंगड़ा नंबर ६ पर)

पड़दा.	१२	१२	१३	१३	१२	११	९	९	८	८	६	६	८	८	७	७	९	९	८	८	२	२	४	४
स्वर.	पा	ऽऽ	ध	ध	पा	मा	ग	ग	रि	रि	नी	नि	रे	रि	स	स	ग	ग	रि	रि	मा	म	धा	ध
बोल.	दा	ऽ	दि	ड़	दा	ड़ा	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़
मात्रा.	१	१	॥	॥	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥
ताल.	=								=	=									=	=				

पड़दा.	३	४	६	७	७	८	८	७	७	६	४	४	२	२	३	३	२	२	४	४	३	४	४	४
स्वर.	पा	धा	नी	सा	ऽऽ	रि	रि	स	स	नी	ध	ध	म	म	प	प	मा	म	धा	ध	पा	धा	ऽ	ध
बोल.	दा	दा	ड़ा	दा	ऽ	दि	ड़	दि	ड़	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	C	ड़
मात्रा.	१	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	॥	॥
ताल.			=								=	=									=			

पड़दा.	६	८	८	८	७	९	९	८	८	९	९	१३	१३	१२	१२	११	११	९	९	८	८	७	७
स्वर.	नी	रे	ए	रि	सा	ग	ग	रि	रि	गा	ग	धा	ध	प	प	म	म	ग	ग	रे	रि	सा	स
बोल.	दा	दा	C	ड़	दा	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़
मात्रा.	१	१	॥	॥	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥
ताल.					=									=	=								

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	९	८	११	९	१२	११	१३	१२	२	४	४	२	२	३	३	४	४	६	६	७	८	८
स्वर.	गा	रे	मा	गा	पा	मा	धा	पा	मा	ध	ध	म	म	प	प	धा	ध	नी	नि	सा	रि	रि
बोल.	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा	दि	ड़
मात्रा.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	॥	॥
ताल.	=						=									=						

पड़दा.	९	९	८	८	११	११	९	११	१२	११	१३	१३	१२	१२	११	११	१५	१५	१४	१४	१३	१४	१४
स्वर.	ग	ग	रे	रि	मा	म	गा	मा	पा	मा	ध	ध	प	प	म	म	सा	स	नी	नि	धा	नि	नि
बोल.	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा	दि	ड़
मात्रा.	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	॥	॥
ताल.			=							=									=				

पड़दा.	१३	१३	११	११	१३	१३	११	९	११	१३	१२	१२	११	११	१२	१२	९	९	८	८	७
स्वर.	ध	ध	मा	म	धा	ध	पा	गा	मा	धा	प	प	म	म	प	प	गा	ग	रे	रि	सा
बोल.	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.					=								=								

पाठ नवाँ.

कठिन २ सुंदर गमकदार प्रसिद्ध गतें.

गत १ ली.

राग यमन कल्याण. ताल–तिताला. (ठाट यमन नंबर १ पर.)

चिन्ह.			^•			^२		^•	^•	^•							^•	^•		
पड़दा.	१३	१३	१३	१२	१२	११	१२	११	११	९	८	८	८	९	८	९	९	८	८	७
स्वर.	ध	ध	धा	प	प	मा	पा	मा	मा	गा	रि	रि	रे	ग	रि	गा	गा	रे	रे	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			•			—		=		—			•			—		=		—

चिन्ह.						^•२										^२				
पड़दा.	९	९	८	७	७	६	७	३	४	३	४	६	४	७	७	६	८	६	८	९
स्वर.	ग	ग	रे	स	स	नी	सा	पा	ध	प	धा	नी	धा	स	स	नी	रे	नी	रे	गा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=			—		०			—		=		—

चिन्ह.						^		^•	^•				^							
पड़दा.	१४	१३	१४	१२	१२	११	१२	११	११	९	८	८	६	८	८	९	१२	८	८	७
स्वर.	नि	ध	नी	प	प	मा	पा	मा	मा	गा	रि	रि	नी	रि	रि	गा	पा	रे	रे	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=		—			०			—		=		—

तोड़ा १ ला.

चिन्ह.			^२			^२		^२					^२					^•		
पड़दा.	१२	१२	११	१२	१२	११	१५	१४	१६	१५	१५	१५	१४	१६	१६	१७	१७	१६	१६	१५
स्वर.	प	प	मा	प	प	मा	सा	नी	रे	सा	स	स	नी	रि	रि	गा	गा	रे	रे	सा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			•			—		=		—			०			—		=		—

चिन्ह.			^					^ २	^				^ २					^		
पड़दा.	१५	१५	१४	१३	१३	१२	१२	११	१३	१३	१२	१२	११	९	९	८	९	८	८	७
स्वर.	स	स	नी	ध	ध	पा	पा	मा	ध	ध	पा	पा	मा	ग	ग	रे	गा	रे	रे	सा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=			—		०			—		=		—

गत २ री.

राग यमन कल्याण. ताल—तिताला. (ठाट यमन नंबर १ पर.)

चिन्ह.			१ × ८-९																
पड़दा.	९	९	८	९	७	८	८	६	७	४	६	६	७	८	७	६	६	४	३
स्वर.	गा	SS	रे	ऐ	सा	रि	रि	नी	सा	धा	नि	नि	सा	रे	सा	नि	नि	धा	पा
बोल.	दा	S	दा	S	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा
मात्रा.	१	१	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१
ताल.	=				—					०					—				

चिन्ह.																२ × ८-९				
पड़दा.	३	३	३	३	४	४	६	४	७	७	६	८	८	९	९	८	७	७	६	७
स्वर.	पा	प	प	पा	धा	धा	नी	धा	स	स	नी	रे	रे	ग	ग	रे	स	स	नी	सा
बोल.	दा	दि	ड	दा	दा	डा	दा	डा	दि	ड	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताल.	=					—										—				

तोड़ा १ ला.

चिन्ह.								^				^									
पड़दा.	९	९	९	९	९	१३	१३	११	११	१२	१२	११	११	९	९	८	९	९	८	७	८
स्वर.	गा	SS	गा	गा	गा	ध	ध	म	म	प	प	मा	म	गा	ग	रे	गा	ग	रे	स	रे
बोल.	दा	S	दा	डा	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा	दा	ड	दा	ड	दा
मात्रा.	१	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	॥	१	॥	।
ताल.	=				—							०					—				

चिन्ह.									^											
पड़दा.	९	८	८	४	४	७	७	७	६	८	८	८	८	९	९	९	८	८	७	७
स्वर.	गा	रे	ऐ	धा	ऽऽ	सा	सा	सा	नी	रि	रि	रि	रि	ग	ग	गा	रि	रे	स	सा
बोल.	दा	ड़ा	ऽ	दा	ऽ	दा	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा
मात्रा.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.	=				—				०							—				

तोड़ा २ रा.

पड़दा.	९	९	९	९	९	१३	१३	१२	१२	१२	१२	९	९	९	९	९	१३	१३	१२	१२	१२	१२
स्वर.	गा	ऽऽ	गा	गा	गा	ध	ध	प	प	प	प	गा	गा	गा	गा	गा	ध	ध	प	प	प	प
बोल.	दा	ऽ	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ऽ	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़
मात्रा.	१	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥
ताल.	=				—							०				—						

चिन्ह.	^										^	^											
पड़दा.	११	११	१३	१३	१२	१५	१५	१५	१५	१५	१४	१४	१६	१६	१६	१६	१७	१६	१६	१५	१५	१५	१५
स्वर.	मा	म	धा	ध	पा	सा	स	सा	स	सा	नी	नी	रि	रि	रि	रि	गा	रि	रि	स	स	स	स
बोल.	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दि	ड़	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़
मात्रा.	१	॥	१	॥	१	१	॥	१	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥
ताल.	=					—					०						—						

चिन्ह.	^					^		^			^	^											
पड़दा.	१४	१४	१३	१३	१२	११	११	१३	१३	१२	११	११	९	९	८	८	९	८	८	७	७	८	८
स्वर.	नी	नि	धा	ध	पा	मा	म	धा	ध	पा	मा	मा	ग	ग	रि	रि	गा	रि	रि	स	स	रि	रि
बोल.	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दि	ड़	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़
मात्रा.	१	॥	१	॥	१	१	॥	१	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥
ताल.	=					—					०						—						

गत ३ री.

राग हमीर. ताल–तिताला: (ठाट यमन नंबर १ पर.)

चिन्ह.			७ × ११-१२-१३			^	^	^		^				^				^	^	
पड़दा.	१२	१२	११	१३	१२	९	११	१३	१३	१३	१३	१२	१३	१४	१४	१५	१५	१४	१३	१२
स्वर.	प	प	मा	ध	प	गा	मा	धा	धा	धा	ध	प	धा	नि	नि	सा	सा	नी	धा	पा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=		—			०			—		=		—

चिन्ह.			^						^									^		
पड़दा.	१२	१२	११	१३	१२	९	९	९	१३	१३	१२	१२	९	९	९	१२	१२	८	७	७
स्वर.	प	प	मा	ध	प	गा	गा	गा	ध	ध	पा	पा	गा	ग	ग	पा	पा	रे	सा	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=			—		०			—		=		—

तोडा १ ला.

चिन्ह.			^			^						^				^		^		
पड़दा.	९	९	११	१३	१३	११	१५	१४	१६	१५	१७	१७	१६	१५	१५	१४	१५	१३	१३	१२
स्वर.	ग	ग	मा	ध	ध	मा	सा	नी	रे	सा	ग	ग	रे	स	स	नी	सा	धा	धा	पा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=		—			०			—		=		—

चिन्हं.		^				^		^										^		
पड़दा.	१७	१७	१६	१५	१५	१४	१५	१३	१३	१३	१२	१२	९	९	९	९	१२	८	७	७
स्वर.	ग	ग	रे	स	स	नी	सा	धा	ध	ध	पा	पा	गा	ग	ग	गा	पा	रे	सा	सा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			•			—		=			—		०			—		=		—

गत ४ थी.

राग हमीर ताल–तिताला (ठाट यमन नंबर १ पर.)

चिन्ह.	२ × १४-१५							^				^	^								
पड़दा.	१४	१३	१३	१२	१२	१२	१२	११	१२	९	९	११	१३	१३	१३	१३	१४	१५	१५	१५	१५
स्वर.	नी	ध	ध	प	प	प	प	मा	प	गा	ग	मा	धा	ऽऽ	ऽऽ	ध	नि	सा	ऽऽ	सा	सा
बोल.	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा	दा	ऽ	ऽ	ड	द	दा	ऽ	दा	डा
मात्रा.	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१
ताल.	०							—					═					—			

चिन्ह.	^							^						^		^				^				
पड़दा.	१४	१३	१३	१२	१२	१२	१२	११	१२	९	९	९	९	१३	१३	११	११	१२	१२	९	९	८	८	७
स्वर.	नी	ध	ध	प	प	प	प	मा	प	गा	ग	गा	गा	ध	ध	म	म	प	प	गा	ग	रे	रि	सा
बोल.	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा
मात्रा.	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.	०							—					—							—				

चिन्ह.			^		^	^		^		^							^		^		
पड़दा.	८	७	९	९	११	१३	१३	१४	१५	१४	१६	१६	१५	१५	१५	१५	१४	१४	१३	१३	१२
स्वर.	सा	स	गा	ग	मा	धा	धा	नी	सा	नी	रि	रि	स	स	स	स	नी	नि	धा	ध	पा
बोल.	दा	ड	दा	ड	दा	दा	डा	दा	डा	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा
मात्रा.	१	॥	१	॥	१	१	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.	०					—				—							—				

तोड़ा १ ला.

चिन्ह:			^		^						^	^					^					
पड़दा.	९	९	११	११	१३	१५	१५	१५	१५	१५	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१४	१३	१३	१३	१३	१२	१२
स्वर.	गा	ग	मा	म	धा	सा	स	सा	स	सा	नी	नी	स	स	स	स	नी	ध	ध	ध	ध	प	प
बोल.	दा	ड	दा	ड	दा	दा	ड	दा	ड	दा	दा	डा	दि	ड	दि	ड	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड
मात्रा.	१	॥	१	॥	१	१	॥	१	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥
ताल.	०					—					—						—						

गत ५ वीं.

राग छायानट. ताल–तिताला. (ठाट यमन नंबर १ पर)

चिन्ह.			^२			^२				१२-८							१०-१२	^		
पड़दा.	७	७	६	१२	१२	११	१२	१३	१३	१२	८	८	८	९	८	९	१०	९	८	७
स्वर.	स	स	नी	प	प	मा	पा	धा	धा	पा	रि	रि	रे	ग	रि	गा	मा	गा	रे	सा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=		—			०			—		—		—

चिन्ह.																	१०-१२	^		
पड़दा.	९	९	८	७	७	६	७	१२	७	७	६	८	८	९	८	९	१०	९	८	७
स्वर.	ग	ग	रे	स	स	नी	सा	पा	स	स	नी	रे	रे	ग	रि	गा	मा	गा	रे	सा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		—			—		०			—		—		—

तोड़ा १ ला

चिन्ह.						^							^					^		
पड़दा.	७	७	९	१२	१२	११	१३	१४	१५	१५	१५	१५	१४	१६	१६	१५	१५	१४	१३	१२
स्वर.	स	स	गा	प	प	मा	धा	नी	सा	सा	स	स	नी	रि	रि	सा	सा	नी	धा	पा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		—		—			०			—		—		—

चिन्ह.			^		^												१०-१२	^		
पड़दा.	१२	१२	११	१५	१४	१३	१२	११	१३	१३	१२	१२	८	९	८	९	१०	९	८	७
स्वर.	प	प	मा	स	नि	धा	पा	मा	ध	ध	पा	पा	रे	ग	रि	गा	मा	गा	रे	सा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		—			—					—		—		—

गत ६ वी.

राग छायानट. ताळ—तिताला (ठाट यमन नंबर १ पर.)

चिन्ह.	⌒⌒ ७-१३			^					^		^		⌒⌒ १०-१२		^		^		
पडदा.	७	१३	१३	१३	१२	१२	१२	१२	१२	१२	८	९	१०	९	९	९	८	८	७
स्वर.	सा	ध	ध	धा	पा	ऽऽ	प	प	पा	पा	रे	गा	मा	ऽऽ	गा	ग	रे	रि	सा
बोल.	दा	दि	ड़	दा	डा	ऽ	दि	ड़	दा	डा	दा	दा	डा	ऽ	दा	ड	दा	ड़	दा
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	१	१	॥	१	॥	१
ताल.	०					—					═				—				

चिन्ह.	^ २					^						˅				× २ १०-१२		^		^		
पडदा.	६	७	७	८	८	६	७	४	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	९	९	८	८	७
स्वर.	नी	स	स	रि	रि	नी	सा	धा	नी	सा	सा	रि	रि	ग	ग	म	म	गा	ग	रे	रि	स
बोल.	दा	दि	ड़	दि	ड़	दा	डा	दा	दा	डा	दा	दि	ड़	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा
मात्रा.	१	॥	॥	॥	॥	१	१	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.	•						—				—							—				

तोडा १ ला.

चिन्ह.	⌒⌒ ७-१६																				
पडदा.	७	१६	१६	१५	१५	१५	१५	१४	१४	१३	१५	१५	१४	१४	१३	१३	१३	१३	१२	१२	१२
स्वर.	सा	रि	रि	सा	सा	सा	सा	नी	नी	धा	स	स	नि	नि	ध	ध	धा	ध	पा	प	पा
बोल.	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	डा	दा	डा	दा	दि	ड	दि	ड़	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा
मात्रा	१	॥	॥	१	१	१	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.	०					—				—							—				

गत ७ वी.

राग देश. ताल—तिताला (ठाट यमन नंबर १ पर.)

चिन्ह.						^			^					^					^		
पडदा.	८	८	१०	१०	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१२	१३	१०	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	९
स्वर.	रे	रि	मा	म	पा	धा	ऽऽ	धा	धा	धा	पा	धा	मा	पा	पा	पा	पा	ऽऽ	पा	मा	गा
बोल.	दा	ड	दा	ड	दा	दा	ऽ	दा	डा	दा	डा	दा	डा	दा	दा	डा	दा	ऽ	दा	दा	डा
मात्रा.	१	॥	१	॥	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
ताल.	—					═				—				•				—			

पड्दा.	८	८	८	८	८	८	१०	१०	१२	१३	१३	१३	१३	१२	१२	१०	१०	१०	१०	९	८	८
स्वर.	रे	रे	रे	रि	रि	रे	म	म	पा	धा	धा	ध	ध	प	प	म	म	मा	म	गा	रि	रे
बोल.	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा
मात्रा.	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.	—					—					०							—				

पड्दा.	६	७	७	६	७	८	१२	१२	१०	१०	१०	१०	९	९	८	८	७
स्वर.	नी	स	स	नी	सा	रे	प	प	म	म	म	म	गा	ग	रे	रि	सा
बोल.	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड	दा	ड़	दा	ड	दा
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.	—					—							०				

तोड़ा १ ला.

पड्दा.	१०	१०	१२	१२	१२	१०	१०	१२	१२	१२	१४	१४	१५	१५	१५	१४	१४	१५	१५	१५	१५
स्वर.	मा	म	पा	प	पा	मा	म	पा	प	पा	नी	नि	सा	स	सा	नी	नी	स	स	स	स
बोल.	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दि	ड़
मात्रा.	१	॥	१	॥	१	१	॥	१	॥	१	१	॥	१	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥
ताल.	—					—					—					०					

पड्दा.	१४	१६	१६	१५	१५	१५	१५	१३	१३	१३	१२	१२	१३	१३	१०	१०	१२	१०	१०	१२	१२	१२	१२
स्वर.	नी	रि	रि	स	स	स	स	धा	ध	धा	प	पा	धा	ध	मा	म	पा	मा	मा	प	प	प	प
बोल.	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	ड़	दा	ड़	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दि	ड़
मात्रा.	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	॥	१	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥
ताल.	—							—					—					०					

पड्दा.	१०	१३	१३	१२	१२	१०	१०	६	७	७	६	७	८	१२	१२	१०	१०	१०	१०	९	९	८	८	७
स्वर.	मा	ध	ध	प	प	म	म	नी	स	स	नी	सा	रे	प	प	म	म	म	म	गा	ग	रे	रि	सा
बोल.	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	डा	दा	दि	ड़	दि	ड़	दि	ड़	दा	ड़	दा	ड़	दा
मात्रा.	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.	—							—					—							०				

गत ८ वीं.

राग देश. ताल–तिताला. (ठाट यमन नंबर १ पर.)

चिन्ह.								१३–१५		^							^	× २ १२–१३	× २ १०–१२	९–८
पड़दा.	८	७	८	१०	८	१०	१२	१३	१५	१३	१२	१३	१०	१२	१२	१०	१३	१२	१०	९
स्वर.	रि	स	रे	म	रि	मा	पा	धा	सा	धा	प	ध	मा	प	प	मा	धा	पा	मा	गा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०										•							

चिन्ह.			९–८					^ ९									^			९–८
पड़दा.	१०	१०	९	९	९	८	७	६	८	७	८	८	८	१०	१०	१२	१३	१२	१०	९
स्वर.	म	म	गा	ग	ग	रे	सा	नी	रि	स	रे	रे	रे	म	म	पा	धा	पा	मा	गा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०										०							

तोड़ा १ ला.

चिन्ह.						^ २		^ २					^		^			^	^	
पड़दा.	१०	१०	१०	१२	१२	१४	१५	१४	१५	१५	१५	१५	१४	१६	१६	१६	१६	१३	१३	१२
स्वर.	म	म	मा	प	प	नी	सा	नी	सा	सा	स	स	नी	रि	रि	रे	रे	धा	धा	पा
बोल.	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	ड़ा	दा	दा	ड़ा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०										०							

चिन्ह.							^				९–८						^	× २ १२-१३	× २ १०-१२	९–८
पड़दा	१२	१३	१०	१२	१२	१०	१३	१२	१०	१०	९	७	८	१०	१०	१२	१३	१२	१०	९
स्वर.	प	ध	मा	प	प	मा	धा	पा	म	म	गा	सा	रे	म	म	पा	धा	पा	मा	गा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०										•							

गत ९ वीं.

राग झिंझोटी. ताल--तिताला (ठाट यमन नंबर १ पर.)

चिन्ह.																२ × ७-८				
पड़दा.	१	३	३	४	४	४	५	५	३	४	५	७	५	८	८	७	५	५	४	४
स्वर.	मा	प	प	धा	धा	धा	नि	नि	पा	धा	नी	सा	नी	रि	रि	सा	नि	नि	धा	धा
बोल.	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताल.	═					—					०					—				

चिन्ह.						⌒ ८-९									२ × ७-८				
पड़दा.	४	१०	१०	९	१०	८	८	८	७	५	७	५	८	८	७	५	५	४	४
स्वर.	धा	म	म	गा	मा	रे	ऐ	रे	सा	नी	सा	नी	रि	रि	सा	नि	नि	धा	धा
बोल.	दा	दि	ड	दा	डा	दा	S	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	१	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताल.	═					—				०					—				

तोड़ा १ ला.

चिन्ह.										^							२ × ९-१०		२ × ८-९		
पड़दा.	७	१०	१०	९	१०	८	९	१०	१२	१३	१२	१२	१०	१०	१०	१०	९	९	८	८	७
स्वर.	सा	म	म	गा	मा	रे	गा	मा	पा	धा	प	प	म	म	म	म	गा	ग	रे	रि	सा
बोल.	दा	दि	ड	दा	डा	दा	डा	दा	डा	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	०
ताल.	—					—				०							—				

चिन्ह.						⌒ ८-९									२ × ७-८				
पड़दा.	७	१०	१०	९	१०	८	८	८	७	५	७	५	८	८	७	५	५	४	४
स्वर.	सा	म	म	गा	मा	रे	ऐ	रे	सा	नी	सा	नी	रि	रि	सा	नि	नि	धा	धा
बोल.	दा	दि	ड	दा	डा	दा	S	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	१	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताल.	—					—				०					—				

गत १० वीं.

राग सिंदूरा, ताल—तिताला. (ठाट काफी नंबर ३ पर.)

चिन्ह.	७-१५			^ २	२ × १५-१६					^•		२ × १३-१४	२ × १२-१३			२ × ९-१०	२ × ८-९		२ × ७-८	
पड़दा.	७	१५	१५	१६	१५	१४	१२	१२	१३	१५	१४	१३	१२	१०	१०	९	८	८	७	७
स्वर.	सा	स	स	रे	सा	नी	प	प	धा	सा	नी	धा	पा	म	म	गा	रि	रि	सा	सा
बोल.	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताल.	=					—					०					—				

चिन्ह.					५ × ८-९-१०							^•			६ × ८-९-१०				
पड़दा.	५	५	७	८	८	८	८	७	७	८	१०	१२	१०	१०	८	८	८	७	७
स्वर.	नी	ई	सा	रे	रे	रि	रि	सा	सा	रे	मा	पा	म	म	रे	रि	रि	सा	सा
बोल.	दा	S	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा
मात्रा.	१	१	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताल.	—				—					०					—				

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	१०	१०	१०	१०	१२	१२	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१४	१४	१३	१३	१२
स्वर.	म	म	म	म	पा	प	नी	नि	सा	सा	सा	रे	स	स	स	स	स	स	नी	नि	धा	ध	पा
बोल.	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा	दा	डा	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा
मात्रा.	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.	—											—											

पड़दा.	१५	१५	१५	१५	१४	१४	१३	१३	१२	१०	१०	१०	१२	१२	१०	१०	१०	१०	९	९	८	८	७
स्वर.	स	स	स	स	नी	नि	धा	ध	पा	मा	मा	मा	प	प	म	म	म	म	गा	ग	रे	रि	सा
बोल.	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा	दा	डा	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा
मात्रा.	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.	०											—											

गत ११ वीं.

राग पीलू. ताल–तिताला. (ठाट पीलू नंबर ४ पर.)

चिन्ह.								२ × ७-८					२ × ९-१०			२ × ८-९	२ × ७-८			
पड़दा.	६	६	७	९	९	८	९	७	८	८	१०	१०	९	९	९	८	७	६	७	७
स्वर.	नि	नि	सा	ग	ग	रे	गा	सा	रे	रे	म	म	गा	ग	ग	रे	सा	नी	सा	सा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०										०							

चिन्ह.				^		^		^	^				^							
पड़दा.	६	६	६	७	७	७	६	३	३	१	३	३	३	६	६	३	६	७	७	७
स्वर.	नि	नि	नी	स	स	सा	नी	पा	प	म	पा	पा	पा	नि	नि	पा	नी	सा	सा	सा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०										०							

तोड़ा १ ला.

चिन्ह.						^		२ × १०-१२			२ × ९-१०						२ × ८-९	२ × ८-९	२ × ७-८	
पड़दा.	७	७	८	१०	१०	१२	१२	१०	९	९	९	८	७	८	८	१०	८	८	७	७
स्वर.	स	स	रे	म	म	पा	पा	मा	ग	ग	गा	रे	सा	रि	रि	मा	रे	रे	सा	सा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०										०							

गत १२ वीं.

राग पीलू. ताल—तिताला. (ठाट पीलू नंबर ४ पर.)

चिन्ह.	^				^								२ × ९-१०					२ × ८-९		२ × ७-८		
पड़दा.	८	८	९	९	८	८	९	९	७	८	७	१०	१०	९	८	९	९	८	७	७	७	६
स्वर.	रे	ए	ग	गा	रे	ए	ग	गा	सा	रे	सा	म	म	ग	रि	ग	ग	रे	स	सा	स	नी
बोल.	दा	C	ड़	दा	दा	C	ड	दा	दा	डा	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	॥	॥	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.	=					—					०							—				

चिन्ह.	२ × ९-१०					२ × ८-९							२ × ९-१०					२ × ८-९		२ × ७-८		
पड़दा.	९	८	८	९	७	८	७	७	८	६	७	१०	१०	९	८	९	९	८	७	७	६	७
स्वर.	गा	रि	रि	गा	सा	रे	स	स	रे	नी	सा	म	म	ग	रि	ग	ग	रे	स	सा	नि	सा
बोल.	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.	=					—					०							—				

चिन्ह.			^		^																
पड़दा.	६	६	७	७	७	६	६	४	४	४	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७
स्वर.	नी	नि	सा	स	सा	नी	नी	धा	धा	धा	नि	नि	नि	नि	नि	नि	सा	स	सा	स	सा
बोल.	दा	ड	दा	ड	दा	दा	डा	दा	डा	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा
मात्रा.	१	॥	१	॥	१	१	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.	=					—				०							—				

तोड़ा १ ला.

चिन्ह.										^							२ × ९-१०		२ × ८-९		
पड़दा.	७	७	८	१०	१०	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	९	८	८	७	७
स्वर.	स	स	रे	मा	मा	पा	पा	पा	पा	पा	प	प	म	म	म	म	गा	रि	रे	स	सा
बोल.	दि	ड	दा	दा	डा	दा	डा	दा	डा	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा
मात्रा.	॥	॥	१	१	१	१	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.	=					—				०							—				

गत १३ वीं.

राग बिहाग. ताल–तिताला. (ठाट यमन नंबर १ पर.)

चिन्ह.		१ × ९-८					११ × १२-१०-९			१ × १०-९			१ × ९-८									
पडदा.	६	९	९	९	१०	१०	१२	१०	१०	१०	९	९	९	७	६	६	९	८	८	८	८	८
स्वर.	नी	गा	ग	ग	म	म	पा	SS	SS	मा	S	ग	गा	सा	नी	नी	ग	रि	रि	रि	रि	रि
बोल.	दा	डा	दि	ड	दि	ड	दा	S	S	दा	C	ड	दा	दा	डा	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड
मात्रा.	१	१	॥	॥	॥	॥	१	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥
ताल.	—						=				—					०						

चिन्ह.										१ × ७-६									१ × ८-७	१ × ८-७			
पडदा.	७	७	६	६	३	३	३	३	३	७	६	७	७	८	८	८	८	८	८	७	७	६	३
स्वर.	सा	स	नी	नी	पा	प	प	प	प	सा	नि	सा	स	रे	रि	रि	रि	रि	रे	स	सा	नि	पा
बोल.	दा	ड	दा	ड	दा	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा
मात्रा.	१	॥	१	॥	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.	—					=						—							०				

तोड़ा १ ला.

चिन्ह.	^		^						^		१ × १२-१०		२ × ९-१०		२ × ८-९				२ × ९-१०	२ × ८-९	२ × ७-८
पडदा.	१३	१३	१४	१४	१४	९	१०	१०	१३	१३	१२	१२	९	९	८	८	७	१०	९	८	७
स्वर.	धा	ध	नी	नि	नी	गा	म	म	ध	ध	प	प	गा	ग	रे	रि	सा	मा	गा	रे	सा
बोल.	दा	ड	दा	ड	दा	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा	दा	डा	दा	डा
मात्रा.	१	॥	१	॥	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	१	१	१
ताल.	—					=							—					०			

गत १४ वीं.

राग बिहाग. ताल—तिताला. (ठाट यमन. नंबर १ पर.)

चिन्ह.									११ × १५-१४-१३	१० × १४-१३-१२			१० × १२-१०-९			^	^	^	१ × ८-९	१० × ९-८-७
पड़दा.	७	६	७	१०	९	१०	१२	१५	१५	१४	१२	१२	१२	१०	१०	१२	१०	९	८	९
स्वर.	स	नि	सा	म	ग	मा	पा	सा	सा	नी	प	प	पा	म	म	पा	मा	गा	रे	गा
बोल	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड़	दा	दि	ड़	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.																				

चिन्ह.			११ × १०-९-८			१० × ९-८-७							९ × १०-९			⌒ ९-१०		११ × १२-१०-९	११ × १०-९-८	१० × ९-८-७
पड़दा.	१०	१०	१०	९	९	९	७	३	६	६	७	७	१०	१०	८	९	१२	१२	१०	९
स्वर.	म	म	मा	ग	ग	गा	सा	पा	नि	नि	सा	सा	मा	म	रि	गा	पा	पा	मा	गा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.																				

तोड़ा १ ला.

चिन्ह.								^ २								^		^				^
पड़दा.	९	९	१०	१२	१२	१४	१५	१४	१५	१५	१४	१४	१४	१४	१५	१३	१३	१४	१४	१४	१७	१७
स्वर.	ग	ग	मा	प	प	नी	सा	नी	सा	सा	नि	नि	नी	नि	स	धा	धा	नी	नी	नी	ग	ग
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥
ताल.																						

चिन्ह.				^	^	^					^			⌒⌒ ९-१०		११ × १२-१०-९	११ × १०-९-८	१० × ९-८-७
पड़दा.	१६	१५	१५	१४	१३	१२	१०	१०	९	९	९	८	८	९	१२	१२	१०	९
स्वर.	रे	स	स	नी	धा	पा	म	म	गा	गा	गा	रि	रि	गा	पा	पा	मा	गा
बोल.	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.																		

गत १५ वी.

* राग बागेश्री. ताल—तिताला. (ठाट काफी नंबर ३ पर.)

पड़दा.	१०	१०	१०	१३	१२	१३	१४	१३	१२	१०	९	९	८	९	९	१२	१०	९	८	७
स्वर.	म	म	मा	ध	प	धा	नी	धा	पा	मा	ग	ग	रे	ग	ग	पा	मा	गा	रे	सा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०										०							

चिन्ह.																^	^	^		
पड़दा.	७	१०	९	८	८	७	७	७	५	४	५	७	७	१०	१०	१०	९	८	७	७
स्वर.	स	म	गा	रि	रि	सा	सा	सा	नि	ध	नी	सा	सा	म	म	मा	गा	रे	सा	सा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०										०							

तोड़ा १ ला.

चिन्ह.											१७-१८	१७-१८				^	^	^		
पड़दा.	१०	१०	१०	१३	१३	१४	१५	१४	१५	१५	१७	१७	१७	१५	१५	१४	१३	१२	१०	१०
स्वर.	म	म	मा	ध	ध	नी	सा	नी	सा	सा	ग	ग	गा	स	स	नी	धा	पा	मा	मा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			•										०							

			^	^												^	^	^		
पड़दा.	१०	१०	९	८	८	७	७	७	५	४	५	७	७	१०	१०	१०	९	८	७	७
स्वर.	म	म	गा	रि	रि	सा	सा	सा	नि	ध	नी	सा	सा	म	म	मा	गा	रे	सा	सा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	ड
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			•										•							

---

* इसी रागको कोई ' बागेसरी ' या ' बागेश्वरी ' भी कहते हैं.

गत १६ वी.

राग बागेश्री. ताल—तिताला. (ठाट काफी नंबर ३ पर.)

पड़दा.	४	४	५	५	७	७	५	७	७	७	७	९̂	९	१०	१०	१३	१३	१३	१२	१३	१४	१३	१३
स्वर.	धा	ऽ	नि	नी	सा	ऽऽ	नी	स	स	स	स	गा	ऽ	म	मा	धा	ऽऽ	ऽऽ	पा	धा	नी	ध	ध
बोल.	दा	C	ड्	दा	दा	S	दा	दि	ड	दि	ड	दा	C	ड	दा	दा	S	S	दा	डा	दा	दि	ड
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	१	१	॥	॥
ताल.	०																				०		

पड़दा.	१२	१२	१०	१०	९	९	८	८	७	७	१२	१२	१०	१०	१०	१०	९̂	९	८	७	७
स्वर.	प	प	म	म	गा	ग	रे	रि	सा	सा	प	प	म	म	म	म	गा	ग	रे	स	सा
बोल.	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा
मात्रा.	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.																					

तोड़ा १ ला.

चिन्ह.											१७-१८	१७-१८	१७-१८	१७-१८	१७ १८	१७-१८
पड़दा.	१०	१०	१३	१३	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१७	१७	१७	१७	१७	१७
स्वर.	मा	म	धा	ध	नी	सा	स	सा	स	सा	मा	मा	म	म	म	म
बोल.	दा	ड	दा	ड	दा	दा	ड	दा	ड	दा	दा	डा	दि	ड	दि	ड
मात्रा.	१	॥	१	॥	१	१	॥	१	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥
ताल.	०															

पड़दा.	१७	१७	१७	१६	१६	१५	१५	१४	१४	१३	१३	१४	१२	१२	१३	१३	१४
स्वर.	गा	ग	ग	रि	रि	स	स	नी	नि	धा	ध	नी	पा	प	धा	ध	नी
बोल.	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा	दा	ड	दा	ड	दा
मात्रा.	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	॥	१	॥	१
ताल.								०									

पड़दा.	१३	१२	१०	१०	१०	१०	९	८	८	७	७	७	७
स्वर.	धा	पा	म	म	म	म	गा	रि	रि	स	स	स	स
बोल.	दा	डा	दि	ड	दि	ड	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड
मात्रा.	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥
ताल.													

गत १७ वीं

राग सोहिनी. ताल–तिताला. (ठाट कालिंगड़ा नंबर ६ पर.)

पड़दा.	७	७	७	७	९	९	१३	१०	१३	१३	१३	१४	१४	१३	१४	१४	१५	१४	१५	१५	१५	१४
स्वर.	सा	स	स	सा	गा	ऽऽ	धा	मा	ध	ध	धा	नी	ई	धा	नी	ई	सा	नी	सा	ऽऽ	सा	नी
बोल.	दा	दि	ड	दा	डा	ऽ	दा	डा	दि	ड	दा	डा	ऽ	दा	डा	ऽ	दा	डा	दा	ऽ	दा	डा
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
ताल.	=					—					•					—			=			

पड़दा.	१७	१६	१६	१५	१५	१७	१६	१६	१५	१५	१४	१४	१४	१३	१४	१०	१३	१३
स्वर.	गा	रि	रि	सा	सा	गा	रि	रि	सा	सा	नी	नि	नि	धा	नी	मा	धा	ऽऽ
बोल.	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	डा	ऽ
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.	—					०					—					=		

पड़दा.	१५	१५	१४	१५	१५	१३	१४	१०	१३	१३	१४	१४	१३	१०	१०	९	९
स्वर	स	स	नी	स	स	धा	नी	मा	धा	ऽऽ	नि	नि	धा	म	म	गा	गा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	डा	ऽ	दि	ड	दा	दि	ड़	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१
ताल.			—					०					—				

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	९	९	१०	१०	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१७	१५	१५	१५	१५	१५	१५
स्वर.	गा	ग	मा	म	धा	नी	नि	सा	स	सा	नी	नी	स	स	स	स	गा	स	स	स	स	स	स
बोल.	दा	ड	दा	ड	दा	दा	ड	दा	ड	दा	दा	डा	दि	ड	दि	ड	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड
मात्रा.	१	॥	१	॥	१	१	॥	१	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥
ताल.	=					—					०						—						

पड़दा.	१५	१५	१४	१४	१३	१४	१४	१०	१०	१३	१०	१०	१३	१३	१३	१३	१४	१३	१३	१०	१०	९	९
स्वर.	सा	स	नी	नि	धा	नी	नि	मा	म	धा	मा	मा	ध	ध	ध	ध	नी	ध	ध	म	म	ग	ग
बोल.	दा	ड	दा	ड	दा	दा	ड	दा	ड	दा	दा	डा	दि	ड	दि	ड	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड
मात्रा.	१	॥	१	॥	१	१	॥	१	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥
ताल.	=					—					०						—						

गत १८ वीं.

राग परज. ताल—तिताला. (ठाट कालिंगडा नंबर ६ पर.)

पड़दा.	६	७	७	७	७	९	९	१०	८	९	९	९	९	१२	१२	१३	१३	१२	१२	९	९	१०
स्वर.	नी	स	स	सा	स	गा	ग	मा	रे	ग	ग	गा	ग	पा	प	ध	ध	पा	प	गा	ग	मा
बोल.	दा	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा	दा	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा
मात्रा.	१	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	॥	॥	१	॥	१	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.	—					—						०						—				

पड़दा.	९	१५	१५	१४	१५	१४	१३	१४	१४	१६	१५	१५	१५	१४	१४	१३	१०	१२	१२	१३	१४
स्वर.	गा	स	स	नी	सा	नी	धा	नि	नि	रि	स	सा	स	नी	नि	धा	मा	प	प	धा	नी
बोल.	दा	दि	ड	दा	डा	दा	डा	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा	दा	दि	ड	दा	डा
मात्रा.	१	॥	॥	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	॥	॥	१	१
ताल.	—					—						०					—				

पड़दा.	१५	१५	१५	१५	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१४	१४	१३	१३	१२	१२	१०	१०	९	९	९
स्वर.	सा	SS	SS	SS	नी	नी	स	स	स	स	नी	नि	धा	ध	प	प	मा	म	गा	ग	गा
बोल.	दा	S	S	S	दा	डा	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा
मात्रा.	१	१	१	१	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१
ताल.	=				—						०						—				

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	९	९	११	११	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१६	१५	१५	१५	१५	१५	१५
स्वर.	गा	ग	मा	म	धा	नी	नि	सा	स	सा	नी	नी	स	स	स	स	रे	स	स	स	स	स	स
बोल.	दा	ड	दा	ड	दा	दा	ड	दा	ड	दा	दा	डा	दि	ड	दि	ड	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड
मात्रा.	१	॥	१	॥	१	१	॥	१	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥
ताल.	=					—					•						—						

चिन्ह.												×२ १२-१३											
पड़दा.	१४	१४	१३	१३	१२	१३	१३	११	११	१२	१३	१२	१०	१०	१०	१०	९	८	८	७	७	७	७
स्वर.	नी	नि	धा	ध	पा	धा	ध	मा	म̈	पा	धा	पा	म	म	म	म	गा	रि	रि	स	स	स	स
बोल.	दा	ड	दा	ड	दा	दा	ड	दा	ड	दा	दा	डा	दि	ड	दि	ड	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड
मात्रा.	१	॥	१	॥	१	१	॥	१	॥	१	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥
ताल.	—					—					•						—						

गत १९ वीं.

राग कालिंगड़ा. ताल—तिताला. (ठाट कालिंगड़ा नंबर १ पर.)

पड़दा.	८	८	६	७	७	८	९	८	९	९	१०	१०	९	८	८	७	८	६	७	७
स्वर.	रि	रि	नी	स	स	रे	गा	रे	गा	गा	म	म	गा	रि	रि	सा	रे	नी	सा	सा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			•			—		=		—			०			—		=		—

तोड़ा १ ला.

पड़दा.	९	९	१०	१३	१३	१२	१०	९	९	९	१०	१०	९	८	८	७	८	६	७	७
स्वर.	ग	ग	मा	ध	ध	पा	मा	गा	गा	गा	म	म	गा	रि	रि	सा	रे	नी	सा	सा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=		—			०			—		=		—

तोड़ा २ रा.

पड़दा.	१५	१५	१४	१३	१३	१२	१०	९	९	९	१०	१०	९	८	८	७	८	६	७	७
स्वर.	स	स	नी	ध	ध	पा	मा	गा	गा	गा	म	म	गा	रि	रि	सा	रे	नी	सा	सा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		=		—			०			—		=		—

गतोंका बढ़ाना.

गतको बड़ी देरतक बजानेके लिये अनेक प्रकारके रचेहुए बोलोंके तोड़े, गतमें मिलाकर बजाना, इसे गतका बढ़ाना कहते हैं.

गतको बजाते बजाते उसे चाहे जिस * जगह छोड़कर, तोड़ा बजाना आरंभ करे, और तोड़ा संपूर्ण हो जानेपर, गतके जिस बोलको बजाकर, तोड़ा शुरू करनेके लिये जहांसे गत छोड़ दी हो, उसके आगेके बोलसे बाकी रहीहुई गतको बजावे.

विशेष करके गतके तालके समपर तोड़ा गतमें मिलानेका अभ्यास रक्खे; जिससे नये सीखनेवालेको सुगमता होगी.

* तालके जिस ठोकेपर तोड़ेका आरंभ करे, उसके पिछले ठोकेके अंतपर वोह तोडा आकर समाप्त हुआ करता है; अत एव, यदि तोड़ा गतके तालके प्रथम ठोकेपर प्रारंभ करना चाहे, तो गतके काल यानी खालीके अंतके बोलपर गत छोडे; और तोड़ा बजाना पूरा हो चुकनेपर, जिस ठोकेपर तोड़ेका आरंभ किया हो, उसी ठोकेपर शेष रहीहुई गतका प्रारंभ करे—यथा पहले पृ० २४९ पर लिखीहुई गत फिरभी उदाहरणके लिये हैं:—

गत ८ वीं.

राग देश. ताल—तिताला (ठाट यमन नंबर १ पर.)

चिन्ह.								⌒ १३-१५		^							^	× २ १२-१३	× २ १०-१२	९-८ ⌢९
पड़दा.	८	७	८	१०	८	१०	१२	१३	१५	१३	१२	१३	१०	१२	१२	१०	१३	१२	१०	
स्वर.	रि	स	रे	म	रि	मा	पा	धा	सा	धा	प	ध	मा	प	प	मा	धा	पा	मा	गा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		═		—			०			—		—		—

चिन्ह.			९-८ ‿					^ २									^			९-८ ‿
पड़दा.	१०	१०	९	९	९	८	७	६	८	७	८	८	८	१०	१०	१२	१३	१२	१०	९
स्वर.	म	म	गा	ग	ग	रे	सा	नी	रि	स	रे	रे	रे	म	म	पा	धा	पा	मा	गा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.			०			—		—			—		०			—		—		—

पड़दा.	८	७	८	१०	८	१०	१२		१०	१०	१२	१२	१२	१४	१४	१५	१५	१५
स्वर.	रि	स	रे	म	रि	मा	पा		मा	म	पा	प	पा	नी	नि	सा	स	सा
बोल.	दि	ड	दा	दि	ड	दा	डा	—÷ तोड़ा ÷—	दा	ड	दा	ड	दा	दा	ड	दा	ड	दा
मात्रा.	॥	॥	१	॥	॥	१	१		१	॥	१	॥	१	१	॥	१	॥	१
ताल.			०			—			═					—				

पड़दा.	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१४	१६	१६	१५	१५	१५	१५	१३	१३	^ १३	१२	१२	१३	१३	१०	१०	१२
स्वर.	नी	नी	स	स	स	स	नी	रि	रि	स	स	स	स	धा	ध	धा	प	पा	धा	ध	मा	म	पा
बोल.	दा	डा	दि	ड	दि	ड	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड	दा	ड	दा	ड	दा	दा	ड	दा	ड	दा
मात्रा.	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥	१	॥	१	॥	१	१	॥	१	॥	१
ताल.	•																						

चिन्ह.															१३-१५					
पड़दा.	१०	१०	१२	१२	१२	१२	१०	१३	१३	१२	१२	१२	१२		१३	१५	^ १३	१२	१३	१०
स्वर.	मा	मा	प	प	प	प	मा	ध	ध	प	प	प	प		धा	सां	धा	प	ध	मा
बोल	दा	डा	दि	ड	दि	ड	दा	दि	ड	दि	ड	दि	ड	—:शेषगत:—	दा	दा	डा	दि	ड	दा
मात्रा.	१	१	॥	॥	॥	॥	१	॥	॥	॥	॥	॥	॥		१	१	१	॥	॥	१
ताल.	•																			०

चिन्ह.				^	२ × १२-१३	२ × १०-१२	९-८ ◡
पड़दा.	१२	१२	१०	१३	१२	१०	९
स्वर	प	प	मा	धा	पा	मा	गा
बोल.	दि	ड	दा	डा	दा	दा	डा
मात्रा.	॥	॥	१	१	१	१	१
ताल.							

इस रीतिसे सब गतें बजावे. तरह२ के बहुतसे तोड़े बजानेसे सिर्फ एकही गतको घंटों घण्टोंतक बजा सकता है.

तृतीयांक.

पाठ १ ला.

अब यहाँ छह राग और तीस रागिनी इनकी, पुरानी गाने योग्य एक २ चीज दी गई है.

१ राग भैरव–चौताल.

सघन घन छायो द्रुम बेली मध्य भुवन, अतिप्रकाश बरन–बरन पुष्परंग लायो ॥ सघन० ॥ कोकिला खंजन कीर कपोत हैं आनंदकारी, चहुंऔर झर बरसायो ॥ सघन० ॥ सप्त सूर तीन ग्राम इक्कीस मूर्च्छनायुक्त जुक्त लाग डाट कर देखायो ॥ तानसेन कहे सुनो शहा अकबर प्रथम राग भैरव गायो ॥सघन०॥ १ ॥

रागिनी भैरवी १–चौताल.

चंचल चपल नार चंदन चढायो अंग, कंचनकी चौकीपर चंद्रमासी ठारी है ॥ ॥ चंचल० ॥ छोटी छोटी छतियनपर रोम रोम रेख रही, त्रिवेणीके संग मानुं रतीसुख पायो है ॥ चंचल० ॥ सीसफूल सीर सोहैं कजरा सब नयननमो, उरपर हार मोतियन गंगा सिर धरी है ॥ कहे मिया तानसेन बरणन न जात छबी, हेमरस मार चली घुंघटकी घोडी है ॥ चंचल०॥ ॥ २ ॥

रागिनी वैराटी २–धृपद.

यमुनातीरीं रुक्मिणीवल्लभ वेणु वाजवी मंजुल, नादें सुरवर मुनि किन्नर मोहिले नारद तुंबर, गोविंद पूर्ण कृपाल ॥ य० ॥ मधुर ध्वनी वाजवुनि अस्थिर जाहली यमुना जीवन दीन श्याम चरणीं गीत छंद परिसुनियां, सा नी, सा नी, सा सा रे म ग म प म म प म प प म, म प प प प, ध नी सा, गोविंद पूर्ण कृपाल ॥ यमुना० ॥ ॥ ३ ॥

रागिनी मधुमाधवी ३–त्रिताल.

नी नी सरेसा नी सारेमपनी नी पम रिम रिमप नी नी सारे सानीपम रे सा नी पांचों मिलाय ॥ नी० ॥ गंधार धैवत बिना, लेहो लाग ओडव, आदित राम उनचास कोटी तान सो, श्रीव्रजपति, लेहो रिझाय ॥ नी० ॥ ॥ ४ ॥

रागिनी सिंधवी ४–नागताल.

पपधा मग मप नी धा प नी नीसा पनी पध मप मगारि रेसा सारे मप धसा रेसा नी धप ॥ धा मग मपनी ॥ नित उठि नित उठि जपूंरी तेरो नाम प्यारी आदित उदित राधे राधे ॥ धा मग मपनी० ॥ ॥ ५ ॥

बंगाली ५—धृपद.

पगा सासासा गमपप मगम पगा सासासा गा पप मग गग पप नी पमगग्गसा ॥ पगा सासासा० ॥ पप नी नी सा सासा गगसा सानी पप आदित राम बंगाली सासा पगा सासासा० ॥ ॥ ६ ॥

२ राग मालकंस—धृपद.

तेरी गत अपार मोसे बरन न जात, निरंजन नारायन ॥ तेरी० ॥ तूही चांद तूही सूरज तूही पवन तूही पानी, तूही उरगन तूही नारायन ॥ तेरी० ॥ तूही ब्रह्मा तूही विश्नु तूही अगम तूही निगम, तूही सुजन—परायन ॥ तेरी० ॥ तानसेन कहे प्रभू तूहीकी धावन, सुमर सुमर भये परायन ॥ तेरी० ॥ ॥ ७ ॥

रागिनी टोड़ी १—धृपद.

शुभकर चंद्रवदनी मृगलोचनी, हंसगमनी चली पूजन महादेव ॥ शुभ० ॥ कर लिये अग्र थाल फूलनको गुथे हार एकपाये पूजा करे संग ज्युगतसे ॥ कहत मिया तानसेन सुनो महादेव, दीजे मोकुं ग्यान अटल दान ॥ शुभ० ॥ ॥ ८ ॥

रागिनी गौरी २—चौताल.

बंसीधर पीनाकधर, गिरधर गंगाधर नरहरी, नरोत्तम हो हरी हर ॥ बं० ॥ खेडाधर बरखाधर धरनीधर शेषधर, गले रुद्रमालाधर हो शिवशंकर ॥ बंसी० ॥ चक्रधर त्रिशूलधर वरूधर शंखधर, चंदनविभूतधर परमेश्वर ॥ तानसेनको कीजे कृपा ओ जगदोद्धर, होओ तुमही विद्याधर ॥ बंसीधर० ॥ ॥ ९ ॥

रागिनी गुणकली ३—धृपद.

बेनी बनी मृगनयनीकी अंगते कंचन खंबपर नागन कागन काली ॥ बेनी० ॥ गरहपर कपोत वारू, नयनपर सावग सारू, नासिका पर कीर वारू, दसन चोप उजारी ॥ बेनी० ॥ ॥ १० ॥

रागिनी खंबावती ४—चौताल.

प्रथम मुनी ओंकार, देवमुनी महादेव, ज्ञानमुनी गोरख वेदमुनी ब्रह्मा ॥ प्रथम० ॥ विद्यामुनी सरस्वती नदीमुनी गंगा, भक्तमुनी नारद नृत्यमुनी रंभा ॥ प्र० ॥ साज गीतकी संगीत मुनी सूरजकी अच्छर मुनी तारी लगंबा ॥ कहे बेजुबावरा सुनो हो गोपाल नायक दीन मुनी सूरज रैन मुनी चंदा ॥ प्रथम० ॥ ॥ ११ ॥

रागिनी ककुभ ५—धृपद.

तोहे समझावत हूं पनेहारी ॥ तोहे० ॥ दूध दही माखन बोहोतेरे तेरेतैं लेजात गमारी ॥ तोहे० ॥ नीत उठ देन डरानो आवत, चोरीकी बात तें नाहीं बिसारी, सुरके प्रभुको बिहा करूंगी, तन मन धन तोपे बलिहारी ॥ तोहे० ॥ ॥ १२ ॥

३ राग हिंडोल—धृपद.

झुलत सखी हिंदोले कारो कहान, बलभद्रजीको भय्या ॥ चंद्रतेज अंग झलके मोरमुगुट लटकन सो भय्या ॥ मोहन छब झपक देख जिया बिरहबान लगय्या ॥ झुलत० ॥ ॥ १३ ॥

रागिणी रामकली १—झुमरा.

कहां जो रहे तुम रात हो नंदसूत ॥ कहां० ॥ सगरी रैन मोहे तलफत बीती, तुम जो आए प्रभात, हो नंदसूत ॥ कहां० ॥ ॥ १४ ॥

रागिणी देशाख्य २—धृपद.

हूं तो अनबोली री आली तेरे कहान मोसुं ऐसी कीनी ॥ हूं तो० ॥ मथुरा जाय उलट आवतही, बिन्द्राबन झक झोरी, रसकी कुसुंबी चोली मसकी ॥ हूं तो० ॥ ॥ १५ ॥

ललित. ३—चौताल.

भले जी भले आये हो मनभाये लाल, रैन क्युं न दुलाये ॥ भले० ॥ सब रस दे आये, अधर अंजन धुमावे, कहा ना तुम जाये ठगाये ॥ भले० ॥ तुम नहीं जानत हमही जानत, धाड़ो छेल बिछुआं बनाय लाये ॥ तानसेन कहे प्रभु अरुण उदय आये, कहां तुम रैन गुमाये ॥ भले० ॥ ॥ १६ ॥

रागिनी बिलावल ४—चौताल.

चऊं अचल नेंआनां नेचाऐं चढाए भो अए चंदहु लजात मानुं मंद हास हसे अऐरी ॥ चं० ॥ मोर मुकुट मोर सोहे मुरली मधुर मन मोहे ऐरी ॥ चं० ॥ पीत पट कटी कसेरी चहुं अनयारी आंखनमें अऊ जनमनरंजन अलबेली पागके संवारे पेच कॅसे ऐरी ऐरी ॥ चं० ॥ ॥ १७ ॥

रागिनी पटमंजरी ५—धृपद.

चढ़त प्रबल दल बली रामचंद्रजीको, छूटगये जल थल अरुणके जागते ॥ ॥ चढ़त० ॥ सुकत नदी और फुटत पहाड़, शेष फुल कलमलानो गरुड गगन रही छायके ॥ चढत० ॥ रथ गज हाथी पियादा लेके सन्मुख आयो मेघनाद धायके ॥ चढत० ॥ तानसेनके प्रभु लछमनको लिये साथ, हनुमान अंगद दोहु जोद्धा बनायके ॥ चढ़त० ॥ ॥ १८ ॥

४ राग दीपक–धृपद.

॥ हे तन बनाय बरसत अग्नी तरसत रोमरोम दीपक दरसन कर देख उजाले अनंत अपरंपार ॥ हे० ॥ जगत गगन झलकत झलकार सहस्त्रसे तार जे तेजसे कोटी कोटी बनी है मिसाल ग्यान समझ अंगार ॥ हे० ॥ निसदिन सिलगत रहत महान अग्नी ओंकार पृथ्वी पाताल आकाश उनके बसन दरसन प्रकाश आधार ॥ हे० ॥ सकल ज्योत अग्नी सागर ज्वाला मेरू मकार तू बिचार अमम निगम प्रथम अग्नी उपजावन अंधःकार ॥ कहे मिया तानसेन सुन गनी अकबरशाह हे धरत्री उद्धार मंगल दीपक मान ग्यान ब्रह्मावतार ॥ हे० ॥ ॥ १९ ॥

रागिनी नट १–ख्याल.

सुरत बिसार डारीरे सजनारे जब ॥ हम तुम्हारी रीत तबही पहँचानी ॥ सुरत० ॥ औरनके संग बतियां करन लागे, हमारी प्रीत न कछुही जानी ॥ सुरत० ॥ ॥ २० ॥

रागिनी केदारी (केदारा) २–झमक.

नाद गढ़ सुघड गढ बाकोही किल्लो, उनचासकोटी तान कंगुरा खाई ॥ नाद० ॥ सप्त सूर तीन ग्राम इक्कीस मूर्च्छना, बाईस सुरथा चार बुरुज चार तोफा लगाई ॥ नाद० ॥ आरोही अवरोही अस्ताई संचाई, ऐसा बिकट कोट बिधना रचाई ॥ कहे मिया तानसेन सुनोहो गुनीजन, आप बल भूजबल बिनलियेहू न ज्याई ॥ नाद० ॥ ॥ २१ ॥

रागिनी कानड़ी (कानड़ा) ३–चौताल.

कहानडा कल्यान गान, केदारा हिंडोल तान, गोडी तोडी मालकंस मालवा धनासरी ॥ कहान० ॥ सारंग देवगंधार गुर्जरी गोडी मल्हार, ललित बिभासहूमें थोड़ी थोडी असावरी ॥ कहान० ॥ मोहे सब सुर नर मुनी नारदसे ब्रह्मादिक, टपक टपक बांकी आंखनमें आंसुरी ॥ क० ॥ नटमें बजावे श्रीरागमें सुनावे कहान इते इते रागनमें बाजत है बाँसुरी ॥ कहान० ॥ ॥ २२ ॥

रागिनी देशी ४–दीपचंदी.

देस कोई संघ्याको बता दीजोरी, मैं लेऊंगी जोगिनियाको भेस ॥ दे० ॥ कहां जाये कैसी करे कोहुंसे करे पुकार, हकीकत कछु न जानिये, क्योंकर मिले मुरार ॥ देस० ॥ ॥ २३ ॥

रागिनी कामोदी ५–अध्धा.

वनमों बसत नाहीं मुरारी, येरी कुंजविहारी गिरिवरधारी संग सोहे धारा प्यारी बृखभानकी दुलारी ॥ बन० ॥ मोरमुगुट पीताम्बर सोहे, कुण्डलकी छबि न्यारी ॥ बृखभानकी दुलारी ॥ बन० ॥ ॥ २४ ॥

५ राग श्रीराग—धृपद.

हे राजा जहां जहां जावे वहां वहां सुनियत तेरोही नाम ॥ ध्रु० ॥ जो हैं नर नरेन्द्र नारी पोहरे प्रताप ओभी तेरे दरसनकी लालसा आस करें; और तू स्तुती श्रवन सुन पावे विश्राम ॥ हे० ॥ जो हैं गुनी गंधर्व कुशल विद्याधर ओभी जपत हैं तेरोही धाम, श्रीराग गावत तानसेनके प्रभु दीनबंधु राजाराम ॥हे०॥२५॥

रागिनी वसंत (वसंती) १—तिताला.

आई वसंते श्यामै घर नांहिं कांहा केहुँ आली से कहिंये ॥ आई० ॥ अंबुवा गलों स संवी फुलाने मनोजके बान कहांतक संहिये ॥ आई० ॥ ॥ २६ ॥

रागिनी आसावरी २—चौताल.

है देखी इंद्रलीला इंद्रको सो दरबार, तख्त बैठे हैं अतल मानी ॥ है देखी० ॥ द्वीप नाम जंबूद्वीप द्वीप नाम सिंहलद्वीप, ऐसो द्वीप है जैसो कनक हीरा ॥ है० ॥ एकनको दान देत एकनको बुलाय लेत, एकनको बक्षत घर जर कस चीरा ॥ है० ॥ तानसेन कहे प्रभु तेहारे राजनमें, गुनीजन गंधर्व करत क्रीडा ॥ है देखी० ॥ ॥ २७ ॥

रागिनी मालवी ३—ख्याल.

काहेकुंरे जलावत प्यारी मोरी धीरज हटावत सारी आलीरी ॥ काहे० ॥ जब थे कपट मनमें, तब हिय छुपाय क्युं तनमें, अब ये बुराई अब ये डुराई मोहे तन सलगत भारी आलीरी ॥ काहे० ॥ ॥ २८ ॥

रागिनी धनाश्री ४—चौताल.

छत्र नृपती दिल्ली मान रावन मुनी हनुमान, देवन मुनी शंकर ॥ छत्र० ॥ दीन-मुनी सूरज राग मुनी भैरव, गुनियन मुनी तानसेन ॥ छत्र० ॥ ॥ २९ ॥

रागिनी मालश्री ५—ख्याल.

प्यारे तुम अनुकुल कहावत, मेरे जानके छन लछन और मान ॥ प्यारे० ॥ मुख और, जिया और, कहते और, किये और, ऐसी परी मन आन ॥ प्यारे० ॥ ॥ ३० ॥

६ राग मेघ—ख्याल.

आया मेघा तेरी मोसम की घटा छाय रही, मेरे मन भाय रही ॥ पपैया पीहू पीहू पुकारे, जंगलबीच मोर जिंगारे, बागोंमें कोयलियां जैसी जैसी चील किलाय रहीं ॥ आया मेघा० ॥ राजा इंद्रकी चढ़ाई, पियाकी सुधहु न पाई, कौनसी दूती उसे, जायके समझाय रही ॥ आया० ॥ ॥ ३१ ॥

रागिनी टंकल १—ख्याल.

मोरा जी सुनो तो कहुं मोरे डेरे आवना ॥ आगले पोर मोरी नँनदिया जागे, पिछले पोर जागे मोरी सास, नैन पैसैयां छबिया जागे, हैय्यामें जागे मोरीरे आस ॥ मोरा० ॥ ॥ ३२ ॥

रागिनी मल्हारी (मल्हार) २—चौताल.

इन्द्रकी असवारी पपैयाने खूब कीनी, देस देस खबर दीनी ॥ इन्द्र० ॥ घो घो गरजे नगारे बाजे घोओरवा निशान बाजे, बौदराकी फौज तान भूधराकी तीर कारी ॥ इं० ॥ देवे नीर जोके नीर तोला गोला तोफों छूटे, का करत बिन हनुमान उनहीकी गत न्यारी ॥ तानसेनको प्रभु तुम बहु नायक, जाको पिया परदेस उनहूको जग भारी ॥ इंद्र० ॥ ॥ ३३ ॥

रागिनी गुर्जरी ३—ख्याल.

रैन उनींदी नार निस जागी प्रीतम सुरज नवा प्यारे संग ॥ रै० ॥ रंग उमँगी अखियां झुकी जात, और मिची जात है पलकार ॥ रै० ॥ ॥ ३४ ॥

रागिनी भूपाली ४—ख्याल.

डरूंरी नयन नँनदिया सांही बातकी झूठी साँची लगावत बिरहन प्यारे ॥ डरूं डरूं ॥ कर जोर मोरा सीर सिजरा आब सावकी न वासो कहां कहिये ॥ डरूं० ॥ ३५ ॥

रागिनी देशकारी ५—ख्याल.

सुंदरी तू कछु समझत नाहींरी, समझे तो समझ ले सनम प्रेम प्रीतरीत ॥ सुं० ॥ नयनन चकायन अंग लपायन रिझायन छतियन रहे लगनीत ॥ सुंदरी० ॥ ॥ ३६ ॥

॥ इति छः राग तीस रागिणी समाप्त ॥

सूचना:—नायक, नायिका, रस व भाव वगैरः साहित्यका रागों व रागियोंके साथ तंतुपट न्यायसे निकट संबंध होनेके कारण, उसका संक्षिप्त हाल इसके आगे लिखते हैं:—

पाठ २ रा.

साहित्य विचार.

———:०:———

नायक.

काव्यमें जिस मुख्य पुरुषका वर्णन किया जाता है उस पुरुषको नायक कहते हैं.

नायककी तीन जातें होती हैं:—

१ **दिव्य**—देवतादिक जैसे—पार्वतीपरिणय नाटकमें शंकरजी.

२ **अदिव्य**—मनुष्यादिक. जैसे—शाकुंतल नाटकमें राजा दुष्यंत.

३ **दिव्यादिव्य**—देवता होकर मनुष्यावतार लियेहुए. जैसे—उत्तररामचरित्रमें रामचन्द्रजी.

वर्तनसे अर्थात् बर्तावसे **नायकों**के चार भेद हुए हैं:—

१ **अनुकूल**—एकही स्त्रीमें आसक्त रहनेवाला.

२ **दक्ष**—सब स्त्रियोंपर समान प्रीति रखनेवाला.

३ **शठ**—एक स्त्रीपर प्रीति दिखलाकर गुप्त रीतिसे अन्य स्त्रीपर प्रेम करनेवाला.

४ **धृष्ट**—स्त्रीनें धिक्कार कर देनेपरभी लाज न रखनेवाला, अपने दोषोंको झूंठ बोलकर छुपानेवाला व अपराधी होकरभी निशंक रहनेवाला.

नायकोंके स्वभावोंपरसे प्रत्येकके औरभी **२** चार प्रकार हुए हैं.

१ **धीरोदात्त**—आत्मश्लाघा न करनेवाला, क्षमाशील, गर्व हर्ष व शोकरहित, व गंभीर. जैसे:—रामचन्द्र व धर्मराज वगैर:

२ **धीरोद्धत**—आत्मश्लाघा करनेवाला, धीट, बलिष्ठ, गर्विष्ठ व चंचल. जैसे:—भीमसेन.

३ **धीरललित**—चतुर, विलासी, रसिक, गुणी, विनोदी व संगीताभिलाषी. जैसे:—वत्सराज.

४ **धीरप्रशान्त**—साधारण रीतिसे सभ्य गृहस्थके अंगमें जो स्वाभाविक गुण होते हैं, उन गुणोंसे युक्त. जैसे:—मालतीमाधव नाटकमें माधव.

अनुराग—नायक व नायिका इन दोनोंके बीचमें जो पहले पहले परस्पर प्रेम उत्पन्न होता है उसे **अनुराग** कहते हैं.

अनुरागके दो भेद हैं:— १ **दृष्टानुराग**. २ **श्रुतानुराग**.

दर्शन—किसी वस्तुको दृष्टिद्वारा जानना या देखना इसको **दर्शन** कहते हैं. इसके तीन भेद हैं.

१ **स्वप्नदर्शन**—अचेत सोतेहुएमें वस्तुका दिखाई देना.

२ **चित्रदर्शन**—किसी वस्तुकी हूबहू शक्ल सूरत या नकल कागज़ मिट्टी, काठ या धातु वगैरःपर बनीहुई देखना.

३ **साक्षात् दर्शन**—स्वयं उसी वस्तुका प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होना.

नायिका.

काव्यमें जिस मुख्य स्त्रीका वर्णन किया जाता है उसे ‘ **नायिका** ’ कहते हैं. नायिकाकी तीन जातें हैं.

१ **स्वीया**—स्वस्त्री.

२ **परकीया**—परस्त्री.

३ **साधारणी**—वेश्या.

१ स्वीया नायिकाके नायकको **पति** कहते हैं.

२ परकीया नायिकाके नायकको **उपपति** कहते हैं.

३ साधारणी नायिकाके नायकको **वेशिक** कहते हैं.

१ **स्वीया**के तीन भेद हैं. मुग्धा १, मध्या २, और प्रगल्भा ३.

२ **परकीया**के दो भेद हैं. परोढा १ और कन्यका २.

३ **साधारणी** अथवा सामान्या यह एकही प्रकारकी है. इन मुख्य तीन नायिकाओंके तीन तीन भेद हैं.

१ अन्यसंभोगदु:खिता.

२ वक्रोक्तिगर्विता.

३ मानिनी अथवा मानवती.

१ स्वीयाके जो तीन भेद, मुग्धा, मध्या व प्रगल्भा ये कहे हैं उनमेंसे–

(१) **मुग्धा**—चार प्रकारकी होती है.

१ **नवलवधू**—इसके औरभी दो भेद हैं.

(१) नवोढा.

(२) विश्रब्ध नवोढा.

२ नवयौवना—इसकेभी और दो भेद है.

(१) अज्ञात यौवना.

(२) ज्ञात यौवना.

३ नवलअंनगा—यह एकही है.

४ लज्जाप्रिया—यहही एक है.

(२) **मध्या**—चार प्रकारकी होती है.

१ आरूढयौवना.

२ प्रगल्भवचना (वचनप्रगल्भा).

३ प्रादुर्भूतमनोभवा (मनोभामिनी).

४ सुरतविचित्रा (रतिविचित्रा).

(३) **प्रगल्भा**—यह तीन प्रकारकी होती है.

१ धीरा.

२ अधीरा.

३ धीराधीरा.

२ **परकीयाके** दोही भेद हैं.

१ परोढा (परस्त्री).

२ कन्यका (कुमारी).

३ **साधारणी** अथवा **सामान्या** यह एकही प्रकारकी है.

इन मुख्य तीन नायिकाओंके जो तीन २ भेद हैं उनके भी और भेद हुए हैं.

(१) **अन्यसंभोगदुःखिता**, यह एकही है.

(२) **वक्रोक्तिगर्विता**, इसके तीन भेद हैं.

१ प्रेमगर्विता.

२ रूपगर्विता.

३ कामगर्विता.

(३) **मानिनी** अथवा **मानवती** के औरभी तीन भेद हैं.

१ लघुमानवती.

२ मध्यमामवती.

३ गुरुमानवती (दीर्घमानवती).

स्वीया नायिकाके औरभी आठ शृंगारिक भेद किये हैं. उन्हें **अष्टनायिका** कहते हैं. वे इस प्रकार हैं:—

१ स्वाधीनपतिका.
२ खंडिता.
३ कलहान्तरिता.
४ विप्रलब्धा.
५ वासकसज्जिता.
६ प्रोषितभर्तृका.
७ विरहोत्कंठिता.
८ अभिसारिका.

यह अभिसारिका तीन प्रकारकी है.

१ दिवाभिसारिका.
२ कृष्णाभिसारिका.
३ शुक्लाभिसारिका.

इनके अतिरिक्त नायिकाओंके औरभी ३६० भेद हैं वे विस्तारभयसे यहाँ नहीं लिखे हैं.

नायिकालंकार.

नायिकाको तरुणाईमें २८ प्रकारकी स्वाभाविक अवस्थायें प्राप्त होती हैं उन्हें **अलंकार** कहते हैं.

उन अलंकारोंमेंसे पहिले दश १० अलङ्कार तों नायककोभी लगते हैं. यथा:—

१ **हाव.** (अविकृत चित्तके स्थानमें प्रथमही उत्पन्न भयाहुआ विकार अथवा मनकी चञ्चलता. इसके १६ प्रकार हैं). २ **भाव** (भ्रूनेत्रादिकोंके योगसे हावोंका प्रगट होना). **३ हेला** (भावका पूर्ण विकास). **४ शोभा. ५ कांति. ६ दीप्ति. ७ माधुर्य. ८ प्रगल्भता. ९ औदार्य. १० धैर्य. ११ लीला. १२ विलास. १३ विच्छति.** (कांतिवर्धक शरीरावस्था). **१४ बिब्बोक.** (गर्वसे कियाहुआ अनादर). **१५ किलकिंचित** (हर्षसंभ्रम). **१६ मोट्टायति** (प्रियवस्तु—स्मरण—जनित विकार). **१७ कुट्टमित** (आनंददायक कृतीका बाह्यात्कारी प्रतीकार). **१८ विभ्रम. १९ ललित. २० मद. २१ विकृत. २२ तपन. २३ मुग्धता. २४ विक्षेप. २५ कुतूहल. २६ हसित. २७ चकित. २८ केलि.**

पहिले कहीहुई अष्टनायिकाओंमेंसे प्रोषितपतिका अथवा विरहिणीमें प्राप्त होनेवाली ये दस अवस्थायें हैं:—

१ स्मृति, २ अभिलाष, ३ गुणकथन, ४ चिन्ता, ५ जड़ता, ६ उद्वेग, ७ उन्माद, ८ प्रलाप, ९ व्याधी, और १० मूर्च्छा.

भाव.

रसोंको साधनीभूत जो मनोविकार हैं उन्हें '**भाव**' कहते हैं. इसके शारीरिक व मानसिक ऐसे दो प्रकार हैं. सात्विक भाव ये शारीरिक, और स्थायीभाव व व्यभिचारी ये मानसिक हैं. एक मुख्य मनोविकार, उनके कारण, उनके कार्य व उसे पुष्टी देनेवाले अन्य मनोविकार, यही रस उत्पन्न करनेवाली सामुग्री है. मुख्य मनोविकार यह स्थायीभाव, उसका कारण यह विभाव, उसका कार्य यह अनुभाव, व उसे पुष्टी देनेवाला दूसरा मनोविकार यह व्यभिचारी अथवा संचारी भाव है.

उदाहरणार्थ—" कौरवोंने अभिमन्युका वध किया, यह सुन अर्जुनको क्रोध आया व तिससे उसके नेत्र आरक्त हुए व बाहु स्फुरण होते भये. इतनेमें, अभिमन्यु कि, जो रणक्षेत्रमें पड़ा हुआ था, उसकी अचेत दशामें जयद्रथने उसे लात मारी, यह बात अर्जुनको विदित हुआ. तब इस योगसे उसका क्रोधाग्नि बहुतही भडकने लगा. यहांपर मुख्य मनोविकार जो क्रोध है यह स्थायीभाव, उसका कारण जो अभिमन्युका वध यह विभाव, उसका कार्य जो अर्जुनके नेत्र आरक्त होना व उसका युद्धके लिये तैयार होना यह अनुभाव, और उसे पुष्टी देनेवाला दूसरा मनोविकार यानी जयद्रथके नीचकृतिका स्मरण यह संचारी भाव हुआ. यहांपर रौद्ररस उत्पन्न हुआ है.

स्थायी भाव—जो प्रधान मनोविकार विभाव,अनुभाव व संचारी भाव इनके योगसे परिपुष्ट भयाहुआ जो रसरूप होता है उसे 'स्थायीभाव' कहते हैं. स्थायी भाव यह अंकुरावस्था व रस यह पल्लवावस्था है. इसके नौ प्रकार हैं व उस प्रत्येकसे एक एक रस उत्पन्न होता है. वे इस प्रकार:—

स्थायी भाव और रस ९.

स्थायी भाव. ९		रस. ९	
रति .	१	शृंगार	१
हास	२	हास्य	२
शोक	३	करुणा	३
क्रोध	४	रौद्र	४
उत्साह	५	वीर	५
भय	६	भयानक	६
जुगुप्सा	७	बीभत्स	७
विस्मय	८	अद्भुत	८
शम	९	शान्त	९

विभाव—जिस योगसे स्थायीभाव अंकुरावस्थाको प्राप्त होता है और जो रसका कारण है उसे 'विभाव' कहते हैं. इसके दो प्रकार हैं—आलंबन व उद्दीपन.

१ आलंबन विभाव—मूलवस्तु अथवा बीज अर्थात् जिसके अवलंबनसे रस उत्पन्न होता है वह आलंबन विभाव है. जैसे, शृंगाररसमें नायक अथवा नायिका (यह आलंबन विभाव है).

२ उद्दीपन विभाव— बीजको सिंचनरूपसे पुष्टी करनेवाला यानी जिसके योगसे रस वृद्धिको प्राप्त होता है. वह उद्दीपन विभाव कहलाता है. जैसेः—शृंगाररसमें एकांतवास, चांदनी, कोकिलरव वगैरः उद्दीपन हैं. इसके चार प्रकार हैं. गुण, चेष्टा, अलंकार व तटस्थ.

शृंगाररसमेंका आलंबनविभाव जो नायक अथवा नायिका हैं, उनके रूप, गुण, और यौवन ये "गुण" हावभावादि चेष्टा ये "चेष्टा," वस्त्रभूषण वगैरः येह "अलंकार" व चंद्र, वायु, उद्यान, व प्रकाश ये "तटस्थ," ये उद्दीपन विभावके चार प्रकार हैं.

अनुभाव—मनमेंका भाव जिन चिन्हों द्वारा प्रगट होता है अथवा मनोविकारकी सूचक ऐसी जो शरीरचेष्टा, अथवा रसका जो कार्य है उसे 'अनुभाव' कहते हैं.

व्यभिचारी भाव—स्थायीभावको अथवा मुख्य मनोविकारको व रसको परिपुष्ट करनेवाले जो अन्य सहायकारी मनोविकार हैं उन्हें 'व्यभिचारी' अथवा 'संचारी' भाव कहते हैं. ये भाव स्थायीभावके समान पहिलेहीसे नहीं पैदा होते हैं. तौभी एक रसके जो स्थायीभाव हैं, वे दूसरे रसमें सहायकारी अर्थात् व्यभिचारी भाव होते हैं. जैसे, शृंगारमें ' हास्य ' व वीरमें ' क्रोध ' इनके भी विभाव व अनुभाव होते हैं इन विभाव व अनुभावकी उपमा यथाः—

स्मृति—इसमें स्मरण होना यह विभाव व उसे करनेके लिये जो भौंहोंका संकोच व दृष्टिका स्थैर्य इत्यादि है, ये वह अनुभाव है.

स्वाभाविक भाव ३३ हैं. यथाः—

१ स्मृति, २ आलस्य, ३ शंका, ४ चिंता, ५ श्रम, ६ ग्लानि, ७ निद्रा, ८ मोव, ९ मद, १० निर्वेद (निवृत्ति), ११ असूया, १२ दैन्य, १३ जडता, १४ धृति, १५ व्रीडा (लज्जा) १६ गर्व, १७ विषाद, १८ औत्सुक्य, १९ आवेग (भोंचकाना), २० हर्ष, २१ चपलता, २२ अपस्मार, २३ सुप्ति, २४ विबोध, २५ वितर्क, २६ अमर्ष (अहंकार शमनेच्छा), २७ अवहित्था (विकारगोपन) २८ मति, २९ उग्रता, ३० उन्माद, ३१ व्याधि, ३२ त्रास, और ३३ मरण.

सात्विक भाव—सत्वगुणसे शरीरमें स्थायीभावका जो अनुभाव उत्पन्न होता हैं उसे ' सात्विक भाव ' कहते हैं.

इसके आठ प्रकार हैं. यथाः—

१ स्तंभ (गतिनिरोध), २ स्वेद, ३ रोमांच, ४ वैस्वर्य (आवाज बदलना), ५ वेपथु (कंप), ६ वैवण्य (वर्ण पटलना), ७ अश्रुपात, और ८ प्रलय (चेष्टानिरोध)

नवरस.

मनके वृत्तिका जुदे २ प्रसंगमें भिन्न भिन्न रूपसे व्यक्त होना, अथवा मनका या चित्तका आनंदित या द्रवित होना उसे ' रस ' कहते हैं. विभाव, अनुभाव व व्यभिचारी भाव इनके योगसे परिपुष्ट भयाहुआ जो स्थायीभाव है वोह रस है. रस यह तर्क्य, वाच्य, लक्ष्य अथवा नित्य न होकर केवल अर्थसंकेतके ज्ञानका अनुभव है.

मुख्य रस नौ हैं. यथा आगे कोष्टमें लिखे हैं.—

रस-Sentiments.

१ शृंगार.	1 Love.
२ हास्य.	2 Humour.
३ करुणा.	3 Compassion.
४ रौद्र.	4 Anger.
५ वीर.	5 Valour.
६ भयानक.	6 Terror.
७ बीभत्स.	7 Dis′-gust.
८ अद्भुत.	8 Surprise.
९ शांत.	9 Tranquility.

१ शृंगार—स्त्रीपुरुषोंकी प्रीतिका परिपुष्ट होना (अत्यंतर प्रेम बढ़ना) इसे शृंगाररस कहते हैं. इसका वर्ण गुलाबी है. इसके दो प्रकार हैं.

संयोगशृंगार १,व वियोगशृंगार, २ वियोग शृंगार या विप्रलंभ शृंगार इसके अयोग (अनुरक्त स्त्रीपुरुषोंका समागम न होना), विप्रयोग (प्रथम समागम होकर तदनंतर भयाहुआ वियोग) व मान (प्रेमयुक्त कोप) ऐसे तीन प्रकार हैं.

मान दो प्रकारका है. १ प्रणयमान (प्रणयभंग या रुठाई,) २ ईर्षामान.

विप्रलंभ व करुणारस इन दोनोंमें फर्क है. विप्रलंभमें इष्ट वस्तुकी प्राप्तिकी आशा रहती है व करुणारसमें वह आशा नष्ट होती है.

कोई २ विप्रलंभ शृंगारके पूर्वराग, मान, प्रवास व करुणात्मक, ऐसे चार भेद करते हैं; व कोई २ अभिलाषा, विरह, ईर्षा, प्रवास, व शाप ऐसे पांच भेद करते हैं.

२ हास्य—वस्त्रालंकारोंका विपर्यास, विनोदी भाषण व चेष्टा इत्यादिकोंके योगसे परिपूर्ण भया हुआ " हास " नामक जो स्थायीभाव है उसे 'हास्य' कहते हैं.

इसके स्वनिष्ठ व परनिष्ठ ऐसे दो भेद हैं; और स्मित, हसित, विहसित, अवहसित, अपहसित व अतिहसित, ऐसे पांच प्रकार हैं. यह श्वेतवर्ण है.

३ **करुणा**—इष्ट वस्तुका नाश, निराशा, औदासिन्य व विरहदुःख इत्यादिकोंके योगसे परिपूर्ण भयाहुआ जो " शोक " नामक स्थायीभाव है उसे " करुणारस " कहते हैं. यह हरितवर्ण है.

४ **रौद्र**—अपमान व अपकार इत्यादिकोंके योगसे " क्रोध " नामक स्थायीभावका जो परिपूर्ण होना, उसे ' रौद्र रस ' कहते हैं. इसका आरक्तवर्ण है.

५ **वीर**—दया, औदार्य, शौर्य व पराक्रम इत्यादि दिखलानेके " उत्साह " की जो पूर्णावस्था है वह ' वीररस ' कहाता है. यह हेमवर्ण है.

इस वीररसके चार भेद हैं:—दानवीर १, धर्मवीर २, दयावीर ३, व युद्धवीर ४.

६ **भयानक**—" भय " नामक स्थायीभावकी यह पूर्णावस्था है. इसका वर्ण कपोत है.

७ **बीभत्स**—मनको ग्लानि या घृणा उत्पन्न होनेवाली चीज या बातसे होनेवाली " जुगुप्सा " की यह पूर्णावस्था है. इसका श्याम वर्ण है.

८ **अद्भुत**—आश्चर्यसे मनको चकित करनेवाली यह " विस्मय " की पूर्णावस्था है. इसका वर्ण पीत है.

९ **शांत**—विरक्तपन, दया, क्षमा, शांति, व समाधान इनके योगसे " शम " इस स्थायीभावका परिपूर्ण होना, वह ' शांत रस ' कहाता है. यह श्वेतवर्ण. है.

इसके अतिरिक्त वत्सलरस, बांधवरस, प्रेयान् (मित्रविषयक स्नेह) रस व भक्तिरस वगैरः औरभी रस हैं, परन्तु मुख्य नौंही मानेगये हैं.

रसोंके संक्षिप्त उदाहरण.

रणमें अभिमन्यु अचेत पड़ाहुआ देख अर्जुनको महादुःख होकर वह शोक करने लगा (यह करुणारस है); इतनेहीमें जयद्रथने अभिमन्युके लात मारी यह उसे मालूम होतेही वह क्रोधसे लाल हुआ (यह रौद्ररस है); उसने जयद्रथके मार डालनेकी प्रतिज्ञा करके घोर युद्ध शुरू किया (यह वीररस है); वह कौरवोंके सेनाका जो भयंकर संहार करने लगा यह देख जयद्रथ वगैरः भयसे थरथर कांपने लगे (यह भयानक रस है); युद्धके अनंतर वीरोंके जो प्रेत पड़े हुएथे वे, काग, स्यार, जंबुक, गिद्धादिक नोच फाड़कर खानेलगे व जहांतहां हड्डी, रक्त व मांस इनकी राशियां दिखाई देनेलगीं (यह बीभत्स रस है).

इति सितारचन्द्रिका समाप्त.

सविनय प्रार्थना.

इस पुस्तकमें मैंने स्वर, ग्राम, राग, ताल, साहित्य व सितारवाद्यका हाल दिया है. इस मेरे महान् परिश्रमकी सफलता तभी होगी जब आपसमान गुणी व गुणग्राहक जन व कदर करलेवाले इसे स्वीकार कर यथायोग्य स्वकार्यानुसार उपयोगमें लावेंगे व यथायोग्य मान देकर मेरे धार्ष्ट्यकी क्षमा करेंगे.

बैशाख कृष्ण ११ चंद्रवार संवत् १९६९. शके १८३४ ता. १३ मई १९१२ ई.

आपका
कृपापात्र ग्रंथकर्ता.
पं. शंकरशिवराम आठले.
श्रीलक्ष्मीनारायण मंदिर उरई. जि. जालौन.

विक्रयार्थ तय्यार।

नाम.	किं०	डा०म०
साहित्यमञ्जरीसंग्रह (परममनोहर अनेक रागरागिनियों तथा षट्ऋतुवर्णन आदिका संग्रह है (यह गानेवालोंको बहुत उपयोगी है.	०–६	०–१
रंगतबहार	०–२	०–१
युगलविनोदपदावली. इसे श्री १०८ युगलानन्यमहाराज मधुरअलीने निर्माण किया है. इसमें श्रीरामचन्द्र आनन्दकन्दकी सुखमय अनुपम अमृतमय बालपनसे लेके, विवाहपर्यन्त होली, हिंडोले आदि सुन्दर रागरागिनीके भेदसे ऐसी ललित रासविलासलीला दर्शायी है कि, आजलौं ऐसा ग्रन्थ कहीं देखनेमें नहीं आया.	०–८	०–२
सनातनभजनदीपिका पं० भगवानदासजीकृत इसमें धर्मसंबंधी नानाउपदेशोंसे पूर्ण सनातन–धर्मसभाके जलसे आदिमें भजनवर्णालयोंके गानेलायक हृदयग्राही भजनोंका संग्रह है.	०–७	०–१॥
हरियशगीतमाला इसमें मारवाड़ी चालकी गालियोंकी राहमें हरिहरात्मक अनेक रसीले पद हैं.	०–३	०–१
सङ्गीत गोपीचंद भरथरी	०–२	०–१
रागदिलखुश गायन जिसके पढ़नेसे पाठक पुलकांग हो जाते हैं.....	०–२॥	०–१
अनोखी बारामासी (अर्थात् वैकुण्ठकी कुंजी.)....	०–१	७–॥
भजनपुष्पावली इसमें प्राचीन नवीन महात्माओंके रसीले भजनोंका अनेकरागरागिनीमय संग्रह किया है.....	०–४	०–१
संगीत–चंद्रहास. इसमें चन्द्रहास भक्तकी मनोहर कथा उत्तम गानेयोग्य रागरागिनियोंमें वर्णित है.	०–४	०–१
पदरामायण–इसमें सातों कांड रामायणका अनुवाद सरल सुललित हिन्दी भाषाके पद, भजन, होरीमें हैं.	०–१०	०–२

नाम.	किं०	डा०म०
शोकापहरण—इसमें वेदान्तविषयक अपूर्व भजन होली आदि हैं.	०—१॥	०—॥
आत्मानंद—भजनमाला. इसमें भी वेदान्तविषयक राग—रागिनियों समेत उत्तमोत्तम भजन हैं	०—६	०—१
हरिचरित्र दिलरंजन इसवें उत्तमोत्तम भजनोंमें भगवद्गुणवर्णन है. भक्तिपक्षके भजनोंके विषयमें यह अद्वितीय हैं	०—२	०—॥
प्रियारसिकविनोद यह ग्रन्थ चौबेपुरनिवासी अनन्यरसिक प्रियादास शुक्लका बनाया हुआ है. इसमें श्रीकृष्णचन्द आनन्दकन्दकी रासादि अभिवन सुखमय लीलाओंका रागरागिनियोंमें वर्णन है. इसकी प्रशंसा कहातक लिखें ? देखनेसे स्वयं ज्ञात हो जायगा	०—१४	०—३
कृष्णकरुणाबत्तीसी. इसमें कृष्णविषयक करुणारसभरे कबित्त छंद, दोहा सोरठाआदि हैं कविता रसिक भक्तजनोंको उपयोगी है	०—१॥	०—॥
गजलसंग्रह (तीन आनेमें अनेक प्रकारके आनंद लेलो, एक २ गजलें मानों अमृतकी धारा हैं)	०—२॥	०—॥
अनमोलराग (जिसमें भाँतिभाँतिकी रागरागिनियां वर्णित हैं.	०—४	०—१
प्रेमपयोनिधि (प्रेमका अनूठा ग्रंथ है.)	०—१॥	०—॥
विरहबारहमासी (हृदयग्राहिणी सरस कवितामें)	०—१	०—॥
आरतीसंग्रह नीराजन बड़ा. इसमें गणपति, शिव, विष्णु, देवी, सत्यनारायण, बालाजी इत्यादि देवताओंके आरतीपाठोंका संग्रह है	०—२	०—॥

पं० हरिप्रसाद भगीरथजीके,

पुस्तकालयके मालिक,

पं० व्रजवल्लभ हरिप्रसादजी,

कालकादेवीरोड रामवाडी, मुंबई.